# भोरसँ साँझ धरि

# भोरसँ साँझ धरि

(आत्मकथा)

## रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN:  978-93-5346-251-2

दाम : ` 251  रूपया

प्रथम  संस्करण : 2017
द्वितिय  संस्करण : 2018

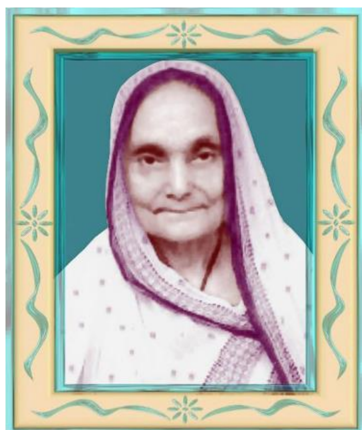
लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
Phone: 01202343563
Mobile:9968502767

BHORSAN SANJH DHARI
Collection of Reminiscences by Shri. Rabindra Narayan Mishra.



`

# समर्पण



पू. स्व. माता दयाकाशी देवीक संस्मरणमे
ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

-रबीन्द्र

# अनुक्रम





## शेफालिकाजीक कलम सँ

माँ एकटा पवित्र, पावन शब्द जे समस्त आस्तिक-नास्तिक लेल एकटा तीर्थस्थली बनि जायत अछि। माँ पर समस्त संसार लिखने अछि। कहल जाइत अछि जे भगवान सभक संग नय रहि सकैत छथि तैं ओ 'माँ' क रचना केलनि प्रेम, ममत, वातसल्यसँ परिपूर्ण। एकटा हिन्दी कविक कविता अछि–

बेटा पिशाच बन ले माँ का काट कलेजा भी निकाल
तो उस कटे कलेजे से भी स्वर निकलेगा खुश रहो लाल

तैं माँक रूप स्वरूपक चित्रण संसारक प्रत्येक हृदय केने अछि, अपन अपन भाषा मे।

रबीद्रजीक आत्मकथा 'भोर सँ साँझ धरि' अपना आपमे विलक्षण अछि। माँ सँ आरंम्भ भेल, माँ पर ख़तम भेल। जीवनमे अनेको संबंध रहितो, खास कय पत्नी एहेन सहयात्रिणी रहितो, मॉक महत्वकें अपन आत्म कथाक अपन आत्माक कथा सँ समर्पण अद्भुत।

कथा कविता जकाँ आत्मकथाक विकास पच्छिम सँ भेल अछि। आत्मकथा लेखकके जीवनक दर्पण होइत अछि। रोमन दार्शनिक सेनेका कहने छथि, दर्पणके आविष्कार एहि लेल भेल छल जे मनुष्य स्वयंके जानि सकै। दर्पण एक दिस ते मनुख के स्वयं के जानवा मे मदति करैत अछि ते दोसर दिस आत्म मुग्धता सेहो आनि दैत अछि। जेना कि नार्किसस स्वयं अपन छवि पर मुग्ध भऽ जाइत छल। जे आत्मकथा लेल

स्वस्थ नय अछि। एकटा बढ़ पैघ विद्वानक कथन अछि जे कोनो बाहरी चीज जखन हम अपना लैत छी तऽ वो आनक कहाँ रहैत अछि? अप्पन भऽ जायत अछि।

आत्मकथाक माध्यमसँ लेखक स्वयंके जानवाक सेहो प्रयत्न करैत अछि आ एहि मध्यमे देश, समाज दुनिया सबके बुझवाक उपक्रम। तैं आत्मकथा व्यक्तिगत अनुभूति होइतो सामाजिक रूप सँ सार्थक होइत अछि। अतीतके वर्तमानमे आनि ओहि प्रक्रिया सँ पुनः गमन केनाय, सृजनक एकटा नव रूप सेहो आबि जायत छैक।

गार्सिया मार्खेज अपन आत्मकथामे कहने छथि--- आत्मकथा वो नय होइत अछि जकरा लेखक जीवि चुकल छथि मुदा जकरा लेखक स्मरण पाड़ैत छथि आ स्मरणक ओहि प्रक्रिया मे स्वयं के व्यक्त करबाक आकांक्षा निहित भऽ जायत छैक।

आत्मकथा लेखनक प्रक्रिया पाछा घुरि के अपन निजी आ सार्वजनिक जीवनके देखि आ देखेवाक लेखकीय प्रक्रिया। ---प्रक्रिया जाहि रचनामे छैक कथा कहानी। किछ कही, मुदा--वैह नीक आत्मकथा कहल जायत छैक। कथा उपन्यास मे फूसिके माध्यम सत्यके अभिव्यक्ति होइत अछि मुदा आत्मकथामे जीवनक साँच व्यक्त होइत अछि। एहि तरहे रूसोके आत्मकथा अद्वितीय मानल जायत छैक। आत्मकथा लिखवाक काल रूसोक लक्ष्य अपन अनन्यता सिद्ध करबाक छल। वो बजैत छथि जे हम जेहन छी---विश्वमे केओ आन ने। हुनक प्रयास छल आत्मकथाके पूर्ण रूपेण पारदर्शी बनेनाई, बजैत छलाह हम किछु अनकहल नय छोड़ब। रूसो से ठीक विपरीत रोला बर्थ के आत्मकथा मे अनन्यता आ परदर्शिता दुनूक विखण्डन छैक - रोला बजैत छथि ई स्वीकारोक्ति नय- छी मुदा कपटपूर्ण सेहो नय, हम जे लिखैत छी से हमर अन्तिम नय छी, हम जे छी वैह लिखने छी। सरिपहुँ, आत्मकथा

कोना अन्तिम भऽ सकैत छैक.. ककरो जीवनी केओ लिखि सकैत छै मुदा, आत्मकथा ते लेखक स्वयं लिख अपन आत्मा कैं अनावृत करैत छथि। तैं बर्नार्ड शॉ लिखने छथि जे यदि सब मानव अपन अपन आत्मकथा लिखैन ते विश्व मे श्रेष्ठ उपन्यासक कमी नय रहत।

मुदा अभिव्यक्तिक क्षमता सब गोटे मे नय छैक, ---गॉड गिफ्टेड होइत छै, तेन जे लिखैत छथि सरस्वतीक संतान मानल जायत छथि। एहि सब दृष्टिये प्रस्तुत आत्मकथा एकटा विलक्षण आत्मकथा अछि जाहि मे आत्मीयता, प्रभावपूर्ण भाषा शैलीक पारदर्शिताक कारण आत्मकथा गौरवपूर्ण भऽ गेल अछि।

ओहि समय ग्रामोफोन भेनाय समृद्धिक निशानी छल। लेखक लिखैत छथि आल्हा सुनि कोना हुनक मोन झूम लगैत छल। सम्पूर्ण रामायण सीनेमाक कतेक दिन धरि हुनक बाल मन पर प्रभाव छल। ओहि सिनेमाक गीत सभ कतेक दिन धरि हुनक हृदय मे गुंजित अनुगुंजित रहल; सांचे श्रव्य काव्य सँ बेसी दृश्य काव्यक प्रभाव मानवक मोन पर पड़ैत छैक खास क बाल-मन पर।

...गाम-घरक रीति रेवाज, संस्कारक विहंगम चित्रण केने छथि, वो ना मा सी धंग-गुरूजी पतंग, ते चीन के बिगड़ल बा चलनिया कैसे सुधरी, 1962 मे चीन सँ लड़ाई, स्कूल, कॉलेज, दरभंगासँ दिल्ली धरि के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चित्रणक संग अपना जीवनक कथा आगू बढ़बैत गेलथि। कतहु मनोरंजक ते कतहु विलक्षण मुदा कतौ नीरस नय उबाऊ नय। एकटा उत्सुकता लागल रहैत छैक संगे पाठकक ज्ञान वर्धन सेहो होइत रहैत अछि। निश्चय रूप सँ युवा पीढ़ी बड़ प्रभावित हेताह। आत्म कथा मात्र जीवनी ने होइत छैक, आत्माक कथा होइत छैक। जीवनक संग संग आत्माक अनुभूति, ओकर रसास्वादन पाठक करैत स्वयं ओहि घटनाक्रममे समा जायत छथि, ताहि अनुरूप

सजग पाठक अपन आत्मविश्लेषण सेहो करैत छथि। मैथिली साहित्यक आत्मकथाक इतिहास मे 'भोर सँ साँझ धरि' अपन एकटा विशिष्ट स्थान राखत। ...मुदा, एखन साँझ मात्र भेल अछि, राति आ पुनः भोर। रबीन्द्र नारायण मिश्र सँ आग्रह जे आत्मकथाक एहि कड़ी के आगू बढ़बैत रहैथ। ...नित नित नव नव संदेश अपन जीवनक माध्यमसँ लोक के अवलोकनार्थ दैत, ज्ञान वर्धन करैत रहथि। ...अशेष साधुवादक संगे।

डॉ शेफालिका वर्मा

---

# भूमिका

१२ नवम्बर २०१६ (कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी)क साँझ सात बजे हमर वयोवृद्ध चौरानबे वर्षीय माता दयाकाशी देवीक देहावसान भए गेल। ओ जाँघक हड्डी टुटि गेलाक कारण पछिला दू बर्खसँ कष्टमे छली। नाना प्रकारक उपचार भेल परन्तु ओ पछिला तीन माससँ लगातार गड़बड़ाइते गेली आ अन्ततोगत्वा कालक अपराजेय हाथे हुनक प्राण देह छोड़ि देलक। ओहि समयमे हमहूँ ओहीठाम रही। हुनकर देहावसानक बाद मोन ततेक दुखी ओ अशान्त भए गेल जकर वर्णन असम्भव। लगभग चारि मास धरि राति-राति भरि निन्न नहि भेल।

कहिओ काल भोरुपहरमे आँखि लगैत छल, ओहो थोड़बे कालक लेल। सगर राति ओहिना माने टकटकीए-मे...। सम्पूर्ण दिनचर्या अस्तव्यस्त भए गेल। निःशव्द रातिमे जागल माथमे बितल बात सभ सिनेमाक रील जकाँ उभरैत रहैत छल। एहन मानसिक स्थितिसँ उवरबामे एहि आलेख सबहक सहारा भेटल। मोनक बात सभ लिखैत गेलहुँ। सालक साल मोनमे गरल बात सभकें निकलबाक रस्ता भेटलैक।

शुरूक २५-२६ वर्ष हम गामेमे वा गामक आसेपासमे रहलहुँ। पछाति भारत सरकारक केन्द्रीय सचिवालय सेवामे नौकरी भेलाक बाद दिल्ली ओ गामक बीच तारतम्य बैसाएब ओ बनओने रहब, क्रमश: कठिन होइत चलि गेल। यद्यपि गामपर पू. माएकेँ रहबाक कारण गाम आबा-जाही निरन्तर बनल रहल।

ओना, लगभग चालीस बर्खक बाद आब दिल्ली घर जकाँ भए गेल अछि। बच्चा लोकनि अहीठाम छथि। सभ सुविधा अहीठाम अछि, सेवा निवृत्तिक पश्चातो ओहिना व्यस्तता बनले अछि। दिल्लीमे एतेक दिन रहलाक बादो गाम-घरक उद्वेग तऽ अबिते अछि।

हमर समस्त आलेखक प्रथम पाठक हमर पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक एहि साहित्यिक कृतिमे अभूतपूर्व योगदान अछि। हुनकर निष्पक्ष सुझावसँ बहुत मदति भेटल। प्रत्येक आलेखके ओ ध्यानसँ पढ़लथि एवम् ओहिमे गुणात्मक सुधार केलथि, जाहिसँ एहि आलेख सभकेँ सही दिशा भेटल।

डा. विनय कुमार चौधरीजी, आर.एम.कॉलेज सहरसाक समाजशास्त्र विभागक प्रोफेसर छथि, हमर अभिन्न मित्र, शुभचिन्तक छथि। सहरसामे रहि कतेको सामाजिक काजसँ जुड़ल छथि। अनेको पोथीक लेखक छथि। हुनकर प्रेरणादायी मार्गदर्शनसँ एहि पुस्तकक प्रकाशनमे बहुत योगदान भेटल।

श्री उमेश मण्डलजी (बेरमा, निर्मली) घनघोर परिश्रमक संग एहि पुसतकक हस्तलिखित पाण्डुलिपि सभक स्वच्छ प्रति प्रस्तुत केलाह। एहि लेल हुनका आशीर्वाद।

अन्तमे, माता-पिताकेँ हार्दिक श्रद्धांजलि आओर समस्त श्रेष्ठजनकेँ सादर प्रणाम करैत ई पोथी अपने लोकनिक सम्मुख प्रस्तुत करैत अपार हर्ष भए रहल अछि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

२६.९.२०१७

# बड़ मोन पड़ै छी

१२ नवम्बर २०१६ सायं ७ बजे हमर माए दयाकाशी देवीक देहावसान भए गेल। ओ ९४ बर्खक छली। पछिला दू सालसँ दहिना जाँघक हड्डी टुटि गेलासँ ओ कष्टमे छली। दड़िभंगामे हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र)क घरक आँगनमे भोरे ओ खसि पड़ली आ जाँघक हड्डी टुटि गेलनि। हुनकर इलाज दड़िभंगेमे एकटा प्रसिद्ध चिकित्सकक ओहिठाम भेल। परन्तु हुनकर हड्डी ठीकसँ नहि जुटल। टुटलाहा पएर तीन इंच छोट पड़ि गेलनि जाहिसँ हुनक चलब दुरुह भए गेल।

मृत्युक समय हम ओहीठाम रही। एकदिन पूर्व दिल्लीसँ वायुयानसँ पटना होइत गाम पहुँचल रही। माएकेँ होश नहि रहनि। प्रणाम केलहुँ मुदा प्रत्युत्तर नहि भेटल। ओ जोर-जोरसँ साँस लैत छली। आओर कोनो प्रकारक संचार नहि। सभ हुनकर जीवनक आश छोड़ि चुकल छल। सायंकाल–मृत्युक समय–ओ उल्टा साँस खिचली आ सभ उठा-पुठा कऽ तुलसी चौरापर लऽ गेल। ओहीठाम जोरसँ साँस खिचली आ सभ खतम..!

उत्तर-मुहेँ तुलसी चौरा लग हुनका राखल गेल छल। पीताम्वरी वस्त्रसँ झाँपल। अगरबत्तीक सुगन्धक मध्य शांत किन्तु दुखद वातावरण। किछु गोटे हुनका घेरि कऽ बैसल छल। गाममे बिजलोका जकाँ ई समाचार पसरि गेल। बाहर रहए-बला सम्बन्धी सभकेँ फोनपर सूचना देल गेल। चूँकि किछु गोटे बाहरसँ अन्तिम संस्कारमे भाग लितथि, तँए संस्कारक समय दोसर दिन भेने १२ बजेक आस-पास राखल गेल।

यद्यपि माएक देहावसानक बाद समय बितल जा रहल अछि तथापि ओ निरन्तर हमरा मोन पड़ैत रहैत छथि। हुनकर करुणामयी दृष्टि केना पथरा गेल, केना ओ अन्तिम साँस लेली, केना हुनका तुलसी चौरापर

नि:शब्द राखल देखलहुँ इत्यादि सदिखन मोनमे घुमैत रहैत अछि। हुनकामे जबरदस्त जीजिविषा छल। अन्त–अन्त धरि ओ ताहिलेल प्रयत्नशील छली। मुदा पछिला तीन-चारि माससँ बारम्बार ओ दुखित पडैत रहली आ सुधार नहि भए सकलनि। प्राय: हुनका एहि बातक बरोबरि आभास होइत रहनि जे अन्तिम समय आबि रहल अछि। कखनो-कखनो ओ कहितथि जे ओ बहुत दूर जा रहल छथि। से ओ चलिए गेली। ततेक दूर चलि गेली जे एहि जीवनमे घुरि एबाक कोनो सम्भावना नहि..! माए ९४ बर्खक छलीह। एतेक बएस कम गोटेक भागमे होइत अछि। संगे सभ तरहेँ सम्पन्न परिवार छोड़ि गेली। हुनकर चारि पुस्त तऽ अन्तिम संस्कारमे विद्यमान छल। पचासक लगपास हुनकर पोता-पोती, नाति-नातिन, बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाए आ नाति-परनाति आदि आदि विद्यमान अछि।

टेकटार स्टेशनक पास सिंघिआ ड्योढ़ीक प्रतिष्ठित परिवारमे हुनक जन्म भेल छल। ओ अपन माता पिताक एसगर सन्तान रहथि। जन्मसँ पूर्वहि हुनकर पिता स्व. राम प्रसाद झाक देहावसान भए गेल। ९ बर्खक आयुमे हुनकर बिआह अड़ेर डीहक प्रतिष्ठित एवम् संपन्न परिवारमे भेल। हमर पिता स्व. सूर्य नारायण मिश्र एसगरे छलाह। तदुपरान्त लगभग ८५ बर्ख ओ अड़ेर डीह गाममे रहली। हम सभ ५ बहिन आ ४ भाए भेलहुँ। कालक्रमे परिवार बढ़ैत गेल। बहिन सभ सासुर जाइत छली तऽ छाती फारि कऽ हुनका कनैत देखिअनि। बस चलितनि तऽ ओ कहिओ ककरो कतहुँ नहि जाए दितथि। मुदा बेटी तऽ सासुर जेबे करितै, से जाइत मुदा माएक नोर झहर-झहर होइत देखिअनि। बच्चासँ लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त माएक करूणामयी सिनेहक स्मरण हटिते नहि अछि। मोन बरबस हुनकेपर चलि जाइत अछि। जखन हम विद्यार्थी रही, बड़ी राति धरि पढ़ी आ माए ताबे जागल ओंघाइत बैसल रहितथि। पढ़ाइ पूरा कऽ जखन हम

भोजन करितहुँ तखने ओ भोजन करितथि। भरि दिनक काजक झमारल ओ कएक बेर ओंघीसँ झुकि जइतथि, परन्तु एक्कोबेर अगुताथि नहि। आब सोचैत छी, जे एक हिसाबे हुनका कष्ट दैत रहलहुँ। कारण ओ दिन भरिक घरक काज कऽ विश्राम कऽ सकैत छली परन्तु हमरे हेतु बैसल रहैत छली। कहिओ भूलोसँ ओ हमरा प्रताड़ित नहि केलीह। हमरा प्रति हुनक सिनेह अद्भुत छल। एहि मामलामे हम भाग्यवान छलहुं। कतेको बेर ओ हमरा दुआरे आँगन किंवा अरोस-पड़ोसक आन महिला सभसँ झगड़ि जइतथि।

पहिने गाम-घरमे भानस जारनिसँ बनैत छल। कतेक प्रयाससँ आँच फुकैत छली। कएक बेर ओहिठाम बैसल खिस्सा सुनबितथि। गाम-घरक लोक चर्चा करितथि। भोजन बनबएमे हुनक महारत छल। कएक दिन भोरे हम पटना जाइत छलहुँ, तैयो ओ भोजन तैयार कऽ दितथि आ भोजन कइए-के हम विदा होइतौं। लोटामे पानि भरि कऽ रस्तापर ठाढ़ भए जइतथि जाहिसँ हमर यात्रा बनए।

एकबेर हमर गाममे हैजा फैल गेल। कतेको गोटे ओहिसँ दुखित भए गेलाह। इलाजक सही ब्यवस्था नहि छल। माएकेँ सेहो ई बिमारी धेलकनि। पूरा परिवार सन्न छल। हमर बाबा बारंबार आँगन अबितथि आ सीढी लग कानय लगितथि। धकजरीसँ एकटा आर.एम.पी. डाक्टर बजाओल गेलाह। वएहटा लगपास उपलब्ध डाक्टर छलाह। भाग्य संग देलकनि आ ओ बाँचि गेली। ओहिबेर गाममे एकटा युवककेँ हैजासँ मृत्यु भए गेल छल।

माए अपन गामक स्कूलसँ चौथा पास रहथि। चिट्ठी-पत्री कऽ लेथि। ९ बर्खक बएसमे हुनकर बिआह हमर पितासँ भेल। हमर पिता २२ बर्खक छलाह। वाटसन स्कूल- मधुबनीमे पढ़ैत छलाह। माएकेँ स्कूल छूटि गेलाक बहुत दुख रहनि। जखन-तखन ओ एहि बातक चर्चा

करितथि। आक्रोश व्यक्त करितथि जे एतेक सम्पन्नताक अछैत हुनकर नैहरक लोक एकटा नेनाक विआह कऽ देलक। सासुर अयलाक बाद ओ एहिठामक माटि-पानिमे रमि गेली। यएह हिनकर नैहर वा सासुर सभ भए गेल। ८५ बर्ख धरि एहि गाममे रहली। हमर दाई हुनका अपन सन्तान जकाँ पोसथि। कखनो नहि चाहथि जे ओ नैहर जाथि।

पहिने टेलीफोनक सुविधा कम छल। मोबाइल नदारद। गामसँ दिल्ली विदा होइत काल माएकेँ अपन पत्ता लिखल लिफाफ दऽ दियैन्ह आ ओ समय-समयपर चिट्ठी लिखैत छली। एहन बहुत रास चिट्ठी हमरा लग हुनकर स्मृति शेष अछि। ओहि चिट्ठी पढ़ि कऽ स्वर्गक अनुभूति होइत छल। बाट तकैत रहैत छलहुँ जे डाकिया कखन चिट्ठी आनत। हुनकर तरह-तरहक चिन्ता, आवश्यकता किंवा भावनाक अभिव्यक्ति ओहि चिट्ठी सभमे भरल अछि। क्रमश: टेलीफोन लगलैक। लगपास फोन छलैक। ओहीसँ कहिओ काल माएसँ गप्प होइत छल। पछिला दस सालसँ मोबाइल फोन हुनका लगमे छल आ बरोबरि हुनकासँ गप्प होइत रहल। समस्त परिवारक फोन संख्या ओहि मोबाइलमे छल। ओ सभसँ गप्प करैत रहितथि। मोबाइल फोन हुनकर जीबाक एकटा आधार भए गेल छल। रवि दिनक सबहक छुट्टी होइते चारूकातसँ हुनका फोन अबितनि आ ओ आनन्दसँ अपन समय बितबैत छली। छह दिन अही उमीदमे कटि जानि जे रवि दिन फोन आएत।

हम बच्चा रही तखन कतेको बेर हमरा चलते माएकेँ हमरा पक्षमे लगपासक लोकसँ झगड़ा करऽ पड़नि। हमरा कियो किछु कहै से हुनका एकदम बर्दास्त नहि होइन। साँझू-पहरमे दलानपर कबड्डी होइत आ ओहिमे कएक बेर बच्चा सभमे झगड़ा भए जाइक। ओहि समयमे हुनका बहुत फिरसान देखियनि। मृत्युसँ तीन बर्ख पूर्व धरि ओ बहुत सक्रिय रहैत छली। अपन सभटा परिचर्या स्वयं करथि। अपन भोजन ब्यवस्था सेहो

ओ फराके रखैत छली। स्वास्थ्यक प्रति बहुत सचेष्ट रहैत छली। नियमित रूपसँ ब्लड प्रेशरक दवाइक सेवन करैत छली। आओर कोनो बिमारी हुनका नहि छल। ब्लड सूगर एकदम समान्य रहनि। आँखि अन्त-अन्त धरि बिना चश्मेक काज करनि । कानमे श्रवणशक्ति एकदम समान्य छल। दिमागक फुर्ती तऽ गजब छलनि। कहिया-कहियाक गप्प सुनबितथि। जखन दिल्लीसँ गाम जइतहुँ तऽ माए दौड़ कऽ बाहर अबितथि। कतेक आनन्द पूर्वक स्वागत करितथि। प्रणाम करिते आशीर्वादक वर्षा करए लगितथि।

"गैसक चुलहाक रंग हटि गेलइ, एकरा रंगा दहक।"

"एकटा पेटी आ ताला हमरा आनि दएह।"

"चीज सभ एमहर-ओमहर पड़ल रहैत अछि।"

आओर जे जे फुरैतैन से कहितथि। गामसँ विदा होइत काल ओ दूर धरि ढेरो आशीर्वादक संग अरियाति दैत छली ।

अक्टूबर २०१४ मे दड़िभंगा स्थित घरपर ओ खसि पड़ल रहथि जाहिसँ हुनकर डाँरक दहिना हड्डी टुटि गेल आ लगातार प्रयासक बादो ओ हड्डी नीकसँ नहि जुड़ल। दुनू पैरमे तीन इंचक फर्क भए गेल। पश्चात दिल्ली अयलाक बाद डाक्टर सभ कहलनि जे शल्यक्रिया करेबाक प्रयोजन छल आ ट्रेक्सनक विधि एहन वयोवृद्ध हेतु ठीक नहि छल मुदा दड़िभंगाक डाक्टरक मतसँ हुनकर इलाज ट्रैक्सन प्रथासँ भेल। हुनकर कहब जे एहि बएसमे शल्यक्रिया नहि सहि सकती। मुदा बादमे हमरो बुझाएल जे ई निर्णए सही नहि छल। शल्यक्रिया करेबाक चाही छल। मुदा भावी प्रबल। चलबा-फिरबासँ असमर्थ भए गेलाक कारणें हुनकर दिन प्रतिदिनक व्यवस्था दुरुह भए गेल ।

मार्च २०१५ मे गामपर हुनकर अन्तिम हालत भए गेल छल। हम हवाई जहाजसँ एकाएक पटना होइत गाम विदा भेल रही। गाम पहुँचैसँ

पूर्व हुनका दडिभंगा इलाजक लेल अनबाक जोगार लागल। बेहोशीक हालतमे हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) एसगरे स्थानीय जन भावनाक विरूद्ध दड़िभंगा अनलाह। रातिमे एक बजे जखन हम दड़िभंगा स्थित नरसिंग होम पहुँचलहुँ तऽ माएकेँ देखि चिन्हि नहि सकलहुँ। मुदा राति भरि इलाजक बाद ओ भोरे होशमे आबि गेली। ओहीठाम किछु दिन इलाजक बाद ओ इन्दिरापुरम, गजियाबाद स्थित हमर डेरापर अएली। ओहिठाम साढ़े छह मास रहली। ओही दौरान हुनकर स्वास्थ्यमे निरन्तर सुधार भेलनि। फिजियोथिरैपी भेलनि, पश्चात डण्टा पकड़ि चलि लेथि। घाव सभ ठीक भए गेलनि। मुदा मोन सदिखन गामेपर टाँगल रहैत छलनि। इन्दिरापुरममे हमरा संग रहबाक क्रममे माएक स्वास्थ्यमे लगातार चारि मास धरि सुधार भेलनि। भोर-साँझ ओ मन्दिर जाइत छली-पहियाबला रिक्शासँ। ओहिक्रममे बहुत रास लोक सभसँ भेँट-घाँट होइत छलनि। वुजुर्ग महिला सभ हुनकोसँ पैघ बुढ़केँ देखि आदर सहित प्रणाम करथि, आ माए हुनका सभकें आशीर्वाद देथि। कोनो छोट बच्चाकेँ देखि ओ ओकरासँ चिपकि जाथि। चारि मासक बाद हुनकर स्वास्थ्यमे क्षरण भेल। बोखार भए गेलनि जे करीब दू सप्ताह धरि रहल। एक बेर खसि पड़ली, जाहिसँ हड्डी टुटल तऽ नहि मुदा जाँघक आस-पास फुलि गेल जकरा सामान्य हेबामे समय लागल। शरीरमे होमोग्लोबीन घटि कऽ फेर आठक आस-पास आबि गेलनि! एहि सभसँ हमर मोन उदास होबएलागल..।

५ नवम्वर २०१५ केँ हम माएक संग गाम अयलहुँ। गाममे कालीपूजाक समय रहए। कालीपूजा देखलाक बाद माए हमर अनुजक दड़िभंगा स्थित घर पर आबि गेली। ओहिठाम ओ पाँच मास रहली। तकर पश्चात अप्रैल २०१६मे ओ गाम अएली। अन्तिम छ मासमे गाममे रहबाक क्रममे नौकर तकबाक प्रयास भेल जे सफल नहि भए सकल। डाक्टरोक

सुविधा प्रर्याप्त नहि छल। गाममे प्राय: एकटा डाक्टर छथि जे घरपर मरीजकेँ देखए नहि जाइत छथि। जखन माए चलैत-फिरैत छली, तऽ माएक देख-रेख ओही डाक्टरसँ होइत छलनि।

माएसँ फोनपर अन्तिम बेर गप्प २६ अक्टूवर २०१६क सायं ७ बाजि कऽ ९ मिनटपर भेल छल जे १४ मिनट ४२ सेकेण्ड धरि चलल। ओहीक्रमे ओ एकटा टार्च, मोबाइलक जरूरत कहलनि। तकर बाद माए फेर गप्प नहि कऽ सकली। बीच-बीचमे कएक बेर गप्प करबाक प्रयास केलहुँ मुदा ओ होशमे नहि रहथि। प्राय: ३ नवम्वर २०१६केँ हुनका थोड़ेक सुधार भेलनि। फोनपर प्रणाम केलापर मुश्किलसँ 'आशीर्वाद' बजली। तकर बाद हुनकासँ गप्प नहि भए सकल। हुनकर टार्च, मोबाइलक इच्छा-पूर्ति हेतु ई वस्तु सभ श्राद्धमे दानमे राखल गेल। पता-नहि हुनका ई चीज सभ भेटलनि की नहि..? स्वर्गमे एकर काजो होएत की नहि..?

बारम्बार हुनकर पेट खराप होइत गेलनि, आ बीचमे किछु दिन सुधार सेहो भेलनि। एक दिन कहलनि-

"फेर अन्न पकड़ि लेलहुँ अछि।"

मुदा ई बेसी दिन नहि चलि सकलनि। प्राय: दियाबातीसँ पूर्व ओ मधुर किंवा एहने कोनो चीज खा लेलनि, जकर बाद जबरदस्त पेट खराप भए गेलनि। सभ कहए जे छठि-पावनि भए सकत कि नहि...। मुदा पानि चढ़ेला पश्चात माएक हालत सुधरल आओर छठि पावनि नीकसँ बीति गेल । जीबाक अभिलाषा अन्त-अन्त धरि माएक मोनमे बनल छल। ओ हमर अनुजकेँ छठिक साँझुक अर्घ्यक समय कहलखिन-

"पानि चढ़ा दएह।"

ओना नस नहि भेटबाक कारणे प्राय: कठिन भए रहल छलनि मुदा तकर बादो पटनामे रहएबला एक पड़ोसी डाक्टरक मदतिसँ पानि

चढ़लनि। पैरमे नस भेटलनि मुदा ओ पचलनि नहि। फेर पेट खराप भए गेलनि। बारम्बार मल त्यागक कारणे माएक देहक पानि बाहर भए गेल।

१० नवम्वरक २०१६ भोरमे गाममे अनुज (धीरेन्द्र नारायण मिश्र)सँ फोनपर गप्प भेल। बुझाएल जे ओ बहुत फिरसान छथि। तुरन्त वायुयानसँ पटनाक टिकट कटाओल। ११ नवम्वर भोरक टिकट भेल। ओही दिन साढ़े चारि बजे गाम पहुँचलहुँ। पहुँचिते माएक अवस्था–घरमे चौकीपर पड़ल, ओढ़नासँ समुच्चा शरीर झाँपल आ जोर-जोरसँ साँस लैत मुदा चेतन-शून्य देखि सन्न रहि गेलहुँ। भरि जिनगी घर-आँगनमे सिमटल तथा परिवारक सेवामे प्राणप्रणसँ लागल रहली माए..! एतेटा परिवारक पालन-पोषणक जिम्मेदारी असगरे निर्वाह करैत रहली..! कतेको दिन मोन खराप रहितो काज करैत देखिअनि..!

भोरे उठि कऽ तीन-चारि बजे धरि एक्के पएर पर ठाढ घरक सरंजाम-ब्यवस्थामे लागल रहैवाली माए आँखिक सोझसँ जेना विलीन होबएलगली..! एतेक काजक संगे माए दुनू एकादशी तऽ करबे करथि जे चतुर्दशी आ रविक अनोना सेहो करथि। ततबे नहि, मंगलवारी सेहो नहि छोड़थि। हमरा लगैए अहु सभसँ हुनका दीर्घ जीवन प्राप्त भेल। ऐंठक प्रति ओ बहुत संवेदनशील छली। एहि मामलामे कनिक्को लापरवाही नहि। हुनकर ई स्वभाव अन्त–अन्त धरि बनल रहल। कएक बेर तऽ ऐंठ पड़ि जेबाक भ्रममे स्नान कऽ लेथि। प्राय: ई बादमे किछु बेसिये भए गेल छल। हाथ धोअ लागथि तऽ कतेक काल धरि धोइत रहती से कहब कठिन। जँ पानि हेरेबाक पूरा अवसर भेट जानि तऽ ओ बहुत प्रसन्न होथि। अन्तमे ऐंठसँ बँचबाक हेतु कएक बेर भोजने नहि करथि चाहे लोकि कऽ खा लेथि जे हाथ धोअ पड़त।

माएमे आत्म सम्मान कुटि-कुटि कऽ भरल छल। अन्त-अन्त धरि ओ आत्मनिर्भर रहबाक चेष्टा करैत रहली। सभ दिन अपन स्वतंत्र

अस्तित्वक रक्षा हेतु तत्पर रहली। हमेशा ई प्रयास रहलनि जे गाममे रही। अपन ब्यवस्था फराक राखी आ ९० वर्षक बएस धरि से ओ करबो केलीह। बुढ़ सभकेँ एहि बातसँ प्रेरणा लेबाक चाही जे केना पराश्रित हेबासँ बँचैत सम्मानपूर्वक अपन जीवन-यापन करी। एहन आत्म सम्मानी व्यक्तिकेँ विकलांगताक परिस्थिति उत्पन्न भए गेल–दुर्घटनावश हुनकर जाँघ टुटि गेल जे बहुत प्रयासक बादो नहि जुटल आ तँए सभ काज हेतु दोसरपर निर्भर भए गेली।

अन्तिम दू वर्खक जीवन हुनका लेल एवम् परिवारक समस्त सदस्यक लेल परीक्षाक समय भए गेल। सभ गोटे सम्पूर्ण शक्तिसँ अपन-अपन स्वभाव ओ परिस्थितिक अनुसार हुनका सेवा केलक मुदा परिस्थिति तेहन विकट छल जे समस्त प्रयासक अछैतो प्रयत्न अधूरा लगैत छल। जीवनक अन्तिम पड़ाव हुनका लेल कष्टकर भए गेल। ईश्वरक इच्छा बुझि एकरा स्वीकार करक चाही।

जाँघक हड्डी टुटि गेलाक बाद गाम, दड़िभंगा आ दिल्ली सभठाम माएकेँ यथाशक्ति ब्यवस्था कएल गेल। परन्तु ओ सभठाम असुविधामे रहली। दिल्लीमे इलाजक सुविधा रहैक, मुदा गामक वातावरण नहि भेटैत रहनि। गाममे लोक-बेद रहै मुदा चिकित्सा आओर आन सुविधा नहि रहैक आ दड़िभंगा मे शहर, गामक मिश्रण। तथापि ओतहुँ माएक मोन उचटि जाइत रहनि। सभठामसँ बढ़ियाँ हुनका गामे लागनि। गाममे जँ मौलिक चिकित्सा सुविधा रहैत, सहायक भेट जाइक तऽ बुढ़क लेल एहिसँ नीक किछु नहि। मुदा सएह नहि सम्भव होइछ। अधिकांश लोक चिकित्सा हेतु स्थानीय कम्पाउण्डरपर निर्भर भए जेबाक हेतु बेबस छथि। गाममे एक सरकारी डाक्टर निजी प्रैक्टिस करैत छथि, मुदा हुनकर उपलब्धतताक समस्या रहैत अछि। फेर ओ घरपर नहि छथि आ माए सन असक, वयोवृद्ध दुखित फटकी केना जाएत ? किछु जरूरी सुधार

विचारणीय अछि। गाम-घरमे वृद्ध लोकनिक परिचर्या, चिकित्सा हेतु सामाजिक, सरकारी ब्यवस्था जरूरी अछि कारण जीवन भरि गामे रहनिहार वृद्ध अन्तिम समयमे शहरक फ्लैटमे बन्द करखनो सुखी नहि भए पबै छथि।

श्राद्धक क्रममे गाम-घरक समस्त लोकक बहुत सहयोग रहल। हमर कतेको ग्रामीण श्राद्धक विधि-विधान एंव तत्सम्बन्धी ब्यवस्थामे नित्यप्रति लागल रहलाह। सम्वेदना व्यक्त करब आओर श्राद्ध प्रक्रियामे सहयोगी हेबाक हेतु कतेको लोक निरन्तर अबैत रहलाह। प्राय: नित्यप्रति हमर कतेको ग्रामीण भोर-साँझ आबि कऽ कार्यक्रमक प्रगतिक प्रति जिज्ञासा करथि। किनकर नाम लिखू, किनका छोड़ू.., सभ गोटे ऊपरा-ऊपरी काज केलाह आ तँए एतेकटा श्राद्ध कार्यक्रम शान्तिपूर्ण आओर सफल ढंगसँ सम्पन्न भेल। समस्त ग्रामीण, कर-कुटुम्ब, सर-सम्बन्धी, इष्ट-मित्र आओर सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता जे एहि कार्यक्रममे भाग लेलथि, सहयोग देलथि, ओ सभ धन्यवादक पात्र छथि, हम सभ सबहक प्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी।

Some feel young at 90
Some are tired of life at 20
Our age is not determined
By the date on the calendar
But by the mind believing in a
Great and compelling future ahead.

उपरोक्त कविता अक्षरस: हमर माएपर लागू होइत छल। यद्यपि ओ वयोवृद्ध छली परन्तु हुनकर दिमाग अद्भुत छल। दिल्लीक डाक्टर सभ

माएकेँ देखिते आश्चर्यचकित भए जाइत छलाह। डाक्टर द्वारा पुछल प्रश्नक सटीक उत्तर करथि आओर आग्रह करथिन जे हुनकर टांगके शीघ्र ठीक कऽ देथि।

जार्ज वाशिंगटनक निम्नलिखित कथन हमर माएपर सटीक बैसैत अछि-

"My Mother was the most beautiful woman I ever saw. All I am I owe to my mother. I attribute my success in life to the moral, intellectual and physical education I received from her. "

जखन कखनो कोनो परीक्षा हम देबए गेलहुँ, माएक स्मरणक कऽ परीक्षा प्रारम्भ करी। जखन कोनो काजक संकल्प करी तऽ माएक ध्यान करी। जीवन भरि माएक स्मरण मात्रेसँ हमरा उत्साह भेटैत रहल। हमर ओ माताक संगे गुरु सेहो छली। हुनकेसँ हम मंत्र लेने रही। हुनका प्रसन्न देखि जे आनन्द हमरा होइत छल एकर वर्णन करब असम्भव। जौं-जौं समय बीति रहल अछि, माएक स्मरण नूतन भए जाइत अछि। हुनकर सिनेहसँ भरल शब्द कम्प्यूटरमे राखल हुनकर पुरान वीडियो/ ओडियो रिकॉर्डिंग सुनए लगैत छी। हुनकर फोटो दिस टक-टक तकैत रहैत छी। होइत अछि जे फेरसँ हुनके कोरमे जा कऽ बैस जाइ। काश! ओ उठि कऽ बैसितथि। दोवारा जीवि जइतथि। मुदा से सभ कल्पने रहि जाएत.., मात्र स्मृति शेष..! मुदा अपन धर्मग्रन्थ कहैत अछि जे आत्मा अमर अछि।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च |
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ||

अर्थात  ओ फेर जनमतीह। ईश्वरसँ प्रार्थना अछि जे जन्म-जन्म हमर ओ माए होथि। हुनक आशीर्वाद हमरा भेटैत रहए। हम हुनका तन, मन, धनसँ सेवा करैत रही। जे किछु त्रुटि रहि गेल तेकरा अगिला जन्ममे पूरा कऽ दी। यएह सभ सोचि कऽ हम अपन अन्तर्मनकेँ शान्त करबाक प्रयासमे लागल छी। माएसँ अन्तिम विदा लऽ रहल छी-

"Farewell, Dear Mother"

Somewhere in my heart, beneath all of this pain, Is a smile I still wear... at the sound of your name. The precious word is "MOTHER", she was my world, you see,

But now my heart is breaking, she's no longer here with me.

God chose her for His angel to watch me from above, To guide me and advise me and know that I'm still loved.

The day she had to leave me, her life on earth was through,

But God had better plans for her, for this, I surely knew.

When I think of her kind heart and all those loving years,

Because we're only human, they're bound to bring us tears.

She truly was my best friend, someone I could confide in,

She always had a tender touch, a soft and gentle grin.

I want to thank you, Mother, for teaching me so well,

Even though the time has come, that I must bid you farewell.

I'll remember all you've taught me, to put God above all others...

For I had no better teacher, than you .... My Dear Mother.

Even though you've left this earth and had to take your flight,

I know that you are here with me, each morning, noon and night.

(Written by ~~ Ruth Ann Mahaffey ~ © 2001)

शत् -शत् प्रणाम हे माते ! अहाँ बड़ मोन पड़ै छी आ पड़िते रहब...।



# बाल्यकाल

माएक ध्यान करैत-करैत वाल्यावस्था मोन पड़ि गेल। घरक आगूमे कनीटा जगह छलैक। ओहि जगहमे हमर फुलवाड़ी छल। कतहुँसँ तीरा फूलक बीआ आनि कऽ रोपि दिऐ आ लगले, माने प्राते भेनेसँ बाबाकेँ पुछए लगियनि-

“बाबा! फूल तऽ नहि फुलेलै?”

हमर बात सुनिते बाबा हँसि देथि।

रोज भोरे उठिते यएह काज...। कएक बेर तीराक बीआसँ कनियोंटा पम्ह निकलै आकि फेर दौड़ी बाबा लग। बाबा फेर हँसए लागथि। कएक दिन जखन अहिना बाबाकेँ तंग करियनि तखन कहथि-

“एक्के-दिने थोड़े फूल फुलाइ छैक, समय लगैत छैक।”

फेर बाट ताकी। पानिसँ पटाबी। क्रमश: बीआ गाछ बनबाक दिशामे अग्रसर होइत छल। आठ-दस दिनक बाद, जखन तीराक गाछ बढ़ि जइतैक तऽ फेर बाबा लग जाइ आ हुनका तीराक गाछ लग लऽ जा देखा दियनि। कोंढ़ीक स्थिति देखि बाबा मुड़ी डोलबैत बाजथि-

“हँ! आब फूल आबि जाएत। अहिना पानि पटबैत रहियौ।”

किछु दिनमे रंग-बिरंगक तीराक फूलक कोंढ़ी अबैत आ रोज भोरे फेर जिज्ञासा भरल आँखिसँ फूलक कोंढ़ीकेँ देखैत रही। फूलकेँ कोढ़ीसँ स्फुटित होइत देखैत रही, कतेक आनन्द होइत रहए, कतेक आनन्दित भए जाइत रही, तकर वर्णन हठात करब सम्भव नहि। हमर पितामह (स्व. श्रीशरण मिश्र)अपना समयमे पहलवान छलाह। लोक बाजथि जे ओ असगरे चार चढ़ा लैत छलाह। खेती-वाड़ी जमि कऽ करैत छलाह। छह फूट लम्बा, मजगूत कद-काठी आ घोर परिश्रमी लोक छलाह। कर्मठताक संग-संग ओ आस्तिक आओर संस्कार सम्पन्न लोक छलाह। ७५ सालक

बएस धरि हुनका घोर परिश्रम करैत हम देखिअनि। ओ भोरे उठैथ आ जन-मजदूर सभकेँ अढ़बए सिनुआरा टोल जाथि, जन लऽ कऽ खेतपर जाथि, जन सबहक पनपियाइ पहुँचाबथि, सभ काज एकसूरे कऽ लेथि।

हमर गामक बिच्चेमे पोखरि अछि। पोखरिक पछवरिया महारसँ कनिक्के हटि कऽ हमरा लोकनिक घर अछि। पोखरिक पुवरिया महारपर ओलार छल जाहिठाम माल-जाल बान्हल जाइत छल। घरक शुद्ध दूध, दही प्रचूर मात्रामे उपलब्ध करबामे ओलार आ ओहिठाम दिन-राति खटैबला चरबाह–मियाँजानक बहुत योगदान छल।

मीआजान चरबाहकेँ घरेपर सँ टाहि देथि-

"महींस पनहा गेल अछि...।"

बाबाक एकटा महींस हुनके हाथे लगैत छल। जखन कखनो ओ कतहुँ चलि जाथि तऽ आफत भए जाइत रहए। महींस चुकैर -चुकैर कऽ जान देबएपर उतारू भए जाइत छल मुदा लगैत नहि छल।

बाबाकेँ एकटा डमरू रहनि जे ओ बजबैत रहैत छलाह। कहथि जे ओ डमरू हुनका महादेव देने छथि। हमरा लोकनिक जन्मक पूर्वेसँ ओ डमरू हुनका लगमे छल। बादमे ओहि डमरूकेँ महादेवक मन्दिरपर लेने गेलाह आ सायंकाल नचारी गबैतकाल आओर महादेवक आरतीक समय ओ डमरू कखनो बाबा स्वयं वा कखनो-कखनो आओर बुढ़ सभ बजबैत छलाह। बच्चा सभकेँ बाबासँ बहुत सिनेह होइते अछि। हमरो हुनकासँ बड़ सिनेह छल। सदिखन बाबासँ सटल रही। धिया-पुता सभकेँ हमरा घरमे बहुत हिफाजत होइत छल। बाबूजी असगरे छलाह। तँए परिवारमे नब बच्चा स्वागत योग्य होइत छल। एहि तरहेँ हम सभ ९ भाए-बहिनक पैघ परिवारक अंग भेलहुँ। गाममे सुसम्पन्न परिवारक पुरोधा छलाह- हमर बाबा। हुनकर बिआह समस्तीपुरक लगपासमे सोतीसलमपुरक

शीलानाथ झाक पाँजिमे, ओहि समयक पाँच सए चानीक सिक्का दऽ कऽ भेल रहनि।

बादमे ओ सभ जनाढ़मे बसि गेल रहथि। बाबाक सार सभ गाहे-वगाहे हमरा ओहिठाम अबैत रहै छलाह आ बहुत सम्मान पूर्वक बहुत-बहुत दिन धरि ओ लोकनि रहितो छलाह। बाबाक हेतु छोट-मोट उपहार जेना- 'चक्क', 'सरौता' इत्यादि नेने अबथिन। देवोत्थान एकादशी दिन भगवानकेँ जगाओल जाइत छल। बाबा एहि पूजाकेँ बहुत श्रद्धा पूर्वक करैत छलाह। पीढ़ीपर रंग-बिरंगक अरिपन बना चारूकात दीप जराओल जाइत छल, आ चारि गोटे चारूकातसँ मन्त्रोच्चारक संग भगवानके ऊपर लऽ जाथि आ फेर नहुए-नहुए निच्चाँ लऽ आवथि। पूजा पाठ होइत, प्रसाद वितरण होइत। अनन्त चतुर्दशीक दिन भगवानक पूजा हमरा ओहिठाम सभ साल होइत छल। सभ अपन-अपन घरसँ अनन्त आनथि, प्रसाद आनथि आ ओकर पूजा विधि पूर्वक बाबा करैत रहथिन।

"किं मथसि, क्षिर निधि

प्राप्तो त्वंया, प्राप्तो मया।"

उपरोक्त श्लोक कहि कऽ अनन्त सबहक पूजा होइत छल। व्रह्मस्थानमे लखराम महादेवक पूजा होइत आ घरे-घरे लोक माटिक महादेव बना कऽ लऽ जाइत छल। दिन भरि पूजा होइत छल। गाममे समय-समयपर नवाह, अष्टजाम सेहो होइत छल। एहि सभसँ बालक सभमे नीक संस्कार पड़ैत छल।

हमर प्रपितामह (स्व० गुमानी मिश्र) इलाकाक प्रतिष्ठित जमीन्दार छलाह। डा. सुभद्र झाजी कहथि जे ओ जखन घोड़ापर चढ़ि कऽ कर्ज-वसूलीक हेतु निकलथि तऽ लोक घरे- घर नुका जाइत छल। परिवारक आर्थिक सामर्थ्य बढ़बैमे हुनक जबरदस्त योगदान छल।

हमर गाममे पीच सड़क छलैक, चौबटिया छलैक, जकरा ओहि समयमे 'कमाल चौक' कहल जाइत छल। कारण पुवारि टोलक कमाल नामक एक व्यक्ति ओहिठाम पानक दोकान खोलने रहथि। ताहिसंग चाह आ मधुरक दोकान स्व. सुखदेव साहुक छल। एहि दोकान सबहक अतिरिक्त ठेलापर दूटा आओर दोकान क्रमश: खूजल। कनिक्के हटि कऽ किछु आओर दोकान छल। चाह, मधुर ओतहुँ उपलब्ध छल। कतेको गोटे ओहिठाम बैस कऽ गप्प मारि समय कटैत छलाह। छोट-मोट क्लब जकाँ ओ काज करैत छल।

ओहिठामक गप्प-सप्पक विषय बदलैत रहैत छल। एकबेर जबरदस्त विवादक विषय छल जे हमर गामक नाम 'अड़ेरु डीह' छिऐ आकि 'अड़ेर डीह?' हमहूँ ओतए ई चर्च सुनैत रही। बच्चामे हमरा होइत छल जे ई सभ अपन समय व्यर्थ बरबाद कऽ रहल छथि, मुदा आब ओकर उपयोगिता बुझा रहल अछि। सही मानेमे ओ बुढ़ सभकेँ जीबाक बड़का सहारा छल।

कनियेँ दूर हटि कऽ बुध आ रवि दिन हाट लगैत छल। तरह-तरह क तीमन-तरकारी ओतए उपलब्ध रहैत छल। चारूकात किछु स्थायी दोकान सभ छल।

गाम दऽ कऽ दूटा बस चलैत छल। एकटा उजरी बस, जे साहरघाटसँ मधुबनी आ दोसर हरलाखीसँ मधुबनी जाइत छल। दुनू बस बेनीपट्टी, धकजरी, अड़ेर, रहिका होइत मधुबनी जाइत छल। ई दुनू बस जँ छुटि गेल तऽ सिवाय रिक्शाक आओर कोनो सवारी नहि छल। रिक्शा द्वारा गाम-घरक गरीब सबहक गुजर होइत छल। रिक्शो चलब धिया-पुताक मनोरंजन छल। कएटा बच्चा सभ रिक्शापर पाछासँ लटकि जाइत छल आ दूर धरि रिक्शाक पछोर करैत छल आ रिक्शाबला सभ कए बेर तंग भए कऽ झगड़ापर उतारू भए जाइत छल।

हमर गाम बस पकड़ए हेतु दूर-दूरसँ लोक अबैत छल। जमुआरी, एकतारा, नगवास आदि गामसँ लोक अड़ेर आबि कऽ बस पकड़ै छलाह। क्रमश: बसक संख्या बढ़ल।

सरकारी बस सभ चलए लागल। सीतामढ़ीबला रोडक बस चलि गेलाक बाद तऽ बसक संख्यामे बहुत वृद्धि भेल आ आब तऽ अड़ेर छोट-छीन शहर जकाँ सुविधा सम्पन्न भए चुकल अछि। सड़कक काते-काते सभ रंगक सैकड़ो दोकान खुजि गेल अछि। बैंक, ए.टी.एम., थाना, हाइ स्कूल इत्यादि सभ भए गेल। लगपासक आन गाम-सभमे पक्का रोड बनि गेल अछि आ अड़ेर चौकक महत्व बढ़िते जा रहल अछि।

गामक पूबसँ कमला नहरसँ जोड़ल धार बहैत छल। ओहिमे तखने पानि अबैत जखन जयनगरक लगपास बनल फाटकसँ पानि छोड़ल जाइक। भदवारिमे जखन चारूकात बाढ़ि आबि जाइक तऽ ओहूमे पानिक दर्शन होइत। ओहि समयमे हम सभ धारमे खेलाइत छलहुँ। चौकसँ आगाँ बनल पूल, जाहिपर लोहाक घेराबा देल छल, ओहिपर सँ बच्चा सबहक देखा-देखी कुदि जाइत रही। सचमुच ई भयाबह छल मुदा सभ बच्चा देखसीमे एना करैत छल। कएक गोटाकेँ ओहिमे चोटो लगैत रहए। पुलक निच्चाँ पानिक झड़ना छल। ओहिमे तेजीसँ पानि ऊपर-सँ-निच्चाँ खसैत छल। ओहिमे फाटक लगेबाक सेहो व्यवस्था छल, जाहिसँ जरूरत भेलापर पानिक बहाव नियंत्रित कएल जा सकए। ओहि झड़नामे अपन गामक बच्चा सबहक संगे हमहूँ कुदि जाइत रही। ओतए पानिक बहाव बहुत तेज रहैत छल आ कएबेर बच्चा सभ गोंता खेला बाद ५-६ मीटर दूर धरि बहि जाइत छल। एकबेर हमरे गामक खुरलुच्च पैघ बच्चा हमरा झड़नाक ऊपरसँ धकेल देलक, जाहिसँ हमर वामा आँखिसँ ऊपर माने भोंह लगक कपार फुटि गेल। तकर बाद जे उपरागा-उपरागी भेल से की लिखू।

गाम-घरमे कोदबासँ बँचबाक हेतु पाच कएल जाइत छल। ओहि समयमे एकरा धार्मिक क्रिया बुझल जाइत छल। शीतला माएक आराधनाक स्वरुपमे झालि बजा-बजा कऽ पचनियाँ गीत प्रसिद्ध छल। बहुत नेम-टेमसँ घरक लोक रहैत छल। कार्यक्रमक अन्तिम दिन तेल चढ़ैत छलैक। पचनियाँकेँ चढ़ौना देल जाइत छल। अखनो धरि ई दृश्य हमरा मोन पड़ैत रहैत अछि। वामा बाँहिपर दूटा नमगर-नमगर चेन्ह अखनो धरि विद्यमान अछिए। पचनियाँ सभ सरकारी कर्मचारी होइत छलाह। आब सोचाइए जे लोकक धर्मिक भावना आओर अज्ञानताक फायदा उठबैत ई सभ पैसाक उगाही करैत छलाह।

ओहि समयमे ग्रामोफोन होएब बड़का बात छलैक। हमरा गाममे प्राय: तीन गोटेकेँ ग्रामोफोन रहए। ओहिमे गीतक रेकर्ड गोल-गोल चक्का सन चढ़ा कऽ ग्रामोफोनक सुई चला दैत तऽ गाना-बजाना होइक। बच्चा सभकेँ कहल जाइक जे भोपूमे आदमी नुकाएल अछि। आ हम सभ ओहि आदमीकेँ तकैत  छलहुँ। हमरो ओहिठाम एकटा ग्रामोफोन रहैक। हम बारंबार ओकर पार्ट सभकेँ खोलि ओहिमे नुकाएल आदमीकेँ तकैत रहैत छलहुँ।

एक दिन जेना-तेना किछु पाइक इन्तजाम कऽ मधुबनी जा कऽ दूटा ग्रामोफोनक रेकार्ड कीनलहुँ, जाहिमे एकटा ससुराल फिल्मक गाना छल 'तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की नजर न लगे'। सन्दुकमे राखल ग्रामोफोनकेँ खोलि ओहिमे रेकर्डकेँ बजबैत कियो देखि लेलक। बात बाबूजी धरि पहुँचल। मुदा कनी-मनी डाँट-फटकारक बाद छोड़ि देल गेलहुँ। हमरा गाममे दाहा अबैत छलैक। बच्चा सभ ओहिमे बड़ा आनन्दित रहैत छल। हम सभ दाहाक नकल करी। करचीमे फूल आ आओर किछु खोपि दिऐ आ सभ बच्चा अपनामे संगोट कय अँगने-अँगने

घुमी आ 'दमदलियाक दाहा हुसे..' कहि-कहि संगे सभ बच्चा चिचिआइत खूब आनन्दित होइत रही।

छोट-छोट बात सभसँ बच्चामे कतेक आनन्द होइत छल, तकर ई उदारहण अछि। बरखा, थाल-कादो, रौद, पानि-बिहाड़ि इत्यादि सभमे बच्चा आनन्द ताकि लैत अछि। सच कही तऽ वाल्यावस्था ईश्वरत्वक बहुत समीप रहैत अछि। अन्दरक आनन्द यत्र, तत्र, सर्वत्र प्रस्फुटित होइत रहैत अछि। हम सभ दरबज्जापर बैसल रहितौं, सिलेट लऽ कऽ लिखैक अभ्यास करैत, कि एकटा पगला अबिते बड़बड़ाइत-

"जलखै, जलखै... ।"

किछु-ने-किछु ओकरा कियो-ने-कियो खेनाइ दऽ दैत आ ओ चलि जाइत। बहुत दिन धरि ओ क्रम चलल रहए... । बाल मोनपर जे गड़ि गेल से गड़ले अछि। अर्द्धनग्न शरीर, माटि, थाल-कादो सटने, बकर-बकर बजैत ओ अबैत-जाइत रहैत छल। कहि नहि ओ के छल आ ओकर की अन्त भेल..? भूतकालक घटनाकेँ मोन पाड़ैत अनायास ओहि शिक्षकपर ध्यान चलि जाइत अछि जे हमरा सबहक घरक सटले बच्चा सभकेँ पढ़बैत छलाह। बच्चा जँ कोनो गलती केलक, किंवा सबक नहि रटि सकल, तऽ घोरनक छत्ता विद्यार्थी-सभपर छोड़ि देथि। बाप-बाप चिचिआइत बच्चा सभक स्मरण करैत अखनो रोमांचित भए जाइत छी। सोचल जा सकैत अछि जे ओहि बच्चा सबहक की भविष्य रहल हेतइ। एक्कोटा बच्चा ओहिमे सँ नहि पढ़ि सकल। बच्चाक माए-बाप सभ अपन बच्चा सबहक कल्याणक कामनासँ मूक दर्शक बनल रहल। आ सभ बर्वाद भए गेल।

"सए वीघा खेतक हमहूँ मालिक छलहुँ।"

"ई बसुधा काहू को नाही... ।"

"ऐ पछवरिया घरवारी। ऐ पुबरिया घरवारी... ।"

ई टनक अबाज छल एकटा भिखमंगाक।

“ई वसुधा काहु को नाही... ।”

कएक बेर ओ ई बात चिचिआ कऽ कहैत। हाथमे छड़ी, आँखिपर टुटल-फुटल चश्मा, धोती पहिरने, ओकरे ओढ़ने। ओ हमरे गामसँ सटल गामक छलाह। हमर पितियौत बाबी ओही गामक रहथि। तँए हुनकासँ बेसी ओ अपेक्षा रखैत छल। ओकरा एक तम्मा चाउर देल जाइत तखने लैत, मुट्ठी भरि नहि। जौं मुट्ठी भरि देबाक कियो चेष्टा करैत तऽ ओ चिकरैत-भोकरैत चलि जाइत। मास-दू-मासमे एकबेर अबैत आ भरि तम्मा भीख भेटलाक बाद ओहि दिन दोसर घर नहि जाइत। कड़क अबाज, ब्यवहारक रुक्षता ओ भीखमांगक अन्दाज ओकरा ओहू अवस्थामे अलग पहचान दैत छल। कहि नहि की भेल जे ओकर एहन आर्थिक पतन भेल। निश्चय ओ एकटा अलग लोक छल।

स्कूलक रस्तेसँ अल्हाक ढोलकक थाप सुनाइत छलैक। होइत जे दौड़ कऽ रस्ता फानि कऽ अल्हा सुनए पहुँच जाइ। घर पहुँचते बस्ता रखितौं आ भागितौं।

माए कहथि-

“पहिने किछु खा तऽ लिअ।”

माएक गप्प सुनिते कहि दियनि-

“आबि रहल छी।”

आ अल्हा सुनए पहुँच जाइ। हमरा गाममे अल्हाक बहुत रेवाज छलैक। दुपहरिया कटबाक ई उत्तम साधन छल। भरि गामक लोक सभ जमा होइत आ अल्हाबला जोशा-जोशा कऽ ढोलकपर थाप मारैत आ गबैत अल्हा-रुदलक अनेकानेक प्रकरण सुनबैत-

“बाबू सुनो हमारी बात, एक दिन की नहीं लड़ाई, गाबत बीत जाय बारह मास... ।”

एहि तरहक पाँति सभसँ गीतमय कथानक रूचिगर छल। बच्चा सबहक हेतु ओ बहुत आकर्षण छल। बेरा-बेरी कतेको दरबज्जापर अल्हाक आयोजन होइत रहैत छल। ओ नट हमरा गाममे बहुत प्रसिद्ध भए गेल छल। गाम-घरमे सामान्यत: लोककेँ एहि तरहक मनोरंजन उपलब्ध छल। ओहि समयमे टेलीवीजन नहि रहैक। तहिया रेडियो सेहो ककरो-ककरो रहए। तँए किछु तऽ चाही।

गाममे सामान्यत: लोक भोरे उठि जाइत अछि। हमर बाबा तऽ भोरे उठि कऽ सभ काज कऽ जन अढ़ा कऽ आबि जाइत छलाह, तखनो चहल-पहल कमे रहैत छल। हमहूँ नित्य नियमित नवका पोखरिमे स्नान करी। ओहिठाम भगवान शिवक पंचमुखी मूर्ति छल, पूजा करी, जल ढारी, व्यायाम करी, तखन घर आबी। स्नान करए जाइत रस्तामे हारमोनियमपर भजन गबैत मधुर अबाज सुनएमे अबैत रहैत छल। गामसँ उत्तर-पच्छिम मन्दिरपर ओ पुजारी छलाह, सिघिंऔन गामक। हुनक स्वरक मधुरता समस्त वातावरणमे बहुत आनन्द भरि दैत छल।

सूर्योदयसँ पूर्व हमर स्नान भए जाइत छल। पोखरिमे धराधर डुबकी लगाबी। जाड़क मासमे तऽ यएहले-वएहले स्नान भए जाइत छल। गर्मीमे कनी-मनी हेलनाइ सेहो होइक । ओहि समयमे कुट्टीपर आरतीक घड़ी-घण्ट टनाटन करए लगैत छल जे बड़ीकाल धरि चलैत रहैत छल। कुट्टीक बाबा बहुत संग्रही रहथि। ओ बहुत रास गाए पोसथि। मुदा एक राति चुप्पे मन्दिरसँ समान सभ लऽ चलि गेलाह।

सन् १९६१मे सम्पूर्ण रामायण सिनेमा आयल छल। लॉडस्पीकर-पर गामक गाम प्रचार होइत- ‘देखना मत भुलियेगा, शंकर टॉकिज-मधुबनीकेँ विशाल पर्दे पर सम्पूर्ण रामायण... ।’

सम्पूर्ण रामायण देखए गाम-गामक लोक उनटि गेल छल। हमरो गामसँ कतेको देखए गेलाह। ओ सिनेमा कतेक चलल से नहि गनल जा सकैत अछि। ओहि सिनेमाक गीत सभ अखनो हम सुनैत छी तऽ स्वत: अपन वाल्यावस्थामे वापस चलि जाइत छी।

"बदलो बरसो नयन की ओर से... ।"

आ

"हम रामचन्द्र की चन्द्रकला से... ।"

ई दुनू गीत तऽ हम बेर-बेर सुनैत रहैत छी। मोन होइत अछि एकबेर ई गीत अहूँकेँ सुना दी। चलू फेर कखनो। जखन कखनो ई गीत सुनैत छी तऽ स्वत: आँखि नोरसँ भरि जाइत अछि।

'सीता-जन्म वियोगे गेल, दुख छोड़ि सुख कहिओ ने भेल।'

जगतजननी मैथिली-सीतामैयाक दुखक वर्णन करैत ई गीतमे भावनाक अद्भुत विस्फोट अछि। सामाजिक कुब्यवस्था आओर सामन्तवादी सोचक विद्रोह स्वरुप अपन सन्तान द्वारा अन्यायक प्रतिवाद करैत ई गीत-

"हे राम तुम्हारी रामायण तब तक होगी सम्पूर्ण नहीं... ।

जब तक राज्य के निर्माता, धोबी की बात में आएंगे,

भारत भविष्य की माता को धोखे से वन में ठुकराऐंगे... ।"

एहि गीतक एक-एक शब्द रोमांचित करैत अछि। कतेक अन्याय सहए पड़ल मिथिलाक ओहि यशस्वी सन्तानकेँ। खैर! चलू आगू बढ़ी... ।

जीवन यात्रामे एहन कतेको दृश्य अछि, जे मोनमे गड़ि जाइत अछि। जानकीक संग एना किए भेलनि? सोचैत रहि जाएब, मुदा उत्तर नहि भेटत। बाबूजी कएक बेर बजैत रहथि-

"विधि वाम की करनी कठिन, जस सियहि किन्है बाबरो... ।"

यद्यपि समय बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि, लोकक विचारो बदलल अछि, तथापि सीता सद्दश अनेको मैथिलानी अखनो चौबटियापर न्यायक बाट तकैत देखल जाइत छथि।

धिया-पुताक छोट-छोट बात ओकर भावी जीवनक दिशा निर्देश करैत अछि। हमरा बच्चामे खेलबाक बहुत जतन रहए। आस-पासक बच्चा सभकेँ पकड़ि-पकड़ि कऽ खेलक हेतु इकट्ठा करी। कएक तरहक खेल होइत रहए, बिनु खर्चक आ बिनु कोनो झंझटक- जेना कबड्डी, विट्ठ, फूटबॉल, बालीबॉल आदि। कबड्डी तऽ हमरा दरबज्जेपर होइत रहए। स्कूलसँ अबिते देरी खेलमे लागि जाइत रही। फूटबॉल हमरा गाममे बहुत प्रचलित छल। विष्णुपुर टोलसँ सटल खेलक मैदान छल, जाहिमे बरोबरि खेल होइत रहए। बादमे हाई स्कूल बनि गेलाक बाद ओकरे मैदानमे खेल होबए लगलै। पुरना समयमे हमर गामक फूटबॉल टीम बहुत प्रसिद्ध छल। हमर बाबूजी सेहो बढ़ियाँ खेलाइत छलाह। ओ कहथि जे खेलक चक्करमे पढ़ाइ चौपट्ट भए गेल। वाट्सन स्कूल- मधुबनीक छात्र रहथि आ गेनखेलीमे जतए-ततए चलि जाइत रहथि। हुनका कतेको मेडल सेहो भेटल रहनि। जँ आजुक समय रहैत तऽ बाते अलग रहैत। शायद हुनका अफसोच नहि करए पड़ितनि। मुदा ओहि समयमे तेहन परिस्थिति नहि रहए। कलकत्ता गेल रहथि तऽ मोहनबगानमे गेनखेलीमे चुनाव भए गेल रहनि मुदा थोड़बे दिनक बाद गाम आपस चलि अयलाह। लोक सभ बुझेलकनि जे गाममे कोन कमी अछि जे अहाँ कलकत्ता अयलहुँ, आदि-आदि अनेको बात कहलकनि। पश्चात गेनखेलीसँ हुनका ततेक परहेज देखिअनि जे जँ हम कहिओ खेलैत देखा जइतहुँ तऽ पकड़ि कऽ लऽ आबथि। जेना खेलकेँ पढ़ाइक शत्रु मानए लगलाह। परिणाम भेल जे हम खेलक मामलामे चौपट्ट भए गेलहुँ आ सदा-सर्वदाक लेल खेल-धूपसँ विरत रहि गेलहुँ।

एकबेर केना-ने-केना पैसाक जोगार कऽ बड़का गेन किनलहुँ। बच्चा सभ मिलि ओहिमे हवा भरलहुँ। आ कुट्टीक महारपर खेलए गेलहुँ। ओ जगह गामसँ कनियेँ हटल अछि। तँए मोनमे ई आशा रहए जे पकड़ल नहि जाएब, मुदा केना-ने-केना बाबूजी ओतहुँ पहुँच गेलाह, हमरा देखिते तमसाए लगलाह। खेल बन्द भए गेल। एवम् प्रकारेण हम ई सभ निठ्ठाहे छोड़ि देलहुँ आ सोलहन्नी किताबसँ चिपकए लगलहुँ। ओना, एहिसँ पढ़ाइमे फायदा भेल, मुदा खेल-धूपसँ हटि जेबाक कारण कएकटा क्षति सेहो भेल। हमरा हिसाबे ई ठीक नहि भेल, मुदा समय-समयक बात होइत अछि।

ओहि समयमे जे भेलैक से भेलैक। आब लोकक दृष्टिकोण बदलि रहल छैक। खेलक प्रति लोकक सकारात्मक रूखिसँ बच्चाक सर्वांगीण विकास होइत अछि। सामाजिक पक्ष मजगूत होइत अछि एवम् ओकर स्वभावमे सहनशीलता ओ सामंजस्य करबाक भावना बढ़ैत छैक। परीक्षामे अंक आनि लेबे सभ किछु नहि अछि। ओहिसँ हटियो कऽ जीवनक अनेक पक्ष अछि, जाहिपर ध्यान देबाक जरूरी अछि, जाहिसँ जीवन बेसी सुखी ओ शान्त रहि सकैत अछि।

ई निश्चय जे माता-पिताक मोनमे सन्तानक कल्याणक कामना रहैत अछि मुदा ओकरा अपन आकांक्षा किंवा मनोरथक प्रतिविम्ब बनेबाक प्रयास कएक बेर बच्चाक विकासमे बाधक भए सकैत अछि आ भगवानक दृष्टिमे सभ मनुक्ख अपना आपमे एक अद्भुत रचना अछि आ सभ किछु-ने-किछु विशेषता, विशेष क्षमता लऽ कऽ अबैत अछि। परिवार आओर विद्यालयक दायित्व अछि जे ओकर विशेषताकेँ बुझए आ ओहि दिशामे ओकरा विकासक समुचित सुविधा सेहो भेटए। डाक्टर, इन्जीनियर बनि जाए, एतबे जीवनक अन्तिम सत्य नहि भए सकैत अछि।

हमरा गामसँ उत्तर-पूबमे चौकसँ कनिक्के हटि कऽ एकटा मन्दिर अछि। जकरा कुट्टी सेहो कहल जाइत अछि। ओहिठाम सावनमे सभ साल झूला ऊत्साहसँ मनाओल जाइत छल। भजन-कीर्तनक गायन होइत छल। आस-पासक गामक लोक साँझमे ओहिठाम एकट्ठा होइत छलाह। कार्यक्रमक अन्तमे प्रसाद वितरण होइत छल। कुट्टीपर बाबाकेँ बहुत रास गाए छलनि। ओही गाएक दूधसँ प्रसाद बनाओल जाइत छल , जाहिमे पर्याप्त मात्रा दूध आ मुट्ठीपर चाउर दऽ कऽ पायस बनाओल जाइत छल। धिया-पुताकेँ ओ पायस खेला बाद स्वर्गक आनन्द भेटैत छल। बड़का थाड़मे पायस राखि कऽ बाँटल जाइत छल। मुदा लोककेँ पायस बहुत कम मात्रामे देल जाइत छल। मुँहमे पायस जाइते देरी लगैत जे गलि गेल। स्वादिष्ट, मधुर एवम् मनमोहक। बच्चा सभ पायस लेबाक हेतु बारंबार प्रयास करैत छल। धक्का-मुक्की होइत छल। वारिक हमरे टोलक रहैत छलाह। ओ सदिखन एहि बातक ध्यान रखैत छलाह जे अपना-लेल पर्याप्त मात्रामे पायस बाँचि जाए, मुदा लोकक आक्रमण देखि ओ फिरसान भए जाइत छलाह। एक बेर तऽ पायसक बट्टा लेने ओ पोखरिमे कुदि गेलाह आ अन्दर पानिमे जा कऽ ताबरतोर पायस सुरकए लगलाह। चारूकात गामक धिया-पुता ओ युवकगण एहि दृश्यकेँ देखैत रहि गेलाह। हमहूँ पोखरिक कातमे आन-आन बच्चा सबहक संगे एहि दृश्यकेँ देखैत रहि गेल रही, जे अखनो धरि नहि बिसराएल।

बाबूजी साइकिलसँ मधुबनी जाइत रहैत छलाह। कहिओ-काल किछु-किछु फरमाइस कऽ दियनि। एकबेर पेन अनबाक हेतु कहलियनि। सड़कक कातमे ठाढ़ भेल बड़ीकाल धरि बाट तकैत रही जे बाबूजी पेन लऽ कऽ आबि रहल छथि। जतेक साइकिल देखा पड़ैत, देखिते होइत छल जे वएह आबि रहल छथि। कतेको काल धरि बाट तकलाक बाद

बाबूजी साइकिलपर अबैत देखेलथि। थाकल, अपसियाँत भेल बाबूजीकेँ साइकिलसँ उतरिते पुछलियनि- “बाबूजी, पेन अनलहुँ?”

बजला- “जा! बिसरा गेल..!”

सुनिते देरी बहुत निराश भए गेल रही। पश्चात वौसबाक हेतु बाबूजी अपन हाथसँ घड़ी निकालि कऽ हमरा हाथमे पहिरा देलाह। शर्त ई जे घड़ी देखि कऽ पढ़ब।

मधुबनीमे सर्कस आयल छल, राति-के फोकस लाइट छोड़ल जाइत छल जे दूर-दूर धरि देखल जाइत छल। बाबूजीकेँ खुशामद कएल। हम आ बाबूजी सर्कस देखलहुँ। तरह-तरहक व्यायाम, खेल, धूप आदि ओहि सर्कसमे देखाओल गेल। ततबे नहि, बाघक संग सर्कसमैनक खतरनाक खेल सेहो देखाओल गेल छल। गाम-गामसँ सर्कस देखबाक लेल महिनो भरि लोकक ढवाहि मधुबनीमे लागल रहैत छल। सर्कस देखि कऽ स्वर्गक आनन्द भेल रहए। तरह-तरह क व्यायाम ओ खतरनाक खेल सभ एकट्ठे देखबाक एहन अवसर गाम-घरमे कम अबैत छल।

हम सभ बच्चा रही तऽ हमरा गामक एक महान संत श्रीपति स्वामीक चर्चा होइत रहैत छल। ओ गौर वर्णक ओजस्वी लोक छलाह। सन्यासी रहथि। हाथमे दण्ड-कमण्डल रहनि। माए कहथि जे गीता पढ़ैत-पढ़ैत हुनका मोनमे वैराग्य उत्पन्न भए गेल आ ओ जबानिएमे सन्यास लऽ लेलाह। ओ कहिओ काल गाम अबैत छलाह आ अपन शिष्यक ओहिठाम रहैत छलाह। गामक पुस्तकालय आओर नवका पोखरिपर लोक सबहक संग ओ धर्म चर्चा करैत छलाह। ओहि समयमे गामक प्रतिष्ठित व्यक्तिमे ओ गनल जाइत छलाह।

गामक पुस्तकालयपर तरह-तरह क खेलक सामग्री सभ सेहो लागल छल। किछु दिनक बाद एक-एककेँ ओ सभ टुटैत गेल आ क्रमश: नष्टभए गेल। पुस्ताकलयमे थोड़ेक समय धरि बहुत गहमा-गहमी रहैत

छल। अखबार, रेडियो अथबा पुस्तक सभ सेहो ओहिमे छल। १९६२ ई.मे, जे चीन युद्धक समय छल, रेडियोसँ समाचार सुनबाक हेतु लोकक भीड़ लागि जाइत छल। एहि सभमे हमर गामक स्व. विश्वम्भर झाजीक गंभीर योगदान छल। दुर्भाग्यवश ओ बेसी दिन नहि रहि सकला। सन् १९६९ मे कमे बएसमे हुनकर देहावसान भेलाक बाद ई सभ गतिविधि नष्ट भए गेल।

गाम-घरक आस-पास एक-सँ-एक प्रतिभाशाली बच्चा सभ छल। ककरो स्वर बहुत नीक छलैक तऽ कियो पहलमानीमे निपुण छल। कियो मधुर गायन आ वाद्ययंत्रक प्रति आकर्षित छल तऽ कियो किछुमे...। मुदा परिवार वा स्कूलमे एहि सबहक विकासक संभावना नगण्य छल। परीक्षामे रटि-फटि कऽ नीक अंक अनलहुँ तऽ बड़ नीक अन्यथा सभ व्यर्थ..! एहन बच्चाकेँ नकारा घोषित कऽ देल जाइत छल। परिणामत: कएटा बच्चा जे जीवनक कतेको क्षेत्रमे अग्रगामी भए यशस्वी भए सकैत छलाह,ओ विषादपूर्ण जीवन जिबय लेल विवश भेलाह। हमर गामेक एहन कएटा बच्चा छल जिनकामे गेबाक बहुत सामर्थ्य छलनि। बिना कोनो प्रशिक्षण लेने जे ओ मैथिली गीत सभ गाबथि से बुझू सुनिते रहि जइतहुँ। मुदा हुनका सभकेँ कोनो प्रकारक संरक्षण, प्रशिक्षण नहि भेल। सभ कलान्तरमे गाँजाक सोंट लगबैत अपन-अपन स्वरकेँ नष्ट कए लेलथि।

बच्चामे हमरो हारमोनियम सीखबाक इच्छा भेल। जेना-तेना पैसाक प्रवन्ध कऽ मधुबनी जा कऽ अपनेसँ एकटा हारमोनियम कीनि अनलहुँ। गाममे एक गोटे हारमोनियम बजाएब जनैत छलाह। हुनकासँ हारमोनियम सीखए लगलहुँ कि गामक बुझनुक लोक सभ हमरा बाबूजीकेँ आबि सिकाइति केलकनि। शिकाइतो एना केलकनि जे ‘ई बच्चा तऽ दुरि भए रहल छथि। केहन बढ़ियाँ पढ़ैत छलाह। आ ताहिपर

सँ ध्यान हटि गेलनि..!’ परिणाम भेल जे हम हारमोनियम सीखब छोड़ि देलहुँ। हालाँकि थोड़-बहुत जे हारमोनियम सीखि सकलहुँ, ओ अखनो अबिते अछि। मुदा ततबे...। जे कि किछु लय निकालि सकैत छी मुदा अखनो धरि हम ई नहि बुझि सकलहुँ से कोन तरहेँ हारमोनियम सीखब खराप होइत। खैर! जे हौउ, मुदा पढ़बै-लिखबैमे हमर बाबूजीकेँ बहुत रूचि रहनि, जे कि हरिदम उत्साहित करैत रहैत छलाह, आ से मात्र हमरे नहि, गामक आनो-आन बच्चा सभकेँ। बाबूजी जइले प्रेरित करैत रहथि, तकर फायदा तऽ भेबे कएल आ भइए रहल अछि। परीक्षा सभमे लगातार हमरा नीक अंक आयल। मुदा कहक माने जे परीक्षाक अंक अनबाक अतिरिक्त जीवनक अन्य आयाम थिक जकर बुझबाक, विकासक गाम-घरमे कोनो जोगार ने तहिया छल आ ने आइये भए सकल। ‘

भाग्यम फलति सर्वदा, न विद्या न च पौरुष:’

कहल जाइत अछि जे विधाता जन्मसँ पूर्वे मनुक्खक भाग्य लिखि कऽ पठा दैत छथि। हमर स्कूलक प्रयोगशाला कक्षमे उपरोक्त पाँति मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल। जीवन यात्राक क्रममे घटित नाना प्रकारक घटना एवम् अनका-अनका जीवनक तथ्य दिस देखि, सुनि ई कथन एकदम सत्य लगैत अछि। एक आदमी जनमिते जीवनक समस्त सुख-सुविधा सम्पन्न भए जाइत अछि, दोसर तरफ कतेको एहन लोक छथि जे जीवन भरि जीबाक हेतु संघर्ष करैत रहि जाइत अछि। तकर माने ई नहि जे भाग्यपर छोड़ि कऽ आदमी कर्तव्यहीन भए जाए, आ कामना करैत रहि जाए जे- जे भाग्यमे हेतै से हेतइ। प्रयास तऽ करब उचिते अछि,मुदा ई बात मानि कऽ चलू जे सभ किछु अपने मोनक नहि भए सकैत अछि। जँ अपना मोनक हो तऽ नीक आ जँ अपना मोनक नहि हो तऽ आओर नीक। कारण ओहिमे ईश्वरक इच्छा सम्मिलित रहैत अछि। बेचैन रहलासँ

बढ़ियाँ अछि जे नियतिकेँ स्वीकार कए मोनकेँ शान्त राखल जाए, कारण शान्त मोनमे विकासक अनन्त सम्भावना रहैत अछि।

बच्चाक दुनियाँ माए-बाप, काका काकी किंवा आस-पासक अन्य निकट सम्बन्धीक इर्द-गिर्द सिमटल रहैत अछि। ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वक निर्माणमे परिवार आओर पारिवारिक परिस्थितिक गंभीर प्रभाव होइत अछि। आस-पासमे रहनिहार लोक एवम परिवेश सेहो ओकरा प्रभावित करैत अछि। निश्चित रूपसँ हम एहि मामलामे भाग्यवान रही। माता-पिता आओर पितामहक बहुत सिनेह आओर समर्थन हमरा भेटल।

९ भाए-बहिनक पैघ परिवारमे कखनो ई नहि भेल जे कियो किनकोसँ कम महत्वपूर्ण छल। सभपर बरोबरि ध्यान देल गेल। हमरासँ ज्येष्ठ पाँचटा बहिन छली। हुनका लोकनिक बिआह-दान एकटा दीर्घकालीन घटना क्रम छल। १०-१२ वर्ष लगातार घरमे बिआह, कोजागरा, मधुश्रावणी, द्विरागमन सहित नाना प्रकारक विध-ब्यवहार होइत रहल। एतेक भारी पारिवारिक जिम्मेदारीक अछैत माए-बाबूजी बहुत आशावादी आओर आस्थावान छलाह। हमरा निरन्तर आगू बढ़बाक हेतु प्रेरित करैत रहलाह। गामक लोकक आओर परिवेशक सकारात्मक रूखि सेहो हमरा उत्साहित करैत रहल। ओ सभ प्रणम्य छथि, जिनकर स्मरण करैत-करैत हम ओहि गामसँ दूर रहितो सदिखन अपनाकेँ ओहीठाम अनुभव करैत रहैत छी।



# नवका पोखरि

"हर-हर महादेव।

जानह हे महादेव!

हमरा मोनमे किछु छ: पाँच नहि अछि।

तूँहीं जानह हे महादेव..!"

"अहाँकेँ जे बुझाए मुदा हम तऽ अपना भरि सभकेँ सभ दिन केलिऐ...।"

"आ हम केकरा नहि केलिऐ...?"

पंचमुखी महादेवपर जल ढारैतकाल महिला सभ आपसमे अहिना चिरौरी करैत रहैत छली...।

एक हाथ महादेवक निर्मालपर आ दोसर हाथे जल ढारि रहल महिला सभ बीच-बीचमे मौका पबिते फदका पढ़ए लागथि। जे कियो आयल, महादेवक ऊपरसँ जल ढारलक। जाड़ होइत आकि गरमी, सभ मौसम जलढरी अनवरत चलैत रहैत छल। रच्छ छल जे दुपहरियामे ई भीड़ कम भए जाइत रहैक जाहिसँ महादेव चैनक अनुभव करैत हेताह। कम-सँ-कम घरेलू तथा पारिवारिक झमेल सभ सुनबासँ तऽ मुक्ति होइते रहनि।

चारि बजे भोरेसँ नवका पोखरिपर स्नानार्थी सभ टपकए लगैत छल। ओहिमे नियमित पाँच गोटे टोलसँ अबैत छलाह जाहिमे तीन गोट महिला छली। टाइमक सोलहन्नी पाबन्द। भोरे-भोर 'हर-हर महादेव!' किछु वृद्ध नवका पोखरिक कोनपर बसल परिवारमे सँ सेहो भोरे स्नान करएबला लोक सभमे सामिल रहिते छलाह।

स्नान, ध्यान आओर आराधनाक संग महादेवक अनवरत जलढरी चलैत रहैत छल, आ ताहिसंग गपाष्टक जे आनन्द छल, तकर वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। कहि नहि, महादेवकेँ ई सभ कतेक पसिन्न पड़ैत हेतनि! खैर! मुदा लोक सभ तऽ तृप्त लगिते छलाह। सभ अपना-आपमे मगन, सभ अपने-आपमे आनन्दित।

ओहि समयमे पोखरि-इनार खुनाएब बहुत मान-मर्यादाक बात बुझल जाइत छलैक। ओना, गाममे पहिनेसँ कएटा पोखरि रहैक, जाहिमे तीनटा पोखरि तऽ हमरा सबहक टोलेमे बुझू। तकर अलाबा कुट्टी लगक पोखरि सेहो। तथापि आओर पोखरि खुनाओल गेल, तकर तात्पर्य बुझल जा सकैत अछि...।

नवका पोखरि प्राय: सभसँ बादमे बनल छल तँए ओकरा 'नवका पोखरि' कहल जाइत अछि। पोखरिक दच्छिनबरिया महारपर मन्दिरक संग रंग-रंगक फूल सभ लगाओल गेल छल। जेना- चम्पा, भालसरी, कामिनी, करबीर, अड़हुल इत्यादि। चम्पा, करबीर आ अड़हुलक बड़का-बड़का गाछ छल।

हमर पित्ती–स्व. वंगट मिश्र– नवका पोखरिक दिन-राति देख-रेख करैत छलाह। नवका पोखरिक दच्छिनबरिया महारपर भगवान शिवक पंचमुखी मूर्तिबला मन्दिर छल। नवका पोखरि तथा ओहिठामक मन्दिरक निर्माण हमर सबहक समस्त दियाद सभ मिलि कऽ केने रहथि।

मन्दिरक प्राण-प्रतिष्ठा हमर पितामह–स्व. श्रीशरण मिश्र–द्वारा भेल रहए। पोखरिक जाइठ देबएकालक खिस्सा सभ हम सभ बच्चामे सुनिऐ। सम्पूर्ण परिसरक सफाइ स्व. वंगट काका करैत छलाह। वंगट काका असगरे जीवन पर्यन्त ओहि काजकेँ पूर्ण भक्ति-भावसँ करैत रहलाह। कहिओ थाकैथ नहि। निस्वार्थ, स्वान्त: सुखाय एहि काजकेँ करैत ओ तत्कालिके समाजक नहि अपितु अखनो समाजक बीच दृष्टान्त छथि।

माघक भयानक ठंढ हो आकि जेठक तप्त रौद ओ देहपर एकटा गमछा मात्र रखैत छलाह। अपना समयक नामी पहलमान सेहो रहथि। नवका पोखरिक उत्तरबरिया महारपर अखाड़ा छल। ओहिठाम युवक सभकेँ कुश्तीक प्रशिक्षण दैत छलाह, डंड बैसक करैत छलाह। किलोक किलो आखाड़ाक माटि देहमे औंसने घामसँ तर -बत्तर भए जाइत छलाह। तकर बाद बड़का खर्ड़ासँ सम्पूर्ण परिसरकेँ अपने हाथे साफ करैत छलाह। प्रातः स्नान करएबला लोक सभकेँ तरह-तरह क हिदायत दैत रहैत छलखिन। पोखरिक पानि स्चच्छ बनल रहए, ताहि लेल सतत सतर्क रहैत छलाह। पोखरिमे साबुनसँ कपड़ा खिचनाइ मना छल, एहि लेल ऊपरमे ब्यवस्था छल। ओहि समयमे किओ-किओपोखरिमे साबुनसँ कपड़ा खींच लेथि, मुदा जँ पकड़ल गेल तऽ भगवाने मालिक।

नवका पोखरिक दिन-प्रति-दिनक देख-रेखक सम्पूर्ण दायित्व ताजीवन वंगट काका बिना कोनो स्वार्थक उठओने छलाह। घन्टो ओहि परिसरक विकासक हेतु काज करैत रहलाह। हुनका बाद ओहि स्थानक पूर्ति नहि भए सकल, भइयो नहि सकैत छल।

वंगट काकाक गाम भरिमे धाख रहनि। कोनो पर-पंचैतीमे हुनका अबस्स बजाओल जाइत रहनि। धिया-पुता कुश्ती लड़ए, खेती-बाड़ी करए, माल-जालक सेवा करए, महींस राखए जाहिसँ डोलक-डोल शुद्ध दुधक सद्यः लाभ होइक–ताहि विचारक पोषक छलाह। कए दिन हुनका बाबूसँ विवाद भए जाइन। विवादक मुद्दा रहैत छल जे पढ़ाइ-लिखाइ करब सार्थक थिक आकि निरर्थक? आब कियो सुनत तऽ हँसत। मुदा वंगट काका ऊत्साहसँ बाजथि-

“पढ़ो पूत चण्डी, जासे चले हण्डी।”

कहक सारांश- खेती-बाड़ी करू, एहिमे सद्यः लाभ अछि। पढ़ाइ-लिखाइमे कहिया की हएत से के देखलक!

गाममे कियो लुंगी पहीरलक तऽ ओ जोरदार विरोध करथि। समय बीतलाक बाद आब कहल जा सकैत अछि जे पढ़ाइ-लिखाइक समर्थन करब सही छल, विरोध गलत। गाममे वा कतहुँ जे पढ़लक-लिखलक से आगू भए गेल। ओहू समयमे किछु गोटे कहथि-

"पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नबाब।"

निश्चित रूपसँ ओ सभ अग्रसोची रहथि।

मन्दिरक आगूमे धर्मशाला छल। फूसक दरबज्जानुमा घर जे चारूकातसँ खुजल छल। कियो थाकल-ठेहियाएल पथिक ओतए रहि सकैत छलाह। ओ समस्त परिवारक अतिथि होइत छलाह। हुनकर सभटा ब्यवस्था होइत छल। हमरा मोन पड़ैत अछि जे एकबेर एकटा महात्मा आयल रहथि। ओ बाजैथ नहि। सिलेटपर लिखि कऽ अपन इच्छा, अपन मन्तव्य प्रकट करथि। हुनकासँ भेँट करक हेतु लोकक करमान लागल रहैत छल। सौंसे देह विभुति रमौने, जौरक डोराडोरि पहिरने, जटा जूट धारी भेष हुनक आकर्षणक केन्द्र रहनि।

गाम-घरमे एहन साफ-सुथरा रमणीक पार्कनुमा स्थान भेटब कठिन। ओना तऽ खेत-पथार सभ हरियर कंचन रहिते अछि, थाल-कादोक अपन स्वाद सेहो छइहे, मुदा ताहू माहौलमे जे अध्यात्मिक, सांस्कृतिक केन्द्रक रूपमे नवका पोखरिक ब्यवस्था छल आ बहुत दिन धरि जेना चलैत रहल ओ बेमिसाल कहल जा सकैत अछि।

नवका पोखरिक निर्माणमे हमरा लोकनिक परिवारक समस्त लोकक योगदान छल। नवका पोखरि परिवारक गौरवसँ जुड़ल छल। ककरो कुटुम्ब अबितथि तऽ नवका पोखरिपर हुनका अबस्स आनल जाइत।

ओहिठाम स्नान, ध्यान होइत,गप्प-सराका चलैत। धर्मशालामे बैस कऽ आराम सेहो कएल जा सकैत छल। वंगट काका नित्य दुपहरियामे

ओहिठाम धर्मग्रन्थ पढ़थि। सायंकाल भगवान शिवक आरती-पूजाक संग नाचारी सेहो गाओल जाइत छल। ओहिमे नियमित अनेको वृद्ध लोकनि भाग लेथि।

बादशाह बाबा शिव मन्दिरक पूजाक बहुत दिन धरि व्यवस्था देखैत रहलाह। सायंकालक नाचारीमे ओ हमर बाबा आओर वंगट काका तऽ रहिते छलाह जे हुनका संगे कएटा आओर वृद्ध सभ सेहो नाचारी गायनमे भाग लऽ सुर-मे-सुर मिलबैत छलाह। बाबा केतए सुतल छी औ! बालक वनमे केतए-सँ अयला, कियो नहि हुनकर सथिया...।' आदि नाचारीक स्वर अखनो हमर कानमे गुंजित होइत रहैत अछि।

नवका पोखरिक भालसरी गाछक छाहरिमे हम कतेको दिन बैस कऽ प्रतियोगिता परीक्षा-सबहक तैयारी करैत रही। कतेको दिन हम अपन मित्र सभक संग साँझक समयमे ओतए बैस गप्प-सप्प करी, भविष्यक योजना बनाबी। स्वच्छ, निर्मल वातावरणमे गाम-घरक झंझटिसँ दूर नवका पोखरिपर बैस कऽ एकटा स्वर्गीय आनन्द होइत छल। हम नियमित भोर-सॉझ ओहिठाम जाइत रही।

प्राय:काल नित्यकर्म- स्नान, पूजा आओर व्यायाम आदि ओतहि होइत छल। नित्य सायंकाल गप्प-सप्प करबाक हेतु कएक गोटा भेट जाथि। पूजा-पाठ तऽ होइते छल। संग-संग एकटा स्वस्थ मनोरंजनक तथा अध्यात्मिकताक अनुभूति सेहो ओहिठाम होइत छल।

गाममे हमरा फरिखमे जँ ककरो देहान्त होइत तऽ ओकर श्राद्धक्रर्म ओहीठाम होइत छल। हमर बाबा आओर बाबूक श्राद्ध-कर्म सेहो ओहीठाम भेल छलनि। वैदिकी श्राद्ध-क्रर्ममे बछराकेँ दागल गेल। ओकर करूण क्रन्दन अखन धरि हमरा रोमांचित करैत रहैत अछि। हमरा विचारासँ ई अमानवीय प्रयोग अछि, एहिसँ स्वर्गक सीढ़ी कियो केना चढ़त से हमर समझसँ बहार अछि? आओर जे अछि से अछि, मुदा ई

काज औअल दर्जाक क्रूड़ता अछि। एकटा जीवित प्राणीकेँ सरी धीपा कऽ दागि देब, कतहुँसँ मनुष्यता नहि थिक। नहि चाही एहन स्वर्ग, जाहि हेतु एकटा निरीह, निर्दोष जीवक संग क्रूड़ताक पराकाष्ठा कएल जाए। ओनाहू आब गाम-घरमे एकर विरोध भए रहल अछि, कारण साँढ़ द्वारा जजाति चरि गेलासँ क्षतिक संग अन्यान्य कारण सभ सेहो अछि।

नवका पोखरिसँ हमर बाबाकेँ बहुत सिनेह रहनि। जीवनक अन्तिम समय धरि ओ नवका पोखरि अबस्स जाइत छलाह। हाथमे छड़ी लेने रोडपर चलैत एक बेर हुनका एकटा साइकिलबला टक्कर मारि देने रहनि। ओहू अबस्थामे एक्के हाथे साइकिलकेँ घिसिएने-घिसिएने अपन दरबज्जापर लऽ आयल रहथि। सम्भवत: १९६७-६८ इस्वीक गप्प थिक। हमरा लोकनि नवका पोखरिपर पुस्तकालय बनेबाक हेतु बैसार केलहुँ।

गामक तमाम गणमान्य लोक सभ बैसारमे रहथि। ओहिसँ पूर्व गाममे एकटा पुस्तकालय बहुत पहिनेसँ छल, जे कोनो कारणसँ अव्यवस्थित भए गेल छल। एक समयमे ओ पुस्तकालय गामक प्रतिष्ठित संस्थान छल।

१९६२क चीन-भारत युद्धक समाचार सुनबाक हेतु ओहिठाम सौंसे गामक लोक जमा होइत छल। सटले खादी भण्डार छल ओ धिया-पुताक खेल-धूपक सामग्री सेहो छल। मुदा की भेलैक जे सभ गतिविधि कमश: ठप्प जकाँ भए गेल। नव पुस्तकालय बनेबाक बैसारमे किछु प्रवुद्ध लोकक विचार रहनि जे ओही पुस्तकालयकेँ जीर्णोद्धार कएल जाए। यद्यपि हम सभ ओहि प्रस्तावक समर्थन नहि केने रही, मुदा आब लगैत अछि जे ओ सही राय छल। नवका पोखरिक धर्मशालामे पुस्तकालयक स्थापना हेतु प्रयासकेँ आगू बढ़बैत कएकटा बैसार आओर भेल। पुरान पुस्तक सभ घरे-घरसँ ताकि-हेरि कऽ आनल गेल। पुस्तक सभ रखबाक हेतु लकड़ीक रैक बनाओल गेल।

पुस्तकालयक उद्घाटन हेतु डा. सुभद्र झाजी केँ आमंत्रित कएल गेल। ओहि समयमे सेवा निवृत भए ओ गामेमे रहए लागल रहथि। हाथमे बेंत लेने, मिरजई पहीरिने ओ पुस्तकालयक उद्धघाटन कार्यक्रममे आयल रहथि। हमरा लोकनि हुनकासँ किछु बजबाक आग्रह कएल। ओ कहला जे भाषण करब हुनका एकदम पसिन नहि अछि। तथापि ओ अपन बात कहैत पुस्तकालयक संचालनमे होमयबला व्यवहारिक असुविधा सबहक वर्णन करैत अपन जीवनक अनेकानेक अनुभवक चर्चा सेहो केलनि। ओ पुस्तकालय अल्पजीवी भेल। संसाधनक अभावमे किछुए दिनक बाद सभ किछु ठप्प पड़ि गेल।

नवका पोखरि अपना-आपमे एकटा संस्था छल। अध्यात्मिकताक संग ग्रामीण संस्कारकेँ सेहो प्रज्वलित केने रहैत छल। मुदा सभ खिस्साक कतहुँ-ने-कतहुँ आ कहुना-ने-कहुना अन्त होइते अछि। नवको पोखरिक संग सेहो सएह भेल। जहिना प्रत्येक मनुक्खक जीवनमे उत्थान-पतन होइत अछि तहिना एहि संस्थाक संग सेहो भेल। जखन वंगट काका स्वर्गीय भए गेलाह तकर पश्चात कियो एहन व्यक्ति नहि भेल जे नवका पोखरिक संग हुनका जकाँ एकरुप भए सकए। ककरो ओ रूचियो नहियेँ रहए। जाहि फुलबाड़ीमे एकटा पात नहि खसल भेटैत छल से क्रमशः कूड़ा, कर्कटसँ भरल रहए लागल।

पोखरिक देख-रेख सेहो ढील भए गेल। ततेकटा परिवार एहि पोखरि आओर लगपासक परिसरक हिस्सेदार छथि जे एकर एक स्वरमे रक्षा ओ विकास करबाक बजाय आपसेमे कचर-बचर होइत रहल। ढनमनाइत, ढनमनाइत मन्दिर खसि पड़ल। पोखरि सबहक व्यापारीकरण भए गेल। पोखरिक पानि नहाइ- जोगर नहि रहि गेल। कालान्तरमे किछु युवक लोकनिकेँ एहिपर ध्यान गेल। जाहिसँ मन्दिरक

जीर्णोद्धारक प्रयास भए रहल अछि। आओर-आओर सकारात्मक प्रयास भए रहल अछि।

मन्दिर भगवानक घर थिक, जतए लोक अपन-अपन अहंकारक विसर्जन कए ईश्वरक शरणमे पहुँचैत अछि। अस्तु एकर पुनर्निर्माण ओ रखररखावमे जँ एहि बातक ध्यान राखल गेल जे ओ परिवार विशेषक नहि अपितु समस्त आस्थावान लोकनिक वस्तु बनि सकए, तऽ निश्चय ई कल्याणकारी होएत आ नवका पोखरि फेरसँ अपन गौरव प्राप्त कए सकत।



# हमर गाम

ई मोन बड़ा विचित्र चीज अछि। कहि नहि एकर कन्तोसरमे कतेक खल होइत छैक जे तरह-तरह क गप्प-सप सालो-साल चौपेतल रहैत अछि। जखन कखनो असगर होइत छी, गाम, गामक लोक, गामक घटना, दुर्घटना सभ मोन पडैत रहैत अछि। हमरा सबहक परबाबा तीन भाए रहथि। स्व. गुमानी मिश्र, स्व. माना मिश्र ओ स्व. तुफानी मिश्र। स्व. माना मिश्रक पुत्र स्व. कुमर मिश्र संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान छलाह। सुनएमे अबैत अछि जे दड़िभंगा महाराज हुनका अपन राज पण्डित बनबाक आग्रह केलखिन जे ओ अस्वीकार कऽ देलाह। ओ स्वयं एकटा पाठशाला चलबैत रहथि। ओहि पाठशालामे सैकड़ो विद्यार्थीकेँ नि:शुल्क भोजन आ आवासक संग विद्या दान देल जाइत छल। हुनकासँ पढ़ल सैकड़ो विद्यार्थी मिथिलांचलमे हुनकर गुणगान करैत छलाह। गामक चर्चा होइते स्वर्गीय कका पण्डित चनद्रधर मिश्रक नाम सभसँ पहिने मोन पडैत अछि। ओ स्व. कुमर मिश्रक पुत्र छलाह। प्रधानाध्यापक छलाह। गाम अबितहि सभसँ पहिने हुनकासँ भेंट करी। अपन आध्यात्मिक

स्वभाव एवम विद्वतासँ निरन्तर प्रेरित करैत रहैत छलाह। गामक कतेको लोक कतेको रूपमे ध्यान रखलाह, मानलाह, मदति केलाह। आब ओ सभ एहि दुनियाँमे नहि छथि, मुदा हुनकर सभक अनुराग हम नहि बिसरि सकैत छी। ओ सभ हमरा लेल भगवाने छलाह..।

हमर गाम अड़ेर डीह। मधुबनी सँ उच्चैठ जेबाक रस्तामे रहिकाक बाद अड़ेर अबैत अछि। अड़रे चौदह टोलक गाम अछि। पहिने एक्के पंचायतमे सभटा टोल छल। अड़ेर डीह टोल, अड़ेर पुबारी टोल, विष्णुपुर, जमुआरी होइत विचरवाना धरि एक्के पंचायत छल- अड़ेर। ओकर मुखिया बहुत दिन धरि स्व. मारकण्डेय भण्डारी छलाह आ हमर बाबूजी सरपंच रहथि।

ओहि समय ग्राम पंचायतकेँ आइ-काल्हि जकाँ अधिकार नहि रहैक तथापि मुखिया-सरपंचक नाम तऽ पंचायतमे विख्यात भइए जाइत छल। पंचायतक चुनाव ओहू समयमे गहमा-गहमीसँ भरल होइत छल। हम सभ स्कूलमे पढ़ैत रही तऽ चुनाव भेल रहए। स्व. मारकण्डेय भण्डारीजी मुखियाक चुनाव जीतल रहथि। शपथ ग्रहण समारोहक क्रममे आयोजित उत्सवक प्रसंग अखनो मोनसँ मेटाएल नहि। ओहि समयमे स्व. मारकण्डेय भण्डारीजीक इलाकामे धाख छल। अड़ेरक सिनुआरा टोलमे हुनकर घर अछि। सभ तरहेँ सम्पन्नताक संग सामाजिक मान-सम्मान हुनका भरपूर भेटल छलनि। साँझकेँ अड़ेरक सड़कपर दल-बलक संगे हुनका टहलैत देखैत बनैत छल।

अड़ेर डीह टोलक इतिहास बहुत पुरान लगैत अछि। गाममे आब जनसंख्याक अनुपातमे आवासीय जमीन सीमित अछि। तँए घरेपर घरक दृश्य अछि। लोक सभ अगल-बगलमे घर बना रहल छथि। कलममे सेहो बास भए गेल अछि। सभसँ चमत्कारी विकास तऽ चौकक लगपास भेल अछि।

चौकक कातेकाते करीब-करीब दू सए दोकान खुजि गेल अछि। तरह-तरह क थौक आपूर्ति करएबला दोकान सभ सेहो खुजि गेल अछि। असलमे अड़ेर चौकसँ चारूकात रोड बनि गेल अछि। तँए इलाकाक लोक क्रय-बिक्रयक लेल ओहिठाम पहुँचै छथि।

अड़ेरमे स्टेट बैंक ऑफ इण्डियाक शाखा अछि, ओकरे एटीएम सेहो अछि। थाना अछि, पोस्ट ऑफिस अछि, सरकारी डिसपेंसरी अछि। प्राइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल तथा हाइ स्कूल अछि। संगे एकटा संस्कृत विद्यालय सेहो अछि जतए  सुनैत छी जे विद्यार्थी सभ नदारद छथि मुदा प्रमाणपत्र भेट जाइत छनि।

गाममे तीनटा पोखरि कहि नहि कहियासँ अछि। ओकर अतिरिक्त गामक बाहर नवका पोखरि, कुट्टी लगक पोखरि सेहो अछि। गामक बीचमे पोखरि हेबाक कारण बासक जगहक दिक्कत छैक।

हम सभ जखन बच्चा रही तऽ गाममे हाइ स्कूल नहि रहए। गामक विद्यार्थी सभ पढ़बाक हेतु एकतारा, लोहा वा रहिका जाइत रहथि। एकाघ-टा विद्यार्थी मधुबनी किंवा बेनीपट्टी सेहो जाइत छलाह।

कहल जाइत अछि जे एकबेर अंग्रेज सभ गामक बाटे जाइत काल पहलमान सभकेँ सौरो करैत देखलकै आ ठिठकि गेल। पुछलकै जे ई सभ डकैत छिऐ की? तऽ कियो कहलकै जे नहि सरकार! ई सभ पहलमान छथि, सुखी सम्पन्न छथि आ खेती-बारी कऽ कऽ प्रतिष्ठा पूर्वक जीबैत छथि।

अड़ेरमे कमला नदीसँ जोड़ल नहरि अछि जाहिमे पानि तखने अबैत अछि, जखन कि कमलामे बाढ़ि आबि जाइत अछि। कृषि काजमे एहि नहरिक योगदान नगण्य अछि। स्थानीय किसान सभ भगवानक कृपापर निर्भर छथि।

चिकित्साक मामलामे हमर गाम पिछड़ल अछि। कतहुँ-कतहुँसँ इलाज-बात होइए। पहिने दड़िभंगामे इलाजक नीक ब्यवस्था छल। पैसा खर्च केलापर लोककेँ औरुदा रहलापर जान बाँचि जाइत छल, मुदा आब तऽ भगवाने मालिक। बेमारी किछु, इलाज कथुक। हमर एकटा परिचितकेँ दड़िभंगामे ततेक करगर एन्टीवायोटिक देल गेल जे हुनकर दुनू किडनी फेल भए गेलनि। आब डयलिसिस करा कऽ कहुना जीबि रहल छथि। जतेक दिन ससरि जाथि।

शिक्षा ओ चिकित्साक समस्या हमरे गाम धरि सीमित नहि अछि। ओ तऽ पूरा बिहारक समस्या अछिए। तथापि लोक प्रयासरत अछि। आशा अछि, कालान्तरमे हमरो गाममे चिकित्साक बेहतर ब्यवस्था भए सकत जाहिसँ स्थानीय लोककेँ पटना/दिल्ली नहि दौड़ए पड़तैन।

हमर गामक ब्रह्मस्थानमे सालमे एकबेर नवाह अबस्स होइत अछि। ओहिठाम युवक सभ भव्य मन्दिरक निर्माण केलथि। पहिने काली पूजामे मूर्तिक स्थापना होइत छल जे पूजाक बाद भँसा देल जाइत छल। आब ओहिठाम स्थायी रूपसँ माँ कालीक भव्य मूर्ति स्थापित भए चुकल छथि। सालमे दियावातीक रातिमे भव्य आयोजन होइत अछि जाहिमे अड़ेर चौकसँ काली मन्दिर धरि नाना प्रकारक बल्ब सभ जगमग करैत रहैत अछि। काली पूजामे नाच-गानक अतिरिक्त तरह-तरह क मनोरंजनक ब्यवस्था रहैत अछि। पहिने हमरा गाममे काली पूजाक रेबाज नहि छल। लोक विष्णुपुर वा अडेर पुरवारी टोल मे भगवतीक दर्शन करैत छलाह। लगभग ४५ साल पूर्व किछु युवक सभ एकरा प्रारम्भ केलाह जे तरवनसँ एकटा परिपाटी भए गेल अछि।

अड़ेर बहुत साविक गाम अछि। कहियासँ ई पक्का रोड बनल अछि से पता नहि। आब ओही रोडकेँ थोड़ेक चौड़गर सेहो कऽ देल गेल अछि।

सीतामढ़ीक हेतु दड़िभंगा-पटनासँ जाएबला बस सभ हमरे गाम दऽ कऽ जाइत-अबैत अछि। कुल मिला कऽ देखल जाए तऽ हमर गाम छोट-छीन शहरक रूप धऽ नेने अछि। हमरा लोकनि सोदरपुरिये मानिक मूलकक साण्डिल्य गोत्रीय मैथिल व्राह्मण छी। ७ पुस्त पूर्व हमरा लोकनिक पूर्वजक बिआह  अड़रे डीह गाममे भेलनि आ हुनका ससुर गामेमे बसा देलखिन। पर्याप्त संपत्ति देलखिन। क्रमश: ओ सभ उद्यमसँ प्रचूर धन-सम्पत्ति अर्जित कए इलाकाक प्रतिष्ठित धनीकमे मानल जाइत छलाह। क्रमश: परिवारक विकास होईत गेल। जनसंख्या बढ़ैत गेल आ ओही क्रममे पारिवारिक सिरफुटौऐल सेहो बढ़ल। हम बच्चा रही तऽ कए बेर कएक गोटाक आपसी मारि-पीटिमे कपार फुटैत देखिअनि। मोकदमावाजी तऽ चलबे कएल।

ओहि समयमे अड़ेरमे नामी पहलमान भेल रहथि स्व. बच्चा झा। हुनकर शक्तिसँ दड़िभंगा महाराज प्रभावित रहथि। सुनबामे आयल जे ओ लोहाक हथकड़ीकेँ जोर लगा कए तोरि देने छलाह।

हमरा गाममे पहिने मूलत: कृषि आधारित लोकक जीवन छल। अधिकांश लोककेँ जमीन-जत्था रहए। गाम खुशहाल छल। दुपहरियाक समयमे बरोबरि अल्हा-रूदलक गीतमय कविता पाठक आयोजन ढोलकक तालपर होइते रहैत छल। एहि तरहक आयोजन आम छल।

आब समय-साल बदलल अछि। शिक्षा दिस लोकक रूझान बढ़ल अछि। लोक अपन छोट-छोट बच्चाकेँ पढ़ाइक लेल मधुबनी पठा रहल छथि। पब्लिक स्कूलक चला-चलती बढ़ल अछि। आब गाममे पढ़ल-लिखल लोकक कमी नहि, देशमे सर्वत्र हमरा गामक लोक भेट जेता। दिल्ली ओ मुम्बइमे तऽ भरल छथि।

गाममे आब धनीक लोकक भरमार भए गेल अछि। कतेको व्यक्तिकेँ आर्थिक विकास बहुत भेल। गाममे जबार होएब आम बात भए

गेल अछि। गाम लऽ कऽ भोज तऽ होइते रहैत अछि। लोक सभ कहैत रहैत छथि जे ओ सभ भोज खाइत-खाइत तंग भए गेल छथि। कतेको गोटाकेँ ब्लड-सूगर बढ़ि जाइत छनि। रसगुल्ला-छेनाक बिना तऽ कोनो भोज होइते ने अछि।

पुरना जमानामे किलोक किलो भोजन चट केनिहार लोक सबहक खिस्सा सुनैत रहैत छलहुँ मुदा आइयो-काल्हि एहन एकाध व्यक्ति हमरा गाममे मौजूद छथि। जँ अपनेकेँ धैर्य जवाब नहि दऽ दिए तऽ हुनकर भोजनक क्रममे कदमताल देखि सकैत छी। हुनका द्वारा खाएळ गेल रसगुल्लाक गिनतीक हेतु जन लगबए पड़ि सकैत अछि। भोजनोपरान्त लदबद चलैत अपन घर आपस जाइत हुनका देखि छगुन्तामे पड़ि जाएब। आखिर ओ केना जीब रहल छथि? आश्चर्य..!

एतेक भोज होइत रहैत अछि, मुदा सभजाना भोजमे अखनो स्त्रीगणकेँ सामिल नहि कएल जाइत अछि। जँ ब्यवस्थापक नीक छथि तऽ घरे-घर खएक (पारस) पहुँचा दैत छथिन, मुदा ओहो दुपहर रातिमे जखन कि कियो स्त्रीगण भोजक प्रतीक्षा मजबुरियेमे कए सकैत छथि। हम गाहे-वगाहे एहि ब्यवस्थामे सुधारक चर्च करैत छी, मुदा ग्रामीण ब्यवस्थामे सुधारक गुनजाइश सहज नहि होइत अछि। देखै छी, आगाँ की होइत अछि।

हमरा गाममे हाइ स्कूलक स्थापना हेतु इलाकाक गणमान्य लोक सभ प्रयास केलाह। ओहिमे हमर बाबूजी सेहो अत्यन्त सक्रिय रहथि। स्व. बच्चा झाक परिवारक लोक बहुत रास योगदान देलथि। स्थानीय लोक सभ सेहो योगदान केलखिन जाहिसँ हाइ स्कूलक नाम- ‘बच्चा झा जनता उच्च विद्यालय- अड़ेर’ पड़ल। किछु दिन धरि ओ विद्यालय पंचायत भवनमे चलैत छल। क्रमशः विद्यालयक अपन पक्का मकान आओर आन-आन सुविधा भेल।

गेनखेलीक हेतु हमर गाम प्रसिद्ध छल। अंग्रेजी हुकुमतक लोक सभ हमरा गामक लोक सबहक गेनखलीमे अभिरुचि देखि दंग रहथि। हमर बाबूजी सेहो एहिमे माहिर रहथि। कतेको मेडल हुनका भेटल छल। गेनखेलीसँ प्रभावित भए अंग्रेज अधिकारी सभ हमरा गामक कएक गोटाकेँ छोट-मोट नौकरी धरा देलखिन। अड़ेरक फुटबॉल टीमसँ बड़का-बड़का शहरक टीम सभ घबड़ाइत छलाह। हम सभ जखन बच्चा रही तखनो विष्णुपुरक मैदानक गेनखेलीमे बाबूजीकेँ भाग लैत देखिअनि। कए दिन हुनका पैरमे चोट लागि जाइन। चोट सबहक देशी इलाज होइत छल।

आब समय-साल बदलल अछि। गामोमे लोकक आपसी सम्पर्क क्षीण भए गेल अछि। फगुआ सन पावनिमे लोक अपन दरबज्जा ओगरने रहैत अछि तथापि गाम तऽ गामे अछि।

आशा करैत छी जे कालान्तरमे क्रमश: हमरा गाममे आओर सभ सुविधा होएत जकर कल्पना सुखद जीवनक हेतु कएल जाइत अछि। जाहि प्रकारक चौहद्दी हमर गामक अछि ताहिमे एकरा विकासक शिखर धरि पहुँचनाइ एक सफल स्वपन्न भए सकैत अछि, वशर्ते गामक युवा शक्ति रचनात्मक रूख धरैत सही दिशामे अग्रसर होथि।



# गामक स्कूल

“बालोहं जगदानन्द, नमे बाला सरस्वती
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्रयम्।”

बाबूजी नित्य एहि श्लोककेँ रटबैत कहथि जे एहिसँ संस्कार प्रवल हएत। कियो पढ़ल-लिखल लोक जँ नजरिपर पड़नि तऽ हुनकासँ भेँट जरूर करबै छलाह। पढ़ाइ-लिखाइमे कोताही हुनका एकदम पसिन नहि

छल। गाममे रामलीला होइत तऽ कएक बेर धिया-पुताक संग हमहूँ चलि जाइ, मुदा ओ पूरा सख्तीसँ एकर विरोध करथि।

माए घोर परिश्रमी छली। भोर-सँ-साँझ धरि परिवारक पालन-पोषणक व्यवस्थामे लागल रहैत छली। कएक दिन माए लग बैस कऽ खिस्सा सुनी। कहितथि जे केना बच्चामे हुनकर पढ़ाइ छुटि गेल, नहि तऽ ओ बहुत पढ़ितथि। हम सभ भाए नीकसँ पढ़ी ताहि हेतु कोनो प्रकारक व्यवधान नहि होइक से ओ सदिखन प्रयत्नशील रहैत छली।

परिवार जीवनक प्रथम पाठशाला थिक। परिवारमे जे संस्कार बच्चाकेँ पड़ि जाइत अछि ओ जीवन भरि ओकर संग रहैत अछि। हम सभ खूब पढ़ी-लिखी आओर जीवनमे प्रतिष्ठित रही ताहि हेतु हमर माए, बाबूजी निरन्तर तत्पर रहैत छलाह।

गाममे नीक दिन तका कऽ भट्ठा धराएल जाइत छल। ओनामासीधं ('ओम् नमः सिद्धं') पढ़ि कऽ विद्यारम्भ होइत छल। हमहूँ वृहस्पति दिन दरबज्जापर भट्ठा पकड़ने रही। से कनी-कनी अखनो स्मरण अछि। स्व० बच्चूबाबू (पं. अदिष्ट नारायण झा )हमरा भट्ठा धरौने छलाह। गामक ब्रह्मस्थानमे गाम भरिक लोक दूध ढारैत छल। बे र-कुबेरमे लखराम-महादेवक पूजा होइत छल। सालमे एकाध बेर नवाह सेहो होइत छल। मन्दिरक सटले बिनु घाटक एकटा पोखरि सेहो छल। ओहीठाम फूसक मड़बामे स्कूल चलैत रहए। स्कूलकेँ ग्रामीण स्व० पं. अदिष्ट नारायण झाजी (बच्चूबाबू )चलबैत रहथि। गाम भरिक छोट-छोट बच्चा सभ ओहि स्कूलमे पढ़ैत रहए। ओही स्कूलमे एकटा शिक्षक आ तीस-चालीसटा विद्यार्थी रहथि।

स्कूलमे पठन-पाठनक प्रारंभ प्रार्थनासँ आ अन्त १ सँ २० तकक खाँत पढ़लासँ होइत छल। नित्यप्रति खाँतक उच्चारण करैत-करैत पूर्णत: कण्ठाग्र भए गेल। एहिसँ गामक विद्यार्थीकेँ गणितक सबाल हल करबामे

बहुत सुविधा होइत छल। ओही स्कूलमे शनि दिनक शनिचराक परंपरा सेहो छल। शनिचरामे सभ बच्चा अपन-अपन घरसँ गुड़-चाउर अनैत छलाह। पूजा होइत, प्रसाद बाँटल जाइत आ बच्चा सभ हँसैत-बजैत घर चलि जाथि। सालमे दू किलास लोक पढ़ि लैत छल। कहक माने जे चौथा पास करएमे दू साल लगैत रहए। ओहि समयमे के.जी. आकि अपर-के.जी. आदिक प्रथा नहि छल। बच्चा सभ नीक दिन कऽ घरेपर भट्ठा धरैत छल, ककहरा सिखैत छल आ आस-पासक ब्रह्मस्थानक स्कूलमे नाम लिखा लैत छल। ब्रह्मस्थानक स्कूलमे करखनो-काल विद्यार्थीकेँ डाँट-दबार सेहो होइत रहए। जँ कहिओ कोनो बच्चा स्कूल नहि आयल तऽ ओकरा आनएलेल चारिटा विद्यार्थी घरपर पहुँच जाइत छल आ उठा-पुठा कऽ लऽ अबैत छल। कुल मिला कऽ ओहि स्कूलमे पढ़ाइ नीक होइत रहए। स्कूलक आगाँमे एकटा खोपड़ी छल जाहिमे कहिओ-काल विद्यार्थी नुका रहैत छल।

ब्रह्मस्थानक स्कूलसँ चौथा पास कऽ हम अड़ेर मिडिल स्कूल पहुँचलहुँ। ओ अपेक्षाकृत पैघ स्कूल छल। दूटा कोठरी पक्काक आ तीन वा चारिटा फूसक। पक्काबला एकटा कोठरीमे सातमा क्लासक विद्यार्थी पढ़ैत छलाह आ दोसर कोठरीमे चारि वा पाँचटा शिक्षक लोकनि रहैत छलाह। स्कूलक प्रधानाचार्यसँ सभ विद्यार्थी बहुत डराइत रहैत छल। ओ बहुत सख्त छलाह। विद्यार्थीकेँ हुनका हाथे कएक बेर पिटाइत देखि शेष विद्यार्थी भयभीत भए जाइत छल। स्कूलक दहिना भागमे करबीर फूलक एकटा झमटगर गाछ छलैक। ओकर छौकीसँ कएक बेर पिटाइक कार्यक्रम होइत छल। स्कूलक जहिना अनुशासन उत्तम तहिना पढ़ाइ-लिखाइ छल। दहिना कातमे थोड़ेक खाली जमीन छलैक, जाहिमे विद्यार्थी सभकेँ फूलक कियारी लगबैक हेतु उत्साहित कएल जाइत छल।

बच्चा सबहक आग्रहपर मास्टर साहेब खिस्सा सेहो सुनबै छलाह। मास्टर साहेब हमरे गामक छलाह। टाँग टेबुलपर, छड़ी बगलमे आ फोंफ कटैत हुनकर मुद्रा अखनो स्मरण भए जाइत अछि। विद्यार्थी सबहक हेतु ई स्वर्णिम-काल होइत छल। बच्चा सभकेँ किछु सबक दऽ देल जाइ, जाहिसँ ओ सभ व्यस्त भए जाए आ मास्टर साहेब चैनसँ फोंफ काटए लागथि। जँ बच्चा सभ हल्ला करए लागए जाहिसँ कि मास्टर साहेबक निन्न टुटि जानि, तखन देखैबला दृश्य सोझाँ आबि जाइत। छड़ीक लपलपाहटसँ क्लास सन्न भए जाइत रहए। आ मास्टर साहेब पुनश्च शयन मुद्रामे चलि जाथि।

कहिओ-काल स्कूलक छुट्टीक घन्टी विद्यार्थी स्वयं टुनटुना दइक। घन्टी सुनिते विद्यार्थी सभ धराधर बाहर झोड़ा लेने स्कूलसँ निकलि जाए। जाबे मास्टर साहेब सभकेँ पता लागनि-लागनि ताबे सभ चटिया बाहर..! छुट्टीक एहि आकस्मिक घोषणासँ आनन्ददायी की भए सकैत छल?

फूसक स्कूलमे छठा तकक क्लास चलइ। बरसातक समयमे स्कूलक टाट खसए लगैत छल। टाटक स्थित एहन जे थोड़बो प्रयाससँ ओ कखनो खसि सकैत छल। कएक दिन विद्यार्थी बर्खा होइत-काल टाटक जौरकेँ काटि दैक। जाहिसँ स्कूलक टाट खसए लगइ आ सभ विद्यार्थी 'रेनी डे' मनबए स्कूलसँ बाहर भए जाइत छल। स्कूलक हेड मास्टर बहुत सख्त आ तमसाह छलाह। कोन बातपर कतेक तमसा जेता तकर कोनो ठेकान नहि। मुदा डरक संग-संग स्कूलमे अनुशासनक वातावरण स्थापित करबामे ओ सफल छलाह। मास्टर साहेब सबहक डाँटक डरे कएक दिन विद्यार्थी लगपास खसकि जाइत छल। एकटा मास्टर तऽ पेटमे बिड्ढ काटबाक हेतु प्रसिद्ध छलाह। एहि प्रकारक दण्ड सभसँ बचए लेल कएटा विद्यार्थी धारक काते-काते किंवा पूलक तरमे समय कटैत छल आ छुट्टी भेलापर ओतहिसँ घर आपस भए जाइत छल।

हिन्दी माध्यमक स्कूलमे पाँचमासँ अंगरेजी पढ़ेबाक चेष्टा होइत छल। जँ कियो अपन नाम अंगरेजीमे लिख लेलक तऽ बड़का बात बुझल जाइत छल। आइ-काल्हि अंगरेजी माध्यमक स्कूलमे पढ़ैबला बच्चा सबहक अंगरेजीक ज्ञान देखि गामक स्कूलक स्थिति हास्यास्पद् लगैत। यद्यपि स्कूल मिथिलांचलक गढ़मे अवस्थित छल, बच्चा सभ सोल्हन्नी मैथिली भाषी छलाह, तथापि स्कूलक पढ़ाइ हिन्दीमे होइत छल। मास्टर सभ आदेश हिन्दीमे दैत छलाह। भाषाक ई विसंगति कमोवेश अखनो ओहिना अछि...! (ओना, आब तऽ अपन-अपन बच्चाकेँ गामसँ हटा रहिका लग 'फटकी'मे किंवा मधुबनीक कोनो अंगरेजी माध्यमक स्कूलमे पढ़बैत अछि।)

सांस्कृतिक कार्यक्रमक नामपर कहिओ-काल स्कूलेक बरामदापर विद्यार्थी सबहक जमावरा सेहो होइत छल। किओ-किओ विद्यार्थी ओहिमे गीत गबैत छलाह।सन् १९६२ ईस्वीमे चीन संगे भारतक युद्ध चलैत छल। ओहि समयमे बच्चा सभ राष्ट्र-प्रेमक गीत बरोबरि गबैत रहैत छलाह। ओना, स्कूलक प्रार्थनामे जय शंकर प्रसाद जीक गीत-

"हिमाद्रि तुँग श्रृँग से प्रवुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती..." होइत छल।

जखन-करवनो संगीतक कार्यक्रम होइत तऽ एकटा विद्यार्थी एकमात्र गीत गाबथि-

"चीन के विगरलबा चलनिर्यो कैसे सुधरी...।"

स्कूलक समय सालक-साल बीतैत गेल। एक क्लाससँ दोसर क्लास विद्यार्थी टपैत गेलाह। सातमाक परीक्षाक परिणाम निकलल आ विद्यार्थी सभ हाई स्कूल दिस प्रस्थान केलक।

पाँचमामे सोंहसाक लक्ष्मी नाराण महतो प्रथम स्थान अनने छलाह। लक्ष्मीजी देखबामे कारी रहथि, कण्ठी पहिरथि। पश्चात पता

लागल जे हुनका साँप काटि लेलकनि आ असमये काल कलवित भए गेलाह! ओहि समय हम सभ हाई स्कूलमे पढ़ैत रही। छठामे हम प्रथम केने रही आ सातमामे दोसर स्थान भेटल छल। सातमामे दोसर स्थान बहुत खराप लागल छल। कारण प्रथम स्थान जिनका भेलनि ओ ओहि योग्य नहि बुझाइत छली। बाबा स्कूल जा कऽ मास्टर सभकेँ उपरागो दऽ आयल रहथिन। मास्टर सभ कॉपी देखेलखिन जे अहाँक बच्चाकेँ सहीए अंक देल गेल अछि। बाबूजी कहथिन जे कोनो बात नहि, बोर्डक परीक्षामे थोड़े बेइमानी हेतइ।

गामक मिडिल स्कूलक पढ़ाइ-लिखाइ ठीक छल। सामान्यत: कोनो घन्टी खाली नहि रहैत छल। मुदा पढ़एमे कमजोर विद्यार्थीकेँ बेर-बेर कहल जाइत छल-

“पढ़बे करोगे कि मरबे करोगे।”

कएक बेर तमसा कऽ मास्टर साहेब विद्यार्थीक ऊपर छड़ीक प्रहार करैत चिकरि-चिकरि कहथि-

“ब्रेंचपर ठाढ़ कऽ देब! कान पकड़ि कऽ उट्ठी-बैसी कराएब!”

छड़ीसँ पिटनाइ तऽ आम बात छल। परिणामत: कमजोर विद्यार्थीक मनोबल आओर कमजोर भए जाइत छल आ ओ सभ कन्नी काटए लगैत छल। विद्यार्थी सबहक अन्य क्रियाकलापक रूचिक विकासक कोनो प्रयास स्कूलमे नहि होइत छल। एवम् प्रकारेण सामान्य ओ कमजोर विद्यार्थी सभ भगवाने भरोसे रहैत छलाह। चूँकि सातमामे वोर्डक परीक्षा नहि होइत छल तँए सामान्यत: विद्यार्थी सभ पास कऽ कऽ आठमामे आन ठाम हाई स्कूलमे नाम लिखा लैत छल।

मिडिल स्कूलक एकटा घटना स्मरण भए रहल अछि जे सोचि कऽ अखनो हँसी लागि जाइत अछि। स्कूलमे कोनो कोनो बात लऽ कऽ हमरे गामक एकटा विद्यार्थी स्कूलसँ भागल आ आओर विद्यार्थी सभ मास्टरक

आदेशपर ओकर पछोर केलक। स्कूलसँ निकलि कऽ दहिना कातमे एकटा इनार छलैक। ओ विद्यार्थी इनार फानि गेल आ भागल। जाहिठाम एतेक आतंक विद्यार्थीक हेतै, ताहिठाम विद्यार्थीक भविष्य सोचल जा सकैत अछि। ओ विद्यार्थी बादमे जा कऽ भगता भए गेल। बहुत दिन धरि ओकरा देहपर भगवती अबैत रहलखिन।

एकदिन मिडिल स्कूलमे क्लास चलि रहल छल। ओहिमे कएक गोटे बाजि उठल-

"डा. सुभद्र झा जा रहल छथि।"

डा. सुभद्र झाक गाम नागदहक रस्ता स्कूलक सामनेसँ जाइत छल। स्कूलक सामने नहरिपर एकटा काठक पूल छल। ओहिपर सँ डा. सुभद्र झा सपरिवार जा रहल छलाह। प्राय: पहिल बेर हम हुनका तखने देखने रहियनि। तकर बाद तऽ कएक बेर भेँट भेलाह। राँचीमे हुनकर डेरापर एक मास रहबो केलहुँ। आ ई क्रम बहुत दिन चलैत रहल। इलाकामे विद्वानक रूपमे हुनक धाख छलनि। जाबे ओ जिबैत रहलाह, नित्य किछु-ने-किछु हुनकर प्रसंगपर चर्चा चलैत रहैत छल।

मिडिल स्कूलमे सरस्वती पूजाक समयमे विद्यार्थी सभमे बेस उत्साह रहैत छल। प्रसादमे बुनियाँ आ केसौर बँटाइत छल। सरस्वती पूजाक प्रसाद नहि भेटबाक उपराग सुनू-

"पश्चिम स्कूल पूरव धार
जनता हेलि-हेलि भेला पार
मिडिल स्कूलसँ आयल हकार
पूरय गेलहुँ सेहो वेकार... ।"

उपरोक्त कविता हमरे गामक स्व. सीताकान्त झा(नाथ) क कहल छल। ओ बहुत रास एहन कविता सभ रचैत छलाह जे गाममे लोक सभ बारम्बार आपसमे दोहरबैत रहैत छल। स्कूलक पुबारि भाग धार छल।

वरसातक समयमे ओ धार पानिसँ भरि जाइत छल। स्कूलसँ बच्चा सभ बाहर निकलि कऽ धारक कातक दृश्य देखि आनन्दित होइत छल। कागतक नाव बना कऽ बच्चा सभ ओहिमे छोड़ि दैत रहैक आ पानिक प्रवाहक संग ओ कागतक नाव ऊपर-निच्चाँ होइत बहैत रहैत छल। जकरा देखि बच्चा सभ आनन्दित होथि। जाधरि ओ नाव डुमि नहि जाइत ताधरि सभ कियो देखि-देखि आनन्दित होथि।

जनवरी १९६३ ईस्वीमे हम उच्च विद्यालय एकतारामे आठमामे नाम लिखेलहुँ। एकतारा हमर गाम अड़ेर डीहसँ पाँच किलो मीटर उत्तर अछि।

ओहि समयमे एकतारा जेबाक हेतु कोनो सवारी नहि छलैक। धारक काते-काते किंवा बाधे-बाधे एकपेरिया रस्ता पएरे चलए पड़इ। ककरो-ककरो साइकिल रहैत छलइ। बेलौजाक शिक्षक एकतारा हाई स्कूलमे गामसँ स्कूल नियमित साइकिलसँ जाइत छलाह। हुनकर साइकिलक ‘टी-टों’क अवाज दूरेसँ सुनाइ पड़ैत। साइकिलमे हवा भरैबला पम्प सेहो खोंसल रहिते छलनि। धारक काते-काते ओ साइकिलसँ नियमित यात्रा करथि। गामसँ कएकटा विद्यार्थी एकतारा जाइत छलाह। सिनुआरा, विष्णुपुर, बेलौजासँ सेहो विद्यार्थी नियमित जाइत छलाह। रस्तामे ज्यौं-ज्यौं आगाँ बढ़ैत जाउ, जमुआरी, कुसमौल, विचखानसँ विद्यार्थी सभ रस्तामे भेटैत जाइत छल,यात्राक आनन्द बढ़ैत जाइत छल। कएक दिन वर्षामे रस्तामे थाल-थाल भए जाइत छल। ओहि थाल-कादोक आनन्द लैत हमरो लोकनि एकतारा पहुँची। स्कूलसँ पहिने पाण्डेजीक घर छल जे स्कूलमे चपरासी छलाह। स्कूलक छात्रावास सटले छल। छात्रावासमे चारिटा कोठली छल। एक कोठरीमे सरकारी चिकित्सालय चलैत छल। एकटामे प्रधानाध्यापक जी रहैत छलाह। छात्रावासक मेसमे गर्मीक समयमे हम कहिओ-काल खाइत रही।

आठअना लगैत छल। बेसी-काल रामझिमनीक लसलस करैत साना आ अल्लुक महिन-महिन काटल भुजिया। अधिक गर्मी भेलापर कहिओ-काल मेसमे भोजन केलाक बाद स्कूलेपर रूकि जाइत रही। पढ़ी-लिखी आ रौद खसलापर गाम विदा होइ। मुदा ई कार्यक्रम कम-काल होइक।

गर्मीक समयमे स्कूल प्रात:काले प्रारंभ होइक। हम सभ जमुआरी पहुँची, तखन सूर्योदय होइत रहैत छल। कहिओ-काल थाकि गेलापर जमुआरी महंथक पानिक चापाकलपर पानि पीवि आ आस-पास गाछक छाहरिमे विश्राम करी। संगी सभ कहितथि चलू की बैसल छी, कोनो एक दिनुका बात थोड़े छैक। चलैत रहू। जतेक सुस्ताएब ततेक आलस हएत।

प्रकृतिक ऑगनमे रचल-बसल गाम-सभसँ जाइत बच्चा सबहक आनन्दक वर्णन करब अक्षरक बसक बात नहि। पीयर-पीयर सरिसोक फूल नवकनियाँ सन सजल-धजल बाध सबहक शोभा बढ़बैत रहैत छल। दूर-दूर धरि बाधे-बाध। जमुआरीसँ आगू निकलिते विचखानासँ पूर्व जे हरियर कंचन बाधक दृश्य छल ओ अखनो धरि आँखिमे झलकैत रहैत अछि। गाहे-वगाहे किसान सभ खेत पटबए हेतु पानिक नहरि सभ बनओने छल। ओकरा सभकेँ तरपैत हाथ-पएर धोइत जखन विचखानासँ पूर्व धारपर चढ़ी तऽ यात्राक अन्त होबाक अहसाससँ भीतरिया आनन्द होइत छल। कुसमौलसँ जे विद्यार्थी सभ आबथि हुनका सभसँ ओहीठाम भेँट होइत छल। रस्ता भरि गप्प-सप्पमे समय केना बीति जाइत छल तकर पतो नहि चलए। चारि बर्ख धरि लगातार ई क्रम चलल। चारू साल हम पएरे स्कूल गेलहुँ। बाबूजी कहथि जे एहिसँ पएर मजगूत हएत। पएरे चलू। चलबाक ई आदति हमरा आइयो बनले अछि।

कएक दिन झमाझम बरखा होइतो रहैत तैयो हम सभ स्कूलसँ गाम धरि रस्ता पैरे तय करैत रही। एक बेर विष्णुपुरक हमर संगीकेँ थाल-कादोसँ भरि देने रहियनि। ओ कतेक तमसाएल छलाह। हमहूँ भीजि गेल

रही। कहुना कऽ किताव सभकेँ वस्तामे बँचओने रही। प्रकृतिक आँगनमे धुरझार बरखासँ बच्चा सभकेँ बहुत आनन्द भेटैत छल। सहयोगक भावना बढ़ैत छल। संगे चलू, रस्ताक आनन्द बढ़ि जाएत। रस्ता असान भए जाएत। बीच-बीचमे कियो सहपाठी साइकिलसँ आगाँ निकलि जाथि, तऽ लागए जेना ई कतेक भाग्यवान छथि।

गामसँ स्कूल वा आपसी यात्रामे नगवासक डाककर्मी अपन साइकिलसँ जाइत-अबैत जरूर टकराइ छलाह। ओ डाक लेबए नियमित हमर गामक पोस्ट ऑफिस अबैत छलाह। हुनको साइकिल फटकीए-सँ कटही गाडीक ध्वनि करैत आगू बढ़ैत छल। कएक दिन पंचर भए जाइत तऽ साइकिलकेँ पएरे गुड़कबैत जाइत छलाह।

एकतारा उच्च विद्यालयमे चारिटा कोठली पक्का छल आ तीनटा कोठरी कच्चा। दसमा आ एगारहमाक क्लास पक्का घरमे होइत छल। नान्हिटा जगहमे पुस्तकालय सेहो छल। बहुत प्रयास केलापर कहिओ-काल पुस्तकालयसँ पुस्तक प्राप्त करबाक सुयोग होइत छल। एकटा प्रयोगशाला कक्ष छल। प्रयोगशालामे चुनिन्दा वस्तु छल। तथापि ओहि घन्टीमे विज्ञान वर्गक विद्यार्थी सभ बेसी डराएल रहैत छल। कहिओ-काल प्रयोगशाला नामधारी कक्ष खुजैत छल। विद्यार्थी सभ कहुना कऽ विध पूरा करथि। ओहि समयमे मैट्रिकक वोर्डक परीक्षामे जँ व्यवहारिक परीक्षामे फेल तऽ पूरा परीक्षामे फेल भए जाइत छल। तँए विज्ञानक शिक्षकसँ विद्यार्थी सभ बहुत डराइत छलाह।

स्कूलक आगूमे बड़ीटा मैदान रहए जाहिमे कहिओ-काल स्काउटक परेड आ कहिओ-काल खेल-धूप सेहो होइत रहैत छल। स्काउटक ड्रेस बनाबक हेतु हम कतेक उत्साहित रही आ जखनसँ बनि कऽ आयल तऽ गामसँ स्कूल स्काउटक ड्रेसमे जाइत-काल कतेक खुश रही, एकर वर्णन करब कठिन। वार्षिक परीक्षाक बाद परीक्षा फल

निकलैक समयमे समस्त स्कूलक विद्यार्थी एकट्ठा होइत छल। प्रधानाचार्यजी परीक्षा फलक घोषणा करथि। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पाबएबला छात्रक नाम पहिने बाचल जाइक। फेर आन सबहक एक्कट्ठे घोषणा होइत जे पास वा फेल। साइते कियो फेल करइ छल। प्रथम स्थान पाबएबला विद्यार्थीक अपन क्लास आओर स्कूलमे धाख बनल रहैत छल।

ओहि समयक विद्यार्थी सबहक लेल अंगरेजी बड़ कठिन होइत छल। बहुत रास विद्यार्थी वोर्डक परीक्षामे अंगरेजीमे फेल कऽ जाइत छलाह। "इंग्लिस वैरे हम, होप नहीं है, पास करेंगे फिर मर्जी भगवान की।" ई गाना गबैत रहैत छलाह। तकर कारण जे सभटा पढ़ाइ हिन्दी माध्यमसँ होइत रहए आ पश्चात अंगरेजीक स्तर बढ़ाएब कठिन भए जाइत छल। अधिकांश लोक रट्टा मारि-मारि कऽ परीक्षा पास कऽ लैत छलाह। कएटा विद्यार्थी तऽ गणित आओर ज्यामितिक सबाल धरि घोंटि लैत छलाह। से छल आतंक वोर्ड परीक्षाक, खास कऽ अंगरेजी आओर गणित विषयक। छड़ीसँ विद्यार्थीक हाथपर पीटनाइ, ब्रेंचपर ठाढ़ केनाइ अठमा/नौमा क्लास धरि आम छल। ततबे नहि, फज्झैत करब, उल्टा-पुन्टा बात कहि देब तऽ चलिते रहैत छल। एहि सबहक नाकारात्मक असर विद्यार्थीक मनोबल पर पड़ब स्वभाविक छल। प्रत्येक क्लासमे चारि-पाँचटा विद्यार्थी बढ़ियाँ अंक अनैत छलाह, शेष विद्यार्थीक भगवाने मालिक...। ओना, स्कूलमे कोनो एहन ब्यवस्था नहि छल जे विद्यार्थीक अन्दर छिपल प्रतिभाकेँ उभारि सकए, परन्तु उन्टे ओ सभ हीन भावनाक शिकार भए जाइत छल। अखनो धरि ई मानसिकता रहिते छैक जे बच्चा डाक्टर, इंजीनियर बनि जाए, चाहे जे करए पड़ए। एहन कएटा विद्यार्थी छलाह जे विज्ञान, गणितमे लगातार फेल करथि, तथापि डाक्टर, इंजीनियर बनक अभिलाषामे लागल रहथि। आबक समयमे विद्यार्थीक

कतेको विकल्प छैक। शहरी विद्यालय सभमे तरह-तरह क विषय पढ़बाक सुविधा अछि।

ओहि समयमे खास कऽ गाम-घरमे एहन सुविधा नहि छल। जे विद्यार्थी विज्ञान विषय नहि रखलक तऽ ओकरा चौपट बुझल जाइक। परिणाम स्वरूप कएटा विद्यार्थीकेँ ज्यमिति आ गणितक सबाल सभ रटैत देखी। दिन-रातिक मेहनतक बावजूद ओहन विद्यार्थी सभ फेल भए जाइत छलाह। हम एकटा एहन विद्यार्थीकेँ जनैत छी जे सात-आठ साल धरि डाक्टरीक प्रवेश परीक्षा पास नहि कऽ सकला, मुदा डाक्टर छोड़ि किछु आओर बनबाक इच्छा नहि करथि। हारि कऽ ओ आर्ट्स रखला आ बहुत विलम्बसँ वकालत पास केलाह।

एक दिन हमरा लोकनिक क्लासमे हमर सहपाठी शिक्षककेँ कहलखिन जे ओ ज्यामितिक साध्य अंगरेजीमे सावित करताह। मास्टर साहेब अनुमति देलखिन। ओ अंगेजीमे रटि कऽ आयल छलाह। जखन वोर्डपर साध्य बनाबए लगलाह तऽ अक्षर बिसरा गेलनि आ सभ उन्टा-पुन्टा होमए लगलनि। आधारक जगह लम्ब, लम्बक जगह आधारक अक्षर सभ लिख देलखिन।

सौंसे क्लासमे ठहाका पड़ए लागल। अन्ततोगत्वा ओ नर्भस भए बैस गेलाह। विज्ञान पढ़बाक ललक आ डाक्टर, इंजीनियर बनबाक आकांक्षा अखनो अपना एहिठाम अभिभावक ओ विद्यार्थी मोनसँ गेल नहि अछि। हम पढ़ाइमे नीक करी, गणितमे  शत-प्रतिशत अंक आनी, क्लासमे प्रथम करी, एहि हेतु हमर बाबूजी निरन्तर प्रेरित करैत रहैत छलाह। हुनकर प्रेरणाक परिणाम छल जे हाइ स्कूलमे हमर परीक्षा-परिणाम निरन्तर बढ़ियाँ होइत रहल। ओहिमे स्कूलक कएटा शिक्षक सबहक परिश्रम आओर प्रयासक गंभीर योगदान छल। गणितक शिक्षक तऽ बहुत नीक छलाह।

११ वाँक स्कूलसँ वोर्ड तकक सभ परीक्षामे हम क्लासमे प्रथम स्थान प्राप्त केलहुँ। मैट्रिकक वोर्ड-परीक्षाक परिणाम जहिया आयल छल, तहिया गामक चौकसँ घर कतेक तेजीसँ हम दौड़ल रही, कतेक प्रसन्न भेल रही तकर अनुमान लगाएब कठिन। प्राय: जीवनमे एतेक प्रसन्न हम कम बेर भेल होएब। स्कूलमे चारिटा विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणी भेल, आ हमरा चारूमे सभसँ बेसी अंक छल। सत्य पूछल जाए तऽ मैट्रिकक परीक्षाकेँ एतेक महत्व नहि देबाक चाही, मुदा गाम-घरक हिसावसँ ओहि समयमे ई बड़का बात बुझल जाइत छल। कम्मे विद्यार्थी प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण होइत छल मुदा आब तऽ ई आम बात भए गेल अछि।

एकतारामे पढ़बाक क्रममे कएटा विद्यार्थी दोस्त बनि गेलाह जे अखन धरि सम्पर्केमे नहि छथि अपितु हमर जीवनक अभिन्न अंग भए गेल छथि। एहिमे नगवासक श्री नारायणजी सर्वप्रथम मोन पड़ैत छथि। जहिया हम स्कूलमे नाम लिखओने रही, तहिए ओहो नाम लिखओने रहथि। स्कूलमे बरोबरि ओ बढ़ियाँ स्थान प्राप्त केलाह । प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक केलाह पश्चात आर.के. कौलेज- मधुबनी आ एल.एस. कौलेज मुजफ्फरपुरसँ आगूक शिक्षा प्राप्त केलाह । मधुबनी हुनकर कर्म क्षेत्र रहल। पारिवारिक जीवनकेँ केना स्वर्गमय, आनन्दमय बनाओल जा सकैत अछि, तकर प्रेरणा हुनकासँ लेल जा सकैत अछि। ओ बहुत संस्कारी व्यक्ति छथि। हुनक पत्नी सेहो बहुत गुणी छथि। मधुबनीमे हुनकर घरक साफ-सफाइ आ सजाबट देखब तऽ आश्चर्यमे पड़ि जाएब। घरमे सदिखन शान्तिक वातावरण रहैत अछि। आस-पास हुनकर इष्ट-मित्र लोकनि सेहो रहैत छथिन। हुनकर दुनू पुत्र अति प्रतिभाशाली छथि। दुनू बालक उच्च योग्यता प्राप्त कए उच्च पदासीन छथि। एकटा पुत्र अमेरिकामे वैज्ञानिक छथिन, दोसर इसरोमे इंजीनियर। ५४ बर्खसँ ओ लगातार हमर सम्पर्कमे छथि। एहन उदाहरण जीवनमे कम भेटैत अछि।

“नित दिन वरसत नयन हमारे
सदा रहत पावस ऋृतु हम पे
जब से श्याम सिधारे... ।”

सूरदासक उपरोक्त भजन हमरा सभक एगारहमामे विदाइ समारोहमे हमरा सबहक वर्ग शिक्षक गेने छलाह। ओहि कार्यक्रमक हेतु हारमोनियम हम साइकिलपर लादि कऽ गामसँ लऽ गेल रही। अद्यावधि ओहि गीतक स्वर ध्यानमे अबैत रहैत अछि।

चारि सालक पढ़ाइक बाद हमरा लोकनि मैट्रिक-वोर्डक परीक्षाक उम्मीदवार भए गेल छलहुँ। स्कूलक पढ़ाइ समाप्तिपर छल। वोर्डक फार्म भरला पश्चात स्कूल जाएब बंद भए गेल। घरेपर रहि कऽ दू-तीन मास धरि पढ़ाइ केने रही। वोर्डक परीक्षाक तैयारीमे दिन-राति लागल रहलहुँ। देखिते-देखिते एकबेर फेर सभ विद्यार्थी वोर्डक परीक्षा देबाक हेतु मधुबनी पहुँचलहुँ। वाटसन स्कूलमे परीक्षाक केन्द्र छल। बाबूजी वाटसन स्कूलक विद्यार्थी छलाह। ओहि स्कूलक किछु शिक्षक सभ बाबूजीक परिचित रहथिन। देखिते-देखिते परीक्षा भए गेल, परीक्षाफल आयल, आ हम सभ स्कूलसँ निकलि कौलेज पहुँच गेलहुँ।

◌

# आर.के.कौलेज- मधुबनी

सन् १९६७ इस्वीमे उच्च विद्यालय एकतारासँ प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाक बादो नामांकनक समस्या भए गेल, कारण हमर स्कूलक परीक्षाफल थोड़ेक बिलम्बसँ आयल छल आ ताबे नीक-नीक कौलेजक नामांकन-अवधि सम्पन्न भए चुकल छल। चूँकि हमरा नीक अंक छल तँए किछु प्रयास केलाक बाद आर.के.कौलेज- मधुबनीमे प्री-साइंसमे नामांकन भए गेल। एकतारा स्कूलसँ तीनटा आओर विद्यार्थी

(नारायणजी- नवकरही, श्री नारायणजी नगवास आ श्री विजयजी नवकरही) प्रथम श्रेणीमे ओही साल हमरा संगे पास भेलाह आ सभ गोटे आर.के.कौलेज- मधुबनीमे अपन-अपन नाम लिखओलथि। हम पहिल दिन कौलेज हाफ पैन्ट आ हाफ शर्ट पहिरने चलि गेल रही। (ओहि समय हमर बएस सोलह साल छल) कौलेजमे ए.के. घटक प्रभारी प्राचार्य रहथि। हुनका बड़ कम सुझनि। बेंत नेने कहुना-कहुना थाहि-थाहि कऽ चलैत छलाह। ओहिसँ पूर्व डा. ए.के. दत्त प्राचार्य रहथि। कौलेजमे हुनकर बहुत धाख रहनि। गणितक ओ मानल विद्वान छलाह। आर.के.कौलेज- मधुबनीक प्रतिष्ठा आस-पासक क्षेत्रमे नीक छलैक। एहि कौलेजक किछु विभाग सभ बड़ नामी छल। मुदा जखन महौल गड़बड़ेलैक तऽ ई कौलेज जातीय राजनीतिक अड्डा भए गेल। परीक्षामे नकल आम बात भए गेल रहए।

पढ़ाइ-लिखाइ चौपट्ट छल। रोज किछु-ने-किछु वजह ताकि कऽ विद्यार्थी सभ हड़ताल कऽ दैत छलाह। एहन परिस्थितिमे ओहिठाम पढ़ब कतेक दुरुह काज रहल हएत ई सहजे अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। तथापि नामांकनक बाद हम आ हमर दूटा गौंआँ कौलेजक ठीक सामने एकटा निजी लॉजमे डेरा लेलहुँ। एक्के कोठरीमे तीनटा चौकी लागल छल। बीचमे थोड़बे खाली जगह रहए जाहिमे भानस-भात होइत छल। पाछूमे एकटा मन्दिर सेहो छल।

कोठरीक सामने खजूरक एकटा गाछ रहए जाहिमे ताड़ी टपकाओल जाइत छलैक, सदिखन डाबा टँगले रहैत छल। हमर रूमेट सभ टटका नीर कहिओ-काल चोरा कऽ उतारि लैत छलाह। हमर स्कलक दूटा संगी कौलेजक छात्रावासक छःसिट्टा कोठरीमे रहैत छलाह। कौलेजमे पढ़ाइ-लिखाइ भए जाइत तऽ बढ़ियाँ, नहि तऽ आओर बढ़ियाँ।

जहाँ छुट्टी भेल कि हम गाम घसकि जाइत छलहुँ। गाम आ मधुबनी छइहे कतेक दूर। गाड़ीसँ पन्द्रह-सँ-बीस मिनटक यात्रा।

किछु अध्यापक तऽ बहुत तन्मयतासँ पढ़बैत रहथि। हुनकर क्लास खचाखच भड़ल रहैत छल। मुदा सभसँ दिक्कत किछु उपद्रवी विद्यार्थी नेता सभ लऽ कऽ होइत छल जे क्लासमे घुसि जाइत आ हंगामा करैत क्लासकेँ भंग कऽ दैतत। कौलेजमे प्रवेश करिते मेधा पटलपर अंकित नाममे सँ एकटा नाम छल- स्व. विभूति नारायण झा (मुन्नु बाबू)क जे बी.ए. मैथिली (प्रतिष्ठा)मे विश्वविद्यालयमे प्रथम आयल छलाह आओर गणितमे विशिष्टता प्राप्त केने रहथि। ओ हमर ग्रामीण छलाह। हुनकर नाम पटलपर अंकित देखि बहुत प्रेरणा भेटैत छल। प्री-साइंसक क्लासमे कहिओ काल जखन हल्ला-गुल्ला बढ़ि जाइ तऽ तत्कालीन कार्यकारी प्राचार्य घटक साहेब आबि कऽ कहैत छलाह- "गरीबी भारतक आम बात अछि। तँए गरीबीमे ओकरे मदति कएल जा सकैत छैक जकरामे विशिष्टता हेतइ।" अपन बात कहि कऽ ओ चलि जाथि। पता नहि कतेक गोटाकेँ ओ असर करइ। कालैजसँ छुट्टीक बाद ओ (घटक साहेब) पएरे अपन डेरा जाइत छलाह। अर्थशास्त्राक विद्वान छलाह। सुनबामे आबए जे कनिक्को समान कीनबाक हेतु पूरा सर्वे करैत छलाह, जाहिसँ एक्को पैसा फाजिल खर्चा नहि हो।

कौलेजक गणितक व्याख्याता श्री एम.पी.सिन्हाजी बहुत लोकप्रिय छलाह। हुनकर पढ़ेबाक स्टाइल सरल तथा सुगम छल जाहिसँ विद्यार्थी सभ विषय-वस्तुकेँ बुझि जाइत छल। सबाल बना कऽ ओ पुछबो करथि जे 'बुझाया कि नहीं बुझाया।' माने बुझलिऐ आकि नहि। एक-एकटा शंकाक समाधान करितथि। बादमे सुनलिऐ जे ओ हरिद्वारमे रहए लगलाह।

साँझक टहलबाक क्रममे काली मन्दिर जाएब आम बात छल। भगवतीक भव्य स्वरुपक आराधना कए परीक्षा नीक हेबाक हेतु हमहूँ प्रार्थना करी। प्री-साइंस परीक्षा आबि गेल छल। पढ़ाइ ताहि हिसाबसँ भेल नहि रहए। मोनमे अतिशय तनाव भए गेल छल। रातियोमे कौलेजक भवनमे जा कऽ पढ़ाइ करी, कारण ओहिठाम एकान्तक संग मुफ्त बिजलीक सुविधा छल। अही तनावमे रही कि एक राति बुझाएल जेना सभ किछु हिल रहल छैक। हमरा भेल जे भुकम्प भए रहल छैक। असलमे भेल किछु ने रहए। पढ़ैत-पढ़ैत ओंघा गेल रही आ चिन्तासँ भ्रम जकाँ भए गेल रहए। अस्तु, जेना-तेना परीक्षा सम्पन्न भेल। सभसँ सुखद आश्चार्य तखन भेल जखन एहि परीक्षामे हमरा प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण हेबाक जानकारी अखबारमे प्रकाशित परीक्षाफलसँ भेटल। काली मन्दिरसँ दर्शन कए डेरा अबैत काल मिथिला टाकीजमे लॉडस्पीकरपर प्रसारित होइत गीत ‘जय जय हे जगदम्बे माता..।’ अखनो कानमे प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि।

मधुबनी शहर यद्यपि बहुत पुरान अछि मुदा एकरामे गुणात्मक विकास एतबे भेलैए जे चारुकात आवासीय कालोनी सभ बनि गेल अछि। मुदा मूलभूत ढाँचागत विकास नहि भए सकल। ओना, तकर कतेको कारण भए सकैत अछि। रोड सभ अत्यन्त कृषकाय अछि। अतिक्रमणक पराभवक कारण निरन्तर जाम लगैत रहैत अछि। शहरक भीतर तथा शहरक आस-पास दुर्गन्ध पसरल रहैत अछि। सफाइक ब्यवस्था दयनीय अछि तथापि आस-पासक लोक ओतए गामपर सँ उबि घर बना रहल छथि। जिला बनि गेलाक बाद सरकारी कार्यालयक संख्याक संग गतिविधिमे बढ़ोत्तरी अबस्स भेल अछि मुदा शिक्षा, चिकित्सा संतोषप्रद नहि हेबाक कारण मधुबनीक लोक पैघ शहर दिस मुँह तकबाक हेतु विवश छथि।

हमर ससुर मधुबनीमे घर बनओने रहथि। ओहि ठाम आवागमन बादोमे होइत रहल आ ताहिसँ प्रेरित भए हमहूँ मधुबनीमे घर बनौलौं। दिल्लीमे काज करी आ घर मधुबनीमे बनाबी से विचार बहुत लोककेँ नहि जँचतनि मुदा हमरा दृढ़ इच्छा छल आ अत्यन्त परिश्रम पूर्वक सालो लगा कऽ एहि काजकेँ पूरा कएल, मुदा मधुबनीमे घर बनाएब उपयोगी साबित नहि भेल।

आर.के.कौलेज- मधुबनीक स्थिति डमाडोल रहैत छल। संयोगसँ प्री-साइंसमे नीक परीक्षा फल आबि गेल छल। तँए आगाँक पढ़ाइ हेतु सी.एम. कालैज- दड़िभंगामे नाम लिखेलहुँ जे बहुत सही निर्णय रहल। कारण ओहिठामक पढ़ाइ-लिखाइक महौल मधुबनीसँ बहुत बेहतर छल।

## दड़िभंगा प्रवास

दड़िभंगा आबि जाएब बच्चामे बड़ीटा बात होइत छल। रहिका बाटे चुनिन्दा बस छल। ओहि बसक समय बान्हल छलैक। जँ ओ छुटि गेल तऽ बाट तकैत रहू। टेकरक चलती आइ-काल्हि जकाँ तहिया नहि छल। मधुबनी बाटे दड़िभंगा जेबाक रेबाज नहि छल। दड़िभंगा जाइत काल हवाई अड्डा अबैत छलैक। फटकीए-सँ बड़ीटा कारी, उज्जर रेघाबला झण्डा फहराइत देखाइत रहैत छल। एकाध बेर ओहिठाम छोट-छीन हवाई जहाज देखने रहिऐक। हवाई जहाज ओहि समय एतेक मात्रामे नहि चलैत छल। कहिओ काल आकाशमे हवाई जहाज देखाइत छल। बच्चा सबहक ध्यान अकस्माते ओहिपर पड़ि जाइत छल।

पहिल बेर ट्रेनपर चढ़ि कऽ दड़िभंगासँ मुहम्मदपुर गेल रही। बाबूजी संगमे रहथि। ट्रेनमे पहिल यात्राक स्मरण अखनो होइत रहैत

अछि। ट्रेन चलै तऽ डोलै, आ हमहूँ सभ डोली। डरो होइत छल। नीको लगैत छल। साधारण किलासमे उड़ीसक भरमार रहैत छल।

दड़िभंगा द्वारवंगसँ बनल अछि- माने वंगालक प्रवेश द्वार (गेट वे ऑफ बंगाल) किछु गोटक कहब जे दड़िभंगा नाम द्वार ओ भंगासँ मिलि कऽ बनल अछि। १३२६ ईस्वीमे तुगलक आक्रमणक दौरान किलाघाटक लगपास किलाकेँ तोड़ि देल गेल रहए। १८६५ ईस्वी धरि दड़िभंगा तिरहुतक भाग छल। तकर बाद ई अलग जिला बनल। १८४५ ईस्वीमे दड़िभंगा सदर, १८४६ ई.मे मधुबनी, आ १८६७ ई.मे समस्तीपुर सवडिभीजनक निर्माण भेल। १९०८ ई. धरि दड़िभंगा पटना डिवीजनक हिस्सा छल। तकर बाद ई तिरहुत डिविजनक हिस्सा भए गेल। १९७२ ई.मे मधुबनी, दड़िभंगा आ समस्तीपुर सवडिविजनकेँ अलग जिला बनि गेलाक बाद दड़िभंगा डिविजनक मुख्यालय बनि गेल।

दड़िभंगा महराज द्वारा बनाओल गेल नरगौना पैलेश, आनन्दवाग भवन, बेला पैलेशक अतिरिक्त अनेको मन्दिर, तालाव आओर बाग-बगीचा दड़िभंगा शहरकेँ ऐतिहासिक महत्व प्रदान करैत अछि। श्यामा मन्दिर आस्थाक केन्द्र बिन्दु भए गेल अछि।

मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर सिंघ संस्कृत विश्वविद्यालय सहित अनेकानेक शिक्षण संस्थान दड़िभंगाक महत्व प्रदान करैत अछि। दड़िभंगाक संगे बहुत रास स्मरण जुड़ल अछि। विद्यार्थी जीवनमे १९६८ सँ १९७२ धरि दड़िभंगामे रही। निजी लॉज सभमे डेरा रहए। एक साल धरि उमा सिनेमाक पाछाँ मिसर टोलामे डेरा रहए। ओना तऽ मकान मालिक बहुत नीक लोक रहथि आ गाहे-वगाहे मदति सेहो करथि, मुदा कोठरीमे बिजली जरैत देखि ओ चिन्तित भए जाइत छलाह। बहुत राति धरि पढ़बाक कार्यक्रम होइत छल। हुनका चिन्ता होनि जे बिजली जरा कऽ सुति गेलाह। बगलक कोठरीसँ अवाज देथि हम जोरसँ 'हूँ' कहि कऽ

ई बुझा दिएनि जे जगले छी। कएक बेर एहि तरहक जखन भए जाइ तऽ कहि देथि-

“सुति जाह, आब बहुत राति भए गेल।”

असलमे हुनका हमर चिन्ता नहि रहनि, बिजली बेसी जरि रहल अछि, ताहि चिन्तासँ फिरसान भए जाथि। कारण बिजलीक शुल्क, कोठरीक किरायामे सामिल छलैक। किछु दिन पूनम सिनेमा हॉल लग एकटा निजी छात्रावासमे रही। ओहि समयमे पूनम सिनेमा हॉल बनियेँ रहल छल। ओहिठामसँ दड़िभंगा टावर लगीच छल। दयाल भंडारक चुरा, दही आ पेरा स्मरण करैत अखनो आनन्दित भए जाइत छी।

सी.एम. कौलेजक चर्चा होइक आ प्रो. शाहीजीक नाम नहि आबए, से नहि भए सकैत अछि। शाहीजी रसायन शास्त्र विभागक अध्यक्ष छलाह। अनुशासनक मामलामे बहुत सख्त रहथि। स्कूल जकाँ सबक देल जाइक। अगिला किलासमे एक-एकटा विद्यार्थीक काज देखल जाइक, पूछताछ होइत। परिणामत: कार्बनिक रसायन शास्त्र(आर्गेनिक केमेस्ट्री)मे हम सभ पारंगत भए गेल रही आ परीक्षामे खूब अंक आयल। ओहि समयमे डा. एल. के. मिश्रजी प्रचार्य रहथि। ओ अनुशासनक हेतु प्रसिद्ध छलाह।

सी.एम. कौलेजमे पढ़ाइक स्तर ओहि समयमे बढ़ियाँ छल। यद्यपि आन कौलेज सभमे हड़ताल होइत रहैत छल, परीक्षामे नकल करबाक खबरि सेहो अबैत रहैत छल, मुदा सी.एम. कौलेज एकर अपवाद छल। तकर श्रेय प्राचार्य डा. एल. के. मिश्रजीक छलनि। अनुशासनक मामलामे ओ टस सँ मस नहि होइत छलाह। ओहि समयमे विज्ञान आओर कला संकाय सभ एक्के छल। विद्यार्थी सभ खूब मिहनतसँ पढ़ैत छलाह आ आगाँ नीक-नीक ठाम उच्चतर शिक्षण संस्थान सभमे नामांकन भए जाइत छलनि। इलाकाक समान्य परिवारसँ आबएबला विद्यार्थी सबहक हेतु ई

वरदान छल। हमहूँ बहुत परिश्रम कए इंजीनियरिंगमे प्रवेशक हेतु तैयारी केने रही। हमरा नीक अंक अएबो कएल। ओहि समय अंकक आधारपर इंजीनियरिंगमे नामांकन भए जाइत छल मुदा हम कतिपय कारणसँ बहुत नीक अंक अनलाक बादो इंजीनियरिंगमे नामांकन नहि लऽ सकलहुँ। ई बात सन् १९६९ ई.क थिक। तकर बाद सी.एम. कौलेजक भौतिक शास्त्र (प्रतिष्ठा) मे आगाँक पढ़ाइ करबाक निर्णय भेल आ अगिला दू साल धरि ओहीमे लागल रहलहुँ।डा. सी.के.आर. वर्मा भौतिकी विभागक अध्यक्ष रहथि। विद्यार्थी सभमे हुनका वैज्ञानिकक मान्यता प्राप्त रहनि। कहल जाइ जे हुनकर रिसर्च विदेशी पत्रिकामे छपैत रहनि। कुल मिला कऽ शिक्षक सभ मेहनती छलाह। सामान्यत: क्लास खाली नहि जाइत। मुदा विषय-वस्तु एहि तरहेँ नहि पढ़ाएल जाइ, जाहिसँ विद्यार्थीकेँ विषयक समझ होइक आ ओ ओहि विषयमे किछु मौलिक समझ उत्पन्न कऽ सकितए अपितु परीक्षामे अधिकाधिक अंक अननाइ मूल लक्ष्य छल। एकटा अध्यापक तऽ पूरा नोट पढ़थि आ विद्यार्थी ओकरा लिखि लिअए। कतेको प्राध्यापक सभ ट्यूशन करैत छलाह। बहुत रास विद्यार्थी ट्यूशन पढ़थि, एहि लोभ सँ जे व्यवहारिकमे खूब अंक दिया देता। मुदा किछु प्राध्यापक एकर अपवादो रहथि। ईमानदारी ओ मिहनतसँ पढ़ाइ कराबथि। चेष्टा करथि जे विद्यार्थी सभकेँ विषय-वस्तुमे पैठ होइक। मुदा ओहन शिक्षक कम रहथि। डा. एल.के. मिश्रजी केँ प्राचार्य पदसँ हटि गेलाक बाद कौलेजमे अराजकताक महौल आबि गेल। पढ़ाइ-लिखाइ चौपट। परीक्षा ब्यवस्था तऽ तेना चरमराएल जकर चर्चो करब लज्ज्यास्पद। कएक सालक पश्चात नागमणि आइ.ए.एस. अधिकारीकेँ बिहार विश्वविद्यालयक उप कुलपति बनाओल गेल, तकर बाद हालत सुधरल।

बी.एस-सी. (प्रतिष्ठा)क लिखित परीक्षा समाप्त भेला बाद गाम आबि गेल रही। गाममे हमरा बड़ नीक लगैत छल। अधिकांश पढ़ाइ, लिखाइ हम गामेमे करैत छलहुँ, आ ताहिमे कोनो असुविधा नहि होइत छल। बेसी एकान्तक प्रयोजन हो तऽ नवका पोखरिपर भालसरी गाछ तरक छाहरि लग चलि जाइत रही।

व्यवहारिक परीक्षाक तिथि घोषित नहि भेल छल। गाममे रहि कऽ कहीं परीक्षा छुटि ने जाए से चिन्ता होबए लागल छल। मुदा से नहि भेल। सही समयपर अपन ग्रामीण (जे ओही कौलेजमे विद्यार्थी रहथि)क माध्यमसँ व्यवहारिक परीक्षाक कार्यक्रमक सूचना भेटल आ सही समयपर हम ओहिमे भाग लऽ सकलहुँ। परीक्षो नीक भेल। समय-साल ओतेक खराप रहितो, बिना कोनो अतिरिक्त प्रयाससँ हमरा ठीक-ठाक अंक आयल।

बी.एस.सी. लिखित परीक्षाक दौरान हमर डेरा दोनार पोखरिक कातमे छल। ओहिमे आओर कएकटा विद्यार्थी सभ छलाह। ओहि समयमे भारत-पाकिस्तानक युद्ध चलि रहल छल। १६ दिसम्बर १९७१ कैं भारतीय फौज बंगला देश जीत चुकल छल आ ओही दिन हमर लिखित परीक्षा समाप्त भेल रहए। ई एकटा संजोग छल।

बादमे हम दूरभाष निरीक्षकक नोकरी करबाक क्रममे टेलीफोन एक्सचेंज लहेरियासरायमे प्रशिक्षण करैत आ बलभद्रपुरमे डेरा रहए। अपेक्षाकृत शान्त ओ स्वच्छ मोहल्ला छल। सामनेमे पोखरि। कनिक्के दूर हटि कऽ एक्सचेंज रहए। टेलीफोन एक्सचेंजमे अधिकाश काज हाथेसँ (मैनुअली) होइत छलैक। प्रशिक्षणक पश्चात किछु दिन जमशेदपुर, फेर सुपौलमे काज केलाक बाद ३जून १९७५ कैं डीईटी ऑफिस दड़िभंगा आबि गेलहुँ।

डीइटी ऑफिस कादिराबादमे छल। बस स्टैण्डसँ डीईटी ऑफिस पएरे आएब-जाएबक क्रममे दड़िभंगा राजक महलमे बनल ललित नारायण विश्वविद्यालसँ जेबाक रस्ता रहए। एतेक सम्पन्न महाराजक एहन दुर्गति भेल से सदिखन सोचाइत रहैत छल। ओ चाहितथि तऽ दड़िभंगाक आओर ओहिठामक लोकक आइ दोसर भविष्य रहैत।

महाराज रामेश्वर सिंहक चितापर बनल श्यामा मन्दिर सबहक श्रद्धाक केन्द्र बनल अछि आ भक्त लोकनिक निरन्तर प्रवाह ओतए देखल जा सकैत अछि।

सन् १९७७ मे जखन केन्द्रिय सचिवालय सेवामे संघ लोक सेवा आयोगक माध्यमसँ हमरा चयनक बाद गृह मंत्रालयसँ नियुक्ति पत्र भेटल तऽ हम दड़िभंगामे दूरभाष निरीक्षकक काज करैत रही। बेलामे हमर डेरा छल। हमर मकान मालिक दड़िभंगा राजमे खजांची छलाह। सोचल जा सकैत अछि जे अपन समयमे हुनकर कतेक चलती रहल होएत। तखन तऽ ओ वृद्ध भए गेल रहथि। आर्थिक हालत झूस भए गेल रहनि। मकानक एक भागमे अपने सपरिवार रहथि आ तीनटा कोठरीमे तीनटा किरायेदार छल जाहिमे एकटा हमहूँ रही। घरक पाछाँमे बड़ीटा पोखरि छल। ओहिमे कहिओ-कहिओ स्नान करए जाइत छलहुँ अन्यथा अधिकांश समय बेला पैलेशक अन्दर स्थित पानिक टोंटी रहए, ओहिमे भोरे-भोर स्नान करी। डी.ई.टी. दड़िभंगा कार्यालयमे लेखाधिकारी श्री एस.पी. चटर्जी महोदयक सरकारी आवास ओही ठाम छल। ओ भोरे-भोर स्नान-ध्यानक पश्चात नित्य पाठ करैत रहैत छलाह।

दड़िभंगाक बेला स्थित हमर डेराक कनियेँ हटि कऽ उत्तर दिस डा. लखन झाजी रहैत छलाह। कहिओ-कहिओ हुनका ओहिठाम सेहो जाइत रही। घरमे पुस्तक भरल छलनि। असगरे ओ ओहि घरमे रहैत छलाह। अपने भोजन बनाबथि, अपने सभ काज करथि।

डा. लखन झा बी.ए. पास केला बाद अक्सफोर्ड विश्वविद्यालयमे एम.ए.क हेतु आवेदन देलखिन। हुनकर साक्षात्कारसँ प्रभावित भए एम.ए. पासक डिग्री दऽ देल गेलनि आ सोझे पी.एच-डी.मे प्रवेश भेटि गेलनि।

डा. लखनजी कर्पूरी ठाकुरजीक संगी रहथिन। ओ जय प्रकाश नारायणजीक संग समाजवादी आन्दोलनसँ जुड़ल छलाह। कर्पुरी ठाकुरजी जखन बिहारक मुख्यमंत्री भेलाह तऽ हुनका (लखनजीकेँ) ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे उप कुलपति बनाओल गेल। ओ मात्र एक टका दरमाहा लैत छलाह आ खराम धोती पहीरि कऽ विश्वविद्यालय जाइत छलाह। हुनकर कार्यकालमे दड़िभंगा महाराजक बनाओल ऊँच-ऊँच देबालकेँ आधासँ अधिक ढाहि देल गेल। पता नहि, एहिसँ समाजक की उपकार भेलैक..! बादमे ओ वेलाक घर खाली कऽ अपन गाम रसियारी चलि गेलाह।

सन् १९७७ मे आपातकालक बाद केन्द्रमे जनता दलक सरकार बनल रहए। ओही समयक बाद हमरा दिल्ली जेबाक रहए। दिल्लीक नोकरीमे जाइ की नहि, से असमंजसमे रही। ओहि समयमे दिल्ली जाएब आमबात नहि छल। किओ-किओ दिल्ली जाइत छल। दड़िभंगाक नोकरी छोड़ि कऽ दिल्लीमे नोकरी करबाक निर्णय आसान नहि छल। जकरेसँ पुछिऐ, सएह तरह-तरह क तर्क लऽ कऽ उपस्थित भए जाइत छल। मुदा किछु गोटेक स्पष्ट मत रहनि जे भविष्यक दृष्टिये दिल्ली जाएब बेसी नीक रहत।

दिल्ली चलि जाएब से सोचि बेलाक डेरा छोड़ि देने रही। तकर बाद किछु दिन अपन गौंआँ आओर मित्र नारायणजीक संगे दड़िभंगा महराजक रामवाग स्थित काली मन्दिर लग बनल कोठरीमे रहलहुँ। काली मन्दिर ओहि समयमे सुन्न लगैत छल। मन्दिरमे पचाढ़ीक पुजारी छलाह।

ओ भोरेसँ भाँग घोरए लगैत छलाह। मन्दिरक आगाँमे पोखरि छल। ओहीमे स्नान कऽ भगवतीक आराधनाक सौभाग्य भेटैत छल। किछुए दिन ओहि डेरामे रहलाक बाद असमंजस दूर कऽ दिल्ली जेबाक निर्णय कएल आ दड़िभंगाक नोकरीसँ इस्तिफा दऽ देल। तदुपरान्त ३१ जुलाइ१९७७कैं दिल्ली विदा भेलहुँ। ओहि दिन दड़िभंगा टीसनपर ट्रेन पकड़ए गेल रही तऽ मेघसँ सम्पूर्ण आकाश आच्छादित छल। टिपिर-टिपिर पानि पड़ैत छल। दड़िभंगा टीसनपर हमरा गामक कै गोटे विदा करए आयल छलाह। स्वर्गीय राम नंदन मिश्र ओ हुनकर अभिन्न मित्र नुनु बच्चा सेहो स्नेहवश उपस्थित रहथि। हिनका दुनूक मित्रता गाममे के नहि जनैत छल । भोरसंगे.दुपहरिआसंगे,राति संगे,जखन देखू तखन संगे देखाइत छलाह। यद्यपि हुनका दुनूगोटेक पारिवारिक परिस्थिति ओहिसमयमे भिन्न छल मुदा हुनक मित्रता एकदम अभिन्न छल,अनुकरणीय छल । निश्चय ओसभ मित्रताक एकटा उदाहरण प्रस्तुत कए गेलाह जे अनुकरणीय अछि । कनीकालक बाद गाड़ी आबि गेल आ हम बरौनी होइत दिल्ली हेतु प्रस्थान केलहुँ।

दड़िभंगा टावरपर परुकाँ गेल रही। ४५-४६ बर्खक बादो ओहिना बुझि पड़ल। दतमैन बिकाइत, चाह बिकाइत, आस-पासमे ओहिना रिक्शा...। गन्दगीक तऽ ई हालत रहैत जे जँ भोरे-भोर टावारपर पहुँच जाएब तऽ ठाढ़ नहि रहि सकब। आस-पासक सभटा कूड़ा-करकट ओतहि जमा कएल जाइत अछि आ ओतए-सँ दस बजेक आस-पास नगरपालिकाक गाड़ीमे ओकरा ऊठाओल जाइत अछि। ओहि भयावह दुर्गन्धिसँ भगवान दड़िभंगा टावरकैं मुक्ति देथि से प्रार्थना।

घुमैत-घुमैत सी.एम. कौलेजक अन्दर सेहो गेल रही। थोड़-बहुत परिवर्तन भए गेल अछि। अन्दरमे किछु नव भवन बनि गेल अछि। कामेश्वर भवन ओहिना अछि। आस-पासक विभाग सभ जस-के-तस

अछि। काली मन्दिरक पासमे आब होटल बनि गेल अछि। चाहरदिवारीक अन्दर बहुत रास तरह- तरहक दोकान सभ खुजि गेल अछि। लोक सभ जमीन कीनि अपन घर बना लेलक अछि।

एक हिसाबे ओहिठाम एकटा जन क्रान्ति भए चुकल अछि। किछु दिन पूर्व हम ओहि होटलमे ठहरल रही। प्रात भेने मोन भेल जे दोबारा जा कऽ मन्दिर परिसरकेँ देखी। सएह केलहुँ। ओहिठाम जा कऽ भगवतीक दर्शन केला पश्चात बगलमे बनल कोठरी दिस बढ़लहुँ। ओकर स्वरूप बहुत बदलि चुकल छल। एकटा वृद्ध भीतरसँ निकललाह। बहुत उत्सुकता पूर्वक हम कहलियनि जे ३७ बर्ख पूर्व हम अहीठाम रहैत छलहुँ। मुदा हुनकर गप्प ओ गप्पक तौर-तरीका सुनि क्षुब्ध रहि गेलहुँ। हम कहलियनि जे एहि मन्दिरपर पहिने पचाढ़ीक पण्डितजी रहथि। तऽ ओ बजला- “रहल हेताह।”

फेर हम कहलियनि-

“हमहूँ एहि बगलबला कोठरीमे रहैत रही।”

ई सुनिते जेना हुनक धैर्यक सीमान टुटि गेलनि। हुनका भेलनि जे कहीं हुनकर ओहिठाम रहबाक अधिकार पर आक्रमण तऽ ने भए रहल अछि? ◌

# पहिल नौकरी

दड़िभंगामे हम पाँच सालसँ किछु बेसीए दिन रहलहुँ। तीन साल तऽ सी.एम.कौलेजमे पढ़ैत विद्यार्थी रही। ओहि समयमे विज्ञान, कला, वाणिज्य सभ संकाय मिला कऽ एक्के कौलेज छल। सी.एम.कौलेज-दड़िभंगासँ हम बी.एस-सी. (भौतिकी प्रतिष्ठा) पास केलहुँ। बी.एस-सी

केला बाद आगू की करी ई समस्या छल। परीक्षाफल बिलम्बसँ एबाक कारणे एम.एस-सी.क नामांकन सेहो बन्द भए गेल रहए। ओहुना ओहि समयमे पढ़ाइ-लिखाइक क्षेत्रमे सम्पूर्ण बिहारमे अराजकता छल। परीक्षामे नकल करब तथा नकल कराएब दुनू गौरवक गप्प छल। विद्यार्थी सबहक अभिभावक सभ पुर्जी पहुँचाबक हेतु जान लगओने रहथि। एहि परिस्थितिमे बिहारक ततेक बदनामी भए गेल छल जे सहियो विद्यार्थीक योग्यतापर प्रश्न चिन्ह लागि जाइत छल।

ओहि समयमे डाक-तार विभागमे दूरभाष निरीक्षकक पदक रिक्तिक विज्ञापन निकलल रहए। हम मधुबनी पोस्ट ऑफिसमे आवेदन-पत्रक लेल एकटा आग्रह पोस्ट कार्डपर लिखि खसा देलिऐक। किछुए दिनमे आवेदन-पत्र प्राप्त भेल। आवेदन-पत्र प्राप्त होइते भरि कऽ आइ.एस-सी.क अंक-पत्रक संग पठा देलिऐक। आइ.एस-सी.क प्राप्तांकक आधारपर ओहि पदपर चयन हेबाक रहए। हमरा आइ.एस-सी. परीक्षामे बहुत नीक प्राप्तांक छल। किछुए मासक बाद हमरा पटना टेलीफोन विभागसँ दूरभाष निरीक्षकक पदक हेतु नियुक्ति -पत्र भेटल।

नियुक्ति-पत्र भेटलाक बाद असमंजसक स्थिति बनि गेल, कारण हम बहुत महात्वाकांक्षी रही। पैघ पदपर जेबाक इच्छा रहए, ताहि हेतु तैयारीक कार्यक्रम छल, मुदा हाथमे आयल लक्ष्मीकेँ लात मारब नीक नहि, ई बात कतेको गोटे कहथि। अछताइत-पछताइत ओहि नियुक्तिकेँ स्वीकार करैत अगस्त १९७३मे राँची प्रशिक्षण हेतु चलि गेलहुँ।

राँची टेलीफोन एक्सचेंजक भूतलपर प्रशिक्षणक ब्यवस्था छल। ओहि प्रशिक्षणमे कएटा नीक-नीक विद्यार्थी सभ छलाह। कए गोटा एम.एस-सी. सेहो केने रहथि। सरकारी नौकरीक बात छलैक। सभ आँखि मूनि कऽ पकड़ि लेलक।

राँचीमे छह मासक प्रशिक्षणक बाद हमर तीन मासक व्यवहारिक प्रशिक्षण-लहेरियासराय टेलीफोन एक्सचेंजमे भेल। ओहि क्रममे बलभद्रपुर, लहेरियासरायमे एकटा विद्यार्थीक संग डेरा लेने रही। एक दिन ओ विद्यार्थी गाम चलि गेलाह आ हमरा कोठरीक कुंजी नहि रहए। लातसँ ततेक जोरसँ केबाड़मे धक्का मारलिऐ जे वो टुटि गेल। बादमे मकान मालिक नाराजगी व्यक्त केलाह, मुदा बात जेना-तेना शान्त भए गेल।

ओहि प्रशिक्षणक दौरान फगुआमे हम गाम अयलहुँ आ २-३ दिन फाजिल रहि गेलहुँ। फोन विभागमे झाजी इन्जीनियरिंग सुपरवाइजर रहथि। वएह हमर हाकिम छलाह। हमरा डराबए लगलाह। की जे प्रशिक्षण अधूरा रहि गेल, ब्रेक लागि गेल। मुदा असलमे किछु नहि भेल। हमर प्रशिक्षण समयसँ पूरा भेल आ हम जमशेदपुरमे ३ मई १९७४ क पदभार ग्रहण कएल।

ओहीठाम एकटा आओर संगी पदभार ग्रहण केलथि। सरकारी काज करबाक हमरा किछु अनुभव नहि छल। एसडीओ फोन्स बड़ा करगर अधिकारी रहथि। अपन डाँटसँ अधीनस्थ सबहक सीटीपीटी गुम केने रहथि। जमशेदपुर ओहि समयमे बिहारक सुव्यवस्थित आओर साफ-सुथरा शहरमे मानल जाइत छल। छुट्टीक दिन शहरमे कतहुँ-कतहुँ घुमबाक कार्यक्रम बरोबरि बनबैत रही। साक्ची ओ विष्टुपुरमे तरह-तरहक दोकान सभ छलैक। जुबली पार्कमे घुमब आनन्ददायी छल। एक दिन मौका पाबि कऽ हम टाटा स्टीलक अन्दरसँ देखबाक अवसर सेहो प्राप्त कएल। अति उच्च तापक्रमपर लोहाकेँ गला कऽ द्रव्य रूपेमे एक ठाम-सँ-दोसर ठाम जाइत देखलहुँ। तरल लोहा भयानक रूपसँ लाल रहैत छल।

हमर रूमेट सिगरेट पीबैत छलाह। शुरूक एक मास तऽ कहुना कऽ हुनका संग बितौल मुदा आगाँ बहुत दिन धरि हुनका संग चलब सम्भव नहि बुझाएल। एक दिन हम हुनका स्पष्ट कहलियनि जे या तऽ अहाँ सिगरेट छोड़ू नहि तऽ अहाँकें हम छोड़ि अलग डेरा लऽ लेब। ओ सिगरेट नहि छोड़ि सकला आ हम अलग डेरा लऽ लेलहुँ।

जमशेदपुरमे रहैत केन्द्रीय सिभिल सर्भिसेजक (संघ लोक सेवा आयोगक) परीक्षा हेतु छुट्टीक काज छल। अधिकारीगण छुट्टी मना कऽ देलाह। अन्तमे हम बिना अनुमतियेक ओतए-सँ घसकि गेलहुं आ करीब एक मासक बाद परीक्षा दऽ कऽ आपस अयलहुँ।

एसडीओ फोन्सकें मोटर साइकिलपर अबैत देखलियनि, हुनका देखिते देबाल फानि कऽ एकटा दोकानपर बैस गेलहुं। मोनमे तरह-तरह क आशंका रहए। हम बाटे तकैत रही कि हुनकर बुलाबा आबि गेल आ तरह-तरह क उपदेश ओ देलाह।

एवम् प्रकारेण लगभग आठ मास धरि ओतए नौकरी केलहुँ, पश्चात बाबूजीक प्रयाससँ हमर स्थानान्तरण जमशेदपुरसँ डीइटी दड़िभंगाक अधीन भए गेल। मुदा एसडीओ फोन्स कार्यमुक्त करएमे नाकर-नुकुर करैत छलाह। हम जल्दीसँ जल्दी दड़िभंगा आबि कार्यभार ग्रहण करए चाही। हमर सहकर्मीक सेहो स्थानान्तरण दड़िभंगे भेल रहनि। ओ पहिने कार्यमुक्त भए ओतए पहुँच गेल छलाह। एसडीओ फोन्स हमरा लटकौने छलथि।

प्रात:काल भोरे-भोर हम डीइटीक डेरापर पहुँचलहुं। ओहीठाम लेखाधिकारी सेहो रहैत छलाह। हम हुनका सभटा बात कहलियनि। ओ बहुत सहृदय व्यक्ति छलाह। हमरासँ पुछलनि जे आखिर अहाँक बदली केना भेल? तऽ कहलियनि जे बाबूजी पटना जा कऽ किछु प्रयास केलाह जाहिसँ हमर स्थानान्तरण दड़िभंगा डिवीजन भेल अछि। हमरा दड़िभंगा

जाएब बहुत जरूरी अछि। सभ बात सुनि ओ आश्वासन देलाह जे अहाँके आइ अबस्स कार्यमुक्त कए देल जाएत। भेबो कएल सएह। कार्यालय खुजिते ओ एसडीओ फोन्सकेँ फोनपर आदेश देलखिन जाहिसँ ओ तिलमिला गेलाह। मुदा हमरा ओहि दिन ओहिठामसँ कार्यमुक्त कए देल गेल।

साँझमे बससँ दड़िभंगा विदा भेलहुँ। दड़िभंगा पहुँचलापर पता लागल जे दुइएटा जगह खाली छैक। एकटा जयनगरमे आ दोसर सुपौलमे। जयनगरक खाली पदपर हमर संगी अपन जोगार लगा लेलनि। आब रहि गेल सुपौल। कोनो दोसर उपाय नहि देखि हम सुपौलक रस्ता पकड़लौं। सहरसा बाटे सुपौल ट्रेनसँ जाएब ओहि समयमे बेस टेढ़ काज छल। तथापि ओतए पहुँच कार्यभार ग्रहण कएल। छोट-छीन टेलीफोन एक्सचेंज छल जाहिमे किछु ऑपरेटर, एकटा मेकेनिक पहिनेसँ कार्यरत छल। हम ओतए वरिष्ठतम व्यक्ति छलहुँ। सहरसामे उच्च अधिकारी बैसैत छलाह।

सुपौल छोट-छीन नीक शहर बुझाएल। सुपौलक दही आ पेरा बड़ नामी छल। ओहिठामक माड़वाड़ी बासाक उत्तम ओ स्वादिष्ट भोजनक स्मरण कए अखनो जीहमे पानि आबि जाइत अछि। ओहिठाम रेलबे स्टेशनक ठीक सामने लाल कोठीक एकटा कोठरीमे हम आ पोस्टमास्टर डेरा लेने रही। पोस्ट मास्टर बहुत कर्मठ छलाह। भोरे जाथि तऽ देर राति थाकल-झमारल आबथि। हुनका संगे तकर बाद हँसी-ठठा होइत छल।

ओही डेरामे रहैत हमरा पोसुआ कुकुर काटि लेलक आ दोसरे दिन ओ कुकुर मरि गेल। आब तऽ बड़ चिन्तामे पड़ि गेलहुँ। नमगर-नमगर चौदहटा सूई पेटक अँतरीमे लगबए पड़ल। एक दिन सुई लगबिते काल एकटा घटक आबि गेलाह। सूई लगबैत देखि लेलाह से चिन्तामे पड़ि गेलहुँ। ओना, कोनो कारणसँ ओ कथा नहि पटल। किछु दिन बाद हमर

ससुर अपन अनुज ओ एकटा आओर व्यक्तिक संग बिआह क क्रममे हमरासँ गप्प करए टेलीफोन एक्सचेंज- सुपौल आयल रहथि। हुनका सभकें यथासम्भव स्वागत कएल। बिआहक आहटसँ मोनमे प्रसन्नता छल। जे जे पुछला, सभ उत्तर देलियनि। साँझमे हमर पितिया ससुर डेरापर सेहो अयलाह। डेराक हालत तऽ वर्णन जोग नहियेँ छल। ऊपरसँ हमरा गंजी मइल छल से बात हमर ससुरकें पता लगलनि। ओ चिन्तामे पड़ि गेलाह, कारण ओ स्वयं बहुत साफ-सुथरा रहैत छलाह।

किछु दिनक बाद हमर स्थानान्तरण सुपौलसँ दड़िभंगा डीइटी ऑफिसमे भए गेल। ३ जून १९७४ क हम डीइटी दड़िभंगाक कार्यालयमे पदभार ग्रहण कए जखन गाम पहुँचलहुँ तऽ दरबज्जापर अलगे प्रकारक गहमा-गहमी पसरल छल। हमर संगी आओर मित्र- लाल बच्चा (स्व. प्रो. विष्णु कान्त मिश्र) कहला जे हमर बिआह ठीक भए गेल अछि। क्रमश: सभटा जानकारी भेटल। प्रात भेने माने ४ जून १९७५ कें हमर बिआह छल। कोनो जानकारी नहि हेबाक कारण हम ओही दिन कार्यालय जा एकाएक बिआहक हेतु छुट्टीक आवेदन देलिऐक आ तखन रातिमे आठ बजे दड़िभंगासँ गाम अयलहुँ...।

कार्यालयमे ई समाचार बिजलौका जकाँ पसरि गेल। चारूकातसँ वधाइ दैत सहकर्मी लोकनि हमर आनन्दकें कएक गुना बढ़ा देलाह। गाम पहुँचते बिआहक तैयारीमे लागि गेलहुँ। गाड़ी सभ लागल छल। बरियाती तैयार छल आ बरक प्रतीक्षा छल। बरकें अबिते धराधर विध सभ पूरा कएल गेल। हमर पितिया ससुर हथधरीक हेतु आयल रहथि। ओ बिच्चे दरबज्जापर धोती-कुर्ता पहिरने हमर प्रतीक्षामे बैसल रहथि। आओर-आओर लोक सभ दरबज्जापर मुस्तैद छलाह। हमर मित्रगण सभ सेहो मौजूद छल। हथधरी भेल। बरियाती सभ चटपट गाड़ीमे बैसल। कुल

१९ गोट बरियाती छल जे ओहि समयक हिसाबे बेसीए छल। नहि तऽ पहिने पाँच-सातटा बरियाती पर्याप्त होइत छल।

बरियातीक संख्या लऽ कऽ जे अपना समाजमे रेबाज बदलल अछि से दुर्भाग्यपूर्ण, कारण सैकड़ोक तादादमे गाम-गामसँ बरियातीकेँ लादि कऽ कन्याक पिताक माथपर पटकि देब कोनो वुद्धिमानी नहि कहल जा सकैत अछि। व्यर्थक परेशानीक अलाबा आर्थिक क्षति सेहो होइत अछि, जकर कोनो ककरो लाभ नहि।..ओहि समयमे सीमित संख्यामे बरियाती जाइत छल तऽ ओकर शोभे अलग रहैत छलैक। एक-एक व्यक्तिपर पर्याप्त ध्यान देल जाइत छल। बरियाती सबहक व्यक्तिगत परिचय होइत छल। आब तऽ ढाकक ढाक बरियाती जाइत छथि आ दुपहरिये-रातिमे खुआ-पिआ कऽ विदा कए देल जाइत छनि।

पण्डौल डीह बहुत ऊँचमे बसल अछि। टोलक सामनेक जमीन सेहो घराड़ीमे उपयोग कएल जा सकैत अछि। एहन अइल-फइल ओ ऊँच घराड़ी कम गाममे देखल जाइत अछि। पण्डौल डीह ओ भवानीपुरक बीचक एकपेरिया रस्तामे उरसामा डीह अबैत अछि। कहल जाइत अछि जे पाण्डव गुप्त बासमे एहिठाम रहल रहथि। पण्डौल बजार कतेक पुरान अछि से कहब कठिन। आवश्यकताक सभ वस्तु ओतए भेट जाइत अछि। उत्तम कोटिक धोती ओहि बजारसँ आनि हम वर्षोसँ पहिरैत छी। भवानीपुरक महादेव मन्दिर पण्डौल डीह टोलसँ सामने देखाइत रहैत अछि। कतेको गोटे नियमित भवानीपुर जाइत रहैत छथि आ महादेवक जलढरी करैत छथि, घुमै-फिरै छथि। असलमे गाम-घरमे लोकक जीबाक अन्दाज अखनो अध्यात्मिकतासँ जुड़ल अछि। कोनो-ने-कोनो रूपे लोक उपवास, पूजा-पाठमे लगले रहैत छथि। शिवरातिकेँ भवानीपुरमे जबरदस्त मेला लगैत अछि। स्थानीय आकाशवाणीसँ सद्य: प्रसारण सेहो होइत अछि। पण्डौलमे आदम-जमानासँ रेलबे टीसन अछि। हमर सासुर

पण्डौल डीह टोल रेलबे लाइनसँ थोड़बे दूरपर अछि। घरे बैसल अबैत-जाइत ट्रेन देखाइत रहैत अछि। जखन हम सभ दिल्लीसँ पण्डौल आबी तऽ रेलक आगमनक सूचना घरे बैसल हमर सासुरमे भेट जाइक।

हमरा लोकनि दस बजे रातिमे पण्डौल डीह टोल पहुँचलहुँ। गीत-नादक मनोरम वातावरणमे बिआहक प्रक्रिया सम्पन्न भेल। एहिसँ जीवन संगिनीक रूपमे आशा मिश्र भेटली जे ओहि समयमे मात्र १७ बर्खक छली आ हमर बएस २२ बर्ख छल। सही कहल गेल अछि जे बिआह भावी जीवनक दिशा दशा तय करैत अछि। यद्यपि हमरा लोकनिक बिआह अभिभावक गण तय केने रहथि, मुदा हम आब निश्चय कहि सकैत छी जे ओ सभ बहुत वुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय केने छलाह। जीवन भरिमे हर समय हमर श्रीमती हमर संगे नहि देलनि अपितु जीवन मार्गकेँ अपेक्षाकृत सुगम सेहो करैत रहली। हुनकर रचनात्मक सोच आओर शान्त मस्तिष्कक लाभ हमरा भरपूर भेटैत रहल अछि। कतेको जटिल समस्या सभपर हुनकर राय बहुत कारगर होइत रहल अछि। ओ बहुत बुधियार एवम त्वरित निर्णय लेबामे माहिर छथि। बहुत सन्तोष पूर्वक सीमित आमदनीमे इमान्दारीपूर्ण जिनगी केना जीबी तकर ओ उदाहरण छथि। अद्यतन हमरा जिनगीमे ओ संगे सुख-दुखक सहभागी छथि जाहिसँ हम नाना प्रकारक झंझावातसँ उवरि जीवनक एहि पड़ावपर ठाढ़ छी।

निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे मनुक्खक जीवनमे बिआह एकटा निर्णायक बिन्दु होइत अछि। आइ-काल्हि तऽ तरह-तरह क लोक परिचय आ की की मिलान करैत अछि, तथापि बिआह विच्छेदक संख्यामे निरन्तर बढ़ोत्तरी भए रहल अछि। हम तऽ किछु नहि देखलिऐ, मात्र कन्याँक एकटा छोट-छीन फोटो हमरा सासुरसँ आयल छल, ओहो बिआह तय भेलाक बाद। ई नहि कहल जा सकैत अछि जे आधुनिकतासँ प्रभावित वर्तमान बिआह सम्बन्धमे सभ किछु गड़बड़ीए

अछि, मुदा ई बात तऽ तय अछि जे केहनो नीक-सँ-नीक बिआह केँ सफलतापूर्वक आगू चलेबाक हेतु दुनू पक्षकेँ समझदारी आ समझौता जरूरी अछि, अन्यथा संकट उत्पन्न होएब भारी बात नहि।

लगभग दस दिनक अवकाश समाप्तिपर छल। विवाहोपरान्त हम गाम आयल रही। माए कतेक प्रसन्न भेल रहथि तकर वर्णन करब असम्भव अछि। हमर पितिआइन सभ सेहो उत्सुकतावश कनियाँ ओ ओकर परिवारक विषयमे पुछैत रहली...।

प्रात भेने कार्यालय गेलहुँ तऽ सभ कियो हमरा उत्सुकतासँ हाल-चाल पुछैत, फाटो सभ देखथि। एहि तरहेँ कतेको दिन बीति गेल। एक दिन कार्यालयसँ झटकि कऽ दड़िभंगा बस स्टेण्डपर बस पकड़ए जाइत रही कि पाछूसँ अबाज सुनबामे आयल-

“मिसरजी! सासुर जा रहल छी की?”

डेगक गतिक अनुमान कए ओ हमर सासुरक यात्राक अन्दाज लगा लेलाह जे एकदम सही छल। दड़िभंगा कार्यालय लगमे रहबाक कारण ओहिठामसँ पण्डौल जाएब असान रहैत छल। छुट्टी नहि लेबए पड़ैत छल।

डीइटी दड़िभंगा कार्यालयमे हम करीब दू साल काज केलहुँ। काज तऽ कोनो खास नहि छल। पुरान टेलीफोनक बकाया असूली करक रहैत छलैक जाहि लेल हमरा लगभग पूरा उत्तर बिहार मुफ्त भ्रमण करबाक हेतु पास भेटल छल। ओना हम अपन समय प्रतियोगिता परीक्षा सबहक तैयारीमे लगबैत छलहुँ।

पढ़ाइ-लिखाइ करखनो व्यर्थ नहि जाइत छैक। सन् १९७६ क केन्द्रीय सचिवालय सेवा हेतु आयोजित संघ लोक सेवा आयोगक सहायक ग्रेडक परीक्षा हम पहिले प्रयासमे पास कऽ लेलहुँ। किछु दिनमे नियुक्ति-पत्र सेहो आबि गेल। नियुक्ति-पत्र हाथमे अबिते मोनमे उठल-

कार्यालय, काज, स्थान सभ परिवर्तन भए जाएत। ई सोचि मोन आगू-पाछू करए लागल। अन्ततोगत्वा निर्णय कएल जे दिल्लीए जेबाक चाही। ओहिठाम अपना तऽ जे हएत से हएत मुदा बच्चा सभकेँ पढ़ै-लिखैक बेहतर अवसर भेटत। सोच-विचारक बाद हम दड़िभंगाक दूरभाष निरीक्षकक पद छोड़ि दिल्ली स्थित केन्द्रीय सचिवालय सेवाक सहायकक पदभार ग्रहण करबाक निर्णय कएल। ई निर्णय कतेक सही रहल, कतेक नहि तकर विचार-विमर्शक आब समय नहि रहल। जे भेल से नीके भेल। गतं न सोचामि कृतं न मन्येत।

हमर ससुर (स्व. गणेश झा) एहि बातसँ चिन्तित भए गेल रहथि जे हम दड़िभंगाक नौकरी छोड़ि कए दिल्ली जा रहल छी मुदा किछुए दिनक बाद हम परिवारकेँ संगे लऽ अनलहुँ, जाहिसँ हुनका अतिशय प्रसन्नता भेलनि।



## प्रतियोगिता परीक्षा

शुरूए सँ हम महत्वाकांक्षी रही वा बनाओल गेल रही। बाबूजीकेँ होनि जे हम की बनि जाइ आ की नहि। एहि लेल ओ हमरा निरन्तर प्रेरित करैत रहैत छलाह। जखन बच्चे रही तखने कहल करथि जे 'लाट साहेब बनक अछि।' अस्तु.., लाट साहेब तऽ हम नहि बनि सकलहुँ मुदा देशक सर्वोच्च मंत्रालय सभमे केन्द्रीय सचिवालय सेवाक अधिकारीक रूपे जरूर काजे केलहुँ। बाबूजी द्वारा निरन्तर प्रेरित करैत रहलासँ हमरा मोनमे कतहुँ-ने-कतहुँ जरूर बसि गेल जे किछु-ने-किछु करक अछि। जखन हाइ स्कूलमे रही तऽ विषय सभमे केना नीक-सँ-नीक अंक भेटत ताहि लेल प्रयत्नशील रही। हमर बाबूजी गणित लऽ कऽ बहुत सचेष्ट रहथि। सदिखन हुनकर इच्छा रहैत छलनि जे गणित विषयमे सए-मे-सए अंक

आनी। जँ एक्को अंक कटि गेल तऽ बात नहि बनल। जहाँ गणितमे अंक कम होइत कि ओ तरह-तरहक खिस्सा सभ सुनबए लागथि।..केना एकटा अभिभावक अपन बेटाकेँ गणितमे एक अंक कटि गेलापर एक चमेटा मारलखिन आदि आदि सुनबए लागथि। मुदा मारि-पीट करब हुनकर स्वभावमे नहि रहनि। एहि सबहक परिणाम भेल जे हमरा निरन्तर गणितमे नीक अंक अबैत रहल जाहिसँ हम अपन वर्गमे नीक स्थान प्राप्त करी। गणितक अलाबा प्रमुख विषय अंग्रेजी छल जे हमरा लेल बहुत समस्या जकाँ छल। अंग्रेजीमे अधिकांश विद्यार्थी फेल भए जाइत छल। अंग्रेजीक पढ़ाइ ५मा वर्गक बाद प्रारम्भ होइक । ताधरि विद्यार्थी सभ कहुना-कहुना कऽ अपन नाम टा अंग्रेजीमे लिखि लेथि। एकबेर हम अपन नाम अंग्रेजीमे सिलेटपर लिखि सकल रही तऽ कतेक चाबस्सी भेटल एकर वर्णन नहि। बी.एस-सी. पास भेला धरि अंग्रेजी भाषाक रूपमे हमरा लेल एकटा विकट समस्या छल। हालाँकि बी.एस-सी. प्रतिष्ठाक पढ़ाइ अंग्रेजीएमे होइत रहए मुदा ओहिसँ अंग्रेजीक ज्ञान बढ़ि जाइत से नहि। एक दिन हम सी.एम. कौलेजमे अंग्रेजी विभागक सामनेसँ जाइत काल अंग्रेजीक किछु व्याख्याताकेँ अंग्रेजीमे झुरझार बजैत सुनिलऐक। हमरो मोनमे सेहन्ता भेल जे काश! हमहूँ अहिना अंग्रेजीमे बाजि सकितहुँ...।

तकर बाद तऽ हम अंग्रेजी पक्कीकरणक एकटा गहन अभियान चलाओल। ओहि समयमे कम्पीटीशन मास्टर पत्रिका एक रूपैआमे भेटैत छलैक। दड़िभंगासँ कहुना कऽ ओ पत्रिका गाममे मंगबैत रही। एहि पत्रिकाक सालो-साल रट्टा मारैत रहलहुँ आ रटल वस्तुकेँ लिखि, फेर कितावसँ मिलान करी आ गलती सभकेँ सुधारक प्रयास करी। एहि सबहक अतिरिक्त How to write correct English आ How to translate into English भारती भवन- पटनाक प्रकाशन, एहि दुनू पोथीक पाँति-पाँति रटि गेलहुँ।

रोज दसटा अंग्रेजीक शब्द–अर्थ सहित–रटबाक नियम बनौलौं। कतेको बेर दड़िभंगा बस स्टेण्डपर बसक प्रतीक्षा करैत काल शब्द रटि कऽ समयक उपयोग करी। सालो-साल अंग्रेजी शब्द कोष रटबाक ई कार्यक्रम चलल।

हमर सबहक अंग्रेजी शिक्षक छलाह बेलौंजाक स्व. कृष्ण कुमार झा। हुनकर पिता स्व. सुन्दर बाबू, वाट्सन स्कूल- मधुबनीमे हमर बाबूजीक शिक्षक रहथिन। कृष्ण कुमार बाबू हमरा कहथि-

"अंग्रेजी नहि अयबाक माने थिक प्रतियोगिता परीक्षा-सभसँ स्वयंकेँ हटा लेब।"

हुनक एहि बातकेँ ध्यानमे राखि हम स्कूलक सबकसँ हटि कऽ कतेको दिन धरि अंग्रेजीमे किछु काज सभ कऽ कऽ दिएनि आ ओ दोसर दिन ओकरा सुधारि कऽ परामर्शक संग आपस कऽ देथि। ताहि लेल हुनका साइकिलमे एकटा झोरा लटकल रहैत छल। ओहि झोरामे अपन कॉपी राखि दिऔ। शेष अपने भए जाइक। हुनकर ई सेवा पूर्णतः निशुल्क छल। गाम-घरक वातावरण ओ देहाती स्कूल सभमे रहि, पढ़ि-लिखि अंग्रेजीमे कुशलता प्राप्त करब आसान काज नहि छल। हम शुरूए-सँ टाइम्स ऑफ इण्डिया मंगबैत रही। ओहि अखबारक संपादकीय नियमित पढ़ी। बाबूजी एकटा फकरा बरोबरि पढ़ैत रहैत छलाह-

"करत करत अभ्यास ते जड़िमत होत सुजान।

रसरी आबत जात है, शिल पर पड़त निशान"

सएह भेलैक। निरन्तर प्रयाससँ हमर अंग्रेजी सुधरैत गेल। ओही बले हम संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित असिसटेंट ग्रेडक परीक्षा प्रथमे प्रयासमे पास कऽ गेलहुँ। ओहि परीक्षामे गणितक एक पत्रक अलावा अंग्रेजीक एक पत्र होइत छल। गणितमे तऽ हमर हाथ साफ रहिते छल। अंग्रेजी सेहो ठीक-ठाक भए गेल। परिणाम स्पष्ट छल। पूरा नौकरी

केन्द्रीय सचिवालयमे कएल, जाहि ठामक काजक भाषा अंग्रेजीए छल। कहिओ असुविधा नहि भेल,अपितु अंग्रेजी पढ़ब-लिखब आओर सुगम लगैत रहल। भौतिक शास्त्र (प्रतिष्ठा)क पूरा पढ़ाइ-लिखाइ अंग्रेजीए माध्यमसँ होइत छल। ओहूसँ अंग्रेजीमे बूझबा, लिखबामे आसानी भेल।

सभसँ पहिल प्रतियोगिता परीक्षा हम देने रही संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित स्पेशल क्लास रेलबे एप्रेन्टिसक १९७२ इस्वीमे। बी.एस-सी. परीक्षा देलाक बाद खाली गाममे बैसल रही। अखबारमे विज्ञप्ति देखि हम आवेदन कए देने रही।

लिखित परीक्षामे चारि-पाँच मासक समय छल। ताहि हेतु दिन-राति एक कए देल। कोठरी बन्द कऽ तैयारी करी। परीक्षाक केन्द्र पटना लॉ कौलेजमे रहए। हमर रहबाक हेतु स्व. मारकण्डेय भण्डारीजीक सम्बन्धी –जे पटना विश्वविद्यालयमे इन्जीनियर छलाह–हुनके ओहिठाम जोगार कएल गेल छल।

हम जखन हुनका डेरापर पहुँचलहुँ तऽ ओ अपने नहि रहथि। तथापि हमर रहबाक बन्दोवस्त भए गेल मुदा परीक्षाक तनाव ततेक रहए जे रातिमे निन्न नहि भेल। निन्न नहि हेबाक असर अगिला दिन होमए-बला गणित प्रथम पत्रक परीक्षा पर पड़ल। जएह सबाल शुरू करी, सएह लटकि जाए। हम ततेक अस्त-व्यस्त रही जे कौलेजक प्राचार्यक ध्यान हमरापर पड़लनि।

हुनका भेलनि जे हम नकल करबाक प्रयास कऽ रहल छी। कोठरीक केबारे लगसँ ओ हमरापर चिचिआइत आगाँ बढ़ि हमरा लग आबि हमर तलाशी लेलथि। हुनकर अनुमान मिथ्या सिद्ध भेलनि। हम कोनो गलत काज किएक करब? हम तऽ अपने फिरसान भए गेल रही जे हमर हाव-भावमे लक्षित भेल हएत। दू घन्टाक परीक्षा रहए। एक घन्टाक

बाद जखन मोन आश्वस्त भेल तऽ सबाल सभ बनए लागल। मुदा समय समाप्तिक घन्टी सेहो बाजि चुकल छल। कॉपी सभ लऽ लेल गेल।

हम ओहि दिनक प्रथम पत्र गणितक परीक्षासँ असन्तुष्ट रही। तकर बाद दोसर दिन इंजीनियर साहेब बाहर सँ घर वापस अयलाह आ हमरा ठहरबाक बेहतर प्रबन्ध कऽ देलनि। दोसर दिन हम गणितक दोसर पत्रक सभ सबालक जवाब बहुत नीकसँ देलहुँ। जाहिसँ हम एससीआरए १९७२क परीक्षाक लिखित भागमे सफल घोषित भेलहुँ आ साक्षात्कार हेतु संघ लोक सेवा आयोग द्वारा दिल्ली बजाओल गेलहुँ।

एससीआरए द्वारा रेलबेक इन्जीनियरिंक पढ़ाइ रेलबे कौलेजमे मुफ्तमे होइत छल आ पढ़ाइ समाप्त होइते क्लास-वन दर्जा सहित रेलबेमे इन्जीनियरक नौकरी लागि जाइत छल। आगू जा कऽ ओ सभ रेलबेक पैघ-सँ-पैघ पदपर पहुँच जाइत छथि। एतेक भारी पदपर जाएबसे सभ तऽ हम ओतेक नहि बुझैत रहिऐ, मुदा एतबेसँ प्रसन्नता रहए जे हम मुफ्तमे रेलबे इन्जीनियरिंग पढ़ि लेब आ पढ़ाइक बाद नौकरी सेहो पक्का। ओहि समय हमर सरकारी बएस १८ साल छल। दिल्ली कहिओ नहि गेल रही। हमर गौंआँ दिल्लीमे पढ़ैत रहथि। हुनके पत्र लय हुनकर एकटा मित्र (गंगा बाबू)क सप्रु हाउस स्थित छात्रावासमे रहलहुँ। ओहि समय जे.एन.यू. ओहिठामसँ आइएसआइएस (Indian School of International Studies)क नामसँ चलैत छल। छात्रावासमे बहुत रास विदेशी छात्र सभ छल। कएक-टा विद्यार्थी चम्मच लऽ कऽ खाइत छलाह। हम तऽ से सभ कहिओ देखनौं ने रही। हाथसँ जेना खाइत छी, तेना खाइ। गंगा बाबू कएक बेर हिंट करथि, मुदा हम की करितहुँ। हमरा ओ साक्षात्कारक दिन स्कूटरसँ शाहजहाँ रोड स्थित संघ लोक सेवा आयोग धरि छोड़ि अबैत छलाह। एक नूतन व्यक्ति एतेक मदति केलाह, ई काबिले तारीफ थिक।

साक्षात्कार दू दिने भेलैक। एक दिन तऽ तरह-तरह क तकनीकी जाँच सभ भेल जे हमरा लेल एकदम नव छल। सीमित समयमे लक्ष्य पूरा करबाक रहैत छल। जाबे हम किछु बुझिऐ-बुझिऐ, समय बीति जाइत छल आ आगाँक जाँच प्रारम्भ भए जाइत छल। दिन भरि वएह धमा चौकरी होइत रहल। हम तऽ थाकि गेल रही। झमारल डेरापर पहुँचलहुँ तऽ गंगा बाबू बहुत उत्साहित केलाह। दोसर दिन व्यक्तिगत साक्षात्कार छल जे संघ लोक सेवा आयोगक सदस्य आर० एन० मट्टूक अध्यक्षतामे सम्पन्न भेल। साक्षात्कार समितिमे आइआइटीक प्रोफेसर आओर इन्टीगरल कोच फैक्ट्रीक भूतपूर्व निदेशक सदस्य छलाह। एक आओर कियो व्यक्ति रहथि। साक्षात्कारक हेतु विद्यार्थी सभ छोट-छोट गुटमे कए ठाम बैसाओल गेल रहथि। साक्षात्कारक हेतु बेराबेरी बजाओल गेल। हमर क्रम जखन आयल तऽ निश्चिन्त भावसँ अन्दर गेलहुँ। ओहि दिन बहुत स्थिर भए गेल रही। गंगा बाबू सेहो हिम्मत देलनि। कतेको सबालक सबहक उत्तर संतोषप्रद बुझाएल। हमरा बुझि पड़ए जे हमर साक्षात्कार नीक भेल। हम अति उत्साहमे बाबूजीकेँ गाममे तार केलियनि जे हमर साक्षात्कार बहुत नीक भेल अछि। साक्षात्कार समाप्तिक बाद आपस गाम आबि गेलहुँ। तकर थोड़बे दिनक पश्चात परीक्षाफल बाहर भेल आ हमरा ओहिमे नहि भेल। ओहि समय मात्र दस गोटेकेँ देश भरिसँ ओहि पद हेतु चयन होइत छलैक। आब तऽ चयनित लोकक संख्या बेसी रहैत अछि। प्राय: गणित प्रथम पत्र गड़बड़ेबाक कारण आओर दिल्लीमे लेल तकनीकी जाँच सभमे हम पाछाँ रहि गेलहुँ। एकटा बहुत नीक अवसर अबैत-अबैत हाथसँ ससरि गेल।

अगिला साल हम इण्डियन मिलिट्री अकादमीमे फौजक लफ्टीनेन्टक भर्ती हेतु संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ओयोजित परीक्षा पटना जा कऽ देलहुँ। पटनामे हम आ हमर ग्रामीण ओ मित्र

कमलाकान्तजीक छात्रावास स्थित कोठरीमे हुनके संगे ठहरल रही। ओही बेर नहि बादोमे कएक बेर हम पटना परीक्षा देबए जाइ तऽ हुनके संगे छात्रावासेमे ठहरी। ओ अपना भरि पूरा ब्यवस्था करथि आ तँए हम परीक्षा सभ दऽ सकी। हुनकर एहि उपकार सभक प्रसंगवश चर्चा करैत अभिभूत छी।

परीक्षा बहुत नीक भेल रहए। गणितक दुनू पत्रमे ९० प्रतिशतसँ बेसी अंक आयल छल। हमरा साक्षात्कारक हेतु पत्र आयल। मुदा हमर बाबूजीकेँ फौजीक नौकरी पसिन नहि रहनि। हमर साक्षात्कार-पत्र ओ बहुत दिन धरि दाबि देने रहथि, प्राय: ओ किंकर्तव्यविमूढ़ रहथि। हुनकर कहब जे ज्येष्ठ पुत्रकेँ फौजमे जाएब नीक नहि।

हमरा जखन चिट्ठी भेटल, साक्षात्कारमे बहुत कम समय बाँचल रहए । ओहि समयमे हम राँचीमे दूरभाष निरीक्षकक काजक प्रशिक्षण करैत रही। सभटा ब्यवस्था स्वयं करए पड़ल। पानागढमे हमर बहिनोइ रहथि, हम ओतए गेलहुँ। ओ पूरा सहयोग केलाह।

साक्षात्कार चारि दिन धरि इलाहाबादमे हेबाक रहए। ताहि लेल जरूरी ड्रेस पानागढमे बनाओल। ड्रेस आ किछु पैसाक संग हम इलाहाबाद जा सकलहुँ ताहि लेल ओ सभ धन्यवादक पात्र छथि। पानागढमे फौजी छाबनी छैक। हमर बहिनोइ हमरा ओहिठामक कमाण्डेन्टसँ भेँट करौलथि जे तरह-तरहक हमरा परामर्श देलाह। इलाहाबादमे साक्षात्कार छल। फोजमे अधिकारीक भर्ती हेतु साक्षात्कारक अलग तरीका अछि। सभ उम्मीदवारक दिन-रातिक नियत फौजी आवासमे रहबाक ब्यवस्था होइत अछि। ओहि दौरान प्रत्येक दिनचर्यापर नजरि राखल जाइत अछि जे ओ की करैत अछि, कतए जाइत अछि, ओकर बोल-चाल केहन छैक इत्यादि। एहि सबहक उद्देश्य उम्मीदवारमे अधिकारी योग्य गुणक जानकारी प्राप्त करब होइत छल।

साक्षात्कारक दौरान तरह-तरह क जाँच सभ भेल। बोल-चाल, साक्षात्कार आदिमे तऽ हम ठीक कऽ सकलहुँ मुदा कूद-फान करब हमरा बसक छल नहि, आ ने हम ताहिलेल गहन प्रयासे कऽ सकलहुँ। हमरा तऽ एक बेर चोट लगैत-लगैत बाँचि गेल। गाछक बीचमे रस्सी बान्हल छल आ ओहिपर घुटकनिया भरि कऽ अर्थात्  रेंग कऽ एहिपार-सँ-ओहिपार हेबाक छल! हम तऽ एहन खतरनाक जाँच सबहक प्रयासो नहि कएल। साक्षात्कारक दौरान ओ सभ कहथि जे हमरा आइएएसक परीक्षा देबाक चाही। हमर साक्षात्कार समाप्त भए गेल छल। तय प्रक्रियाक तहत ओही दिन साक्षात्कारक परिणाम आयल। १० उम्मीदवार मे हमर सबहक गुटसँ दूटा उम्मीदवारक चयन भेल। हम वापसी टिकट ओ खानाक पैकेट लऽ ट्रेनमे चढ़ि राँची विदा भए गेलहुँ।

सन १९८० इस्वीमे बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सम्मिलित सेवा परीक्षामे हम एकटा विषय मैथिली रखने रही। सुनने रहिऐक जे मैथिलीमे ढाकीक-ढाकी अंक अबैत छैक आ कतेको लोक मैथिली लऽ कऽ बीपीएससीक परीक्षा पास कऽ गेलाह अछि। हम सोचलौं जे तिरहुता लिपिमे मैथिली पत्रक जवाब लिखल जाएत तऽ आओर अंक आओत। हमरा नाम मात्र जोग तिरहुता लिपि अबैत छल, ओहो एहि लेल जे आइएससीक मैथिली पत्रमे तिरहुताक किछु अंक छल। तिरहुतामे झुरझार सीखब प्रारम्भ कएल। दिन-रातिक अभ्याससँ कनेक-मनेक हाथ चलए लागल। कतेको गोटे बुझाबक प्रयास केलक मुदा हम टस सँ मस नहि भेलहुँ आ तिरहुता लिपिमे मैथिली पत्रक उत्तर लिखबाक प्रयास केलहुँ। प्रश्न पत्र बहुत आसान रहए, मुदा हाथे नहि ससरए। तिरहुता लिपिक चलते कएटा विषय-वस्तुकेँ संक्षिप्त करए पड़ल। फेर अपनो नहि बुझाए जे आखिर हम तिरहुतामे लिखि रहल छी से सही भेल कि नहि। परिणामत: मैथिलीमे अपेक्षाकृत कम अंक आयल

जाहिसँ हम ओहि परीक्षामे पछुआ गेलहुँ। अपने बातपर अड़ल रहब कएक बेर घातक भए सकैत अछि।

दूरभाष निरीक्षकमे काज करबाक दौरान अधिकांश समय हम प्रतियोगिता परीक्षा सबहक तैयारीमे लागल रहैत छलहुँ। कए तरहक कएक-टा परीक्षा सभ दी, मुदा अनुकूल परिणाम नहि होइत छल। बिआह भए गेल छल। गाम- परहक चिन्ता सभ सेहो माथकेँ चटने रहिते छल। नौकरी से धऽ लेने रही।

बादमे प्रतियोगिता परीक्षा सभमे ओ धार हम नहि दऽ सकलहुँ। मुदा संघ लोक सेवा आयोगक असिस्टेन्ट ग्रेडक परीक्षा हम एकहि प्रयासमे पास कऽ गेलहुं। ओहि बेर हम करहीक एकटा इस्कूलिया संगीक डेरापर पटनामे ठहरि परीक्षा देने रही। हमरा विश्वास रहए जे हम एहि परीक्षामे सफल रहब से सएह भेल। एहि परीक्षाक आधारपर हम पहिने दिल्ली ओ थोड़बे दिनक बाद इलाहाबाद आबि गेलहुँ तथापि प्रतियोगिता परीक्षा–खास कऽ आइएएस आओर बैंकक प्रोबेशनरी आफिसरक परीक्षा–कएक बेर देलहुँ। मुदा ढाकक तीन पात। परीक्षाक तैयारीक दौरान किताव हाथमे रहैत छल आ माथ गाममे माए-बाबू ओ भाए सभहक चिन्तामे लागल रहैत छल। चिन्ता कतेक व्यर्थ होइत अछि तकर हम नीक अनुभव कऽ चुकल छी। जेहो सफलता हम प्राप्त कऽ सकैत छलहुँ सेहो चिन्ता करबाक स्वभावक कारणेँ आ किछु आनो-आन कारण सभसँ सम्भव नहि भेल। खैर! नाना प्रकारक परीक्षा सभ देबाक लाभ तऽ भेबे कएल। अनेकानेक विषयक ज्ञान बढ़ल। अंग्रेजीमे लिखबाक, पढ़बाक आ बजबाक क्षमता बढ़ल। मुदा जीवन यात्रा केन्द्रीय सचिवालय सेवासँ जुड़ि कऽ रहि गेल।

आब जखन पाछू-मुहेँ घुमि कऽ तकैत छी तऽ बुझि पड़ैत अछि जे व्यर्थ चिन्ता सभमे पड़ल रही। सबहक अपन-अपन भाग्य होइत छैक

आ बेसी माथा-पच्चीसँ किछु लाभ नहि। एहन कोनो गारंटी नहि अछि जे अति उच्च पद प्राप्त व्यक्ति आओर तरहेँ खुशी होथि। सुख एकटा अलग वस्तु थिक जे कतहुँ कोनो व्यक्तिकेँ भेटि सकैत अछि। कियो झोपड़ीए-मे चैनक बंशी बजबैत रहैत अछि तऽ कियो महलक समस्त सुख-सुविधाक अछैतो राति भरि निन्नक बिना करोट बदलैत रहैत अछि।



## महानगर आगमन

दिल्ली एकटा ऐतिहासिक महानगर अछि। सौंसे देशसँ लोक जीवन-यापन हेतु एतए अबैत अछि। वर्तमान समयमे ई देशक राजनीतिक केन्द्र बिन्दु अछि। एहिठाम प्राचीन आओर आधुनिक सभ्यताक समागम अछि। पुरना दिल्लीमे अखनो मुगल समयक छाप अछि। कुतुव मिनार, लाल किला, हुमायुक मकबरा दिल्लीक अतीतक स्मरण करबैत अछि। ओतहि मेट्रो रेल, नेहरू स्टेडियम, लोटस टेम्पल, बड़का-बड़का मौल, फ्लाइ ओभर इत्यादि आधुनिक दिल्लीक विकास यात्राक प्रमाण अछि।

पाण्डवक समयमे दिल्लीकेँ इन्द्रप्रस्थ कहल जाइत छल। ११९२ ई.मे दिल्लीपर मोहम्मद गोरीक कब्जा भए गेलइ। १२०६ ई.मे दिल्ली सल्तनतक स्थापना भेल। १३९८ ई.मे तैमुरद्वारा दिल्लीपर आक्रमणक संग सल्तनतक अन्त भए गेल। अन्तिम सल्तनतक लोदी वावरसँ हारि गेलाह। १५२६ ई.मे पानीपतक लड़ाइक बाद मुगल साम्राज्यक स्थापना भेल। १८०३ ई.मे दिल्ली अंग्रेजक अधीन भए गेल।

एहन ऐतिहासिक रूपे समृद्ध शहर जेबाक, ओहिठाम रहबाक आओर विकास करबाक इच्छा मोनमे रहबे करए, अत: तीव्र अभिलाषाक संग हम दिल्ली विदा भेल रही। दिल्लीक विषयमे लोक सबहक तरह-तरह क धारणा रहए। बहुत दूर तऽ छइहे। खर्चो -बर्च बढ़ि जेबाक अन्दाज

सही छल। परिवारमे बहुत दिन धरि हम दिल्ली जाइ वा नहि जाइ, एहि विषयपर चर्च होइत रहल। हमर बाबूजीकेँ दिल्लीमे जा कऽ नौकरी करब एकदम पसिन नहि रहनि। दड़िभंगामे दूरभाष निरीक्षक बनल रही से हुनका बेहतर बुझाइत रहनि। गामक लग रहब, भेँट-घाँट होइत रहत।

ओना, किछु हद धरि हुनक सोच ठीके रहनि मुदा हम दिल्ली जाए चाही, कारण ओहिठाम बेहतर भविष्यक सम्भावना बुझाइत रहए। प्रतिस्पर्धा परीक्षा सबहक तैयारीक बेहतर अवसर भेट सकैत छल। किछु दूरदर्शी लोकक मन्तव्य छलनि जे दिल्ली अबस्स जेबाक चाही। ओहिठाम वेहतर भविष्य हएत। धिया-पुताकेँ वेहतर शिक्षाक अवसर भेटत। अपनो आगू बढ़ि सकब। मुदा कहब छैक जे 'दिल्लीक लड्डु जे खेलक सेहो पछताएल आ जे नहि खेलक सेहो पछताएत।' किछु हद धरि से सही।

दड़िभंगासँ बरौनी होइत हम दिल्ली आयल रही। एहिसँ सन् १९७२ ई.मे पहिल बेर स्पेशल क्लास रेलवे अपरेन्टीस(SCRA )क संघ लोक सेवा आयोगक साक्षात्कारक क्रममे हम दिल्ली आयल रही।

२ अगस्त १९७७ ई.मे हम दिल्ली पहुँचल रही। हमर गामक कोरियानी टोलक एक गोटे दिल्लीमे रहैत छलाह। रातिमे हुनके ओहिठाम रहल रही। सम्भवत: ओ मंगोलपुरीमे रहैत छलाह। एक्के पाँतिमे छोट-छोट कतेको घर सभ छल। बहुत रास लोक सभ छल। चारि बजे भोरे कियो चिकरि-चिकरि कऽ सभकेँ उठा रहल छलैक -ड्यूटीपर जेबाक हेतु। ३ अगस्त १९७७ ई.के हम पहिल बेर दिल्ली स्थित गृह मंत्रालय, नार्थ ब्लॉकमे नौकरी ग्रहण केलहुँ। ओहि दिन बर्खा होइत रहैत आ नार्थ ब्लॉक अबैत-अबैत हम अधभिज्जू भए गेल रही। नार्थ ब्लॉकक वर्णन की कएल जाए। ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा भारतपर शासन करबाक शक्ति केन्द्र छल

नार्थ ओ साउथ ब्लॉक। रायसीना पर्वतपर बनल- एक तरफ विशालकाय राष्ट्रपति भवन आ दुनू तरफ समानान्तर ठाढ़ नार्थ ओ साउथ ब्लॉ क।

सन् १९११ ई.मे भारतक राजधानी दिल्ली स्थानान्तरणक पश्चात दिल्लीक नवनिर्माणक जिम्मा लाइटनकेँ देल गेलनि। ओ राष्ट्रपति भवन (ओहि समयक भाइसराय हाउस) क निर्माण केलाह। हर्वर्टवेकर दच्छिन अफ्रिकासँ आबि कऽ हुनकर सहयोगीक रूपमे काज करए लगलाह। नार्थ आओर साउथ ब्लॉकक निर्माणक जिम्मा वेकरकेँ देल गेल। कालान्तरमे दुनू गोटेमे मतभेद भए गेल। लाइटन चाहै छलाह जे नार्थ ब्लॉ क, साउथ ब्लॉक वाइसराय हाउसक हिसाबसँ कम ऊँच बनै जाहिसँ राजपथसँ ओकरा अनचोके देखल जा सकए। मुदा वेकरकेँ ई बात पसिन नहि छल आ अन्ततोगत्वा वेकरेक चलल।

१९११ ई.मे भारतक राजधानी कलकत्तासँ दिल्ली आबि गेल। भारतक राजधानी दिल्ली स्थानान्तरणक बाद उत्तरी दिल्लीमे बनल अस्थायी सचिवालयसँ भारतक शासन चलल। ब्रिटिश भारतक विभिन्न भागमे कार्यरत कर्मचारी सभकेँ दिल्ली आनल गेल ओ गोल मार्केटमे हुनका लोकनिक आवासक निर्माण भेल। पुरना सचिवालयमे बादमे दिल्ली सरकारक कार्यालय रहल। १९३१ ई.मे भारतक शासन नार्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉकसँ होमए लागल। ओही लगपास सन् १९२१ ई.मे संसद भवनक निर्माण प्रारंभ भेल।

नार्थ ब्लॉक ओ साउथ ब्लॉकक निर्माण एक्के रंग अछि। भूतलक अलावा दू सतह आओर अछि। प्रथम तलपर सामान्यत: वरिष्ठ अधिकारी आओर मंत्रीगणक कार्यालय अछि। जखन सुरक्षा व्यवस्थामे एतेक सख्ती नहि छल, तखन सामान्य आदमी नार्थ ब्लॉकक मुख्य द्वार होइत आरपार निकलि जाइत छल। मुख्य द्वारसँ घुसिते अन्दर गोलाकार खाली स्थान अछि जाहिमे तापक्रम अपेक्षाकृत कम रहैत अछि आ गरमीमे लोक

सभ ओहिमे बैस कऽ सुस्ताइत अछि। आबक सुरक्षा परिवेशमे नार्थ ब्लॉक वा साउथ ब्लॉकमे प्रवेश बहुत कठिन काज थिक।

यदि अहाँकेँ नार्थ ब्लॉकक भूगोलक सही जानकारी नहि अछि, तऽ अपनेकेँ ओहिमे वौआ जाएब आसान बात अछि। विभिन्न स्थानसँ सरकारी काजसँ नार्थ ब्लॉक अएनिहार अधिकारी लोकनिसँ कतेको बेर सम्बन्धित स्थान वा कक्षक जानकारी लैत देखिअनि। नार्थ ब्लॉक ठीक सामने बामा कातमे इण्डिया गेट अछि। नार्थ ब्लॉकसँ उतरि कऽ कनिक्के आगू बढ़ू तऽ विजय चौक अछि, जतए गणतंत्र दिवस समारोहक बाद वीटींग रीट्रीटक आयोजन कएल जाइत अछि।

नार्थ ब्लॉकमे पहिल बेर गेलाक बाद श्री विनय सेखड़ीजीसँ भेँट भेल जे हमरा आवश्यक कागत सभपर दस्तखत करा कऽ नव नौकरीमे पदभार ग्रहण करौलथि। नार्थ ब्लॉकक पैघ-पैघ कक्षक अन्तहीन श्रृंखला देखि हम गुम रही। कतहुँ कियो चिन्हारे नहि छल। किछु बुझल नहि छल। सत पुछल जाए तऽ हमरा चक-विदोर लागि गेल रहए। कार्यभार ग्रहण कऽ हमर बैसक इण्डिया गेटक एकदम सामने पड़ैत छल। कोठरीमे बैसले-बैसल इण्डिया गेट देखल जा सकैत  छल।

करवनो काल अवर सचिव महोदय ओहि कोठरीमे आबथि आ कहथि जे अहाँसभ कतेक भाग्यवान छी जे बैसले-बैसल इण्डिया गेटक दर्शन करैत रहैत छी। ओहि समयमे अवर सचिवक बड़ धाख रहए। हम तऽ एतेक डराएल ओ अपसियाँत रहैत छलहुँ जे किछु काज करब कठिन छल। भारत सरकार लिखल देखि कऽ होइत छल जे आब की हएत? क्रमश: ई स्थिति सामान्य भेल।

गृह मंत्रालय, नार्थ ब्लॉकमे पदभार ग्रहण करबाक दौरान सभसँ पहिने भेंट भेल श्री विनय सेखड़ीजी सँ, जे क्रमश: दोस्तीमे बदलि गेल। गोरनार, मेहनती आओर इमानदार अधिकारी छलाह श्री सेखड़ीजी।

जलंधर शहरक निवासी छलाह आ योजना रहनि जे सेवा निवृत्तिक बाद ओहीठाम शेष समय बिताएब। हुनकर धिया-पुता सभ अति शिक्षित छलखिन। मुदा संयोग देखू, निदेशक पदसँ सेवा निवृत्ति भेलाक चारि-पाँच मासक अन्दरे हुनकर स्वर्गवास भए गेल।

एक दिन भोरे टहलि कऽ आयल रहथि आ घर पहुँचते छातीमे दर्द भेलनि आ जाबे किछु लोक बुझितै ओ मरि गेलाह। सभ योजना धाएले रहि गेल। एहन क्षणभंगुर जीवनक हेतु लोक कतेक योजना बनबैत रहैत अछि..! युधिष्ठिरक यक्ष प्रश्नक उत्तर जे निरन्तर मरैत देखितो लोक अपनाकेँ ओहि नियमसँ फराक बुझैत अछि, कतेक सटीक अछि! शेखरीजीक स्मरण सदैत होइत रहैत अछि। हुनक असामयिक निधनसँ हमर एकटा मित्रे नहि अपितु एकटा नीक सलाहकार सदा सर्वदाक लेल अनन्तमे बिला गेल।

३ अगस्त १९७७ ई.के नार्थ ब्लॉकमे कार्यभार ग्रहण कऽ हम साँझमे अपन गौंआँक ओहिठाम गेलहुँ। ओ मोतीनगरमे रहैत छलाह। परिवारो संगे रहनि। एक्केटा कोठरी किरायापर लेने छलाह। अपना भरि पूरा सत्कार केलाह। रातिमे भोजनक बाद हम बाहर खाटपर सुति रहलहुँ। एकाध दिन अहिना बीतल। तकर बाद वएह अपन मकान मालिकक एकटा फ्लैट मोती नगरमे किरायापर दिया देलनि। दिल्लीमे आवासक ब्यवस्था भए गेला बाद आश्वस्त भेलहुँ। मोती नगरसँ नार्थ ब्लॉक ८० संख्याक बस चलैत छल। ओहि समयमे बस नार्थ ब्लॉकमे एकदम लगीच धरि अबैत छल। उतरू आ दस डेग चलिते नार्थ ब्लॉकक अन्दर आबि जाउ।

ओहि समय दिल्लीक सुरक्षात्मक वातावरण आइ-काल्हि जकाँ नहि छल। मोती नगरमे राति-राति भरि लोक सभ अपन फ्लैटक आगाँ खाट लगा कऽ सुति रहैत छल। मुदा हम कार्यालय, बाहर ओ घर सभठाम

नव वातावरण, नव लोक आओर अलग जीवन शैलीक कारण अपसियाँत रही। कखनो-कखनो अफसोच होइत छल जे दड़िभंगाक नौकरी छोड़ि कऽ दिल्ली किएक अयलहुँ? मोतीनगरमे डेराक अगल-बगलक लोकसँ कोनो परिचय नहि छल। रातिके छतपर सुति रही। खाटपर सतरंजीक तरमे लोहाक डंडा नुका कऽ रखने रही जे जँ कोनो संकट आओत तऽ देखल जाएत। एक राति एकटा पड़ोसी–सरदारजी–भेँट करए आयल। खाटपर बैसल की ओ लोहाक रौड निच्चाँ खसि पड़लै। ओकरा संशय बढ़ि गेलइ, जे की बात छिऐ? दोसर दिन भेने ओ हमर मकान मालिक ओतए पहुँचल। मकान मालिक ओकरा आश्वस्त केलकै तखन ओ चैन भेल।

कार्यालयमे अपन लोक ताकबाक प्रयास करए लगलहुँ तऽ वित्त मंत्रालयमे एकटा झाजी भेटलाह। बुढ़ लोक। मैथिलीमे बजबाक प्रयास कएल। कहला जे २-३ पुस्त पहिनहि हुनका लोकनिक पुर्वज गाम-घर छोड़ि जयपुरेमे बसि गेल रहथि। हुनका मैथिली बुझए तऽ अबैत छलनि मुदा बाजि नहि सकथि । हुनकर डेरा आर.के.पुरममे छल। ओतहुँ गेलहुं। हुनकर परिवारमे सभ कियो मैथिली सीखए चाहैत छलाह, मुदा तकर उचित सुविधा नहि भए रहल छलनि। किछु दिन बाद कोइलखक श्री आर.आर. झाजी नार्थ ब्लॉक, वित्त मंत्रालयमे भेटलाह। हुनकासँ गप्प करिते मोन बहुत आश्वस्त भेल। दड़िभंगा लगक पतोर गामक हमरे नामधारी मिसरजी भेटलाह। (मिसरजीक परिवारमे प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम नन्दन मिश्र भेल रहथि।)हुनका सभसँ जे सम्पर्क भेल से अद्यावधि बनल अछि।

यद्यपि दिल्लीक धक्कम-धुक्काबला जिनगीसँ अपसियाँत रही, मुदा तत्काल कोनो विकल्पो नहि छल। जतइ देखू, लोक पाँति बना कऽ ठाढ़ अछि। दूधक पाँति तऽ चारि बजे भोरेसँ लागब शुरू भए जाइक।

डी.एम.एस. दूध कनीक सस्त होइत छल। मुदा ताहि हेतु टोकन लेमए पड़ैत छल जे आसान नहि छल। जतइ जाउ ततइ पाँति लागल लोक सभ भेटत। कार्यालयमे भरि दिन काज करू आ तकर बाद शुरू भए जाउ पाँतिमे। बसमे चढ़बासँ पहिने पाँति लगाउ। जँ छुट्टी हेबासँ पाँच मिनट पहिने आबि गेलहुँ तऽ आसानीसँ बसमे सीट भेट जाएत, नहि तऽ ठाढ़े धक्का-मुक्की करैत घर पहुँचब।

हमर अधिकारी एकटा मद्रासी छलाह। अपने बाजथि आ अपने बुझथि। दिल्लीक धक्कामुक्कीसँ हम तंग भय गेल रही। ओहि समयमे कर्मचारी चयन आयोगमे इलाहाबाद हेतु किछु लोकक पदस्थापना हेबाक रहए। हम दर्खास्त देलिऐक आ हमर स्थानान्तरण ओहिठाम भए गेल। सन् १९७८ ई.क ९ जनवरीकेँ हम इलाहाबाद कर्मचारी चयन आयोग पहुँचलहुँ।

पाँच महिना धरि दिल्लीमे रहलाक बाद हम इलाहाबाद चलि गेल रही। एहि अल्प अवधिमे दिल्लीके जानब आसान नहि। ओहिठाम दिल्लीमे प्रदूषण चरमसीमापर छल। आकाश धुआँसँ भरल रहैत छल। रातियोमे तारा नहि देखल जा सकैत  छल। दिन भरि काज भेलाक बाद डेरा लौटैत-लौटैत कपड़ा सभ मैल भए जाइत छल। यद्यपि आब दिल्लीक जनसंख्या तहियाक तुलनामे बहुत बढ़ि गेल अछि, अपेक्षाकृत वायुमण्डल कम प्रदूषित अछि। आकाश साफ देखाइत अछि आओर यातायातक ब्यवस्था (खास कऽ मेट्रोक कारण) बहुत बेहतर भए चुकल अछि। ओहि समयमे दिल्लीमे सरकारी आवासक बहुत पैघ प्रतीक्षा सूची छल।२०-२५ साल नौकरी केलाक बाद जा कऽ सरकारी आवास भेटैत छल। बहुत रास बात सभ रहल हएत जे हम स्वेच्छासँ दिल्लीसँ स्थानान्तरित भए इलाहाबाद चलि गेलहुँ। मुदा दिल्ली तऽ दिल्ली थिक। सन १९८७ मे दिल्ली स्थानान्तरण भए गेल आ फेरसँ अपनाकेँ एतए

बेवस्थित करए पड़ल। प्राय: इलाहाबाद गेनाइ कोनो बहुत लाभकारी नहि रहल।

सन् १९७७ क चुनाव हारि गेलाक बाद स्व. श्रीमती इन्दिरा गॉधी अपन आवासपर सुलभ भए गेल रहथि आ बहुत रास लोक हुनकासँ भेँट करए हुनकर आवास पर जाइत छल। हमहूँ सभ अपन परिवारक संग इन्दिराजीक आवासपर गेल रही। ओतए कियो आम जनता बेरोक-टोक चलि जाइत छल। हमहूँ सभ पहुँच गेल रही। मुदा संयोगवश ओ डेरापर नहि रहथि। बाहरेसँ हुनकर आवास देखि आपस भए गेलहुँ। तीन मूर्ति भवन, तकर बगलमे बनल अन्तरिक्ष शाला, राजघाट, सफदरजंगक मकबरा, लोदी गार्डेन, नेहरू पार्क, कुतुबमीनार, लोटस टेम्पल, योगमाया मन्दिर इत्यादि सभ ठाम घुमलहुँ। ओहि समयमे कतहुँ आएब-जाएब सुरक्षा दृष्ट्रिमे आसान छल। अस्तु, यथासाध्य हम मुख्य-मुख्य स्थान सभ देखलहुँ।

जनवरी १९७८ ई.क बात छी। ट्रेनसँ दिल्लीसँ इलाहाबाद विदा होइत बहुत आनन्दित भेल रही। संगे पत्नी ओ बच्चा सेहो। एवम् प्रकारेण हम दड़िभंगासँ दिल्ली अयलहुँ, मुदा किछुए मासमे इलाहाबाद चलि गेलहुँ। इलाहाबादमे ९ बर्ख धरि रहला बाद मार्च १९८७ ई.मे दिल्ली आपस अयलहुँ। मुदा एहिपर चर्चा फेर करखनो करब।

◌

# संगम तीरे

पत्नीक संग डेढ़ सालक बच्चा आ किछु मोटा-चोंटा सहित इलाहाबाद स्टेशनपर पहुँचलहुँ। हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) दड़िभंगासँ हमरा मदति करए आयल रहथि। दिल्लीसँ स्थानान्तरणक बाद नव निर्मित कार्यालय कर्मचारी चयन आयोगमे योगदान करबाक हेतु हम

इलाहाबाद सपरिवार बिना कोनो डेरा तकने आयल रही। आब सोचैत छी तऽ अपनो हँसी लगैत अछि, आश्चर्यो होइत अछि जे केना नान्हिटा बच्चा ओ पत्नीकेँ इलाहाबाद टीसनपर छोड़ि डेरा ताकए विदा भेलहुँ..!

पहिल बेर अही क्रममे स्व० डा. जयकान्त मिश्रजीसँ हुनकर आवास ‘तिरभुक्ति’ पर भेँट भेल। हुनकासँ भेँट भेलापर लागल जेना कतेको सालसँ परिचित होथि। सभ काज छोड़ि कऽ हमरासँ गप्प करैत रहलाह। परिवारक अन्य सदस्य सभ स्वागतमे लागल रहलाह। एक अपरिचित मैथिलक एतेक स्वागत के करत?

स्व० जयकान्त बाबूक प्रयाससँ हमरा लोकनिकेँ ओही दिन साँझ धरि दड़ियागंजमे डेरा भेटल। ओहिठामसँ टीसन आपस जा परिवारकेँ अन्य सदस्य, सामान सहित डेरामे प्रवेश केलहुँ। दिन भरिक संघर्षसँ हम सभ थाकि कऽ चूर भए गेल रही आ जेना-तेना भोजन कए शान्ति पूर्वक सूति रहलहुँ। प्रात:काल स्टेनली रोड स्थित कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालय पहुँचलहुँ। ओ कार्यालय स्थापित भए रहल छल, अस्तु कार्यालय चलेबाक हेतु मूल वस्तु जेना कुर्सी, टेबुल धरि नहि छल। एकटा अधिकारी छलाह जे ओहि कार्यालयक एक भागमे सपरिवार रहैत छलाह। क्रमश: किछु कर्मचारी सभ अयलाह। टेबुल, कुर्सीक ब्यवस्था भेल। किछु स्थानीय नैर्मितक कर्मचारी राखल गेल। आ कार्यालय चलि पड़ल। किछुए दिनमे नव भर्तीक विज्ञापनक आधारपर आयोजित लिखित परीक्षाक हेतु आवेदन पत्रसभ आबए लागल। थोड़बे दिनमे एकटा कोठरी आवेदनक लिफाफासँ भरि गेल।

किछु दिनक बाद कर्मचारी चयन आयोगक क्षेत्रीय निदेशक बनि कऽ– आइएएस अधिकारी अयलाह। कारी-कारी करगर मोछ, गोटनार भुट्ट आ बेसी काल गुमसुम रहएबला। हुनका अयलाक बाद कार्यालयक प्रगति तेजीसँ होमए लागल। कार्यालयमे कर्मचारी कम छल आ काज

एकाएक बढ़ि गेल छल जाहि कारणसँ लोक सभ तनावमे रहैत छल। चूँकी परीक्षाक तिथि पहिने घोषित भए जाइत अछि, तँए सभ काज समयवद्ध ढंगसँ करबाक छल। तहिया कम्पूटरक आगमन नहि भेल छल। सभ काज हाथेसँ होइत रहए। हालत ई छलैक जे निदेशक जी स्वयं नित्य सैकड़ोक तादादमे प्रवेश पत्र लिखैत छलाह आ अनकर कथे कोन। परीक्षाक ब्यवस्था करब कोनो जबार भोज करबसँ बेसी कठिन काज छल।

एतेक अस्त व्यस्तताक बाबजूद ओ कार्यालय आगू चलि पड़ल मुदा निदेशकजी निरन्तर पारिवारिक कारणसँ उदास रहैत छलाह आ अन्ततोगत्वा थोड़बे दिनक बाद दिल्ली आपस चलि गेलाह। हुनकर प्रेम बिआह  छल जे नहि टीकि सकल। दुनू गोटे अतिशिक्षित ओ संभ्रान्त परिवारक छलाह। स्वयं बहुत योग्य रहथि मुदा जीवनक व्यतिक्रमकेँ नहि सम्हारि सकला। भावी प्रवल। ऐहि प्रकरणकेँ स्मरणसँ हृदयमे कएक बेर अरवनो कचोट भए जाइत अछि।

प्रेमक आवेशक अंजाम कतेको बेर बहुत कुटिल होइत अछि। उफानमे रहएबला जोड़ी कएक बेर एक-दोसरक हत्या कऽ दैत अछि। नित्यप्रति एहन घटना होइत रहैत अछि, तथापि लोक प्रेम करैत अछि। जँ प्रेम त्यागसँ अभिभूत नहि भेल, तऽ ओ अस्थिर हेबे करत। के हारत, के जीतत तकर कोनो माने नहि, मुदा सर्जनात्मकताक तऽ अन्त भइए जाएत...।

कार्यालयमे एकाएक ततेक काज आबि गेल आ काज केनिहार लोक ततेक कम छल जे बहुत अस्तव्यस्तता भए गेल। रवियो दिन छुट्टी नहि होइत छल। करवनो काल तऽ दिल्ली घुरि जेबाक इच्छा होइत छल। दड़ियागंजसँ स्टेनली रोड स्थित कार्यालय आएब-जाएब कठिन काज छल।

एक्कापर चढ़ि कऽ बेसी काल यात्रा होइत छल, तथापि समय तऽ लगिते छल। तँए कार्यालयक लगपास डेरा ताकए लगलहुँ। आखिर किछु दिनमे १७, नयाममफोड़गंज हमर डेरा भेल। ममफोड़गंज इलाहाबादक संभ्रान्त आवासीय मोहल्लामे सँ मानल जाइत अछि। मकान मालकिन वृद्धा, स्वतंत्रता सैनानी छली, जिनका सभ गुरुजी कहनि, कारण ओ शिक्षक छली। सेवा निवृत भए गेल रहथि। मासमे एक दिन पैंशन लेबए लेल जखन ओ जाथि तऽ लगैक जे ओ दिव्य व्यक्ति ठाढ़ अछि। आन दिन विक्षिप्त जकाँ एकटा कोठरीमे सिमटल। भूतलपर दोसर किरायादार छल। छतपर खाली जगहमे गोइठा भरल छल। कुलमिला कऽ ई आवास सुखद छल। लगपासमे नीक लोक सभ छल।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक भूतपूर्व कुलपति स्व. ए.वी. लाल, अर्थशास्त्र विभागक विभागाध्यक्ष डा. महेश प्रसाद, प्रसिद्ध महिला रोग विशेषज्ञ डा. रमा मिश्र इत्यादि सभ आसे-पासमे रहैत रहथि। निगम चौराहा लगेमे छल। मिठाइ क दोकान घरेलू समान इत्यादि सभ किछुक दोकान सेहो आसेपासमे। कार्यालयसँ ममफोड़गंज स्थित हमर डेरा पैदल ५-७ मिनटक रस्ता छल।

अस्तु, आवागमनक समय ओ खर्चा दुनू बाँचए लागल। क्रमश: लगपासक लोक सभसँ परिचय होमए लागल आ जीवन यात्रा अपेक्षाकृत सरलतासँ आगू बढ़ल। छुट्टी दिनमे लगपास एमहर-ओमहर आएब-जाएब प्रारम्भ भेल। मोतीलाल नेहरू रिजनल इन्जीनियरिंग कौलेजमे हमर पितियौत भातिज पढ़ैत छलाह। कहिओ काल हुनकासँ भेंट-घाँट करए छात्रावास चलि जाइ। ओतए गेलापर अफसोच होबए लागए जे नीक अंक रहितौं हम एहि इन्जीनियरिंग कौलेजमे अपन नाम नहि लिखबा सकलहुँ। गामक एकटा फौजी कहिओ काल अबैत रहैत छलाह। सासुरक किछु सम्बन्धी सेहो भेट गेलाह। हमर स्कूलिया संगी

इन्जीनियरिंग पास कऽ इलाहाबादेमे नौकरी पकड़ि लेने रहथि। एवम् प्रकारेण पूर्व परिचित लोक सभसँ सम्पर्क भए गेलाक बाद कार्यालयसँ हटि कऽ समाज भए गेल जे क्रमश: बढ़िते गेल, ताहिसँ इलाहाबादमे रहब मनलग्गू भए गेल।

इलाहाबाद कार्यालयमे काज बहुत छल। रवियो दिन व्यस्तता रहैत छल, कारण अधिकांश परीक्षा रविये दिन होइत छलैक। कखनो काल सोची जे हम दिल्ली छोड़ि इलाहाबाद किएक अयलहुँ? प्राय: मोनमे रहए जे गाम लग रहत। खर्चा कम होएत वा इलाहाबाद धार्मिक स्थान अछि, तँए अध्यात्मिकताक विकासमे सहायक रहत।

आध्यात्मिक दृष्टिसँ किछु विशेषता तऽ इलाहाबादकेँ अछिए। प्रतिवर्ष माघमे संगममे जबरदस्त मेला लगैत अछि। कहाँ-कहाँसँ सन्त-महात्मा, गृहस्थ सन्यासी लाखोक संख्यामे ओतए आबि कऽ मास करैत छथि। भजन-कीर्तन करैत छथि। गाम-घरक चिन्तासँ बेफिक्र लोक एकटा अद्भुत आनन्दक अनुभव करैत अछि। माघ मेलाक अवधिमे कहिओ-कहिओ विशेष स्नान होइत अछि। ओहि दिन तऽ लगैत अछि जेना समुद्र संगम दिस अग्रसर भए रहल अछि। माघ मेलामे रंग-रंगक सन्त-महात्माक समागम होइत छल। ओहिमे देवराहा बाबाक नाम के नहि जनैत अछि? हुनकर बएसक बारेमे कहल जाइत अछि जे ओ कतेक दिन जीला तकर ककरो सही अनुमान नहि अछि। डा. राजेन्द्र प्रसाद २-३ सालक रहथि तऽ हुनकर पिता बाबा लग लऽ गेल रहथिन आ बाबा हुनका देखिते कहि उठला जे ई तऽ राजा हएत। सन् १९५४ इस्वीमे भारतक राष्ट्रपति भेलाक बाद ओ बाबाक दर्शन केने रहथि। ओही समयक समस्त प्रख्यात नेता सभ बाबाक दर्शन हेतु अबैत रहैत छलाह। ओ घन्टो पानिमे डुबकी लगओने रहैत छलाह। हुनका योग सिद्ध रहनि आ सामने ठाढ़ व्यक्तिक मोनक बात बुझि जाइत छलाह। कहल जाइत

अछि जे बाबा पानिपर चलि सकैत छलाह, योग क्रिया द्वारा एक स्थानसँ दोसर स्थान जा सकैत छलाह। मंचपर बैस कऽ बाबा भक्त सभकेँ प्रसाद फेकैत रहैत छलाह। ककरो-ककरो माथपर पैर रखि कऽ आशीर्वाद दैत छलाह। एहन व्यक्ति बहुत सौभाग्यशाली मानल जाइत छलाह।

देवराहा बाबाक सम्बन्धमे हमर एकटा निदेशक महोदय सद्यः घटनाक वर्णन करैत कहला जे एकबेर हरिद्वारमे बाबा आयल रहथि। ओ ओहिठाम मेला अधिकारी छलाह। एकटा हाथी बताह भए गेल छल। लोक सभ कोनो तरहेँ ओहि हाथीकेँ नियंत्रित नहि कऽ पाबि रहल छलाह। बाबाक कान धरि ई समाचार गेल। ओ हाथीक हेतु एकटा केरा देलखिन मुदा ककरो ओहि पागल हाथीक लग जेबाक साहस नहि होइत। बाबाक एकटा भक्त सिपाही ओ केरा लऽ हाथी दिस बढ़ल। हाथी ओकरा देखिते हाथसँ बाबाक देल केरा लऽ कऽ खा लेलक आ एकदम शान्त भए गेल। एवम् प्रकारेण रंग-रंगक प्रसंग बाबाक बारेमे सुनबामे अबैत छल। जाबे इलाहाबादमे रही, ताबे प्रति बर्ख बाबाक दर्शन माघ मेलामे होइत रहल। एहि लेल ममफोड़गंजसँ माघ मेला क्षेत्र कएक बेर पएरे जाइत रही, कएक बेर रस्तामे एक्का कए ली। एक बेर सोचैत रही जे जा तऽ रहल छी, मुदा एतेक दूरसँ फेर पएरे केना आएब। ततबेमे देखै छी जे हमर परिचित एकटा व्यक्ति हमरा दिस बढ़ि रहल छथि आ आग्रह करए लगलाह जे आपस हुनके संगे साइकिलपर चलब। १९ जून १९९० क योगिनी एकादशीक दिन बाबा ब्रम्हलीन भए गेलाह। एवम् प्रकारेण भारतक एक महान सन्तसँ प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव नहि रहल, मुदा हुनकर स्मृति हमर इलाहाबाद प्रवाससँ सभ दिनक लेल जुड़ि गेल। बाबाकेँ खेचड़ी विद्या सिद्ध छल जाहि कारण हुनका भूख ओ आयुपर नियंत्रण छलनि।

इलाहाबादमे रहैत प्रभुदत्त ब्रह्मचारीसँ भेंट-घाँटक सौभाग्य सेहो भेटल। ओ सन्त तऽ छलाहे, धार्मिक, अध्यात्मिक विषयक सैकड़ो

पुस्तकक लेखक सेहो छलाह। हुनकर लिखल भगवती कथाक दुनू खण्ड देवराहा बाबाक मंच लग प्रसाद स्वरुप लोक कीनैत छल। बाबा ओहिमे हाथ लगा कऽ सम्बन्धित व्यक्तिकेँ दैत कहथिन-

"जा कलियाण होइ। एकरा पढ़ऽ।"

प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम झूँसीमे छल। ओहि आश्रम द्वारा संस्कृत महाविद्यालय चलैत छल, जाहिठाम गरीब विद्यार्थी सभकेँ नि:शुल्क शिक्षा देल जाइत छल। एक बेर हम अपन अनुज (धीरेन्द्र नारायण मिश्र)क संगे ओतए गेल रही। प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी हुनका बारेमे जिज्ञासा आ हुनका आग्रह केलखिन जे हुनकर संस्कृत महाविद्यालयसँ शास्त्रीक पढ़ाइ करथि, मुदा ओ ताहि लेल तैयार नहि भेलाह।

कृष्णाष्टमीक अवसरपर हम सभ सपरिवार प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम गेल रही। आश्रममे कृष्णाष्टमीक पर्व मनाओल जा रहल छल। करीब ४ बजे ओ बाहर अयलाह आ हमरा सभकेँ हुनकासँ भेँट भेल। ब्रह्मचारीजी आग्रह जे हम सभ कृष्णजन्म देखबाक लेल आश्रमेमे रूकि जाइ, मुदा किछु काल धरि ठहरि हम सभ आपस डेरा आबि गेलहुँ। एकर अलाबा यदा-कदा हम हुनकर आश्रमपर जाइत रहैत छलहुँ। ओहि आश्रमक अध्यात्मिक वातावरणक आनन्द लैत रहैत छलहुँ। संगममे स्नान, माघ मेलाक मास भरिक आयोजन, आ संत महात्माक दर्शन इलाहाबाद रहैत स्वत: उपलब्ध छल जकर लाभ हमरा यथा-सम्भव होइत रहल।

डा. जयकान्त मिश्रसँ भेँट इलाहाबाद अबिते भेल। ई भेँट-घाँट अनवरत बनल रहल। मैथिल मात्रसँ हुनकर सिनेहक ई प्रमाण छल। कएक बेर हुनका ओहिठाम मैथिली भाषाक मूर्धन्य विद्वान लोकनिसँ भेँट-घाँट सेहो भए जाइत छल। क्रमश: हुनकर समस्त परिवारसँ तऽ ततेक सम्पर्क भए गेल जे लगैत छल जेना हुनकर कोनो निकट सम्बन्धी

होइ, ई सभ विशेषता हुनकर छलनि। एहिमे हमर योगदान की कहल जा सकैत अछि? मधुर वाणी, उदार हृदय ओ अपनत्वसँ सरावोर ब्यवहार ककरो आकर्षित कए सकैत छल। प्राय: सभ सप्ताह खास कऽ छुट्टी दिन हुनका ओहिठाम जाइत रहैत छलहुँ। ओहो कएक बेर हमरा डेरापर सपरिवार अबैत रहैत छलाह।

डा. जयकान्त मिश्रजी अंग्रेजीक प्राध्यापक छलाह। इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे विभागाध्यक्ष पदक हेतु हुनका मोकदमाबाजीक सामना करए पड़ल। हुनके विभागक कियो प्राध्यापक इलाहाबद विश्वविद्यालयमे मोकदमा कऽ विभागाध्यक्षक पदक हेतु हठ केने छल, मुदा ओ हारि गेल। अंग्रेजीक व्याख्यता रहितौं मैथिली आ मिथिलाक प्रति हुनकर अनुराग जगजाहिर अछि। हुनका ओहिठामसँ मैथिलीमे ५-७ पृष्ठक एकटा पत्रिका निकलैत छल। हुनकर समस्त परिवार ओहि पत्रिकाक तैयारीमे लागल रहैत छल। ओकरा सैंकड़ो लोककेँ पठाओल जाइत छल। एकाध बेर हमहूँ ओहि काजमे लागल रही।

प्रोफेसर सुनीति कुमार चैटर्जी बृहत मैथिली सब्दकोशक लेल अपन प्राक्कथनमे कहलथि : "His name will be handed down to posterity in India as the greatest benefactor of Maithili at present day after that of the illustrious George Abraham Grierson, and will earn for him gratitude of sixteen millions of Maithili speakers in the first instance and of the scholarly world of the whole of India, in the second."

प्रतिवर्ष विद्यापति पर्व समारोह इलाहाबादमे मनाओल जाइत छल,जाहिमे जयकान्त बाबू बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लैत छलाह। मुदा ओहिमे कतेको बेर गुटबन्दी भए जाइत छल। हुनकर पिता म. म. डा.

उमेश मिश्रजीक बरखीक भोजमे हम अबस्स आमंत्रित रहैत छलहुँ। भोजो बहुत नीक होइत छल। बहुत नेम-टेमसँ हुनकर पत्नी भोजक आयोजन करैत छली। अस्तु, हमर इलाहाबादक स्मृतिक डा. मिश्रजी एकटा अमिट अंग भए गेलाह तऽ कोनो आश्चर्य नहि।

इलाहाबादक चर्च होइक आ डा. जयकान्त मिश्रजीक ज्येष्ठ पुत्र डा. रूद्रकान्त मिश्रजीक चर्च नहि करी तऽ ई हुनका संगे बड़का अन्याय हएत। रूद्रकान्तजी स्वभावसँ एकदम शान्त छलाह। संस्कारसँ तेजस्वी, कर्मठ, मेहनती आ भावुक। पितासँ सपरिवार अलग रहैत छलाह। पहिल पत्नीक असमयमे निधन भए गेल रहनि। ओहि पक्षमे एकटा कन्या रहए। दोसर बिआह सँ सेहो सखापात रहनि। बच्चा सभ संस्कारी। रसूलाबादमे गंगा स्नान करैत, गंगामे गायत्री जप करैत हुनका कएक दिन देखिअनि। संस्कृतक विद्वान छलाह। इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक व्याख्याता छलाह। ओ बहुत परिश्रमी छलाह। अतिरिक्त काज कऽ कऽ कमाइ करक हेतु निरनतर चेष्टाशील रहैत छलाह।

अपन कार्यालयमे परीक्षाक उत्तर पुस्तक जाँचमे कएक बेर हुनका बजबिअनि। बहुत एकाग्रतासँ ओ काज करैत छलाह। हुनकर काजमे एकटा गलती नहि पाबि सकैत छी। हमरासँ बहुत पटैत छलनि आ कएटा नितान्त व्यक्तिगत गप्प सभ हमरासँ करथि जे लिखब उचित नहि। एकबेर हम सपत्नी हुनकर डेरापर गेल रही। बहुत स्वागत भेल। हलुआ से स्वादिष्ट छल जे आइ धरि जीहमे पानि आबि जाइत अछि। बहुत रास गप्प-सप्प भेल।

किछु दिनक बाद ओहि हलुआक प्रशंसा डा. जयकान्त मिश्रजी ओहिठाम कएल। तुरन्त ओतहुँ हलुआ बनल। कहक माने जे एहिठामक हलुआ सेहो कम नहि...। रूद्रकान्तजी दिल्ली आयल रहथि। हुनकर पहिल पत्नीसँ कन्याक बिआह क आमंत्रण देबाक हेतु। हम ओहि

कार्यक्रममे गेल रही। दिल्लियेमे बिआह -कार्यक्रम भेल रहए। हुनकर समस्त परिवारसँ भेँट भेल।

रूद्रकान्तजीसँ बहुत दिन बाद फोनपर गप्प भेल। डा. जयकान्त मिश्रजीकेँ साहित्य आकदमीसँ २००० इस्वीमे भाषा सम्मान भेटल रहनि। ताहि क्रममे ओ सभ दिल्ली आयल रहथि। हम भेँट करए गेलहुँ मुदा कनीक देरी भए गेल छल आ पता लागल जे किछुए काल पर्वू ओ सभ इलाहाबादक हेतु प्रस्थान कऽ चुकल छथि। किछु दिनक बाद सुनएमे आयल जे रूद्रकान्तजी नहि रहलाह।

ऑफिस तऽ ऑफिस होइत अछि। चाहे ओ प्रयागमे होइक वा दिल्लीमे। इलाहाबाद आबएसँ पर्वू सोचने रही जे ओ धार्मिक स्थान अछि आ ओहिठामक लोक सभ बहुत संस्कारी हेताह। किछु एहन लोक भेटबो केलाह। इलाहाबादक धार्मिक प्रसांगिकता अखनो अछिए। तँए किछु हदतक हमर ई सही छल। मुदा कार्यालयक अन्दर जे वातावरण छल, (आपसी सिरुफुरौअल कहि सकैत छी) से तऽ नर्के छल। एकटा निदेशक महोदय (जे आइ.एस. अधिकारी रहथि) कहला जे कलक्टरक रूपमे काज करबामे हुनका ओतेक दिक्कत नहि भेल जतेक १३ आदमीकेँ सम्हारैमे एहि कार्यालयमे भए रहल अछि। अधिकारी, कर्मचारी सभ युवक छलाह। ककरो बेसी अनुभव नहि रहए। काज से बहुत रहए। तनावक एकटा प्रमुख कारण सेहो छल। मुदा असल कारण छलाह एकटा कर्मचारी जे दुनियाँ भरिक तिकरमवाज छलाह। जँ ककरो तंग कर क हेतु २० किलोमीटर पएरो चलए पड़त तऽ ओ ताहि लेल तैयारे रहैत छलाह।

कार्यालयक गुटबन्दी पराकाष्ठापर छल। छोटसन कार्यालयमे मानवीय सम्बन्ध ततेक जटिल छल जकर वर्णन नहि। निदेशक सभ आइ.ए.एस. अधिकारी होइत छलाह, मुदा मानवीय सम्बन्धक ओझरी सरकारी आदेशसँ नहि सोझरा सकैत छल। मोटा-मोटी दू भागमे

कार्यालयक लोक सभ बँटि गेल रहथि। कियो नव कर्मचारी आबए तऽ दुनू गुट ओकरा पटबैमे लागि जाइत। अहीक्रममे हमर कौलेजक सहपाठी स्मरण भए जाइत अछि। सी.एम. कौलेज दड़िभंगासँ ओहो पढ़ल छलाह। दड़िभंगामे घर रहनि। नौकरी भेलाक बाद कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादमे पदस्थापित भेलाह। मुदा मोटा-मोटी ओ दोसर गुटमे चलि गेलाह। बादमे ओ आइ.ए.एस परीक्षाक माध्यमसँ आयकर विभागमे नियुक्त भेला आ तकर बाद कहिओ भेँट नहि भेलाह। कार्यालयक एहन उठा-पटकक बीच ९ वर्षक समय केना कटल से आश्चर्य...।

एक राति करीब २ बजे हम भभा कऽ हँसि पड़लौं। श्रीमतीजीक निन्न टुटि गेलनि। निन्न टुटिते पुछली-

"की भेलैक, अहाँ एना किए हँसि रहल छी?" असलमे ओहि दिन कार्यालयमे मारि-पीट भए गेल रहए, जकर स्मरणसँ हँसी लागि गेल रहए। कार्यालयक दूटा कर्मचारीक बीच बाता-बाती होइत- होइत मारि-पीट होमए लागल।

हल्ला सुनि कार्यालयक सभसँ पैघ अधिकारी, निदेशक महोदय जे आइ. ए०एस. छलाह, कोनो बहन्ने खसकि गेलाह। सभ गोटे मुहाँ-मुहीं देखैत रहल । एकटा सज्जनक हाथ टुटि गेल। ओ एफ.आई.आर. करबाक हेतु थाना विदा भेलाह। हुनकर अपेक्षा रहनि जे हम हुनका संगे थाना गबाहीमे चली, मुदा हमरा से पसिन नहि भेल आ ने हम ओहि झंझैटमे पड़ए चाही, अस्तु गाहे-बगाहे मौका ताकि कऽ हम घटना स्थलसँ खसकि डेरापर चलि अयलहुँ। एहि बातसँ पीड़ित कर्मचारी बहुत नाराज भेलाह आ बहुत दिन धरि एहि बातकेँ मोनमे गाड़ने रहलाह।

नौकरीक शुरूआती दौड़मे दरमाहा कम छल। समयोपरि काज केलाक बाद किछु पैसा अतिरिक्त भेट जाइत छल। असलमे

अधिकारीगण एकरा एकटा हथियारक रूपमे इस्तेमाल करैत छलाह। जे पसिन्नक लोक छल ओकरा असानीसँ समयोपरि भेट जाइत छल। हमरा सबहक एकटा संगी (जे दड़िभंगेक छलाह) चलाक-चुस्त रहबाक कारणेँ बिना अतिरिक्त काज केनौं समयोपरि प्राप्त कए लैत छलाह। कार्यालयोक समयमे ओ पढ़ैत रहैत छलाह। प्रतियोगिता परीक्षा सबहक तैयारीमे लागल रहैत छलाह आ अन्तत: आइ.ए.एस. परीक्षा पास कऽ ओ बहुत आगाँ बढ़ि गेलाह।

समयोपरि काज कार्यालयमे संवेदनशील मुद्दा छल। एकबेर समस्त कर्मचारीक अगुआ बनि हम कार्यालयमे हड़ताल करबा देलिऐक। परीक्षाक समय लगीच रहए। उम्मीदवार सबहक प्रवेश पत्र जारी हेबक छल मुदा कार्यलयमे काज ठप। मान-मनौअलक बाद हड़ताल समाप्त भेल। मुदा हड़तालमे सहयोगी हेबाक कारण हमरा बहुत दिन धरि तंग कएल गेल।

एक दिन हम श्रीमतीजीकेँ डाक्टरसँ देखबए गल रही। कार्यालय आबएमे बिलम्ब भए गेल। जखन ओतए पहुँचलहुँ तऽ देखलहुँ जे पूरा कार्यालयक कर्मचारी बाहर ठाढ़ अछि। निदेशक महोदय सेहो कुर्सी लगा कऽ बाहरेमे बैसल छलाह। मोनमे उठल- माजरा की अछि? माथ ठनकल। तरह-तरहके बात सोचाए लागल। थोड़ेक आगाँ बढ़लहुँ तऽ कियो कानमे फुसफुसा कऽ कहलनि-

“ताला सभ कुंजीक अभावमे बन्दे रहि गेल अछि!”

जल्दीसँ डेरा आपस जा कऽ कुंजीक गुच्छा अनलहुँ। कोठरी सभ खोलल गेल। निदेशक महोदय अपन कोठरीमे बैसला। तकर बाद असगरमे बजा कऽ हमरा अपन नाराजगी व्यक्त केलाह। एहन सन्तुलित आ संयत व्यक्ति कम होइत अछि।

लगभग तीन साल हुनका संगे काज करबाक अवसर भेल। प्राय: पहिलबेर हुनका तमसाइत देखलियनि। असलमे चौकीदार कुंजीक झाबा बिना हमर जानकारीकैं हमर बच्चाकैं पकड़ा देने रहए। हमरा एहि बातक जानकारी नहि छल। मुदा गड़बड़ी तऽ भइए गेलइ।

कार्यालयक रोकड़क हिसाव तथा पैसाक लेन-देन हेतु एकटा कर्मचारी छलाह जे जँ रातियोकैं कतहुँ देखा जइतथि तऽ भूतक प्रत्यक्ष दर्शनक आभास होइत। कारी, भुट्ट, बीड़ी पीबैत आ टंकक पर निरन्तर टिपिर-टिपिर करैत। अपन काजमे मेहनती आ माहिर रहबाक कारण अधिकारी सभ ओकरा मानै। तकर दुरुपयोग ओ लोककैं तंग करबामे करैत छल। कोनो बिल दियौ, ओ ताकि कऽ गलती निकालि दैत, दाबापर कैंची चला दैत, एहिसँ ओकर परपीड़क स्वभावकैं आनन्द होइत रहए। लोक सभ ओकरासँ तंग तऽ रहए मुदा कएल किछु नहि होइक । जखन प्रशासनक अधिकारी हम भेलहुँ तऽ पहिने मौका भेटते ओकरापर आक्रमण कऽ देल। भेलैक ई जे ओकर कोनो काजमे सुधारक परामर्श देलिऐक तऽ ओकरा बड्ड खराप लगलै। चिकरए, भेकरए लागल जे ओकरा एहि काजसँ हटा देल जाए, हम ने यएह देखलहुँ ने वएह, तुरन्त आदेश निकालि ओकरा जगह दोसर कर्मचारीकैं खजाँची बना देलिऐक। आब तऽ ओ साँप जकाँ छटपटाए लागल, डिरियाइत घुमैत रहल। केतए केतएसँ सिफारिस लगेलक, मुदा हम अरि गेलिऐक। ओकरा हटए पड़लै।

इलाहाबाद स्थित कर्मचारी चयन आयोगक कार्यालयक मुखिया निदेशक आइ.ए.एस. अधिकारी होइत छलाह। १९८७ इस्वीमे हमरा चलि अयलाक बाद ओहिमे आन-आन सेवाक अधिकारी सभ सेहो नियुक्त भेलाह। ओहि पदपर वएह व्यक्ति अबैत छलाह जिनकर इलाहाबादमे घर वा परिवार रहए। हम ९ साल ओहि कार्यालयमे रहलहुँ जाइ अन्तरालमे चारिटा निदेशक संगे कार्य करबाक अवसर भेटल।

ओहि चारूमे एकटा प्रोन्नत द्वारा आइ.ए.एस. बनल छलाह। ओहिसँ पूर्व ओ प्रान्तीय सेवा (पी.सी.एस.)मे रहथि। हुनकर पिता उच्च न्यायालयक सेवा निवृत्त जज रहथिन। पिताक एक मात्र सन्तान छलाह। बहुत ताम-झामसँ रहथि। ओहि समयमे मूलत: फिएट वा एम्बेसडर कारक चलनि छलैक। हुनका लगमे फिएट कार छलनि, जाहिसँ चालक हुनका कार्यालय आनए आ लऽ जाए। दुपहरियाक भोजन सेहो घरे जा कऽ करथि। कार्यालयमे जखन ओ पदस्थापित भेल रहथि तऽ कएक दिन धरि थूकदानीक लेल हंगामा भेल रहए। थुकदानी कोन नियमक अधीन कीनल जाए? हारि कऽ ओ अपन घरेसँ थुकदानी लऽ अनलाह। हुनका पान खेबाक आदति रहनि, तँए पिकदानी राखब अनिवार्य छल।

कार्यालयमे ओ कोनो रूचि नहि राखथि। सभ अधीनस्थ अधिकारीपर छोड़ि देने रहथि। एमहरसँ प्रस्ताव आयल तऽ ओहिपर दसखत आ ओमहरसँ आयल तऽ ओहूपर दसखत। कएक बेर तऽ एहन होइत जे एक्के विषयपर विपरीत आदेशपर ओ दसखत कऽ दैत छलाह। कहिओ काल हुनकर घर जेबाक अवसर प्राप्त होइत छल। रसूलबाद स्थित गंगाक घाटसँ सटले विशाल ओ सुन्दर हुनकर घर छल। बादमे पता लागल जे सेवा निवृत्तिक बाद ओ अपन घर बेचि लेलाह आ राजस्थानमे अपन पैतृक स्थानपर रहए लगलाह। कार्यालयमे हुनका निष्पृह रहबाक कारणे कार्यालयक महौल खरापे होइत गेल। मानवीय सम्बन्धमे कटुता बढ़ैत रहल आ किछु गोटे दिन-राति एक दोसरक टाँग खिचौअलमे लागल रहलाह।

सन् १९८५ इस्वीमे कर्मचारी चयन आयोग, इलाहाबादक समक्ष प्रस्ताव छल जे बिहारमे दूटा नव परीक्षा केन्द्र स्थापित कएल जाए। ओहीमे एकटा केन्द्र दड़िभंगा वा मुजफ्फरपुरमे ओ दोसर दुमका वा भागलपुरमे। हमरासँ तत्कालिन निदेशक महोदय एहि विषयपर परामर्श

मंगलनि। हमर आग्रहक अनुसार दड़िभंगा आ दुमकामे परीक्षा केन्द्रक स्थापना भेल। दड़िभंगामे परीक्षा आयोजनक ब्यवस्था हेतु पर्यवेक्षकक रूपमे हम दड़िभंगा गेलो रही। दड़िभंगामे ५-६ टा परीक्षा केन्द्र छल जाहिमे हजारोसँ बेसी परीक्षार्थी भाग लेलाह। किछु केन्द्रपर परीक्षा ब्यवस्था स्तरीय नहि छल तथापि जेना-तेना काज ससरल। दड़िभंगामे परीक्षा केन्द्रक स्थापनासँ सैकड़ो स्थानीय विद्यार्थी सभकेँ कर्मचारी चयन आयोगक माध्यमसँ नौकरी भेटल, अन्यथा हुनका पहिने अही परीक्षा हेतु पटना जाए पड़ैत छल। दुमका केन्द्रमे अपेक्षाकृत कम उम्मीदवार रहैत छल, तँए बादमे ओ परीक्षा केन्द्र नहि रहल। दुमकाक जगह भागलपुरमे परीक्षा केन्द्र बनल जे सफल रहल।

सन् १९८१क लगपास ओहि कार्यालयमे किछु नव लोक सबहक पदस्थापना भेल जाहिमे प्रमुख छलाह- श्री संजीव सिन्हा, एम.ए; एल.एल.बी.। ओ इलाहाबादक एकटा प्रतिष्ठित परिवारसँ अबैत छलाह। हुनक समस्त परिवार अति शिक्षित आओर वरिष्ठ अधिकारी सभ छलाह। हुनकर एकटा बहिनोइ भारत सरकारमे सचिव पदसँ सेवा निवृत्त भेलाह। हुनकार ब्यवहार ओ विचारसँ ओहि कार्यालयक वातावरणमे तऽ जे सुधार भेल से भेल, मुदा हमरा तऽ जबरदस्त समर्थन भेटल। हुनकासँ मित्रता अखन धरि ओहिना चलि रहल अछि। बीचमे ओ दिल्ली स्थानान्तरित भए कऽ अयलाह, फेर आपस इलाहाबाद गेलाह, हम दिल्ली चलि अयलहुँ, मुदा हमरा लोकनिक पारस्परिक सम्बन्ध ओहिना मधुर बनल अछि। हुनकर समस्त परिवारसँ हमरा क्रमश: सम्पर्क भए गेल जे अद्यावधि बनल अछि। कार्यालयक ओहन विकट वातावरणमे एहन नीक लोक भेटलाह से ईश्वरक चमत्कारे कहक चाही।

हमरा जीवनमे किछु गोटे एहन भेटलाह जे बिना कोनो स्वार्थे निरन्तर मदति करैत रहलाह। हमरा प्रति सद्भावना रहलनि आ संकटक

समयमे सहोदर जकाँ ठाढ़ रहलाह। निश्चय कोनो जन्मक हमर पूण्यक ई फल रहल होएत। दड़िभंगामे नौकरी करैत काल पिण्डारूछक डा. विनय कुमार चौधरीजी, इलाहाबादक श्री संजीव सिन्हाजी ओ दिल्लीमे काज करैत काल श्री मदन मोहन सिन्हाजी आओर हमरे नामधारी मिश्रजी (मूलत: दड़िभंगा लगक पतोरगामके रहनिहार) हमर जीवनमे प्रात: स्मरणीय छथि। के कहैत अछि जे कार्यालयमे दोस्ती नहि होइत छैक? किंवा ओहिठामक सम्बन्ध चलता होइत अछि। काजसँ काज मतलब राखए-बला परिवेशमे बेसी अपेक्षा सम्भवो नहि अछि आ ने राखक चाही। परन्तु उपरोक्त व्यक्ति सभ विभिन्न समयमे कार्यालयमे हमरा भेटलाह आ जीवन भरिक हेतु घनिष्ट मित्र बनल रहलाह।

इलाहाबाद कार्यालयक महौल खराप करएमे एक व्यक्तिक बहुत योगदान छल। आब ओ एहि दुनियाँमे नहि छथि मुदा जखन कखनो हुनकर चर्चा होइत अछि तऽ ओ बात सभ मोन पड़िते अछि।

गामक परिवेशसँ हम एकबेर दिल्ली तकर बाद इलाहाबाद आबि गेल रही। नौकरी केना कएल जाइत अछि, तकर व्यवहारिक अनुभव नहि छल आ ने ओहि वातावरणमे कहिओ रहलहुँ। दिन राति मेहनत करी, शत- प्रतिशत इमानदारीसँ काज करी, ककरो अहित नहि करी, तथापि अधिकारी लोकनि खूब प्रसन्न नहि रहथि, कारण कोनो बात भेल आ ठाँइ-पठाँइ लड़ि जाइ, मुहेँपर सही बात बाजि दिऐ, कएक बेर सही विषयपर आक्रमक सेहो भए जाइ, एहि सभ कारणसँ अधिकारी लोकनिकेँ अहंपर चोट पड़ैत छलनि आ सभ मौका पाबि कऽ तंग करथि। कएक बेर बाजिव हक देबामे बाधा ठाढ़ कए देथि आ किछु नहि तऽ व्यंगे कऽ देथि। कहक माने जे काजसँ अधिकारीक अहंक रक्षा सरकारी कार्यालयमे अधिक महत्वपूर्ण होइत अछि, से बात जाबे बुझलिऐक, ताबे बहुत देरी भए गेल छल।

कार्यालयक काज हेतु माटाडोर गाड़ी छल। ओकर चालक सज्जन व्यक्ति छलाह। प्रशासनक काज हमरा जिम्मा छल, तँए गाड़ी ओ चालक हमर नियंत्रणमे रहैत छल। निदेशक महोदयक लेल अलगसँ गाड़ी नहि छल। आइ.ए.एस. अधिकारी होइतो ओ स्कूटरसँ कार्यालय अबैत छलाह।

एक दिन एकाएक गाड़ी हुनकर घरपर पार्क भेल आ ओ गाड़ीक उपयोग अपना अधीन कऽ लेलाह। हमरा एकर जानकारी नहि छल भोरे किछु काजसँ कतहुँ जेबाक हेतु गाड़ी तकलहुँ तऽ पता लागल जे गाड़ी नहि अछि। हमरा बहुत तामस भेल। चालककेँ डाँट-फटकार कऽ दिलिऐ। ओ नून-तेल लगा कऽ निदेशक महोदयकेँ चुगली कए देलक। सुनबामे आयल जे हुनका घर जा कऽ रंग-बिरंगक उपराग देलक। परिणाम भेल जे निदेशकजी बहुत क्रुद्ध भए गेलाह। ओहुना ओ हमरासँ अप्रसन्ने रहैत छलाह। एहि घटनाक बाद हमर हुनकर सम्बन्ध कहिओ पटरीपर नहि आयल। आब सोचैत छी तऽ हँसी लगैत अछि- अपनोपर, हुनकोपर। कार्यालयमे जे छल से छल, मुदा ओहिसँ हटि कऽ हमर एकटा स्वस्थ, सुयोग्य लोकक समाज बनि गेल छल जाहिसँ तमाम कष्ट अभाव आ संघर्षक बीच हमरा मोन लगैत छल। डा. सुभद्र झाजी गाहे-बगाहे इलाहाबाद अपन माझिल पुत्र (भास्करजी)क ओहिठाम अबैत रहैत छलाह। हुनकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसरमे डेरा छल। एकबेर करीब ११ बजे दिनमे हम सुभद्र बाबूसँ भेँट करए भास्करजीक डेरापर गेलहुँ तऽ डाक्टर साहेब कहला जे ओ लगातार ९ घन्टासँ अध्ययन कए रहल छथि। मैथिलीक शब्दकोषसँ सम्बन्धित किछु काजमे लागल छलाह।

एकबेर सुभद्र बाबूकेँ हम नोत देने रहियनि। डेरासँ ओ असगरे विदा भेलाह। भास्करजी पाछाँ विदा भेलाह आ हमर नयाकटरा स्थित

डेरापर पहिने पहुँच गेलाह। सुभद्र बाबूक कोनो पता नहि छल। भास्करजी फिरसान रहथि। हुनका ताकए हेतु एमहर, ओमहर वौआइत छलाह कि सुभद्र बाबूकेँ निच्चाँमे हमर नाम लऽ कऽ चिचियाइत सुनलहुँ। घर पहुँच कऽ कहए लगलाह जे गलतीसँ ओ बगलमे कनी हटि कऽ धोबी घाटपर चलि गेल छलाह। असलमे ओ मकान धोबीक छल, से गप्प हम हुनका कहने रहियनि। कनी कालक बाद भाष्करजी सेहो आपस अयलाह आ तखन भोज-भात भेल। हमर डेरा देखि कऽ सुभद्र बाबू कहथि जे केराक घौरमे जेना पातसँ पात निकलैत अछि, तहिना तोरा डेरामे कोठरीसँ कोठरी निकलैत अछि। गप्पक क्रममे कहलथि जे सेवा निवृत्तक बाद हेतु पाण्डिचेरीमे घर बनाबह। हुनका पाण्डिचेरी बहुत पसिन छलनि। एवम् प्रकारेण जखन-कखनो ओ इलाहाबाद अबैत छलाह तऽ हमर-हुनकर भेँट-घाँट होइत रहैत छल, जे निश्चय आनन्ददायी छल।

"Life is an endless struggle.
If you stop struggling,
You are firished."

उपरोक्त कथन एकदम सत्य अछि। जीवन संघर्षक अन्तहीन यात्राक प्रत्येक डेग आगाँक यात्राक पथ प्रदर्शक बनि जाइत अछि। एहन कमे लोक छथि जे बनल-बनाएल सभ किछु प्राप्त कए लैत छथि। मुदा हुनका ओ आनन्द कदापि नहि भए सकैत छनि जे कठोर संघर्षक बाद प्राप्त छोटो-मोटो उपलब्धिसँ होइत अछि। इमानदारीसँ परिश्रमक कऽ जीवन-यापन करब तलवारक धारपर चलब थिक। लेकिन यदि आदमीमे साहस होइत, दृढ़ निश्चय होइत, ईश्वरमे आस्था होइत तऽ संघर्ष रंग लबैत अछि। कहबी छैक जे "Say not the struggle availeth not." नहि कहू जे संघर्ष रंग नहि अनैत अछि, अबस्स अनैत अछि, देर-सबेर भए सकैत अछि। ताइ लेल धैर्य चाही।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक प्रख्यात उपकुलपति स्व. ए.वी. लाल कहिओ काल साक्षात्कार लेबए कर्मचारी चयन आयोग अबैत छलाह। ओही क्रममे कएक बेर हम हुनका ओहिठाम जाइत छलहुँ। हुनकर घर गेलापर बहुत शान्तिक आभास होइत छल। हुनका धिया-पुता नहि छलनि। पत्नी आ ओ अपने बहुत शान्तिसँ रहैत छलाह। स्वभावक सरलताक कोनो वर्णनन नहि। एकबेर भोपाल साक्षात्कारक क्रममे हम सभ संगे अतिथि गृहमे रहल रही। भोपाल संगे घूमल रही।

दिल्ली अयला पश्चात कतेको दिनक बाद पता लागल जे हुनकर पत्नीकेँ हुनके नौकर हत्या कऽ देलक। भेलैक ई जे ओ अपने कतहुँ बाहर रहथि। घरमे पत्नी असगरे रहथिन। आल्मीरासँ किछु पाइ निकालि कऽ नौकरकेँ तरकारी आनक हेतु देलखिन। ओहि आल्मीरामे रूपैआक गड्डी ओकरा देखा गेलइ। ओ लालचमे पड़ि कऽ कोनो भारी चीजसँ हुनकर माथपर चोट केलक जाहिसँ एकाएक हुनकर मृत्यु भए गेल। नौकरबा सभटा रूपैआ-पैसा लऽ कऽ फरार। ओहि नोकरक पिताकेँ आ ओकरो स्व. ए.बी.लालजी इलाहाबाद विश्वविद्यालमे नौकरी धरौने रहथि। बहुत दिनसँ ओ सभ हिनका परिवारसँ जुड़ल छल। मुदा लोभमे आबि गेल। सभ बफादारी मिनटोमे बिला गेलइ। मुदा फबलै नहि। पकड़ा गेल। आजन्म काराबास भेलैक। मुदा एक निर्दोष आदमी मारल गेल। वृद्धावस्थामे ए.बी.लालजीकेँ घोर कष्ट लिखल रहनि।

“ऐ भाई जरा देख के...। आदमी से जानबर ज्यादा वफादार है..।”

जाहि व्यक्तिक पूरा परिवारकेँ ओ संरक्षण देने छलाह, आजिविकाक प्रबन्ध केने छलाह आ संगे रखैत छलाह वएह विश्वासघात कऽ गेल। भावी प्रवल।

ई जीवन बड़ विचित्र अछि। स्मृतिक आँगनमे जतइ ठाढ़ होइत छी, धँसि जाइत अछि। रंग-बिरंगक घटनाक्रम सभ माथाकेँ गछारि लैत अछि। की लिखू, केतबा लिखू आकि चुप्पे रहि जाँउ। रंग-रंगक घटना क्रम सभ होइत रहल। नीको लोक सभ कालचक्रमे पिसाइत रहलाह। एकसँ एक मुर्ख, गमार, बैमान आ उचक्काकेँ फलैत-फुलैत देखलिऐ। किछु नहि बुझाइत अछि जे आखिर की-सँ-की भए जाइत अछि। निश्चय जीवन दू -दूना चारि नहि अछि। भए सकैए कएक जन्मक हिसाब-किताब होइत होइक। सत्य की अछि, से तऽ भगवाने जानथि।

ओहि समयमे इलाहाबादक चर्चित व्यक्तिमे सँ एकटा छलाह, राम सहाय, सेवानिवृत आइ.ए.एस.। ओ फौजी छलाह। फौजसँ सेवा निवृत्तिक पश्चात आइ.ए.एस.मे आयल रहथि। इलाहाबाद विश्वविद्यालयक उपकुलपति बनाओल गेल रहथि। आओर कतेको महत्वपूर्ण पद सभपर ओ रहलाह मुदा हुनकामे अहं नामक चीज नहि छल। हुनकासँ गप्प-सप्प केलासँ बहुत उत्साह होइत छल। एकबेर कोनो काजे हुनका ओहिठाम गेल रही। हुनकर पत्नी नौकर-चाकरक अछैत स्वयं चाह बनौलथि, अपने हाथे चाह परसलथि आ गप्प-सप्पक दौरान तेना कऽ मिलि गेली जे लगैत रहए कतेको बर्खक पुरान जान-पहचान अछि। निरन्तर प्रसन्न रहैत छलाह। कखनो तनाव नहि। हम एहि प्रसन्नताक रहस्यक बारेमे पुछलियनि तऽ ओ कहलनि-

“एकर दूटा कारण अछि- पहिल तऽ हमर पत्नी छथि जे निरन्तर हमरा संग दैत रहली आ दोसर हमर अहंकार रहित ब्यवहार। हम एकसँ एक पदपर रहलहुँ मुदा सामनेबला व्यक्तिसँ बराबरीक ब्यवहार कएल। पदक अहंकार हमरापर कहिओ हाबी नहि भेल। जखन जे समस्या आयल, ओकर तुरन्त ओ सरलतम समाधान करब हमर स्वभाव अछि। एहिसँ हमर माथ निरन्तर चिन्तामुक्त रहैत अछि।”

एक दिन हुनका पैंट-सर्ट पहिरने कटरा स्थित लक्ष्मी सीनेमा लग साइकिल चलबैत देखलियनि। सीभील लाइन्ससँ कटरा साइकिलेसँ आबि गेल रहथि। ई चुश्ती-फुर्ती ओहि बएसमे कतए भेटत? एहन-एहन लोक पृथ्वीपर ईश्वरक बरदान थिक। निश्चय किछु एहन नीक लोक सभ छथि जिनका भरोसे पृथ्वी माता सभ अन्याय सहि जाइत छथि आ जीवन चक्र चलैत रहैत अछि।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक सहायक उपकुलपति टी.पतिजी गणितक विद्वान छलाह। सीधा- साधा पएरे चलएबला व्यक्ति छलाह। कएक बेर साक्षात्कारक क्रममे ओ कर्मचारी चयन आयोग अबैत छलाह। साक्षात्कारक बाद पएरे आपस भए जाइत छलाह। लगेमे मिठाइक एकटा दोकान खुजल छल। पूरा आग्रह कऽ कऽ ओ मिठाइक दोकानपर लऽ जाथि। हुनका लगमे एकटा सूची रहैत छल जाहिमे इलाहाबादक कोन मिठाइक दोकानमे कोन मधुर बढ़ियाँ भेटैए तकर जानकारी छल। दोकानपर ओहि सूचीकेँ देखि ओ मिठाइक आदेश करथि। बादमे ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक उपकुलपति सेहो भेलाह।

असलमे इलाहाबाद विद्या, कला, संस्कृति आ अध्यात्म हेतु युग-युगसँ ख्यात रहल अछि। निराला, महादेवी वर्मा, पंत इत्यादि एक-सँ-एक विद्वान ओहिठाम भेलाह। एहन ऐतिहासिक स्थलपर रहि कऽ हमरा निश्चय बहुत आनन्द होइत छल। कार्यालयक उठा-पटकमे ओतहि छोड़ि ओहिसँ हटि कऽ एकटा सुन्दर समाज हमरा उपलब्ध भए गेल छल।

आपति काल परेखिय चारी,<br>
धरिज धर्म मित्र ओ नारी।

तुलसी बाबाक उपरोक्त कथनी एकदाम सटीक अछि। धैर्य अछि, अनवरत संघर्ष करबाक चेष्टा अछि, तऽ कोनो प्रश्न नहि अछि जे

अहाँ गन्तव्य धरि नहि पहुँचब। अबस्से पहुँचब। आ सत्य पुछी तऽ सही रस्तापर चलबाक संकल्प अपने आपमे विजयक आभास कऽ दैत अछि।

एकबेर हमर ससुर इलाहाबद आयल रहथि। हुनका संगे हुनकर अनुज रहथिन। हमर श्रीमतीजीकें आपसी यात्रामे नैहर जेबाक रहनि। टीसन जेबाक हेतु हम रिक्शा आनए गेलहुँ। कनिक्के दूर आगु कुकुर काटि लेलक। तथापि रिक्शा अनलहुँ आ हुनका लोकनिकें विदा कऽ देलियनि। हुनका सभकें पता नहि चललनि जे हमरा कुकुर काटि लेलक अछि, अन्यथा नहि जइतथि। आब हम असगर भए गेल रही। ओहि समयमे कुकुर कटला बाद अँतरीमे १४टा नमका सूइ लगैत छलैक। एकबेर पहिनौं सुपौलमे १९७५ ई.मे हमरा कुकुर कटने छल। १४ टा सूइ ओहि बेर पड़ल छल। मुदा ओहि सूइक कोनो विकल्प नहि छल। कोताही केलापर रैबीज हेबाक डर छल। गाममे एक व्यक्तिकें रैबीजसँ मरैत देखने रही। से सोचि चिन्तामे पड़ि जाइत छलहुँ।

हमर डेरासँ १० किलोमीटर दूर नगरपालिका अस्पतालमे रैबीजक सूइ लगैत छल। एक दिनक बाद सूइ लगबक हेतु जाए पड़ैत छल। ओहिमे कार्यालयक एकटा कर्मचारी हमरा बहुत मदति केलाह। ओ अपन साइकिलसँ हमरा लऽ जाथि, सूइ लगबा देथि आ आपस डेरा धरि पहुँचा देथि। पेटमे सौंसे गुल्ठी भए गेल छल। मकान मालकिन बोतलमे पानि गरमा कऽ दैत छली जाहिसँ पेटकें सेकल करी। क्रमश: ईहो समय बीति गेल। पता नहि, कुकुरकें हमरासँ कोन जन्मक वैर छैक। तेसर बेर फेर दिल्लीमे आरकेपुरम डेराक लगमे कार्यालयसँ आपस अबैत काल नान्हिटा कुकुर बहुत तेजीसँ हमरा दिस आयल आ झपट्टा मारलक। कुकुर तेसर बेर काटि लेने छल। सभ काज छोड़ि कऽ चोट्टे सी.जी.एच.एस. जा कऽ सूइया लेलहुँ। ताबत सूइक आकार बदलि गेल छल। छोटका सूइ मात्र ६ टा लेबाक छल। लगेमे सी.जी.एच.एस. छल, तँए बहुत फेतरत

नहि भेल। डाक्टरक कहब छलैक जे जतेक बेर कुकुर, बानर काटत ततेक बेर फेरसँ सूइ लेब अनिवार्य अछि। आब तऽ कुकुरकेँ देखिते साकंछ भए जाइत छी, जाहिसँ चारिम बेर सूइया नहि लेबए पड़ए।

हम इलाहाबादमे ९ साल रहलहुँ। चारि साल गुरुजीक मकानमे किरायेदार छलहुं, १७ नयाममफोड़गंज, इलाहाबाद। तीन साल तऽ निचैन भए कऽ रहलहुँ मुदा तकर बाद तंग करए लागल जे मकान खाली करू। यद्यपि हम अपना भरि किराया समयपर देबक हेतु बहुत साकांक्ष रही। कोनो तरहेँ तंग नहि करिऐक मुदा ओकरा मोनमे मकानक चिन्ता होइत रहए। डर होइत जे मकान चलि जाएत। कतबो बुझबिऐक मुदा ओकर मोन नहि बुझि पबइ। हमरा ओहि मकानमे बहुत नीक लगैत छल। मुदा नित्य प्रतिक झंझटसँ मोन तंग भए गेल आ कनी दूर हटि कऽ एकटा छोटसन मकान किरायापर लेलहुँ। ओकर किराया अपेक्षाकृत कम छल। कोठरीक आगाँ बड़ीटा छत छल जाहिमे कुर्सी धऽ कऽ बैसार होइत छल। मकान मालिकक सेवा निवृत्त पुरातत्व विभागक अधिकारी छलाह। बहुत सौम्य आ सहृदय व्यक्ति। हमरा सबहक बहुत ध्यान राखथि। एहि डेरामे आबि कऽ बहुत शान्ति भेल। किराया कम रहलासँ उसास सेहो भेल। लगभग २ साल हम ओहि डेरामे रहलहुँ।

हमर सबहक डेराक ठीक सामने ऊपरमे एकटा सज्जन सपरिवार रहैत छलाह। हुनकर छोटसन बच्चा स्कूलमे पढ़ैत छल। स्कूलक सवक पूरा करबाक क्रममे ओ अपन बच्चाक जे दुर्गति करैत छलाह जे बिसरल नहि जा सकैए। प्रति दिन पढ़ाइक अन्त मारि-पीटसँ होइत छल। पता नहि, ओहि बच्चाक की भविष्य भेल? अपन जीवनक महात्वाकांक्षा ओ भूतकालक असफलताक चोट निर्दोष बच्चापर बजारि कऽ अपने बच्चाक भविष्य नष्ट केनिहार ओ असगरे नहि छथि। माता-पिताक ई बुझक चाही जे एहि तरहक ब्यवहारसँ बच्चाक दिमाग कुंठित भए जाइत अछि,

असफलताक भाव ओकरा घेरि लैत अछि आ एकटा व्यक्तित्व निर्माणसँ पहिनहि नष्ट भए जाइत अछि। एहने बच्चा सभ पैघ भए कुण्ठाग्रस्त भए आन-आनसँ बदला लैत रहैत अछि।

एहने एकटा उदाहरण हमरा दिल्लीमे भेटल। हम गृहमंत्रालयमे अधिकारी छलहुँ। हमर निदेशक महोदय प्रोन्नत आइ.ए.एस. अधिकारी छलाह। ब्यवहारमे बहुत कर्कस, बात-बातमे गारि देब हुनक स्वभाव छल। बुझेबे ने करए जे एहि व्यक्तिक संग केना समय कटत? क्रमश: हुनकर व्यक्तित्व बुझएमे आयल, आपसी सम्पर्क बढ़ल तऽ एकदिन कहला जे हुनकर एहन ब्यवहार ओ अशुद्ध भाषाक हेतु हुनकर पिता जिम्मेदार छथि। हुनकर पिता पाकिस्तानसँ भारत आयल रहथिन। हिन्दू कालैज दिल्लीसँ पढ़ल रहथिन आ मंत्रालयमे अधिकारी रहथिन। बचपनमे हुनका संगे बहुत सख्ती ओ गारि-मारि करथिन जाहि कारणेँ हुनकर स्वभाव एहन भए गेल जे सबहक हेतु कष्टकारी छल। धिया-पुताक संगे कएल गेल ब्यवहार ओकर व्यक्तित्वक अंग भए जाइत अछि।

हमर एहि डेराक सामने भूतलपर गैरेजमे एकटा चतुर्थ वर्गीय कर्मचारीक परिवार रहैत छल। नित्यप्रति साइकिलसँ ओ कार्यालय जाइत छल। कार्यालय जाइत काल पूरा परिवार ओकरा विदा करैत छल। परिवारमे बुढ़ माए, पत्नी आ कएटा बच्चा सभ छल। ओतेक छोट जगहमे सभ गोटे बहुत आनन्दसँ रहैत छल। साँझमे कार्यालयसँ ओकर आपसी पर परिवारमे जोर-जोरसँ ठहाकासँ आस-पासक वातावरणमे अद्भुत आनन्द पसरि जाइत छल।

थोरेक दिनक बाद हमरा सभकेँ कार्यालयसँ सटले नयाकटरा मोहल्लामे एकटा धोबीक मकान किरायापर भेटल। ओहिमे भनसा घर छोड़ि कऽ तीनटा कोठरी छल, छत छल आ किराया सेहो ठीके-ठाक

छल। कर्यालयसँ पाँच मिनटमे घर आबि जाइत छलहुँ। नयाकटरा स्थित हमर डेराक मकान मालिक धोबी छलाह। बड़ीटा परिवारमे कियो पढ़ल-लिखल नहि छल। सबहक मुखिया बुढ़िया माए छलैक। एकबेर हम किरायाक रसीदक मांग कएल, जाहिसँ इनकमटैक्समे छूट भेटैत। कनियेँ-कालमे जोरसँ हल्ला भेल! पुछलियनि जे की भेलैक? भेल ई रहैक जे किरायाक रसीदक मांगसँ ओ सभ भयभीत भए गेल जे मकान हाथसँ गेल आ ताहि चिन्तामे आपसमे लड़ए लागल। हम हुनका कहलियनि जे कहियौ जे रसीद नहि चाही। से कहिते देरी तुरन्त एकदम शान्ति भए गेल। इलाहाबादक प्रसिद्ध गणितज्ञ स्व. गणेश प्रसादक ओ सभ धोबी छल आ वएह मकान बनबएमे मदति केने रहथिन। क्रमश: ऊपरमे किछु आओर कोठरी सभ बनौलक जाहिमे हम किरायेदार छलहुँ।

सटले वगलमे श्रीवास्तवजी रहैत छलाह। ओ सभ बहुत नीक लोक छलाह। कहिओ काल टीवी देखबाक इच्छा भेलापर हम सभ ओहिठाम चलि जाइत रही। चित्रहार सप्ताहमे दू दिन होइत छल। टीभी देखू आ चाहो पीबू। पहिल बेर चन्द्रमापर गेल भारतीयसँ इन्दिरा गाँधीजीक वार्तालापक सद्य प्रसारण हम ओतहि देखने रही। क्रमश: टीभीक चलन बड़ी तेजीसँ बढ़ि रहल छल। घरे-घरे टीभीक एन्टिना टँगाइत छल। सभ दोकानपर टीभी बिकाय लागल छल। हमर ज्येष्ठ पुत्र 'भास्कर' छतपर लऽ जाथि आ सभ घरपर लागल एन्टिना देखबए लगैत। हमहूँ दोकान सभपर टीभीक मूल्यक सर्वे करैत रहलहुँ। कारी, उज्जर (स्वेत-श्याम) टीभीक जमाना छलैक। ओकरा रंगीन टीभीमे परिवर्तित होमए-मे बहुत समय लागि गेल।

इलाहाबादक फगुआ बहुत आकर्षक होइत छल। पुरुकिया आ नाना प्रकारक पकवानक संग रंगमे सराबोर शहर मदमस्त ढंगमे फगुआ मनबैत छल। लॉडस्पीकरसँ पूरा मोहल्ला हल्ला होइत रहैत छल आ

झुंडक-झुंड लोक सभ रंग खेलाइत एक ठामसँ दोसर ठाम अबैत-जाइत रहैत छलाह। गाम-घरमे जहिना पहिने फगुआ मनाओल जाइत छल, लगभग ओहिना इलाहाबादोमे धूम धर्ड़क्का होइत छल।

आब तऽ गामोमे फगुआ नि:शब्द भए गेल अछि। झालपर फागु सुनबामे नहि अबैत अछि। जोगीरा नहि गाओल जाइत अछि। शराब बन्दीक बाद डगमग-डगमग चलैत लोक सभ देखबामे नहि अबैत अछि। फगुआ दिन गाम फोन कएल तऽ पता लागल जे सभ किछु शान्त अछि। कोनो धू-धर्ड़क्का नहि। सभ अपन-अपन असोरापर बैसल पुरुकिया आ मालपूआक आनन्द लैत छथि।

इलाहाबाद प्रवासक महत्वपूर्ण घटनाक्रममे हमर कनिष्ठ पुत्रक जन्म छल। जन्मक समय लगीच अयलापर माए गामसँ अएली। कमला नेहरू अस्पताल- इलाहाबादक प्रख्यात अस्पताल अछि। ओहीठाम हुनका भर्ती कराओल गेल। माए संगे रहथि। २-३ दिन रहलाक बाद डाक्टर सभ अस्पतालसँ ई कहि कऽ आपस कऽ देलक जे अखन समय लागत। मूल कारण अस्पतालक हड़ताल रहैक, जाहि कारणसँ मरीज सबहक देख-रेख कठिन भए गेल छल। घर पहुँचले रही कि तुरन्त दोबारा अस्पताल जाए पड़ल। अस्पतालमे बहुत कम डाक्टर छलाह। हड़ताल चलिते रहए। सी.जी.एच.एस.सँ हुनका हेतु दबाइक बोतल सभ अनने रही। ओहिमे सँ एकटा चढ़बति देरी स्वस्थ्य खराप होमए लागल। रच्छ भेल जे एहि गड़बड़ीक तुरन्त पता लागि गेल आ डाक्टर सबहक तत्परतासँ हुनकर जान बाँचि गेल।

डाक्टर सभ विचार-विमर्श कऽ कऽ कहलक जे शल्य चिकित्सा द्वारा बच्चाक जन्म हएत। ताहि लेल प्रात:काल भोरेसँ अस्पतालमे तैनात रही। डाक्टरक परामर्शक अनुसार शल्य चिकित्साक सामग्री सभ कीनलहुँ। अस्पतालमे बेहोशी डाक्टरकेँ नहि रहबाक कारण ऑपरेशनमे

देरी भए रहल छल। एलेनगंजमे डाक्टरक घरपर जा कऽ बहुत प्रयास केलहुँ, मुदा जखने हुनका आबक इच्छा भेलनि तखने अएली। ऑपरेशन टीमक नेतृत्व डा. शशिवाला श्रीवास्तव करैत छली। ओ इलाहाबादक सफल तथा नामी डाक्टर छली। हम हुनकर पिताक किरायेदार रहल रही। ऑपरेशनक समयमे हमर कार्यालयसँ कएक गोटे उपस्थित रहि भरपूर मदति केलाह जाहिमे श्री संजीव सिन्हाजीक योगदान अविस्मरणीय अछि। ओहि समयमे हमर आधा परिवार हुनके ओहिठाम रहैत छल। हमर ज्येष्ठ पुत्र चि०भास्करक परीक्षा भए रहल छलनि। ओहि समयमे हुनक पत्नी(श्रीमती स्मृति सिन्हाजी) पूरा भार उठेने रहलीह जाहिसँ ओ ओतहि रहि परीक्षा नीकसँ दए सकलाह।

किछु कालक बाद एकटा नर्स हँसैत बाहर निकलल आ पुत्र-जन्मक सूचना देलक। २० अप्रैल १९८५ क ११:३0 मिनटपर हमर छोट पुत्र क्षितिजक जन्म भेल। एहिसँ कतेक आनन्द भेल, तकर वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। तुरन्त निजी वार्डमे कोठरीक ब्यवस्था कएल आ बच्चाक संग जच्चाकेँ ओतए आनल गेल। दिन भरि भूखल रही। संगम जा कऽ हनुमानजीक दर्शन केलाक बादे भोजन कएल।तकर बाद तऽ देखनिहरक ढवाहि लागि गेल। इलाहाबादक ई विशेषता थिक जे लोकमे भावुक लगाव बेसी होइत छैक, आ बेरपर आनो-आनो लोक ठाढ़ भए जाइत अछि। अगल-बगलमे रहैबला पड़ोसी, परिचित, कार्यालयक सहकर्मी, अधीनस्थ कर्मचारी सभ एकाध बेर अस्पताल अबस्स अएलाह।

इलाहाबादमे आकाशवाणीमे कार्यरत कार्यक्रम अधिकारी डा. श्याम विद्यार्थीजी सँ आकाशवाणी युववाणी कार्यक्रमक रिकर्डिंगक दौरान भेँट भेल। सकारात्मक सोच ओ सरल स्वभावक कारण हुनकासँ अनायासे मित्रता भए गेल। यदाकादा आकाशवाणीसँ हमर कार्यक्रम

होइत रहैत छल। स्थानीय अखबारमे सेहो कएकटा लेख कहिओ काल छपैत छल। कार्यालयक बाद हमर ई सभ मनोरंजन छल।

डा. श्याम विद्यार्थी राजस्थानक रहनिहार छलाह आ संघ लोक सेवा आयोगसँ आकाशवाणीमे राजपत्रित पदपर नियुक्त भेल छलाह। ओहि समयमे डा. मधुकर गंगाधर आकाशवाणीक निदेशक छलाह। ओ पूर्णियाक छलाह आ किछु दिनक बाद स्थानान्तरित भए दिल्ली चलि गेलाह।

पटनासँ निकलैबला प्रसिद्ध मैथिली सप्ताहिक "मिथिला मिहिर"मे हमर कएकटा कथा, लेख आ कविता सेहो छपल। बादमे मिथिला मिहिर बन्द भए गेल आ हम दिल्ली स्थानान्तरित भए गेलहुँ। तकर बाद एहि तरहक गतिविधि कम भए गेल।

कार्यालयक वागवानीक देख-भालक हेतु एकटा नैमित्तिक कर्मचारी छल। ओ गाहे-बगाहे हमर बच्चा सबहक मनोरंजन सेहो करैत रहैत छल। ओकर खूबी ई छल जे प्रत्येक बातमे ओ कहैत 'यससर'। एक दिन ओकरा पुछलिऐ जे तूँ ई कला केतए सीखलह? कहलक जे पूर्वमे ओ एकटा बहुत पैघ अधिकारीक ओहिठाम काज करैत छल। वएह ओकरा 'यससर' कहबाक आदति लगा देलखिन। जँ ओकर खिलाफो कोनो बात होइत तऽ ओकर उत्तर ओ 'यससर' मे दैत छल।

असलमे 'यससर' सरकारी कार्यालयक रामवाण थिक। केहनो संकटसँ अहाँ 'यससर'क सहयोगसँ उबरि सकैत छी। सरकारी कार्यालयमे अधिकारी सभकेँ काजसँ बेसी हुनकर अहं तुष्टि जरूरी होइत अछि। अहाँ दिन राति काज करू आ अधिकारीसँ अहंक टकरावमे फसि गेलहुँ तऽ सभ गुड़-गोबर। नीक व्यवहार तऽ उचित थिक, मुदा बात एतबेपर नहि थमि जाइत अछि। जी-हजुरीक बिना नीक कार्य मूल्यांकन

नहि होइत अछि। एहन कियो बिरले हेताह जे काजक आधारपर श्रेष्ठता तय करैत हेताह।

जीवनमे सभ किछु गणितीय गणना जकाँ नहि चलैत अछि। सभ किछु सोचले नहि होइत अछि आ जे भए जाइत अछि से कए बेर अप्रत्याशित रहैत अछि।

प्रातर्भवामि बसुधाधिप चक्रवर्ती

सोहं व्रजामि विपिने जटिल तपस्वी।

भगवान राम द्वारा कहल उपरोक्त वाक्य हमरा-अहाँपर ओहिना लागू होइत अछि। जे हेबाक छैक से हेतइ। होनी कियो रोकि नहि सकैत अछि। तथापि जीवनमे हाथ-पर-हाथ धऽ बैसलो नहि जा सकैत अछि।

दड़िभंगासँ दिल्ली नौकरी करए गेल रही। ओहिठामसँ थोड़बे दिनमे प्रयास कऽ कऽ इलाहाबाद आबि गेलहुँ आ एहिठाम ९ वर्ष रहलहुँ। आब अपनो आश्चर्य लगैत अछि जे केना ओहि वातावरणमे एतेक दिन रहि सकलहुँ। असलमे कार्यालय तऽ जे छल से छल, मुदा बाहर एकटा नीक सामाजिक परिवेश बनि गेल छल जाहिसँ बहुत भावनात्मक समर्थन भेट जाइत छल। आ कहबी छैक जे अन्हेर गाएक राम रखबार।

अन्तिम २ साल जे निदेशक छलाह, हुनकासँ हमरा एकदम नहि पटल। यद्यपि हम परिश्रम पूर्वक ओ इमानदारीसँ काज करी तथापि ओ असन्तुष्ट रहथि आ तंग करथि। हमर बदली हेतु दिल्ली मुख्यालय लीखि देलखिन। हम दिल्लीसँ डराइ जे केना गुजर हएत, तँए ओहनोमे इलाहाबादे रहए चाही मुदा से नहि भेल आ फरबरी १९८७ मे हमर स्थानान्तरण दिल्ली गृह मंत्रालय भए गेल।

इलाहाबाद हमरा गाम-घर लगैत छल। बहुत नीक समाज भए गेल छल। कार्यालयमे कनी-मनी झंझट तऽ सभठाम रहिते छैक, ओकरा झेलिये रहल छलहुँ। बच्चा छोट रहए। हम ओहिठामसँ हटए नहि चाही,

परन्तु निदेशक महोदय हाथ धो कऽ हमरा पाछू पड़ल रहैत छलाह। कार्यालयमे दू गुट छल। स्पष्टत: ओ हमर घोर विरोधी गुटक संग भए गेल छलाह। वरिष्ठ अधिकारीक हेतु ई उचित नहि छल, मुदा हुनका हमरा खिलाफ किछु भेटनि नहि तँए खिसियौल बिलाड़ि जकाँ...। विरोधी सभकेँ हमरा खिलाफ हावा देथि। हमरासँ काज हटा कऽ विरोधी खेमाकेँ दऽ देथि। मुदा लोक हमरा संगे जे छल से छल, हुनका डरे हटल नहि, मुदा हुनका हाथमे प्रशासकीय चाबुक छल, जकर गलत उपयोग ओ हमरा परास्त करए लेल करथि।

बदलीक खिलाफ हम अध्यक्ष, कर्मचारी चयन आयोगकेँ आवेदन देल। हम ईहो लिखलिऐ जे जँ बदली होइक तऽ हमर घोर विरोधीक सेहो होनि मुदा निदेशक ओकर पक्ष लऽ लेथि। असलमे निदेशकजीकेँ हमरासँ डर होइन। एकबेर ओ कहला जे हम घरेमे रही आ ओ हमरा पूरा दरमाहा दऽ देल करताह। मुदा हम कहलियनि जे काज करब हमर अधिकार अछि। बिना काज केने हम वेतन किएक लेब?

एहि विषयपर अध्यक्ष, कर्मचारी चयन आयोगसँ दिल्लीमे हम भेँट केलहुँ। ओ भेँट करएकाल तुरन्त एकटा अधिकारीकेँ बजा लेलाह जे इलाहाबादमे पूर्वमे रहथि आ निदेशकसँ परिचित छलाह। परिणाम भेल जे अध्यक्षजीसँ भेल हमर सभटा गप्प इलाहाबाद निदेशकजीक कानमे चलि गेल। हम ओतेक खुलि कऽ हुनकासँ गप्पो नहि कए सकलहुँ।

इलाहाबाद आपस अयलहुँ तऽ निदेशकजी ततेक घबड़ाएल छलाह जे स्वयं हमर कक्षमे पहुँचला आ रंग-रंगक आश्वासन देबय लगलाह। मुदा सचमे ओ डरा गेल रहथि। डरेबाक हेतु ओ स्वयं जिम्मदार छलाह। हम तऽ अपन आस्तित्वक हेतु संघर्षशील रही। अन्ततोगत्वा हमर बदली भए गेल।

## पुष्प विहार

१३ फरवरी १९८७क कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादसँ सेवा मुक्तिक बाद हम ३१ मार्च १९८७ धरि अवकाशपर चलि गेलहुँ। इलाहाबादसँ दिल्ली स्थानान्तरणक ब्यवस्था हेतु उपरोक्त अवकाश जरूरी छल। परिवारकेँ, सामानकेँ, दिल्लीमे डेराकेँ, ब्यवस्था करक छल। बाबूजीकेँ गाम गेला पश्चात हमर पत्नी आ दुनू बच्चा सेहो किछु दिनक हेतु हमर ससुरक डेरापर मधुबनी चलि गेली। इलाहाबादसँ ट्रकपर घरेलू समान सबहक संगे अपनो दिल्ली विदा भेलहुँ। संगमे कार्यालयक एकटा कर्मचारी सेहो रहथि। दिल्लीमे डेरा पहिनेसँ ठीक रहए, जनकपुरीक C4E बस ठहरावसँ आगाँ डावरी मोरसँ कनीक आगाँ वैशाली कालोनीमे। ओहि कालोनीमे बिहार-युपीक बहुत रास लोक घर बनओने अछि। इलाहाबाद कर्मचारी चयन आयोगमे पूर्वमे कार्यरत एक अधिकारीक मकान सेहो ओहीठाम छल। हुनके माध्यमसँ हमरा ओ डेरा भेटल छल। ओहिठाम समान सभ व्यवस्थित कए हम फेर इलाहाबाद चलि आयल रही। कएटा छुटल काज सभ छल। कार्यालयसँ सेवा-पुस्तिका, वेतन प्रमाण पत्र आदि निर्गत करेबाक छल।

हमर स्थानान्तरणक बादो हमर विरोधी अधिकारी तंग करबाक उद्देश्यसँ वेतन प्रमाण पत्र निर्गत करएमे देरी करैत रहलाह आ जखन हम इलाहाबादसँ दिल्ली हेतु प्रयागराज एक्सप्रेसमे बैस गेल रही, तखन श्री संजीव सिन्हाजीक हाथे ओ हमरा प्राप्त भए सकल। इलाहाबादसँ दिल्लीक स्थानान्तरण हमरा लेल आघात छल। ओहिठाम एकटा सुसंस्कृत समाज छल। जीवन अभावक बाबजूद एकटा लीकपर चलि रहल छल। बच्चा सभ छोट-छोट छल, सेहो पोसा रहल छल। छोटका बच्चा तऽ मात्र पौने दू सालक रहथि। मुदा अपना हाथमे किछु नहि रहि

गेल छल। तमाम प्रयासक बाबजूद दिल्ली स्थानान्तरण भए गेल तँए जेबाक रहबे करए। डा. जयकान्त मिश्रजी सँ एहि विषयमे विचार विमर्श कएल। ओ कहलनि जे थोड़ेक दिन हेतु चलि जाउ आ फेर बदली करा कऽ आपस चलि आएब।

डा. गंगानाथ झा संस्कृत स्थानमे कएटा मैथिल सबहक परिचित छलाह, हुनको सभसँ भेंट-घाँट कएल। गंगामे स्नान कएल। आओर ओहिठामक हनुमानजीक दर्शन केलहुँ आ इलाहाबादसँ विदा भेलहुँ। हमरा दिल्ली अयला पश्चात ओहि कार्यालयसँ हमर एकटा घोर-विरोधी अधिकारीक सेहो स्थानान्तरण किछु समय बाद दिल्लीए भए गेल। ओ सभ प्रयास कऽ फेर इलाहाबाद आपस भेलाह मुदा हम दोबारा ओही कार्यालयमे नहि गेलहुँ।

इलाहाबादसँ दिल्ली स्थानान्तरणसँ किछु दिन पूर्व नयाममफोड़गंज स्थित हमर मकान मालिक (स्व.वल्लभ शरणजी) कार्यालय आयल रहथि। हुनकर मकान खाली भए गेल रहनि। किरायेदार तकैत रहथि। सभसँ ऊपरक कोठरीमे हम रहैत रही। तकर निच्चाँमे दू कोठरीक फ्लैट रहए। हमरा ओ फ्लैट बहुत पसिन्न छल, परन्तु जखन हमरा जरूरत छल, तखन ओ खाली नहि छल आ जखन खाली भेलैक तखन मकान मालिक दौड़ल हमरा लग आयल रहथि, ताबे हम कार्यालयसँ सटले ६, नया कटरामे आबि गेल रही। चूँकी हमर स्थानान्तरण निकट छल, अस्तु आब बदलबाक औचित्य नहि छल। बल्लभ शरणजी से सुनि उदास भए गेल रहथि जे हम इलाहाबादसँ जा रहल छी।

२ अप्रैल १९८७ क हम दिल्ली गृह मंत्रालयमे पदभार ग्रहण कएल। गृह मंत्रालय बड़ीटा संवर्ग छलैक आ ओहिमे कतेको प्रमुख मंत्रालय विभाग जेना प्रधान मंत्री कार्यालय, राजभाषा विभाग, महापंजीयक

कार्यालय, कार्मिक आओर प्रशासनिक सुधार विभाग आदि-आदि कतेको विभागक पदस्थापना होइत छल। हम ओहिठाम नव रही, कोनो खास जोगार नहि रहए,तँए भगवानक भरोसे रही। जे हेतै, जतए हेतै, ठीके हेतइ।

नार्थ ब्लॉकमे एक दिन अहिना टहलैत रही, कोनो काज नहि भेटल छल, तँए पदस्थापनाक प्रतीक्षामे रही, कि एकटा नामपट्टपर डा. भट्टाचार्यक नाम देखलिऐ। डा. भट्टाचार्य कर्मचारी चयन आयोगक मुख्यालयमे पहिने परीक्षा नियंत्रक रहथि। इलाहाबाद पदस्थापनाक क्रममे हमरा हुनकासँ सन् १९७७ क अन्तमे भेँट भेल रहए। हुनकर कक्षमे गेलहुँ तऽ ओ तुरंत चीन्हि गेलाह। सभ बात बुझि ओ तुरन्त बिना कोनो आग्रह के अवर सचिव (प्रशासन)केँ फोन कऽ कऽ हमरा नीक ठाम पदस्थापित करए कहलखिन आ हमरा हुनकासँ भेँट करबाक हेतु कहला। अवर सचिव (प्रशासन) महोदयसँ भेँट करए गेलहुँ तऽ ओ अग्निश्च-वायुश्च भेल रहथि। हुनक कहक माने जे हम पदस्थापन हेतु हुनकापर सिफारिशक दवाब बना रहल छी। औ बाबू! ओ तेना गरजय-फरजय लगलाह जे हम तऽ गुम पड़ि गेलहुँ। "है, अब वही दफ्तर चलायेंगे क्या?"

हुनकर कक्षसँ शीघ्रे बाहर भए गेलहुँ आ अचताइत-पचताइत घर आपस चलि अयलहुँ। एक-दू दिनक बाद आदेश जारी भेल। अपना हिसाबे ओ हमरा सभसँ खराप पोस्टिंग दऽ देने छलाह। आदेश लेलाह बाद एकाधटा परिचित लोक सभसँ विचार विमर्श कएल आ तुरन्त ओही दिन दुपहरियाक बाद माने २७ अप्रैल १९८७क जे.आइ.सी. (Joint intelligence Committee)मे पदभार ग्रहण कएल। संयोग एहन भेल जे ओही कार्यालयक दू साल हम शान्तिपूर्वक, पूरा इज्जतसँ नौकरी कऽ सकलहुँ। जे.आइ.सी काबीना सचिवालयक अधीन काज करैत छल। श्री खाण्डेलबाल आइ.पी.एस. ओकर अध्यक्ष छलाह। श्री विजय

करण आइ.पी.एस. सचिव रहथि। ओहिमे उच्च अधिकारीक भरमार छल। विभिन्न सेवा सबहक तरह-तरह जानकारीबला व्यक्ति सभ ओहिठाम छल। हमर समय बड़ा नीकसँ कटए लागल। ओहिठाम किछु दिन प्रशासन अनुभागमे पोस्टिंग छल।

जे.आइ.सी. (Joint intelligence Committee)मे एक दिन ब्रिगेडियर रैंकक अधिकारीकेँ अपन अधीनस्थ अनुभाग अधिकारीसँ झगड़ा भए गेलनि। ओ ओकरा कोर्ट मार्शल करबाक हेतु अवर सचिव (प्रशासन)केँ कहलखिन, संगे ओकरा गिरफ्तार करबाक हेतु पुलिसकेँ सेहो बजा लेलाह। अवर सचिव (प्रशासन) महोदय बड़ मुश्किलसँ ब्रिगेडियर साहेबकेँ बुझओलखिन जे फौजक नियम सिविलमे लागू नहि होइत छैक। एहिठाम कोर्ट मार्शल नहि होइत छैक। आ ओ अनुभाग अधिकारी यएहले-वएहले, ओहि विभागसँ खसकि गेल। तकर बाद ब्रिगेडियर साहेबक अधीन पद खाली भए गेल रहैक मुदा कियो ओहिठाम जाए नहि चाहइ।

अन्ततोगत्वा हमर पोस्टिंग हुनका अन्दरमे कऽ देल गेल। ओना, शुरूमे हमरो थोड़ चिन्ता जरूर भेल मुदा क्रमश: सभ किछु अनुकूल भए गेल। ब्रिगेडियर साहेब गोरखा रेजिमेन्टक छलाह। गोर-नार छह फीट नाम, चाकर माथ करगर कारी-कारी मोछ, गजब व्यक्तित्वक लोक छलाह ब्रिगेडियर साहेब। हम हुनका लग पहुँचते फौजी स्टाइलमे सैल्यूट मारैत छलहुँ कि हुनकर प्रसन्नताक ठेकान नहि रहैत छल। मोछपर हाथ फेरैत मन्द-मन्द मधुर-मधुर मुस्की दैत ओ अपन दहिना हाथसँ बैसबाक इशारा करथि। कएटा पैघ-पैघ फौजी अफसर सभ ठाढ़े रहि जाइत छलाह, ओ सभ हमरा बैसल देखि छगुन्तामे पड़ल रहथि, मुदा आदेश तऽ आदेश होइत अछि किने, ताहूमे फौजी अफसरक। हम एन.सी.सी.क प्रशिक्षण केने रही। वएह एहिठाम काज आबि रहल छल।

क्रमश: हमरा ओ ततेक मानए लगलाह जे कोनो हालतमे अपना ओहिठामसँ बदली नहि होमए देथि। यद्यपि ओ बहुत शानदार आदमी छलाह, मुदा हमरा देल गेल काज बहुत संवेदनशील छल। तँए डर होइत छल जे कहीं किछु लफड़ा ने भए जाइक। कएबेर बदलीक मौका सभ सेहो आबए मुदा ब्रिगेडियर साहेब अड़ि जाइत रहथिन। ओहीठाम स्वर्गीय भागवत झाजीक माझिल पुत्र श्री यशोवर्द्धन आजाद–आइ.पी.एस. सँ हमर परिचय भेल। ओ मैथिल प्रेमी आ स्वभावसँ मृदुल छलाह। कतेको बेर हमरासँ अन्तरंग गप्प सेहो करथि आओर मौकापर अचूक मदति तऽ करबे करथि। हुनकासँ जे सम्पर्क भेल से अद्यावधि बनल अछि। ओहि कार्यालयमे अध्यक्ष महोदयक आप्त सचिव स्व. आर.के. सक्सेनाजी बहुत नीक व्यक्ति छलाह। कर्मठता तऽ जेना कुटि-कुटि कऽ भरल छलनि। पातर-छीतर देह, फुर्तीसँ दन-दन करैत अभूतपूर्व तजुरबेकार व्यक्ति छलाह- सक्सेनाजी। कोनो मामलामे हुनकर सलाह बेहद सटीक होइत छल। क्रमश: ओ हमर घनिष्ठ मित्र भए गेलाह आ ताजीवन सम्पर्क बनओने रहलाह।

सक्सेनाजी कार्यालय समयक पश्चात स्व. वी.के. नेहरूजी (स्व.जवाहरलाल नेहरूजीक पितियौत) आप्त सचिवक काज सेहो करैत छलाह। बादमे जखन वी.के. नेहरूजी जम्मू काश्मीरक राज्यपाल भेलाह तऽ ओ हुनकर आप्त सचिव (पूर्णकालिक) भए गेलाह। सेवाक प्रति निष्ठा हुनकर तेहन जबरदस्त छल जे नोकरीसँ सेवा निवृत्तिक बादो ओ वी.के. नेहरूजीसँ जुड़ल रहलाह। हुनका संगे गर्मीमे हिमाचल प्रदेशक कशौलीमे रहथि आ जाड़मे दिल्ली। वी.के. नेहरूजीक परिवारक ओ अभिन्न अंग भए गेल छलाह आ हुनकर मृत्युक बाद हुनक पत्नीक सचिवक रूपमे अन्त-अन्त धरि काज करैत रहलाह। सही माएनेमे ओ कहिओ सेवा निवृत्त नहि भेलाह। सक्सेनाजी जखन करवनो दिल्ली आबथि तऽ हमरा

अबस्स फोन करथि। जाबे टनगर छलाह तऽ कएक बेर कार्यालय, घर आबि कऽ भेँट करथि। छोट-छोट बातक ध्यान सेहो राखथि। सेवा निवृत्तिक बादो हम दिल्लीए रही से हुनकर परामर्श छल। से परामर्श कारगर छल आ हमरा परिवारोमे सभकेँ पसिन्न छलैक।

दू साल पर्व हुनकर ज्येष्ठ पुत्रीक फोन आयल। सक्सेनाजी स्वर्गवासी भए गेल रहथि। हुनकर श्रद्धांजलि सभामे बहुत रास लोक सभ भाग लेलथि। एक साधारण परिवेशसँ उठि कऽ जीवनमे बहुत आगू बढ़ला, अपन परिवारकेँ सभ तरहेँ सम्पन्न छोड़ि गेलाह। हमरा लेल ओ सभ दिन प्रेरणाक श्रोत्र रहलाह। कहबी छैक-

“There are People in Life whom you forget with time, but there are very few people with whom you forget time”.

सक्सेनाजी पर ई पूर्णत: लागू होइत छल।

दिल्लीमे अयलाक एक मासक बाद हमरा पुष्प विहार सेक्टर सातमे सरकारी आवास भेट गेल। ई एकटा बड़का राहत छल। सरकारी मकान भेटलाक बाद जे हमरा आनन्द भेल एकर वर्णन कठिन अछि। बड़ीटा ताला कीनि घरमे लगेलहुँ। प्रथम तलपर अवस्थित ई घर पहिलबेर आबंटित भेल छल तँए निर्माण कालक कएटा अवशेष यत्र-कुत्र पड़ल छल। दिन-राति एक-एक कऽ स्वयं ओकर सफाइ केलहुँ। बिजली लगाबक हेतु अन्हेरिया मोड़ स्थित बिजलीक कार्यालयक कएक चक्कर लगाबए पड़ल।

क्रमशः ओ कालोनी गुल्जार भय गेल। कए गोटा परिचित भए गेलाह। ताहिमे सीतामढ़ी तरफक एकटा मैथिल परिवार सेहो छल। दूध , तरकारी आओर दैनिक आवश्यकताक आन-आन वतु सभ आसे-पास भेट जाइत छल। तँए परिवार आबि गेलाक बाद घरक ब्यवस्था फेरसँ

लीकपर आबि गेल। पुष्प विहारक एहि डेरापर एक बेर डा. जयकान्त मिश्रजीक संग प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन आओर प्रो० नवीन बाबू आयल रहथि। ओ सभ दिल्ली मैथिलीक यूजीसी परीक्षाक हेतु प्रश्न पत्र बनबए आयल रहथि। (ई बात सन्१९८७ थिक) ओही क्रममे हमरा हुनका सभसँ पहिने हुनका लोकनिक कार्यस्थनपर भेँट भेल आ तकर बाद हमर आग्रहपर सभ गोटे हमर डेरा अयलाह। ओही राति हुनका सभकेँ घुमती ट्रेन रहनि।

पुष्प विहारसँ केन्द्रीय सचिवालय आबक हेतु ६८०, ५८०, ५८१ संख्याक बस भेटै छलैक। ओहि बससँ पटेल भवनक लगपास बस पड़ावपर उतरि कार्यालय आबएमे बहुत सुविधा छलैक। पुष्प विहार अपेक्षाकृत कार्यालयसँ दूर छल। हमर ज्येष्ठ पुत्र भाष्कर सरोजिनीनगरक विद्यालयमे पढ़ैत छलाह। अस्तु ,विचार कएल जे सरोनिनीनगरमे डेरा परिवर्तन कराओल जाए। एहि काजमे श्री विजय करणजी बहुत मदति केलाह। ओ सिफारशी पत्र लिखलखिन जकर जवाबमे तीनसँ चारि दिनक अन्दर हमरा सरोजिनीनगरक इ.एफ ६४३ संख्याक सरकारी फ्लैट आवंटित भए गेल। हम सभ ने यएह देखलहुँ आ ने वएह देखलहुँ आ तुरन्त पुष्प विहारसँ सरोजिनीनगरक आवासपर आबि गेलहुँ। श्री विजय करणजीक एहि उपकारसँ हमरा बहुत सहुलियत भेल। भास्करक स्कूल एकदम घरे लग भए गेलनि। कार्यालयो लग भए गेल। घरसँ सटले ५० संख्याक बस चलैत छलैक जे ९ बजैसँ पाँच मिनट पूर्व नॉर्थ ब्लॉकमे सटि जाइत छल। विजय करणजी थोड़े दिनक बाद दिल्लीक पुलिस आयुक्त आ तकर बाद सी.बी.आइ.क निदेशक भेलाह। तखनो ओ हमरा नॉर्थ ब्लॉकमे कएक बेर भेट जाइत छलाह आ सीढ़ीपर ठाढ़ भए बहुत सिनेहसँ गप्प करथि।

जे.आइ.सी.मे कार्यरत रहैत एकटा महत्वपूर्ण घटना क्रममे मधुबनीमे जमीन कीनि मकान बनाबक निर्णय छल। मधुबनीमे हमर ससुरक घर छलनि। गाम आ सासुर दुनू लगमे छल आ सभसँ बेसी बात छल हमर गामसँ लगाव। अस्तु तमाम लोकक परामर्शक उपेक्षा कए हम ई काज कएल। ओहि समय जे.आइ.सी.क अवर सचिव हमरा बहुत बुझेला अपितु अपन सोसाइटीमे एकटा फ्लैट दियाबक प्रस्ताव सेहो देलनि। मुदा हम हुनका कहलियनि-

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।"

मधुबनीमे ओ इलाका एकदम बीरान छल। लगेमे मुर्दा सभ फेकल रहैत छल। स्टेडियम बनल छल मुदा ओहिठाम धरि जेबाक हेतु पक्का रस्ता नहि छलैक। आब जे दृश्य ओहिठामक अछि तकर तऽ ओहि समयमे कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल। ओही स्थानपर सरकारसँ गृह ऋृण लए घर बनाएब एकटा विकट निर्णय छल।

मधुबनीक घरक निर्माणमे कतेक परिश्रम भेल तकर वर्णन कठिन। एकदम बीरान जगहपर सामान सबहक रखवारी हेतु हमरा गामक एकटा चौकीदार छलाह- मांगनि। सोंटा लगाबथि आ राति भरि कीर्तन करथि जाहिसँ डर भागल रहनि। हमर सार, ममिया ससुर, ससुर, सासु आ पत्नी सभ कियो एहि प्रयासमे सहभागी रहलथि। मधुबनीक मकानक पहिल किरायेदार माप-तौल विभाग, बिहार सरकार छल। ओहि समय मकान अधूरा छल। ग्रील नहि लागल छलैक, देवाल सभमे सीमेन्ट नहि लागल छल। बिजलियो नहि छल। तथापि १५०० रूपैआ मासिक किरायापर मकान लागि गेल। एक हिसाबे ठीके छल, कारण मकानक ऋृणक कटौतीसँ मासिक बजट गड़बड़ा गेल रहए। किरायेदार आबि तऽ गेल मुदा ओ किराया देबाक नामे ने लैत छल। बिहार सरकारक तय प्रक्रियाक अनुसार मधुबनी कचहरीसँ किराया निर्धारण जरूरी छल,

जाहिमे बहुत बिलंब भए रहल छलैक। हारि कऽ किशोर कुणालजीकेँ कहलियनि। ओ अपना स्तरसँ प्रयास कए किराया तय करबाक प्रक्रियामे गति अनलनि। मुदा मधुबनीक सम्बन्धित अधिकारी एहि बातसँ तमसा किराया १५०० रूपैआ मासिकसँ घटा कऽ ९७० रूपैआ प्रति मासक तय कय देलक, जाहिसँ हमरा बहुत घाटा भेल। जे भेल से भेल, मुदा लगभग अढ़ाइ बर्खक बाद एकमुस्त किराया भेटल। माप-तौल विभागसँ मकान खाली करेबाक हेतु तत्कालीन बिहारक मुख्य सचिव वसाक साहेबकेँ पत्र लिखने रहियनि। ओ गृह मंत्रालयमे रहथि आ हमरा जानैत छलाह। हुनकर आदेशसँ आ मधुबनीक जिलाधीशक सहयोगसँ लगभग साढ़े तीन सालक बाद ओ मकान खाली भेल। बुर्जिआ साहेब मधुबनीक कलक्टर छलाह आ तकर बाद गृह मंत्रालयमे पदस्थापित भेलाह, जाहि दौरान हमरा हुनकासँ सम्पर्क भेल। ओ एहि काजमे बहुत मदति केलाह। अन्तत्वोगत्वा मकान खाली भए गेल।

लगभग दू साल धरि पटेल भवन स्थित जे.आइ.सी.मे हम कार्यरत रहलहुँ। गृह मंत्रालयसँ डेस्क अधिकारीमे हमर चयनक पत्र अयला बाद जे.आइ.सी.मे उठा-पटक होमए लागल। ब्रिगेडियर साहेबकेँ ई बिल्कुल नापसिन रहनि। अपना भरि हमर पोस्टिंगकेँ रोकबाक पूरा प्रयासो केलाह तथापि हम ओहिठामसँ कार्य मुक्त भए ९ दिसम्बर १९८८ क गृह मंत्रालयमे पदभार ग्रहण कऽ लेलहुँ।

# सरोजिनीनगर

गृह मंत्रालयमे हमर पोस्टिंग डेस्क अधिकारीक रूपमे आंतरिक वित्त विभाग (IFD) मे भेल जकर मुखिया पश्चिम बंगाल काडरक आइ.ए.एस. अधिकारी स्व. के.एम. लाल छलाह। ओ बहुत मिलनसार, मधुर भाषी आओर शान्तप्रिय व्यक्ति छलाह। हुनका अन्दरमे वित्त विभागक दू डिवीजन छल। एकक प्रमुख श्री ए. के. हुई, निदेशक छलाह। हम हुनके अन्दरमे कार्यभार ग्रहण कएल। गृह मंत्रालयमे रहितो आन्तरिक वित्त विभागक काजकेँ किछु स्वायत्ता छल। कएटा मामलामे संचिका वित्त मंत्रालय पठाओल जाइत छल। हमरा लेल ओहिठाम काज करब एकटा नवीन अनुभव छल। एहिठामक काज आन कार्यालय सभसँ भिन्न छल। विभिन्न विभागक नाना प्रकारक संचिकाकेँ वित्तीय दृष्टिकोणसँ जाँच-पड़ताल करक रहैत छल। ओहिसँ बहुत रास नव-नव जानकारी प्राप्त होइत रहैत छल। नव-नव लोक सभसँ सम्पर्क तऽ होइते रहैत छल।

हुई साहेब केन्द्रीय सचिवालय सेवाक अधिकारी छलाह। कॉफी खूब पीबैत छलाह। जहाँ ऑफिस लागल कि कॉफी शुरू। सभ अधीनस्थ अधिकारीकेँ बजा लेथि आ कॉफी आबि जाइत। १ रूपैआमे एक कप कॉफी (प्रायः हुनका सेहो नाहि लागैत छलन्हि)। दिन भरिमे सात-आठ बेर कॉफी भए जाइत छल। भोरे कॉफी, दुपहरियामे कॉफी, बीचमे कियो अतिथि आबि गेल तखन तऽ कॉफी चाहबे करी। भोरक कीमती समय कॉफी आ गप्प-सर्रकामे चलि जाइत छल, जकर प्रतिकूल प्रभाव काजपर पड़इ। हुई साहेबक काज करबाक तरीका अजूबा छल। अपना अन्दरक सभ अधिकारीकेँ बजा लेथि, कॉफी पियाबथि आ एक-दोसरकेँ संचिका पढ़य देथि। दोसरक गलती निकालबामे तऽ सभ माहिर होइत अछि, से

कारगर होइत छल। हुई साहेब वएह त्रुटि अपन हस्ताक्षरसँ लिखि संचिका सम्बन्धित विभागकेँ लौटा दैत छलाह। सौंसे गृह मंत्रालयमे हुई साहेबक काजक डंका बजैत छल। तकर पाछू हुनकर यएह कार्य प्रणाली छल।

सरोजिनीनगर दिल्लीक प्रमुख स्थान अछि। एहिठाम लगभग सभ वस्तुक दोकान सभ अछि। स्कूल सबहक तऽ जेना जखीरा अछि। बंगाली सबहक अलग बंगाली स्कूल छैक। रेलबेक आरक्षण काउन्टर, सी.जी.एच.एस.क चिकित्सालय, पोस्ट ऑफिस, मदर डेयरी आदि-आदि सुविधासँ भरल अछि ई मोहल्ला। सरकारी अधिकारीक हेतु निर्मित फ्लैट सभ आकारमे छोट मुदा बहुत उपयोगी अछि। सक्सेनाजी हमरा सरोजिनीनगरक फ्लैटक प्रयास करबाक हेतु प्रेरित केने रहथि। ओ स्वयं ओहि समयमे सरोजिनीनगरेमे रहैत छलाह। फ्लैट सबहक आगूमे खाली जगह छल जाहिमे बच्चा सभ खेलाइत छलाह। हमर पड़ोसी एक तरफ राव साहेब (सी.बी.आइ.मे कार्यरत ) छलाह। दोसर दिस पहिने एकटा वृद्ध महिला छली। हुनका गेलाक बाद रक्षा मंत्रालयमे कार्यरत मल्लिक साहेब छलाह। मल्लिक साहेब बहुत सामाजिक आदमी छलाह। हुनका लगमे टेलीफोन छल। ओहि समयमे टेलीफोन ककरो-ककरो होइत छलैक। मोबाइल फोनक तऽ चर्चो नहि रहए। हमर ठीक निच्चाँमे एकटा शिक्षिका छली, जिनका सेहो टेलीफोन छलनि। मुदा ओ ओतेक सामाजिक नहि रहथि। कहिओ काल फोन आयल तऽ ओ बजबै, कखनो मनो कऽ दैक। मुदा मल्लिक साहेबक बात-व्यवहार दोसर रहनि। फोन तऽ लगाइए दितथि, ऊपरसँ चाहोक आग्रह करितथि। पीपीसंख्याक ओ जमाना मोन पड़िते सुखद आश्चर्य होइत अछि। ओहिठाम कोनपर सहगल साहेब रहैत छलाह। ओहो बहुत सामाजिक लोक छलाह। सरकारी मकान छल, लोक अबैत जाइत रहैत छल, मुदा कएगोटा बहुत दिनसँ

ओहिठाम छलाह जाहिमे हमर पड़ोसी राव साहेब सभसँ पुरान छलाह। राव साहेबक परिवार बहुत संस्कारी छल। धिया-पुता धोर परिश्रमी। अपने दुनू व्यक्ति अतिशय सज्जन तथा मिलनसार। कुल मिला कऽ ओहि परिसरक वातावरण शान्त छल। सामाजिक सम्बन्ध मधुर छल।

मुदा क्रमशः लोक साभ बदलैत रहल। कएटा एहन-एहन लोक आबि गेला जाहिसँ परिस्थिति बदलए लागल। निच्चाँक आंगनमे बच्चा सभ क्रिकेट खेलाइत छल। कएबेर गेन उछलि कऽ एमहर-ओमहर चलि जाइ। कएबेर फ्लैटक शीशापर पड़ैक तऽ ओ चूर-चूर भए जाइ। सभसँ समस्या मल्लिक साहेब बच्चा सभ केलक। दुनू भाए-बहिन पैघ छल। कम्पनी सेक्रेट्रीक परीक्षाक तैयारी करैत रहैत छल। जँ क्रिकेटक गेन ओकरा फ्लैटमे खसलै तऽ ओ आपस नहि करइ, काटि दैक। ततबो पर बात बनि जाइत तऽ चलि जाइत। मुदा ओ सभ आगू बढ़ि कऽ खेलक विरोध करए लागल। कहै जे हल्ला होइत छैक, पढ़ाइमे बाधा होइत अछि। किछु हद धरि ओ सही छल मुदा अपना आंगन छोड़ि कऽ छोट-टोट बच्चा सभ केतए जैतइ? बच्चाक लेल खेल जरूरी रहए।

एक दिन अहिना खेल लऽ कऽ झंझट भेल, बच्चा सभमे मारि-पीट भए गेल। पुलिस आबि गेल। बातकेँ बहुत कठिनसँ थाम्हल गेल। मुदा ओकर बाद कहिओ महौल सुखद नहि भए सकल। आपसमे गप्प-सप्प कम भए गेलइ। लोक एक-दोसरसँ कटए लागल। मल्लिक साहेब जे एतेक सामाजिक छलाह, धिया-पुताक दवाबमे गप्पो -सप्पो छोड़ि देलाह। पीपी संख्याक सुविधा समाप्त भए गेल। संयोग एहन छल जे हमर फोनक संख्या आबि गेल आ हमहूँ फोनबला भए गेलहुँ। फोन लागि जाएब ओहि समयमे पैघ बात छल।

कुल मिला कऽ चारिबेर हमरा अड़ोसी-पड़ोसीसँ झगड़ा भेल। जकर कारण बच्चा सबहक खेल छल। बच्चा सभकेँ जखन तंग कएल

जाइ तऽ हमर पारा चढ़ि जाइत छल। आदमीकेँ स्वार्थी होएब तऽ ठीक छैक मुदा एतेक अधिक आत्म-केन्द्रित भए जाएब जे खाली अपने बच्चाटा ओहि दुनियाँमे समा सकए, अनुचिते नहि, अत्याचार थिक।

छोट-छोट बच्चा सबहक गेन काटि देब, ओकर बैट छीनि लेब, अनेरे डाँट-फाँट करब, बच्चा सभ माफी मागैए तैयो ओकरा डेढ़ आँखिसँ देखब, कोनो हालतमे सही नहि ठहराओल जा सकैत अछि। परिणाम भेल जे ओहिठाम गुटबन्दी शुरू भए गेल। लोक एक-दोसरसँ कटि कऽ रहए लागल। बच्चा सभकेँ खेलब पराभव भए गेल। क्रमश: खेल बंद भए गेल।

सरोजिनीगरक ओहि आंगनक कोनमे ऊपरमे एकटा पहाड़ी परिवार रहैत छल। ओ पहाड़ी सज्जन खूब पीबैत छलाह। नित्य ओकर घरमे झंझट होइते रहैत छलैक। ओ पहाड़ी मकानक छतक मुरेड़ापर रातिमे पीबय बैस जाइत आ बीड़ी पीबैत रहैत। घरमे धिया-पुता सभ फिरसान रहए। एकटा बच्चा छेटगर रहैक जे काज कऽ कऽ घर चलबैत रहए। ओकर दूटा छोट-टोट बच्चा हमर छोट बालक संगे क्रिकेट खेलाइत छल। खेलमे दुनू बच्चा माहिर छल। जँ ओकर एक चाट ककरो लगितै तऽ चारूनाल चित्त भए जाइत। छक्कापर छक्का मारइ। जँ एहि बच्चा सभकेँ उचित अवसर आ प्रशिक्षण भेटतै तऽ निश्चय उच्च कोटिक खेलाड़ी होइत। मुदा आम आदमीक बच्चाक नसीब समान्यत: एहन तेजगर नहि होइत अछि।

ओ पहाड़ी एक दिन अपन दोस्त ओतए पीबैत-पीबैत मरि गेल। तकर बाद ओ सभ सुखी भए गेल। ओकरा एबजमे ओकर ज्येष्ठ पुत्रकेँ अनुकम्पापर नोकरी भेट गेल। किदबई नगरमे घर भेट गेल आ परिवारमे सभ अपन-अपन जिनगी चैनसँ बितबए लागल।

सरोजिनीनगरक ओहि घरमे पहाड़ीसँ पूर्व जे एकटा सज्जन छलाह सेहो खूब पीबथि । पीबैत-पीबैत हुनकर लीभर फेल भए गेल। किछु दिनक बाद हुनकर देहान्त भए गेल। जबरदस्त कुहराम मचल। ओकर पत्नी लगैत जेना संगे मरि जेतीह। थोड़बे दिनमे सभ शान्त भए गेल। पत्नीकेँ सरकारी नोकरी भेट गेलइ। कएक बेर ओ हमरा कार्यालयमे देखा जाथि। कतहुँसँ नहि लगैक जे ओ वएह छथि... ।

पीबाकक दुनियेँ अलग होइत छैक। 'दिनमे होली, रात दिवाली रोज मनाती मधुशाला।' ओकर सबहक सभकिछु मधु ओ मधुशाला होइत छैक। घर जाओ भाँड़मे। एहन लोकक धिया-पुता-पत्नी सभ संतप्त, अभिसप्त जिनगी जीबक हेतु बेवस रहैत छथि। जँ कोनो प्रकारे ओकरासँ मुक्ति भेटलतँ पुनर्जन्म होइत अछि, अन्यथा नरकेमे जीबैत छथि आ ओहिमे मरि जाइत छथि। सरोजिनीनगरमे हमर सबहक करीब ९ बर्ख समय बीतल। मधुबनीमे मकान बनाबक चक्करमे सरकारक अतिरिक्त एच.डी. एफ.सी. बैंकसँ सेहो ऋृण लेबए पड़ल। मकान ऋृणक किस्त बहुत भए गेल, तकर परिवारपर, रहन-सहनपर प्रतिकूल असर पड़ल। दुनू बच्चाकेँ ओतेक सुविधा नहि दऽ सकलहुँ जे चाहैत रही।

मधुबनीमे मकान बना कऽ हम एना फँसि जाएब, से नहि सोचि सकल रही। हालाँकि हमरा कएटा शुभचिन्तक लोकनि एहि काजसँ मना केने रहथि, परन्तु हम अपन जिद्दपर अड़ि गेल रही। ओतबे खर्च कऽ दिल्लीमे दू रूमक फ्लैट अबस्से भए जाइत। ओहि फ्लैटमे हम रहियो सकैत छलहुँ। " अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गये खेत" ।

असलमे सम्पतिक मामलामे भावुक निर्णय कष्टकारी भए जाइत अछि। हमर मधुबनीक मकानक संग यएह भेल। जखन कखनो छुट्टीमे ओमहर जाइ, मकानक काजमे लागल रही। कहिओ सीमेन्ट लगा रहल छी, कहिओ पेन्टींग करबा रहल छी, तऽ कहिओ चाहरदिवारी ठीक करा

रहल छी। एहिपर व्यंग करैत हमर मधुबनीक एकटा मित्र कहला जे हम सभ एकबेर मकान बनेलौं आ जिनगी भरि रहि रहल छी आ अहाँकेँ जखन देखु, मकाने बना रहल छी।

मधुबनी मकानक काजमे हमर मित्र श्रीनारायणजीक बहुत योगदान रहल। करवनो जन ताकि देथि, करवनो ठीकेदार। सामान सभ कीनबा देथि। असलमे कम समयमे बहुत रास काज करक रहैक जे कहिओ पूरा नहि होइत आ हम दिल्ली आपस आबि जाइ।

सरोजिनीनगरमे रहिते हमर ज्येष्ठ साढ़ू कैंसरक इलाजक क्रममे दिल्ली अयलाह। हुनकर इलाज मुम्बइमे भए रहल छल। ओ सभ एक हिसाबे जवाब दऽ देलक तऽ दिल्ली अयलाह। एम्समे इलाजक प्रयासमे रहथि। सटले युसुफसरायमे डेरा लेलाह। प्रतिदिन कार्यालयक समयक बाद हम ओतए जाइत रही। किछु काल कऽ हुनकर सबहक दुख बाँटि ली। आश्चर्यक बात जे एम्स सन संस्थान एहन गंभीर दुखित रोगीकेँ मास भरि टरकैबते रहि गेल। दर्दसँ ओ छटपट करैत रहैत छलाह। पारिवारिक लोक सभ उठा-पुठा कऽ एम्समे लऽ जाइन मुदा ओतए खाली जाँच-पड़ताल होइत रहल। हमरा ओहिठाम कोनो जोगार नहि छल। हुनकर हालत दिन प्रतिदिन खराप होइत गेल। ओ अन्त-अन्त धरि अपन बच्चा सभक हेतु बहुत चिन्तित रहथि। दिल्लीसँ ओ मुम्बइ गेलाह। फेर पटना लौटि कऽ हुनक देहावसान भए गेल।

फरवरी १९८९ (फाल्गुन शुक्ल द्वितिया) क हमर पिताक देहान्त भए गेलनि। ओ किछु दिनसँ दुखित छलाह। किछुए दिन पूर्व गामसँ आयल रही। मधुबनीमे मकानक काज शुरू केने रही। पटना अयलाक बाद दिल्लीक ट्रेन पकड़बाक छल मुदा कोनो कारणसँ ट्रेनक आबाजाही अवरूद्ध भए गेल रहए। तँए कएक दिन पटनेमे साढ़ूक ओहिठाम रूकए पड़ल। ट्रेन खुजलाक बाद जेना-तेना दिल्ली पहुँचले रही कि एकाध

दिनक बाद दुपहरियामे ऑफिसमे मधुबनीसँ फोन आयल जे बाबूजीक देहान्त भए गेलनि। एकाएक गाम जाएब सम्भव नहि भए सकल। ट्रेनक टिकटक ब्यवस्था केलाक बाद २-३ दिनक बाद हम गाम पहुँचलहुँ। हमरा गाम पहुँचलाक बाद माएकेँ बहुत उसास भेलनि। ओ बहुत दुखी छली। केना-केना की भेल से कहए लगली। श्राद्ध सम्पन्न भेलाक बाद दिल्ली आपस अयलहुँ मुदा बहुत दिन धरि बाबूजी मोन पड़ैत रहलाह। जाहि भोरमे बाबूजीक देहान्त भेल ओहि राति हम भरि राति जगले रही यद्यपि हमरा कोनो सूचना नहि छल।

बच्चा सभ छेटगर भए रहल छल। परंपराक अनुसार ओकर सबहक उपनायन करक छल। बहुत दिन धरि एहि बातपर विचार केलाक बाद निर्णय कएल जे उपनायन दिल्लीए-मे कएल जाए। आब समस्या छल जे आचार्य के हेताह? पण्डित तऽ हमर ग्रामीण (डा. राघवेन्द्र झा) उपलब्ध छलाह। अपने दियादसँ आचार्य हेबाक चाही। राँचीसँ हमर अनुज(सत्येन्द्र नारायण मिश्र) आ दिल्लीमे रहनिहार नवोनाथजी एहि काजक हेतु उपयुक्त व्यक्ति भेलाह। गामसँ हमर माए (हमर भातिजक संग) दड़िभंगासँ अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) एवम् हमर भागिन सभ अयलाह। छतपर जेना-तेना मरबा बनल आ विधि पूर्वक उपनायन सम्पन्न भेल। एहि कार्यमे हमर ससुरक बहुत योगदान रहल। ओ उदारता पूर्वक खर्च तऽ केबे केलाह संगे हमर मनोबल सेहो बढ़बैत रहलाह। एकर बाद हमर देखा-देखी कएक गोटा दिल्लीमे उपनायन केलाह। एहि विषयमे हमर सोचब छल जे एहि परंपराक पालनमे फिजुलखर्ची व्यर्थ थिक आ तँए संक्षेपेमे काज सम्पन्न भेल।

सरोजिनी नगरमे रहैत हमर ससुर कएक बेर डेरापर अयलाह। हुनका ई जगह नीक लागनि। दिसम्बर १९९५ मे ओ बहुत जोर दुखित पड़ि गेलाह। हुनकर दुनू किडनी एकाएक निष्कृय भए गेल। इलाज हेतु

दिल्लीक एम्समे आनल गेल। एहि काजमे हमर तत्कालीन अधिकारी श्री भास्कर खुल्वे आइ.ए.एस. बहुत मदति केलाह। हुनकर प्रयाससँ हमर ससुरजीक एम्समे इलाज भेल। अन्यथा हमर साढुबला हाल होइत। सी.ए.पी.डी. विधि द्वारा डयलिसिस, ओहि समयमे नव बात छलैक। से प्रयोग हिनकापर भेल। बहुत महग ओ उबाउ इलाज छलैक जाहिमे परिवारक सभ गोटे खास कऽ हमर सासुकेँ बहुत परेशानी भेलनि। लगभग अढ़ाइ सालक संघर्षक बाद अगस्त १९९७ मे हुनक (ससुरक )पण्डौल डीह गाममे देहान्त भए गेल। ओहि समयमे हुनकर बएस ६७ वर्ष मात्र छल। गाममे श्राद्धक कार्यक्रम सम्पन्न भेल। ब्राह्मण भोजनक व्यवस्थित तौर-तरीका अनुकरणीय छल। अद्भुत शान्तिक संगे ब्राह्मण भोजन होइत देखलहुँ जे मिथिलाक गाम-घरमे कम देखए-मे अबैत अछि।

गृह निर्माण ऋृणक भारी मासिक किस्तक वजहसँ हमरा सबहक मासिक बजटपर गम्भीर चोट पड़ल। ओहिसँ निपटबाक हेतु हम निजी ट्यूशन पढ़ाएब शुरू कएल। कार्यालयक अवधिक बाद बससँ विद्यार्थीक घरपर गेनाइ आ ओहिठाम पढ़ेनाइ बहुत कठिन काज छल। कहिओ आश्रम तऽ कहिओ चांदनी चौक चारूकात ट्यूशन पसरल छल। बारहमाक विद्यार्थीकेँ भौतिक शास्त्र पढ़बैत छेलिऐ। हमरा किछु दिनक बाद विषय सभ कण्ठाग्र जकाँ भए गेल छल। विद्यार्थीकेँ देबाक हेतु नोट सभ सेहो बनओने रही। कुल मिला कऽ हमर ई अतिरिक्त काज चलि पड़ल छल। मुदा आएब-जाएब बड़का समस्या छल। फोन नहि रहलासँ सेहो सम्पर्कक समस्या होइत छल। पीपी संख्यापर फोन कतेक बेर अबितै? तथापि आमदनी ठीक-ठाक भए जाइत छल। १९९६-९७ मे एक दिनमे एक हजार रूपैआ धरि कएक बेर भए जाइत छल। घन्टाक हिसाबसँ रेट भेटइ। कार्यालय केलाक बाद किंवा शनि, रवि दिनक

ट्यूशनक काज चलैत छल। कार्यालयमे कएबेर रातिमे बैसब वा देर धरि रहब जरूरी रहैत छल आ हमरा ट्यूशनक हाजिरी रहैत छल। हालाँकि एहि स्थितिसँ बँचक हेतु हम दिन भरि लगातार काज करी, काज सम्पन्नो भए जाइक मुदा तैयो कहिओ काल रोमांचकारी दृश्य उत्पन्न भए जाइत छल। एकटा आइ.ए.एस. अधिकारी एहि लेल नाराज रहि गेलाह जे हम साढ़े पाँच बजिते निकलि जाइत रही। हुनका ई गप्प नहि बुझल रहनि जे हमर परिश्रमक दोसर खेप तऽ प्रारम्भे होमए जा रहल अछि।

ट्यूशनक धन्धा बहुत दिन नहि चलि सकल। हमर ससुर अस्पतालमे भर्ती रहथि। कार्यालयमे सँ अधिकारीक दवाब रहैत छल। अन्ततोगत्वा लगभग एक सालक बाद हम ई काज छोड़ि देल। हमर एकटा मित्र ई काज कतेको साल करैत रहलाह आ बढ़ियाँ धनोपार्जन किलाह। दक्षिणी दिल्लीमे नीकठाम (साकेतमे) घर कीनलनि। कार्यालयक अलावा हुनकर ई अतिरिक्त प्रयास सालो चलैत रहल जे हुनका अर्थिक संपन्नता देलक।

कहल जाइत अछि जे दुनियाँ गोल अछि। कहक माने जे समय पलटी मारैत अछि। ई बात गृह मंत्रालयमे कार्यरत अवर सचिव (प्रशासन) महोदयपर सद्यः लागू होइत देखलहुँ। कर्मचारी चयन आयोग इलाहाबादसँ स्थानान्तरणक बाद गृह मंत्रालयमे पदस्थापनाक क्रममे डा. भट्टाचार्यक हमरा लेल कएल गेल सिफारिशसँ ओ बहुत क्रुद्ध भेल रहथि। अपना भरि ओहि समय सभसँ खराप पोस्टिंग कए देलथि। जखन हम गृह मंत्रालयक आइ.एफ.डी.मे डेस्क अधिकारीक पदभार ग्रहण कएल तऽ ओ सेवा निवृत्ति भए गेल छलाह। तकर बाद सलाहकारक काज हेतु प्रयत्नशील छलाह। ओ संचिका हमरे करबाक छल। आब तऽ ओ छटपट करथि। हमरा कहल नहि होनि आ ताहि दुआरे संचिका आगाँ बढ़नि नहि। हुई साहेबकेँ ओ मदति हेतु कहलखिन। मुदा हम हुई साहेबकेँ

सभबात कहलिऐक। हुनकर सलाहकार बनबाक प्रयास साकार नहि भए सकल। गृह मंत्रालयक आंतरिक वित्त एकक (आइ.एफ.डी.) मे हम साढ़े तीन साल काज केलहुँ। अढ़ाइ साल हुई साहेब निदेशक छलाह। बीचमे हमर एकटा सहकर्मीक प्रोन्नति अवर सचिवक पदपर भेल आ हुनक पोस्टिंग ओहिठाम सहायक वित्त सलाहकार (ए.एफ.ए.) क रूपमे भए गेल। हम हुनका संगे काज नहि करए चाहैत रही। कारण बाराबरीक आदमी अधिकारी भए जाइत से ठीक नहि। यद्यपि ओ हमरासँ वरिष्ठ छल। हम हुई साहेबकेँ कहलियनि जे हमरा ओहिठामसँ हटा देल जाए मुदा ओ राजी नहि भेलाह। कहला जे कोनो दिक्कत नहि हएत। अहाँ बनल रहू। मुदा हमरा ओ स्थिति पचल नहि। रोज-रोज चिकचिकबाजी होमए लागल।

किछु दिनक बाद बिहार काडरक आइ.ए.एस. अधिकारी निदेशक भए कऽ अयलाह। हुनका अयलासँ हमरा किछु राहत नहि भेल, उल्टे काजसँ लादि देल गेलहुँ। आब ओ एहि दुनियाँ मे नहि छथि। चूँकि ओ बिहारक छलाह, मैथिल छलाह तँए जकरा ककरो डाँट-फाँट करथिन, ओकरा होइक जे हमहीं चुगली कऽ देलिऐक अछि। एहिमे कोनो सत्यता नहि छल। ओ अपना भरि दूर-दूर रहबाक प्रयास करैत रहैत छलाह मुदा लोकक गलतफहमीक कोन इलाज भए सकैत छल। साल भरिक बाद हुनकर स्थानान्तरण भए गेल। किछु दिन बाद हमहूँ ओहिठामसँ हटि गेलहुँ।

९ अप्रैल १९९२क हम गृह मंत्रालयक यूटी डिवीजनक दिल्ली डेस्कमे कार्यभार ग्रहण केलहुँ। ओहिठाम यूटी काडरक (प्रोन्नतिसँ आइ.ए.एस बनल) आइ.ए.एस. निदेशक छलाह। ओ बड़ गरिखर छलाह। जकरा-तकरा अन्ट–सन्ट बजैत देखलहुँ। आब तऽ भेल जे एहन आदमीक संग केना समय कटत? क्रमश: हुनकर स्वभाव बुझएमे

आयल। हुनका संगे उकटा-पैंची करबसँ बँचब बड़ जरूरी रहैत छल। कारण जँ ओ पाछाँ पड़ि जाइततऽ बड़ तंग करइ। कहैक जे ओकर पिता हुनका संगे बहुत सख्त आ कठौर रहैत छलाह, तँए हुनकर स्वभाव एहन भए गेल।

ब्यवहारसँ निदेशकजी स्वार्थी छलाह। कियो जँ छुट्टी लेबए चाहथि तऽ तेहन माहौल बना देथि जे छुट्टी तऽ छोड़ू कएक टा आफत आबि जाइत रहए। हमर साढ़ इलाजक क्रममे दिल्ली आयल रहथि। हुनका मदति करब जरूरी छल। ताहिलेल हम किछु दिनक छुट्टी लेबए चाहैत रही, मुदा छुट्टी तऽ नहियेँ देलाह अपितु तरह-तरहसँ तंग करए लगलाह, ताकि छुट्टी मांगबक हिम्मत नहि हो। हुनके असहयोगक कारण हम एकबेर एल.एल.बी.क परीक्षा छोड़ि देने रही। कारण ओ एक्को दिनक छुट्टी नहि देलाह आ परीक्षासँ पूर्व रातिमे लगभग ९ बजे धरि काजपर बैसले रहलाह।

किछु सालक बाद समय ससरल। ओ सेवा निवृत्त भेलाह। हुनका हमरासँ काज पड़लनि, तखन हम उपरोक्त प्रसंग सभ मोन पाड़ि देलियनि। ई खिस्सा फेर कहब। दिल्ली सड़क सबहक, स्थान सबहक नामकरण केना भेल, किएक भेल से हुनका नीकसँ बुझल रहए। संगे चलैत ओ खिस्सा सभ सुनबए लगितथि। पैदल चलबाक ओ शौकीन छलाह। दू ठहराव पहिने उतरि कऽ पएरे चलए लागथि। दारू पिबाक अभ्यासी छलाह। हुनकर दारूबाज सबहक गुट छल जे प्राय: नित्य सायंकाल एकठाम होइत छल। घरसँ फोन अबैत तऽ किनकोसँ कहा दैत रहथिन जे अखन मंत्रणामे छथि, देरीसँ घर अएताह, मुदा घरक लोककेँ तऽ हुनक छिच्छा-बिच्छा बुझल रहए। एक दिन हुनकर दोस्त नहि एलनि। आब हमरा कहए लगलाह जे साँझमे संगे चलब। हम बात बुझि गेलिऐ। मना कऽ देलियनि। कहलियनि जे हम अहाँक सहयोगी नहि भए

सकब मुदा ओ बारंबार कहैत रहलाह। अन्तमे ईहो कहलनि जे ओहिना चलू, किछुकाल तऽ गप्प-सप्प करब। रस्तामे जखन अपन प्रयास असफल होइत बुझएलनि तऽ आइ.एन.ए. कालोनी लग बीच रस्तामे तमसा कऽ उतारि देलक। असलमे कार्यालयक एकटा कर्मचारी निदेशकजीक छाया जकाँ रहैत छल। जाधरि ओ रहितथि ओ बैसल रहितथि। जे कहल जानि से ओ करथि। लिखब, पढ़ब छोड़ि सभ काज ओ सहर्ष कऽ दैत छलाह। टंकण करैत छलाह। ककरो टंकण करबाक जरूरी होइतैक ओ तैयार भए जाइत। निदेशकजी जरूरी भेलापर ओकरा पकड़ि कऽ दारूक अड्डापर सेहो लऽ जाइत छलाह। कएक दिन जखन पीब कऽ बुत्त भए जाइत तऽ ओकरा घरो पहुँचबा दितथि। नीक, बेजाएक बेजोड़ मिश्रण छलाह निदेशकजी। काज खूब करथि, परिश्रमी रहथि, अपन अंग्रेजीक ज्ञानपर बहुत दाबा रहनि। मुदा दैनिक ब्यवहार कर्कश ओ रूक्ष छलनि। खैर ! समयक स्वभाव होइत अछि जे ओ बीति जाइत अछि। हुनकोपर ओ बात लागू भेल आ एक दिन हुनकर बदली भए गेलनि। ओहो समय बीति गेल ।

ओहि समयमे संसद भवन आएब-जाएब आसान रहए। नॉर्थ ब्लॉकक सामनेबला गेट खुजल रहए। हम सभ संसद सत्रक दौरान पास बना लैत छलहुँ आ अक्सर दुपहरियाक भोजन संसदमे करैत रही। संसद भवनक कैटींन बेहद सस्ता आ भोजन उम्दा। यद्यपि हम शाकाहारी छी, तथापि ओहिठाम विविधताक कमी नहि रहए। पाँच रूपैआ जँ खर्च कऽ दिऐ तऽ वएह भोजन बाहर दुइयो साए रूपैआमे भेटत की नहि। भोजन कऽ कऽ संसद परिसरमे घुमी। ससंदक अधिकारीक दीर्घामे जेबाक हमरा बहुत इच्छा रहैत छल। तँए हम ओहिठाम अपन ड्यूटी लगबा ली। संसदक चर्चा देखि कतेको चीज बुझबा, देखबाक प्रत्यक्ष अनुभव भेल। ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ दूरदर्शनपर संसदक कार्यवाहीक

प्रसारण नहि होइत, तँए अधिकारी दीर्घामे बैस कऽ संसदक कार्यवाही देखब बहुत नीक लगैत छल।

एकबेर गुजरातमे राष्ट्रपति शासन लगबाक रहए। यद्यपि हमर कार्यक्षेत्रमे ई काज नहि छल, तथापि संयुक्त सचिव महोदय हमरा खास कऽ कार्यभार देलनि जे एहि विषयक सरकारी अधिसूचनाकेँ मायापुर सरकारी प्रेसमे भोरे पहुँचाबी, ओहिठामसँ अधिसूचनाकेँ प्रकाशित कराबी आ तकर विवरण गृह मंत्रालय फोनसँ दी जाइसँ गुजरातमे राष्ट्रपति शासन लागू हएत। भोरे पुलिसक जीपमे हम घरसँ सोझे मायापुरी सरकारी प्रेसमे पहुँचलहुँ। मैनेजर साहेब सुतले रहथि। हुनका उठा अधिसूचनाक प्रति देलहुँ आ किछुए कालमे उपरोक्त समस्त प्रक्रिया पूरा भेल। हम रस्तेमे रही कि रेडियोसँ प्रसारण होमए लागल जे गुजरातमे राज्य सरकारकेँ बर्खास्त कए राष्ट्रपति शासन लागू कऽ देल गेल अछि।

गृह मंत्रालयक दिल्ली डेस्कमे हम अप्रैल १९९२सँ १२ सितम्बर १९९७ धरि काज केलहुँ। सितम्बर १९९९सँ २ साल फेर ओतहि काज केलहुँ। ओहि डेस्कमे दिल्लीसँ सम्बन्धित विषय पर काज होइत छल। चूँकि दिल्ली केन्द्र शासित राज्य थिक, कतेको मामलामे प्रस्तावक स्वीकृति गृह मंत्रालयसँ जरूरी रहैत अछि। ओहि समय दिल्लीमे विधान सभा नहि रहैक, बादमे भेलैक। सरकार नहि रहैक, तँए केन्द्र सरकारक हस्तक्षेप बहुत रहए। काजो बहुत रहए। संसदीय प्रश्न सम्बन्धी काजक भरमार रहैत छल।

उपरोक्त अवधिमे चारिटा निदेशक स्तरक आइ.ए.एस. अधिकारी संगे काज केलहुँ। सभ अपना-अपना तरहक छलाह मुदा श्री भास्कर खुल्वेजी अद्वितीय व्यक्ति छलाह। एहन परोपकारी ओ सहृदय अधिकारी भागेसँ भेटैत अछि। जे कियो हुनकासँ मदति मांगै छल तेकरा यथासाध्य ओ अबस्स मदति कऽ दैत छलाह। हमरो ओ ससुरजीक इलाजमे बहुत

मदति केलाह। आइ-काल्हि ओ भारत सरकारमे बहुत वरिष्ठ अधिकारी छथि। सचिवालयमे पदस्थापनाक्र बाद आइ.ए.एस. अधिकारी सबहक हालत कोनो नीक नहि रहैत छल। जिलाक कलक्टर ओहिठाम एकटा कोठरीमे सीमित भए संचिका गुड़कबैत रहैत छलाह। कियो आगाँ-पाछाँ केनिहार नहि। सुविधा नदारद। कतेको गोटेकेँ गाड़ियो नहि रहैत छलनि, तँए साल भरि हुनका ओहिठामक परिस्थितिसँ तादम्य स्थापित करबामे लागि जाइत छल। फेर क्रमश: शान्त भए जाइत छलाह। अधीनस्थ अधिकारी/ कर्मचारीकेँ साल भरि झेलनाइ बेसी कष्टकर।

दिसम्बर १९८८ सँ सितम्बर १९९७ धरि लगभग ९ साल हम गृह मंत्रालयमे कार्य केलहुँ। बादमे अढ़ाइ साल (१३ सितम्बर १९९९ सँ २८ फरबरी २००२) फेर ओतहि काज करबाक मौका भेटल। कुल मिला कऽ हमर एकटा पहिचान बनल। लोक सभसँ जान-पहचान भेल। यद्यपि काज बहुत कऽ दऽ देल जाए, तथापि परिश्रमसँ काज केलाक कारण हमरा कियो बदली नहि करथि। तंग भए कऽ किंवा उबि कऽ हम स्वयं पहिने आइ.एफ.डी.( आन्तरिक वित्त एकक) आ तकर बाद दिल्ली डेस्कसँ बदली करओलहुँ। काज बदललासँ थोड़ नवीनता भए जाइत छलैक आ फेरसँ गाड़ी चलि पड़ैत छल।

इलाहाबादसँ दिल्ली अयलाक बाद जीवन बेसी व्यस्त भए गेल। पाँच दिन तऽ भोरे ऑफिस जा राति-बिराति थाकि कऽ घर लौटू। आओर किछु सोचब, करब मुश्किल। रच्छ छलैक जे शनि-रवि छुट्टी रहए जाहिसँ विश्राम भए जाइत। घरक जरूरी काज भए जाइत। कनी-मनी आस-पास घुमनाइओ भए जाइत रहए। फेर सोम आयल आ वएह रूटिंग। व्यस्त रहबाक ई लाभ हुअए जे समय धराधर बीति जाए। अगर-मगर सोचबाक समय नहि रहए। सभसँ अफसोचक बात ई रहैक जे देशक सवोच्च कार्यलय रहितो गृह मंत्रालयमे सुविधा नदारद रहए। कएक बेर

काज समाप्तिक बाद १२ बजे रातिमे घर आपास जाएब समस्या भए जाइत छल। बहुत रास कठमधुर स्मृतिक संग जीवन यात्रा आगाँ ससरल।

## रामकृष्णपुरम

सरोजिनीनगरमे लगभग १० साल रहलाक बाद रामकृष्णपुरम सेक्टर-३ क सरकारी आवास हमरा भेटल। हमर छोट पुत्रकेँ सरोजिनी नगरमे मोन लागि गेल रहए। अहीठाम ओ पैघ भेल रहथि। खेल-धूप करथि। स्कूलो लगेमे रहनि। तँए सरोजिनीनगर छुटि गेलासँ दुखी रहथि। एहिठाम दोस्त सभ संगे खेलाइत छलाह। रामकृष्णपुरम गेलापर हुनकर खेल लगभग छुटिये गेल। ओहिठामसँ आइ.आइ.टी. दिल्ली सटले रहैक आ प्रात: काल टहलबाक हेतु हम कए दिन ओतए कैम्पसमे चलि जाइ। स्वच्छ वातावरण, तरह-तरह क वागवानी सबहक फूल, संस्थानक प्राध्यापक सबहक आवास, ओ विद्यार्थी सबहक छात्रावास देखि मोन प्रसन्न भए जाइत छल। आस-पासमे कएटा कैन्टीन छलैक।

आइ.आइ.टी. छात्रावाससँ सटले वेरसराय छल जतए हम बरोबरि जाइत छलहुँ। वेरसरायक दोकान सभपर जे.एन.यू.क विद्यार्थी सबहक मेला लागल रहैत छल। विद्यार्थी सबहक सुविधाक चीज जेना पुस्तक स्टेशनरी, कम्प्यूटर छपाई, जलखै, भोजन, ए.टी.एम. ईसभ सुविधा ओतए उपलब्ध छल।

ओहिठामक गरम-गरम जिलेबी मोन पड़िते जीहसँ पानि आबि जाइत अछि। आइ.आइ.टी. पासमे हेबाक एकटा फायदा ई भेल जे हमर छोट पुत्र (क्षितिज) केँ हेतु आइ.आइ.टी.क छात्र सभ पढ़ाबए हेतु भेट

जाइत छलाह। हुनकर सबहक विषयपर पकड़ बढ़ियाँ छल आ क्षितिजकेँ एकर लाभो भेलनि। रसायन शास्त्र पढ़बए एकटा पी.एच.डी. करैत विद्यार्थी अबैत छलाह। ओकर विषयपर पकड़ आओर पढ़ेबाक तौर-तरीका उत्कृष्ट छल। मुदा एक दिन ओ एकाएक गायब भए गेलाह। प्राय: आगूक पढ़ाइ हेतु विदेश चलि गेलाह।

रामकृष्णपुरम, संक्षेपमे आर.के.पुरम सरकारी कर्मचारी तथा अधिकारीक बड़ पैघ आवासीय कालोनी अछि। एहिमे कतेको सेक्टर अछि। एहिठाम हमर पड़ोसी फोकन साहेब छलाह। ओ सेना मुख्यालयमे असैनिक अधिकारी रहथि। अतिशय मिलनसार प्रकृतिक लोक छलाह। कनी दूर हटि कऽ राज्य सभामे कार्यरत अधिकारी गांगुली साहेब छलाह। ओ प्रात: काल सामनेक पार्कमे घोड़ा जकाँ टाप लगबैत छलाह। चलैसँ जखन मोन नहि भरनि तऽ दोड़ए लागथि। सभसँ कोनपर भारतीय सूचना सेवा (Indian information Service) क अधिकारी त्रिपाठीजी छलाह। ओ बड़ा रमनगर ओ गप्प-सप्पमे माहिर छलाह। यदा-कदा अबैत रहथि। तरह-तरह क अनुभव सभसँ भरल व्यक्ति छलाह। पत्रकारिताक काजक दौरान कएटा पैघ-पैघ राजनेता सभसँ सम्पर्क भए गेल रहनि। जे धिया-पुता सभ योग्य आओर कर्मठक संगे-संग माता-पिताक प्रति श्रद्धावान सभ छनि। तँए ओ बहुत भाग्यवान व्यक्ति छथि।

हमर पड़ोसी, फोकन साहेबकेँ बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़ेबाक हेतु शिक्षकक काज रहए। हमर जान पहचानक एकटा ट्यूशनियाँ छलाह। ओ अवर सचिव रहथि मुदा सालोसँ अंशकालिक ट्यूशन करैत छलाह। हम हुनका बारेमे फोकन साहेबकेँ कहलियनि। ओ तुरन्त हुनका काजपर बजा लेलखिन। ट्यूशन प्रारम्भ भए गेल।

बच्चा सबहक परीक्षाफल बढ़ियाँ होमए लगलै। एहि बातसँ फोकन साहेब दुनू व्यक्ति बहुत प्रसन्न रहैत छलाह। ट्यूशनियाँक खूब

मान-दान होइक। एक दिन केना-ने-केना फोकन साहेबकेँ पता लागि गेलै जे ओ ट्यूशनियाँ तऽ शिक्षक नहि, अपितु सरकारी अधिकारी छथि। एहि बातसँ कुपित भए ओ हुनकर ट्यूशन बंद करा देलखिन। हमरा हिसाबे ओ सही निर्णय नहि छल। जखन ओ सही पढ़ा रहल छलाह आ बच्चा सबहक प्रगति संतोषजनक छल तऽ ट्यूशनियोंकेँ ओकर नौकरीक कारण हटाएब उचित नहि लगैत अछि। किछु आओर कारण होइत तखन तऽ कोनो बात नहि।

आर.के.पुरम सेक्टर- ३ सँ लेडी हार्डींगक लेल सीधे बस संख्या ६२० भेटै छल। वएह बस नॉर्थ ब्लॉक जेबाक हेतु सेहो उपयुक्त छल। कृषि भवन बस ठहरावपर उतरि जाउ आ ओहिठामसँ विजय चौक होइत नॉर्थ ब्लॉक चलि जाउ। पैदल ७-८ मिनटक रस्ता छलैक।

कनाट प्लेसक हनुमान मन्दिर बहुत सिद्ध मन्दिर मानल जाइत अछि। मंगल दिन-के ओहि मन्दिरमे भक्त सबहक अपार भीड़ रहैत अछि। ओहिठाम शुद्ध घीमे बनल प्रसाद–लड्डु, गुलाब जामुन, बुनिया, पेरा इत्यादि–उपलब्ध रहैत अछि।

लेडी हार्डींगमे काजक दौरान आ ओकर बादो सालो धरि हम मंगले-मंगल हनुमानजीक दर्शन करए जाइत रहलहुँ। ओहिठामक प्रसादक स्वाद बहुत नीक होइत अछि। ओतए गेलापर बगलमे लस्सी ओ माटिक कुल्हड़मे पड़ोसल चाह हम अबस्स पीबैत छी। ओकर आनन्दक वर्णन नहि।

मंगल दिनक हनुमान मन्दिरक चहचही देखैबला होइत अछि। कियो लड्डु बाँटि रहल अछि, कियो हनुमान चलिसा बाँटि रहल अछि तऽ कियो हत्थाक-हत्था केरा। किओ-किओ तऽ रूपैआ सेहो बाँटै छथि आ भीखमंगा सभमे मारि-पीटक परिस्थिति उत्पन्न भए जाइत अछि। कएक

बेर एहन बँटनाहर सबहक से पराभव होइत अछि जे डिब्बा सभ फेक गाड़ीमे नुकाए पड़ैत अछि।

कहल जाइत अछि जे कनाट प्लेस दिल्लीक हनुमान मन्दिर महाभारत कालमे दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) मे पाण्डव द्वारा निर्मित पाँचटा महत्वपूर्ण मन्दिरमे सँ एक अछि। पाण्डव द्वारा निर्मित आओर चारिटा मन्दिर अछि- काली मन्दिर कालकाजी, योगमाया मन्दिर कुतुव मिनार, भैरव मन्दिर पुरना किला, शिव मन्दिर निगमवोध घाट (नीला छतर महादेव)। तुलसी दास एहि हनुमान मन्दिरमे दर्शन केने रहथि। महाराजा मान सिंह (प्रथम, १५४०-१६१४) अकबरक शासन कालमे एहि मन्दिरक निर्माण केलथि। महाराजा जय सिंह (१६८८-१७४३) १७२४ मे एकर पुननिर्माण केलाह। तकर बाद एहि मन्दिरक कतेको बेर जीर्णोद्धार कएल गेल। आइ-काल्हि ई मन्दिर दिल्लीक प्रमुख सांस्कृतिक/ आध्यात्मिक स्थानमे गनल जाइत अछि।

एहि मन्दिरमे १ अगस्त १९२४ सँ चौबीसो घन्टा राम नाम संकीर्तन होइत रहैत अछि। एहि अखण्ड संकीर्तनक गाइनीज बूक ऑफ वर्ल्ड रेकर्डमे स्थान देल गेल अछि।

कहल जाइत अछि जे मुगल शासक सन्तान नहि हेबाक कारण बहुत फिरसान रहथि। तखन ओ एहि मन्दिरमे आबि कऽ प्रार्थना केलाह आ हुनका सलीमक रूपमे मनोकामना पूर्ण भेल। सौहार्दक उदाहरणस्वरूप मन्दिरक विभागपर ओम अथबा कलशक स्थानपर चन्द्रमाक चेन्ह अवस्थित अछि। एहि मन्दिरक एकटा ईहो विशेषता अछि जे ई हनुमानक वाल्यकालक रूपबला देशक प्रमुख मन्दिरमे सँ अछि। हनुमानजीक एक हाथमे खिलौना ओ दोसर हाथ हुनकर छातीपर अछि। देश विदेशक कतेको महापुरुष एहि मन्दिरमे आबि कऽ हनुमानजीक

दर्शन प्राप्त करैत छथि। जखन कखनो हमर मोन लेडी हार्डीगक दाव-पेंचसँ फिरसान भए जाइत छल तऽ हम एहिठाम आबि जाइत छलहुँ।

दुपहरियामे भोजनावकासक समयमे बेसी काल कनाट प्लेस घुमए चलि जाइत रही। ओहिठामक तरह-तरह क दोकान, रंग-बिरंगी लोक देखैत- सुनैत समय नीकसँ कटि जाइत छल।

कनाट प्लेस पहिने जंगल रहए। ओतए नढ़िया भूकैत छल। लगमे हनुमान मन्दिरटा छल जतए दर्शन हेतु लोक दिन-दहारे अबैत छल आ साँझसँ पहिने घर घुमि जेबाक व्योंतमे रहैत छल। कनाट प्लेसक निर्माणक हेतु ओहिठामक तीनटा गाम–माधोगंज, जयसिंहपुरा आ राजाक बजार–कैं उजारि देल गेल। एहि गामक बसिन्दा सभकैं कैरोलवागक लगपास बसौल गेल। कनाट प्लेसक निर्माण १९२९-३१क बीचमे भेल। एहिमे दू-महला मकान सभ अछि जकर निच्चाँमे दोकान आ ऊपरमे आवास होइत छल। कनाट प्लेसमे प्लाजा, रीगल, ओडिमन, रीमोली, चारिटा सीनेमा टाकीज अछि। सन् १९६१मे कनाट प्लेसक अन्दरूनी भागमे जमीनक निच्चाँ पालिका बजार बनाओल गेल। पालिका बाजार पूर्णतः वतानुकुलित अछि। देश-विदेशसँ आनल गेल तरह-तरह क वस्तु सभ एतए बेचल जाइत अछि। मुदा दामक मामलामे एतए बहुत सावधानीक काज अछि। जबरदस्त मोल मोलाइ होइत अछि। नव आगन्तुककैं ठगा जेबाक पूरा सम्भावना अछि। कोनो-कोनो दोकानमे सही दामपर चीज भेट जाइत छैक मुदा नव व्यक्तिकैं तकर जानकारी असान नहि अछि। वर्तमान समयमे दुनियाँमे सभसँ पैघ (आब दोसर स्थानपर) राष्ट्रीय ध्वज कनाट प्लेसक सेन्ट्रल पार्कमे फहरौल गेल अछि। कनाट प्लेसक कॉफी हाउस अखनो लोकक बैसार आ गप्प-सप्प हेतु प्रसिद्ध अछि।

लेडी हार्डींगसँ सटले गोल मार्केटक ऐतिहासिक दोकान सभ अछि। सन् १९२१ ईस्वीमे अंग्रेज सभ एकर निर्माण केने छल। एहिठाम बंगाली स्वीट आ कलेबा प्रसिद्ध मिठाइक दोकान अछि। कहिओ काल एहिठाम आबि कऽ चाट खेबाक मौका भेटैत छल। भोजनोक दोकान ओतए उपलब्ध अछि। गोल मार्केटक एकटा पानक दोकान बहुत प्रसिद्ध अछि। मीठका पान खाइत काल हएत जे रसगुल्ला खा रहल छी। गोल मार्केटक दोकान सबहक हालत क्रमश: जरजर भए रहल छल मुदा दोकान मालिक सभ एकरा किन्नहु खाली नहि करए चाहैत छलाह। हाइ कोर्ट/सुप्रीम कोर्ट धरि मोकदमाबाजी भेल। दोकानदार सभ हारि गेलाह। एन.डी.एम.सी.क एकरा संग्रहालय बनाबक योजना कोर्ट अन्ततोगत्वा मानि लेलक।

गृहमंत्रालयमे एक्केठाम एक्के काज आ एक्के पदपर सालो काज करैत-करैत मोन उचटि गेल रहए, तँए प्रतिनियुक्तिपर निकलल कएटा पद सबहक लेल आवेदन कएल। लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजक पद ओहिमे सँ एक छल। सन् १९९७मे संघ लोक सेवा आयोग- दिल्लीमे साक्षात्कार छल। लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेज- दिल्लीक मुख्य प्रशासनिक अधिकारी पदक हेतु हमर कागज-पत्तर सही पौलाक बाद ओहि साक्षात्कार हेतु देशक विभिन्न भागसँ तकरीवन दस गोटे आयल रहथि। असलमे ई साक्षात्कार कम आ व्यक्तिगत गप्प-सप्प बेसी छल। भारत सरकारक अधीन प्रथम वर्गक पद हेबाक कारण संघ लोक सेवा आयोगक संस्तुति जरूरी छल। साक्षात्कारक क्रममे बेरा-बेरी लोक सभकेँ बजाओल गेल। कएटा उमीदवार तऽ ततेक सुटेड-बुटेड रहथि जे हमर हबे बुझू गुम्म रहए..! साक्षात्कार समितिक अध्यक्ष छलाह- फौजी जेनरल। केना-ने-केना हमर गप्प-सप्प हुनका पसिन्न पड़ि गेलनि आ हमरा एहि पद हेतु चयन भए गेल।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा चयन होएब निश्चय प्रसन्नताक गप्प छल। किछुए दिनक बाद संघ लोक सेवा आयोग द्वारा हमरा एम.आर.टी.पी. आयोगक प्रशासनिक अधिकारी हेतु सेहो चयन भए गेल। दुविधा छल जे कतए जाइ। हमर ससुर इलाजक क्रममे दिल्लीए-मे माने हमरे एहिठाम रहथि। हुनकासँ एहि विषयमे परामर्श कएल। प्रश्न सुनि ओ किछु काल गुम्म भए गेलाह। थोड़ेकालक बाद एकाएक कहलनि-

"लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेज बला पदपर चलि जाउ।"

हुनकर परामर्श स्वीकार करैत १३ सितम्बर १९९७ ई.केँ हम ओहि संस्थानक प्रमुख प्रशासनिक पदाधिकारीक पदभार ग्रहण कएल। पदभार ग्रहण करबासँ पूर्व हम कहिओ लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजक परिसरमे नहि गेल रही। ओकर क्रिया-कलापक कोनो जानकारी हमरा नहि रहए। यद्यपि ई संस्थान राष्ट्रीय स्तरक अछि, आ दिल्लीक कनाट प्लेससँ सटले अछि तथापि एकरा बारेमे हमरा जानकारी नहि रहए। एहि पदपर चयन होइते संस्थानक किछु महत्पवूर्ण व्यक्ति सभ हमरासँ सम्पर्क साधने रहथि, आग्रह करथि जे जल्दीए आबि जाउ। एहिसँ बुझि पड़ए जे ई पद जरूर महत्वपूर्ण अछि।

लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजक प्रचार्य आओर सहयोगी अस्पतालक सबहक अधीक्षकक कक्षमे पहुँच कऽ हमरा बहुत नीक लागल। पैघ सन सजल रूम, बड़काटा टेबुलक चारूकात तरह-तरह क चीज-वौस सभ राखल छल। आगूमे, बामा भाग आओर दहिना भाग कुर्सी सभ। ओहि रूमसँ सटल एकटा मंत्रणा कक्ष। ओहिमे अण्डाकार पैघसन टेबुल राखल छल। कएबेर व्यक्तिगत वा गोपनीय मंत्रणाक हेतु प्रचार्य ओही कक्षमे ससरि जाइत छलाह।

प्राचार्यक आप्त सचीवकेँ हम अपन परिचय देलियनि। ओ हमरा तुरन्त अन्दर प्राचार्य महोदया लग लऽ गेलाह। हम पदभार ग्रहण हेतु आयल रही से जानि ओ बहुत प्रसन्न भेली। हम बैसले रही कि निर्वतमान मुख्य प्रशासनिक अधिकारीजी अयला। कनी-मनी गप्प-सप्प भेल आ सामान्य लिखा-पढ़ीक बाद हम ओहि दिन तत्काल प्रभावसँ मुख्य प्रशासनिक अधिकारीक पद भार ग्रहण कएल। तदनुकूल सरकारी आदेश जारी भए गेल। ओहि दिनक बाद सरकारक विभिन्न विभागमे विभिन्न पदपर लगभग १६ साल हम क्लास वन (वर्ग एक) अधिकारी रहलहुँ। ओहिसँ पूर्व ७ फरबरी १९८४ सँ हम क्लास टू (वर्ग दू) क राजपत्रित अधिकारी रहलहुँ। कुल मिला कऽ २९ वर्षसँ हम राजपत्रित अधिकारी रहलहुँ।

लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजमे काज पहिल दिन परिचय -पाती मे बीति गेल। जाहि डाक्टर सभसँ भेँट करबाक हेतु सोचियो ने सकैत रही से सभ आबि-आबि भेँट करक हेतु समय माँगए लगलाह। फोन-पर-फोन अबैत रहल। कए गोटे अपना-अपना तरहक परामर्श सेहो देबए लगलाह। स्थानीय चतुर्थ वर्गीय यूनियनक नेता सभ झुण्ड बान्हि अबैत गेलाह। विपक्षी नेता मौका ताकि कऽ भेँट करैत आश्वासन दैत रहलाह-

'सर! हम हमेशा आपके साथ हैं...।'

हम तऽ गुम्म रही जे आखिर बात की अछि..? कहाँ सचिवालयक मौन वातावरण, कहाँ लेडी हार्डींग धूम धराका...।

लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजक आधारशिला लेडी हार्डींग द्वारा १७ मार्च १९१४ ई.केँ राखल गेल। ७ फरबरी १९१६क एहि कौलेजक उद्घाटन भेल। शुरूमे मात्र १६ टा विद्यार्थीक नामांकन एहिठाम होइत छल। आब ई संख्या बढ़ि कऽ २०० धरि पहुँच गेल अछि। एहि संस्थानक–माने मेडिकलमे मात्र महिलाकें स्नातकक शिक्षा देबएबला

संस्थानक–एशिया भरिमे असगर स्थान प्राप्त अछि। शिक्षा, रोगी सेवा, अनुसंधान आओर सामाजिक संवादक क्षेत्रमे एहि संस्थानक बहुत योगदान रहल अछि। राष्ट्रीय महत्वक एहि संस्थानक प्रशासन सोझे केन्द्र सरकारक अधीन अछि। शिक्षणक द्दष्टिसँ ई संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालयसँ समवद्ध अछि।

लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजसँ जुड़ल अस्पताल अछि- कलावती सरण बच्चा अस्पताल ओ सुचेता कृपालनी अस्पताल। राम मनोहर लोहिया अस्पतालक किछु विभाग सेहो एहिठामसँ जुड़ल अछि। लेडी हार्डींग दिल्लीमे सामान्यत: जच्चा-बच्चाक अस्पतालक रूपमे जानल जाइत छल। पहिने पुरुषक इलाजक अनुभव प्राप्त करबाक हेतु एहिठामक विद्यार्थी सभकेँ राम मनोहर लोहिया अस्पताल जाए पड़ैत छलैक। ओहिठामक अस्थि विभाग, मेडिसीन विभाग आ शल्य चिकित्सा विभागमे लेडी हार्डींगक किछु डाक्टर संवद्ध रहैत छलाह मुदा आब ओ बात नहि छैक। लेडी हार्डींगक सभ विभाग पुरुष मरीजक हेतु उपलब्ध अछि, ओना महिला रोग विभागक अति विशिष्टता तऽ अछिए। लेडी हार्डींगक ठीक सामने शिवाजी स्टेडियम अछि आ तकर बगलमे शिवाजी बस टर्मीनल। दिल्लीक विभिन्न भागक हेतु बस एहिठामसँ बनि कऽ चलैत अछि। कनाट प्लेसक प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर एहिठाम अछि। घुमै-फिड़ैले आवश्यक दोकान-दौरीक हेतु कनाट प्लेसक प्रसिद्ध दोकान सभ आस-पास अछि। रीगल सीनेमा तऽ अछिए, ई बात अलग अछि जे हम ओहि सीनेमामे ओतए रहितो कहिओ नहि जा सकलहुँ। हम तरह-तरहक कार्यालयमे अनेकानेक परिस्थितिमे काज केलहुँ मुदा लेडी हार्डींग अपना आपमे अजूबा छल। रोज किछु-ने-किछु नया घटित भए जाइक जाहिमे दिनभरि ओझराएल रही।

शुरूमे तऽ ततेक लोक अपन गप्प कहक हेतु आबए जे सुनैत-सुनैत कान पाकि जाइत रहए। लोक सभसँ गप्प करैत-करैत लोलमे दर्द होमए लगैत छल। घर जा कऽ चुपचाप बैस जाइ। आओर काजक,गप्प-सप्प करबाक हिम्मत नहि रहए। असलमे तीन हजारसँ अधिके तरह-तरह क लोक सभ ओहि संस्थानमे काज करैत छल। एते लोकक व्यक्तिगत समस्या, सरकारी समस्याक निदानक एकमात्र केन्द्र छल- मुख्य प्रशासनिक अधिकारी। असगर देखिते कियो आबि कानमे फुस-फुसा कऽ चेतबैत-

"हे! फल्लाँ सभसँ बाँचि कऽ रहब... ।"

थोड़ेकालक बाद दोसर कियो आबि ठीक ओकर उल्टा बात कहि जाइत। डाक्टर, नर्स, टेक्नीसीयन, सफाई कर्मचारी आओर अन्य चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी- सभ गुटबन्दीसँ ओत-प्रोत छल। आपसी दुश्मनीक ई हद छल जे पदभार ग्रहणसँ पूर्वहि कएटा वरिष्ठ डाक्टर नॉर्थ ब्लॉक पहुँच हमर कान भरब शुरू कऽ देने रहथि। आखिर मनुक्खक तऽ मनुक्खे होइत अछि। कतबो निष्पक्ष रहबाक प्रयास करब, मुदा कनफुक्कीक किछु-ने-किछु प्रभाव ब्यवहारमे भइए जाइत अछि।

चारि बजेक आस-पास मेडिकल कॉलेजमे पढ़ाइ समाप्त होइत छल। प्राध्यापक लोकनिक संग आओर-आओर कर्मचारी सभकेँ फारकति होइत छलैक। एहि समयमे हमरा कक्षमे लोकक आबाजाही बढ़ि जाइत छल। ककर-ककर सुनब! ककर बात सही अछि, के विश्वस्त अछि, एहि बातकेँ बुझबामे किछु समय तऽ लगबेक रहए। क्रमश: लोक सभकेँ चिन्ह, बुझए लगलिऐक। एक दिन ऑफिसमे बैसल रही कि हल्ला-गुल्ला बुझाएल। हमर चपरासी 'भूरे' कहलक-

"सर! यूनियन बाले आ रहे हैं।"

कनीकालमे देखलिऐ जे पचासोटा महिला हाथमे बाढनि लेने नारा लगा रहल छथि आ आगा-आगा यूनियनक नेता। तरह तरह के घिनौन नारा सभक बरखा भय रहल छल।

अस्पताल प्रशासनमे नारेबाजीक ई पहिल अनुभव छल। यूनियनक नेताक मुँह लाल भेल रहए। पता नहि ओ की बुझाबए चाहैत छल। प्राय: हमरा प्रारम्भेमे डरा देबए चाहैत छल जाहिसँ आगा सुग्गा जकाँ हम यूनियनक सिखाओल भाखा बजैत रही। मुदा भेल एकर उल्टा। यूनियनक एकाध आओर एहन घटनासँ हम तय कऽ लेलहुँ जे गलत, ब्यवहारक आगू नहि झूकब, परिणाम जे हौउ...। जे गलत ब्यवहार करए, किंवा अनुचित दवाब बना कऽ संस्थानक प्रशासनकेँ पंगु करए चाहए, तकर एकटा काज नहि करबाक दृढ़ निश्चय कएल। यूनियनकेँ हारल नेता रहि-रहि कऽ कान फूकि जाए-

“सर! घबराना मत। हम इस यूनियन को सिखण्डी सावित कर देंगे...। आप हमारी बात माना करो। हम आपके साथ हैं। हमारे साथ अभी भी बहुत लोक हैं...।”

सचिवालयक शान्त वातावरणमे रहए बला हम लेडी हार्डींगक तूफानी वातावरणकेँ शान्त रखबाक जिम्मा लऽ कऽ चलि रहल छलहुँ! एहि तरहक काजक हमरा कोनो अनुभव नहि छल। Trial and error प्रयास करू, गलतीसँ सिखू आ आगा बढ़ू। गलत काज ने करू आ ने गलत आदमीक बात मानू। ई कहब सुनब जतेक असान होइत मुदा ब्यवहारमे, लेडी हार्डींग सन जगहमे एकर अनुपालन असान नहि छल। कएक दिन जखन यूनियनक आक्रमण जोड़ पकड़ि लैत छल तऽ कनाट प्लेसक हनुमान मन्दिर चलि जाइ आ हनुमानजीकेँ गोहराबी जे एहि दूत-भूतसँ जान बँचाउ।

वर्ग तीन आओर चारिक कर्मचारी यूनियन बेसी हस्तक्षेप करैत छल। ओकर सबहक तौर-तरीका सेहो जनतांत्रिक नहि छल आ अस्पताल/कॉलेजक प्रशासनक प्रमुख-प्राचार्यकेँ सेहो ओकरासँ टकरेबाक साहस नहि छल, ओ चाहै छली जे सी.ई.ओ. (माने हम) ओकरा सम्हारि दिऐ आ ओ स्वयं चैनसँ रहथि।

ओकरा सभकेँ आपसी गुटवाजी छलैक, तँए सन्तुलन बनाबक प्रयास कएल जाइ मुदा अधिकांश कर्मचारीकेँ कम पढ़ल-लिखल वा अशिक्षित हेबाक कारण ओ सभ भेड़ीक चालि चलैत छल। जे नेता कहलक, जे उल्टा-पुल्टा बुझेलक, ओ सभ ओकरा सिरोधार्ये नहि करैत छल अपितु आक्रमकताक संग ओकर क्रियान्वयन करैत छल। असल मानेमे ओकरा सभकेँ ने कोनो काजसँ मतलब रहए आ ने संस्थानक विकाससँ। अपन स्वार्थ साधन परम धर्म छल।

एक दिन गृहमंत्रालयसँ हमर मित्र लेडी हार्डींग किछु काजे आयल रहथि। हमरा देखि आश्चर्यचकित भेलाह। हुनका नहि बुझल रहनि जे हम आइ-काल्हि ओतहि छी। हम हुनका अपन कक्षमे प्रतीक्षा करक हेतु कहलियनि। ततबेमे यूनियनक नेता सबहक नारेबाजी प्रारम्भ भए गेल। नाराकेँ जोड़ पकड़ैत देखि हमर मित्र ततेक घबरा गेलाह जे बिना हमरासँ भेँट केनहि घसकि गेलाह। हम प्राचार्यक कक्षसँ नारा सुनि कऽ बाहर भेलहुँ तऽ देखलहुँ जे ओ तऽ गायब छथि। बादमे फोनपर हाल-चाल लेलियनि तऽ कहए लगलाह-

“अहाँ बड़ पैघ आदमी भए गेलहुं। नारा तऽ बड़के लोककेँ लगैत अछि।”

असलमे नारा नॉर्थ ब्लॉकमे सेहो लगैत छैक, मुदा मंत्रीक। लेडी हार्डींगक बाते दोसर...। अस्पताल प्रशासनकेँ पंगु रखबाक उद्देश्यसँ आओर मनमानी करबाक हेतु अस्पतालक यूनियन तमाम हथकण्डा

अपनाबैमे माहिर छल। ओना अस्पतालमे नर्स यूनियन, जुनियर रेजिडेन्ट डाक्टर यूनियन, सिनीयर रेजीडेन्ट डाक्टर यूनियनक अलाबा मेडिकल कौलेजक शिक्षक डाक्टर (फैकल्टी) सबहक अलग-अलग यूनियन छल मुदा चतुर्थ आओर तृतीय वर्गीय कर्मचारी यूनियन सभसँ अलग रूतबा रखैत छल। यूनियनक अध्यक्ष अपना आपकेँ कौलेजक प्राचार्यसँ कनिक्को कम दर्जाक नहि बुझैत छल। यूनियनक समस्या ततेक जड़ियाएल छल जे एकरासँ लोहा लेब एकटा चुनौती छल। ककरो बदली भेलैक, ककरो प्रोन्नति भेलैक, ककरो मकान भेटलै, सभ बातक जानकारी ओकरा रहैत छल। असलमे अस्पतालमे नेता बनि जाएब, काज करबासँ छुट्टीक लाइसेंस भेट जाएब होइत छल। तँए एहन लोकक भरमार छल जे नेता बनै लेल व्याकुल छल।

संस्थानमे किछु गोटे अद्भुते नीक छलाह मुदा ओ सभ हटल -हटल रहैत छलाह। संस्थानक नित्य प्रतिक जिम्मेदारी या तऽ प्राचार्यक छल वा हमर। एतेक भारी संस्थान छल जाहिमे नित्य किछु-ने-किछु नव घटित होइत रहैत छल। कियो कानि रहल अछि, कियो चिकरि रहल अछि, कहिओ नर्सक हड़ताल अछि तऽ कहिओ जुनियर रेजीडेन्ट डाक्टरक। 'हाथी चलए बजार, कुत्ता भुकए हजार।' जे जरूरी सार्थक बात अछि ताहिपर ध्यान दैत अपन रस्ता चलैत रहू...। आपसी तालमेल बना कऽ राखब अस्पताल प्रशासनक हेतु दुरुह काज छल। किछु डाक्टर तऽ यूनियनसँ ततेक मिलल रहैत छलाह वा डेराएल रहैत छलाह जे एमहर प्राचार्यक संग बैसक होइत आ ओमहर यूनियनकेँ पता लागि जाइत। परिणाम तुरन्त नारेबाजी शुरू...। ओना, मुखविरी केनिहार लोकक अनुमान लागि जाइत, मुदा की कएल जा सकैत छल। सही मानेमे किछु वरिष्ठ डाक्टर सभ प्राचार्याक खिलाफमे महौल बनबए लेल यूनियनकेँ एकटा हथियारक रूपमे इस्तेमाल करैत छल। परिणाम सामने छल।

अस्पताल निरंतर अस्तव्यस्त रहैत छल। अस्पताल आओर मेडिकल कौलेज प्रशासनक जिम्मा रहबाक दौरान नीकसँ अनुभव भेल जे यूनियन सभ कतेक हाबी छल, आ जनहितक प्रतिकूल काज करितो शेर बनल घुमि रहल छल। मुदा ओकरा नियंत्रित करब बाघक सवारी करब छल।

एकबेर दिल्लीक समस्त अस्पतालमे वेतन आओर भत्ताक मुद्दापर हड़ताल भेल। पहिने वर्ग तीन-चारिक यूनियन आ तकर पाछाँ नर्सक यूनियन, रेजिडेन्ट डाक्टरक यूनियन सभ हड़तालपर चलि गेल। अस्पताल नर्क बनि गेल छल। सफाइक काज ठप भए गेल छल। मरीज सभ त्राहिमाम कऽ रहल छल। रोज मंत्रालयमे बैसार होइत छल, मुदा यूनियन सबहक मांग तुरन्त मानि लेब सम्भव नहि छल आ तकर बिना यूनियन हड़ताल तोड़ए लेल तैयार नहि छल। ‘काज नहि तऽ वेतन नहि’ क सिद्धान्तक आधारपर कर्मचारी सबहक हड़तालक अवधिक वेतन रोकि देल गेल छल। कर्मचारी सभ वेतनक भूगतान चाहै छल जाहिपर सरकार अड़ि गेल छल। अस्पताल तथा कौलेजक शीर्ष अधिकारी प्राचार्या आओर मेडिकल सुपरीन्टेन्डेन्ट होइत छली जे विदेशमे रहथि। हुनका एवजमे कार्यकारी प्राचार्य अपनाकेँ बहुत लोकप्रिय बुझथि। मुदा हड़तालक दौरान अस्पतालक निरीक्षण करैत काल हुनका ऊपर आक्रमण भेल। यूनियनक नेता सभ गारि पढ़लक, नारा लगौलक आ कादो सेहो फेक देलक।

एहि प्रकारक फज्झैतक कल्पना हुनका सपनोमे नहि छल। ओ अपनाकेँ कर्मचारी सभमे लोकप्रिय बुझैत छलाह, यूनियनक नेता हुनका इज्जत करैत छल। मुदा यूनियनक विरोध शासनसँ छलैक। ओ सभ कुर्सीपर विराजमान व्यक्तिकेँ लक्ष्य कय विरोध प्रकट करैत छल। तँए एहि बेर वएह फँसि गेल रहथि। प्राचार्याक कक्षमे अबिते ओ हमरा बजा कऽ कहलथि जे यूनियनक नेता सभपर न्यायालयक आदेशक उल्लंघनक

आधार बना तुरन्त केस कऽ देल जाए। हमरा एहिमे मामलाकेँ आओर बिगड़ि जेबाक डर भेल। हम हुनका बुझबैक प्रयास कएल मुदा ओ अपन निर्णयपर अडिग रहथि। चूँकि प्राचार्या काल्हि भने आबए बाली रहथि, तँए हम एक दिन रूकि कऽ निर्णयक पक्षधर रही। हम टंकण करेबाक बहाना बना कनाट प्लेस दिस चलि गेलहुँ।

कार्यकारी प्राचार्यजीकेँ दम फुलैत रहनि। हमरा ओ बहुत तकैत रहथि। हम करीब अढ़ाइ बजे घुमि-फिर कऽ आपस अयलहुँ। अबिते देखलहुँ ओ वेहद नाराज छथि। किछु-किछु बाजौ लगलाह, हमरो तामस भेल। कहलियनि जे टाइपीस्ट नहि भेट सकल तऽ हम की करू..?

कहुना-कहुना कऽ टंकण करैत चारि बाजि गेल आ ओहि दिन मुकदमा नहि कएल जा सकल। दोसर दिन प्राचार्य काजपर अएली। ओहो मोकदमाक पक्षधर नहि छली मुदा मंत्रालयक हस्तक्षेपसँ हमरा लोकनिकेँ यूनियनक समस्त नेता सभपर मोकदमा दायर करए पड़ल। दोसर दिन काजपर अबिते प्राचार्या मंत्रालयक मंत्रणामे चलि गेली। एमहर कौलेजमे हालत गड़बड़ा रहल छल। कर्मचारी सभ वेतन भूगतानपर अड़ल छल। मंत्रालयसँ बारंबार फोन अबैत छल जे वेतन भूगतान हएत मुदा हड़तालक अवधिकेँ काटि कऽ। कौलेजमे उपप्रचार्य सहित उपलब्ध आओर-आओर अधिकारी सभ हमरापर बात बजारि देथि-

"जे करताह से यएह करताह।"

फोनपर मंत्रालयसँ बारंबार हिदायत आबए जे यूनियनक दबाबमे नहि आबक छैक। यूनियनक दबाब बढ़ल जाइक। यूनियनक नेता सबहक दबाब बढ़ि रहल छल। प्राचार्य मंत्रालयमे मंत्रणामे लागल रहथि आ फोनपर आदेश पठबैत रहथि। थानासँ पुलिस टस-सँ-मस नहि होइत छल। तँए मौका पाबि कऽ हम थाना हेतु कौलेज गेटसँ बाहर भए स्कूटर

ठीक करैत रही कि एकटा नेता देखलक। ओकरा भेलैक जे हम भागि रहल छी। एह-ले वए-ले सैकड़ो हड़ताली हमरा घेरि लेलक आ नारा लगबए लागल। हम वापस प्राचार्यक कार्यालयमे अयलहुँ। यूनियनक प्रधान गारा-गारी करए लगलाह। फोनक रिसिभर खुजल रहबाक कारण सभ बात सचिव, स्वास्थ मंत्रालयकेँ सुनबामे एलनि। मंत्रालयक आदेशपर सैकड़ो पुलिस ट्रक भरिक कौलेजमे आयल आ हड़ताली सभकेँ घेरि लेलक। एकर बाद तऽ संस्थानक परिसर एकटा छाबनीमे तब्दील भए गेल। ओकरा बाद प्राचार्या महोदया कौलेजमे अपन कक्षमे पहुँचली।

सरकार हड़तालक अवधिक दरमाहा काटबाक हेतु प्रतिबद्ध छल आ नेता सभ ठीक एकर उल्टा। जाहि तरहेँ हम असगरे सरकारक आदेशपर यूनियनक नेतासँ लोहा लैत रहलहुँ, ताहि बातसँ प्राचार्याकेँ हमरा प्रति सम्मान बहुत बढ़ि गेलनि। जे बादक हुनकर ब्यवहारमे देखाए लागल। किछु दिनक बाद मंत्रालयमे सरकार ओ यूनियनक प्रतिनिधि सभमे समझौता भेल आ हड़ताल टुटलाक बाद वस्तु-स्थिति दोबारा सामान्य भेल। सरकार ओकरा सबहक प्राय: सभ माँग मानि लेलक। हड़ताल टुटि गेल आ काज पुन: चलए लागल।

कौलेज आ अस्पताल यद्यपि एक्के संस्थाक अभिन्न अंग छल, ओकरा आपसमे कोनो तालमेल नहि रहए। संस्थानक हरेक अंग अलग-थलग रहैत छल। डाक्टर, नर्स, टेकनीसीयन, सफाई-कर्मचारी आओर अन्य चतुर्थ वर्गीय कर्मचारीमे आपसी संवादक घोर अभाव छल। अधिकाँश डाक्टरक प्रशासकीय समस्यासँ कोनो रूचि नहि छल। ओ सभ अपना आपमे निरन्तर व्यस्त रहैत छलाह। प्रशासनिक क्षमता सेहो कमे डाक्टरमे छल। परिणाम होइत छल जे रहि-रहि कऽ मानवीय समस्या सभ उत्पन्न भए जाइत छल। छोटो-छोटो बात बिना प्राचार्यक हस्तक्षेपक नहि सोझराइत छल। असलमे यूनियनक नेता सभकेँ कर्मचारीक

हित/अहितसँ कोनो मतलब नहि रहए। ओ सभ तरहेँ कर्मचारी सबहक शोषण करैत छलाह। चूँकि अधिकांश चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी अशिक्षित छल, आ आर्थिक रूपे बहुत कमजोर छल, तँए ओकरा सभकेँ ठकब आसान छल। दिन-राति यूनियनक नेता सभ एतबेपर लागल रहैत छल। वाजिबो काजक हेतु कर्मचारी सबहक शोषण होइत छल। सहर्ष ओ सभ ताहि लेल प्रस्तुतो रहैत छल। प्रशासनमे डेग-डेगपर ओकर सबहक जासूस लागल रहैत छल। जहाँ कोनो आदेश निकलल कि सभसँ पहिने यूनियनक नेताकेँ पता चलि जाइत छल। जहाँ ककरो मकानक आबंटन अबैत कि ओ चिट्ठी लऽ कर्मचारीक घर चलि जाइत। अपन यशगान करैत जेना वएह सभटा करौलक अछि। किछु दछिना लैत आ चम्पत। आ जौं से हाथ नहि लागल तऽ प्रशासनपर आदेश निरस्त करबाक चेष्टामे लागि जाइत।

लेडी हार्डींग सेवा/विकास करबाक बहुत नीक अवसर छल। हम ओहि दिशामे यथा सम्भव प्रयासो कएल मुदा दिक्कत ई जे यूनियन जहाँ-तहाँ टाँग अड़ा दैक। विवाद कम-सँ-कम हो, ताहि चक्करमे कतेको त योजना खटाइमे पड़ि जाइत छल। कौलेजमे देश-विदेशसँ विद्यार्थी आबि कऽ पढ़ैत छल। विद्यार्थी सभ उचित भोजनक अभावमे अस्वस्थ भए जाइत छल। छात्रावासमे सभसँ भोजन सामाग्रीक चोरीक सिकाइति अबैत रहैत छल। हम सभ एहि प्रश्नपर विचार कय निर्णय कएल जे छात्रावासक भोजन व्यवस्था विद्यार्थीक समितिकेँ हाथमे दऽ देल जाए जाहिसँ ओ सभ मोन-पसन्द आओर स्वस्थकर भोजनक व्यवस्था स्वयं करथि। विद्यार्थी सभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेल मुदा यूनियन हंगामा कऽ देलक, ओना से चललै नहि। एहि परिवर्तनक सकारात्मक परिणाम भेल।

संस्थानमे तरह-तरह क लोक सबहक समावेश छल। एक आदमी पीने बुत्त निरन्तर एमहर-ओमहर घुमैत रहैत छल। अपना आपकेँ प्राचार्यक सिपह सलार घोषित केने छल। अन्ट-सन्ट बजलौं, अधिकारी सभकेँ डरेबाक प्रयास केलहुँ आ बिना काज केने दरमाहा तऽ उठेबे केलहुँ, अपितु अतिरिक्त आमदनीक जोगारमे दिन-राति लागल रहलहुँ। एकाध बेर हमरो ओ उपद्रव केने रहए। असलमे ओ सभ यूनियनक नेता सबहक हथियार छल जकर ओ जरूरतक हिसाबसँ इस्तेमाल करैत छल मुदा कएक बेर ओ हथियार बेकाबू सेहो भए जाइत छलैक।

सभसँ मनोरंजक दृश्य तखन होइत छल जखन एकटा प्रोफेसर गड़जैत-फड़जैत प्राचार्यक कक्ष दिस आबैत। ओ सीजोफ्रेनियाक मरीच छलाह। आँखि लाल-लाल कऽ कऽ प्राचार्य दिस घुरि ताकए लगैत। एक दिन तऽ ओ प्राचार्यकेँ खिहारने फिरथि आ ओ भागल-भागल अन्तर्कक्ष धरि चलि गेलथि। तथापि ओ डाक्टर पछोर करिते रहल। बड़ा मुश्किलसँ ओकरा बाहर कएल जा सकल। ओहि डाक्टरक कौलेज प्रशासनसँ पुरान झगड़ा रहए। ओकरा किछु काज नहि देल जाइ। घरे बैसल ओकरा पूरा दरमाहा पठा देल जाइ। जँ कोनो त समस्या भेल तऽ राक्षस जकाँ गड़जैत-फड़जैत ओ अबैत आ चेहरा-मोहरा तेहन भयानक बनओने रहैत जे केहनो लोककेँ पैखाना भए जाइत। कौलेजक प्रशासनपर कएकटा केस केने छल। एक दिन कैट (केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण)मे कोनो केसक सुनवाईक दौरान ब्रेंचपर बैसल रही तऽ ओ लगमे आबि कऽ कहलक-

“अहाँसँ हमरा कोनो लड़ाइ नहि अछि। अहाँ तऽ हमर गुरु भाइ छी।” (एहि दुआरे जे ओ दड़िभंगा मेडिकल कालैजसँ पीजी केने छलाह) ततेक तरहक भावुक आ तर्कसंगत गप्प करैत जे विश्वासे नहि होइत जे ई वएह आदमी अछि। एक दिन लेखा अधिकारीक कक्षमे बैसल रही कि ओ कोठरीकेँ बन्द कऽ कऽ चिकरए-भोकरए लागल। हल्ला सुनि कऽ

कए गोटाक हस्तक्षेपसँ कहुना कऽ जान बाँचल। एक दिन एकटा अधिकारीक सेवा निवृत्तिक अवसरपर विदाइ समारोहक आयोजन भेल छल। ३०-३५ गोटे बैसल रहथि। संस्थानक उप प्राचार्य मुख्य अतिथि छलाह। जलखै चलि रहल छल कि ओ डाक्टर गारि पढ़ैत, गड़जैत ओहिठाम घुसि गेल, केबाड़ बन्द कऽ देलक। कए गोटे डरे खेनाइ छोड़ि कऽ भागि गेलाह। कनीकालमे ओ ओहिठामसँ चलि गेल, तखन लोककेँ जान-मे-जान आयल। चारि सालक बाद जखन हम दोबारा लेडी हार्डींग गेलहुँ तऽ पता लागल जे ओ डाक्टर आब स्वेच्छासँ सेवा निवृत्ति लऽ कोनो निजी मेडिकल कौलेजमे पढ़ा रहल छथि आ ठीक-ठाक छथि।

एहि चर्चाक क्रममे मेडिसिन विभागमे कार्यरत एकटा महिला प्रोफेसरक अकस्मात स्मरण भए गेल। ओ बेहद कंजूस छली। चाहो अनके खर्चापर पीबि ली तऽ कोनो हर्जा नहि। बससँ चलैत छली। बिआह नहि केने रहथि आ बढ़ैत-बढ़ैत अपन विभागक अध्यक्षा भए गेल रहथि। झगड़ा करएमे हुनकर नाम अग्रगामी रहए। कएक बेर आक्रमक रूखि लेने हमरा कक्षमे अबितथि आ अन्ट-सन्ट बकए लगितथि। हुनका हिसाबे सभ गड़बड़ी करैत छल आ सभकेँ ओ ठेकाना लगा सकैत छथि। विभागक सभ प्राध्यापक, कर्मचारी, रोगी हुनकासँ तंग रहए। मुदा करैत की..? किछु सालक बाद सुनबामे आयल जे कियो अज्ञात व्यक्ति हुनकर हत्या कऽ देलक। हत्याक कानूनी प्रतिकार केनिहार कियो नहि रहए। ककरोसँ ओ बना कऽ नहि रहथि। कोनो सम्बन्धीकेँ घर टपए नहि देथि। दिल्लीमे कएक ठाम हुनकर सम्पत्ति छल। किओ-किओ बाजए जे वएह सम्पत्ति हुनकर काल भए गेल। पता नहि, सत्य की रहल, मुदा ओ किछु नहि भोगि सकली। एकरा की कहबै? भाग्यक दोख?

उपरोक्त घटना-क्रमसँ स्पष्ट अछि जे सुख होएब, जीवनमे सन्तुष्टिक बोध होएब आ यश उपार्जित करब, सबहक भागमे नहि होइत

अछि। विद्या, धन, पद इत्यादि सभ किछु ओहि महिला डाक्टरमे उपलब्ध छलनि। पद्म भूषण पुरस्कार सेहो भेटल रहनि, मुदा किछु काज नहि आयल। सभ किछु छोड़ि अकाल मृत्युक शिकार भए गेली...।

जीवन सुखी हो ताहि लेल अत्यावश्यक अछि जे अनकर देखौंस नहि करी। अनकासँ अपन तुलना नहि करी। बेसी लोक दोसरक सुखसँ दुखी रहैत छथि। आ एहन दुखक तऽ कोनो इलाजो नहि अछि। नीक ओ बेजाएक अद्भुत मिश्रण लेडी हार्डींगमे देखबामे आयल। असलमे अधिकांश लोक नीके होइत छथि। मुदा किछुए चण्ठ आ बदमाश लोक समाजपर हाबी हेबाक कुचेष्टा करैत अछि। समाजक कर्तव्य थिक जे नीक लोकक समर्थन करए, सही आबाजक संग दिए, नहि तऽ अधलाह लोक हाबी भए जाएत, नीक नष्ट भए जाएत जकर कुपरिणाम सभकेँ भोगए पड़त। तत्कालीन प्राचार्या सेहो भावुक आ योग्य छली मुदा हुनका आस-पास विश्वस्त लोकक एकटा आवृत छल जाहिमे प्रवेश कठिन छल। कएक बेर ओ सभ गलत राय दैत छलनि मुदा प्राचार्याजीकेँ हुनका सभपर अटूट विश्वास रहनि। हड़तालक क्रममे हमर दृढ़तासँ ओ प्रभावित भेली आ हमरासँ सोझे सम्पर्क राखए लगलीह।

लेडी हार्डींगमे हमर पहिल पदस्थापनाक्र दौरान कैम्पस ओ बाहर अतिक्रमण हटाबक अभियान कएक बेर चलल। ओहि समयमे भारत सरकारक शहरी विकास मंत्री कार्यालयमे अतिक्रमण हटाबए हेतु बैसक भेल जाहिमे संस्थानक प्राचार्यक अतिरिक्त हमरो बजाओल गेल। एहि बातक स्पष्ट आदेश भेल जे लेडी हार्डीगक अन्दर जे अतिक्रमण अछि ओकरा हटाओल जाए। तदनुकूल कार्रवाइ प्रारम्भ भेल। अतिक्रमण हटाबक समस्त विधि विधान पूरा कएल गेल। नियत तिथि ओ समयपर भारी पुलिस बन्दोवस्तक संग अतिक्रमण तोड़बाक तथा हटेबाक कार्यक्रम प्रारम्भ भेल। एहिसँ प्रभावित लोक सभ एकटा वरिष्ठ नेताकें

बजा अनलक। ओ हमरा बजओलथि। नियमानुकूल अतिक्रमण हटाबक देल गेल आदेशकेँ रोकबाक हेतु तूफान ठाढ़ कऽ देलाह आ अन्ततोगत्वा ओ अभियान स्थगित भए गेल।

मेडिकल शिक्षाक क्षेत्रमे लेडी हार्डीगक अपन पहिचान अछि। एकर विशिष्टताकेँ बनओने हेतु आओर आगाँ बढ़ेबाक हेतु विश्व भरिमे पसरल एहिठामक छात्र सभ सेहो प्रयत्नशील रहैत छथि। सालमे एकबेर आयोजित दीक्षान्त समारोह उत्कृष्ट अवसर होइत अछि जखन प्राचार्य सहित समस्त विभागाध्यक्ष विशिष्ट परिधानमे सुसज्जित भए मंचासीन होइत छथि। कोनो विशिष्ट गणमान्यक हाथेँ विभिन्न विधामे सफल छात्रकेँ पारितोषिक आओर डिग्रीक वितरण कएल जाइत अछि। पाँच सालक कठोर तपस्याक बाद स्नातकक डिग्री प्राप्त कए जखन विद्यार्थी सभ आनन्दोत्मादमे 'हिप हिप हुर्रे' करैत छथि तऽ समस्त वातावरण आनन्दमय भए जाइत अछि। सालमे दूबेर विद्यार्थी सभ अपन उत्सव मनबै छथि जे कएक दिन धरि चलैत रहैत अछि। नाच-गान आ तरह-तरहक सांस्कृतिक कार्यक्रममे दिल्लीक विभिन्न कौलेजसँ विद्यार्थी सभ भाग लैत छथि। लेडी हार्डीग मेडिकल कौलेजमे हमर लगभग दू साल समय पूरा होमएपर छल। ओही समय अपन विभाग, गृह मंत्रालयमे हमर प्रोन्नति अवर सचिवपर हेबाक आदेश आबि गेल। हमरा अधीनस्थ प्रशासकीय अधिकारीक सेहो प्रोन्नतिक आदेश आबि गेल रहनि। हमर लेडी हार्डीगमे प्रतिनियुक्तिक एक साल बाँचल छल (जे आगाँ बढ़ियो सकैत छल।) तरह-तरहसँ विचार कए हम आपस अपन विभाग माने गृहमंत्रालयमे जेबाक निर्णय कएल आ तदनुकूल आग्रह प्राचार्यसँ कएल मुदा ओ पदमुक्त करक हेतु तैयार नहि होथि। हुनकर कहब जे एकहि बेर दुनू अधिकारीकेँ केना छोड़ल जाएत। हमर अधीनस्थ अधिकारीकेँ तऽ छोड़ि देल गेल मुदा हम एक मास धरि लटकल रहलहुँ।

अन्ततोगत्वा २३ सितम्बर १९९९ ई.कैं हम ओहिठामसँ पदमुक्त भए गृहमंत्रालयक दिल्ली डिवीजनमे पदभार ग्रहण कएल। लेडी हार्डींगसँ कार्यमुक्त भए गृहमंत्रालयमे कार्यभार ग्रहण केलाक बाद हम फेर पुरने स्थान- दिल्ली डेस्कपर पहुँच गेलहुँ। संयुक्त सचिव वएह छलाह। निदेशकक पदपर अतिशय नीक लोक अमिताभ कुमार आइ. आर. एस. छलाह। मुदा एहि बेर संयुक्त सचिवसँ हमर पटरी नहि बैसल। हुनकर ब्यवहार हमरेसँ नहि अपितु एकाध गोटे छोड़ि सभसँ रूक्ष ओ अनसोहाँत रहैत छल। अस्तु हमर मोन ओतए नहि लगैत छल। अही बीचमे लेडी हार्डींगक ओही पदक हेतु विज्ञापन प्रकाशित भेल, पदनाम मुख्य प्रशासनिक अधिकारीसँ बदलि कऽ उप निदेशक (प्रशासन) भए गेल छल, शेष वएह। संघ लोक सेवा आयोगक माध्यमसँ चयन हेबाक रहए, तँए उमीद रहए जे हमर चयन हएत। फेर हमरा तऽ ओहिठामक अनुभवो छल। हम दर्खास्त पठा देलिऐक। मुदा चयन प्रक्रियाकैं तेना कऽ ओझराओल गेल जे ओहिमे सालो लागि गेल। आनो-आनो पद सबहक हेतु आवेदन कऽ देलिऐक। दिल्ली डेस्कमे दू साल काज केलाक बाद बहुत चेष्टा कऽ कऽ हम एनई (North East) डिवीजनमे पदस्थापित भेलहुँ। एहिठाम बेहतर महौल भेटल। अधिकारी सभ नीक छलाह आ काजोक सहुलियत रहए। हमरा गेलाक बाद यद्यपि ओहि डेस्कपर नित्य नव काज आबए लागल, मुदा हमरा मोन लगैत छल।

एहि उठा-पटकक बीच एम.आर.टी.पी.सी.मे प्रशासनिक अधिकारीक पदपर हमर नियुक्ति भए गेल आ हम ओहि पदपर प्रतिनियुक्तिक आधारपर १ मार्च २००२ ई.कैं पदभार ग्रहण कएल। एक समयमे एम.आर.टी.पी. कमीशनक बहुत चलती छल मुदा उदारीकरणक युगमे एकर महत्व क्रमश: कम होइत गेल। ताहिपर सँ कम्पीटीशन कमीशन बनबाक हेतु कानूनी प्रक्रिया चलि रहल छल जे

एम.आर.टी.पी.सी.क स्थान लैत। तँए ओहि कार्यालयमे काज कम भए गेल छल। एम.आर.टी.पी. कमीशनमे काज कम आ राजनीति बेसी छल। अधिकारी/कर्मचारी सभ गप्प मारि कऽ समय बितबैत छलाह। नित्य समाचार अबैत जे आइ ऑफिस बन्द हएत तऽ काल्हि। कर्मचारी/अधिकारी सभ अपन-अपन भविष्य लऽ कऽ चिन्तित रहैत छलाह जे ऑफिस टुटि गेलाक बाद हुनकर की हएत। एम.आर.टी.पी.सी.क अध्यक्ष दिल्ली उच्च न्यायालयक न्यायाधीश छलाह। केना-ने-केना हुनका हमरापर बहुत विश्वास भए गेलनि जे आन अधिकारी सबहक हेतु ईष्याक कारण बनि गेल। एक दिन अध्यक्ष महोदय सचिवकेँ हमरा सामनेमे हिदायत देलखिन जे हमरा कोनो तरहेँ तंग नहि कएल जाए। मुदा उच्चपदस्थ अधिकारी सभकेँ ई बात नहि पचैत छलनि जे हम अध्यक्षक एतेक प्रियपात्र रही, मुदा ओ सभ कइए की सकैत छलाह? एम.आर.टी.पी. कमीशनक अध्यक्षकेँ हमरा प्रति सिनेहसँ पूरा कार्यालयमे हमर प्रभाव बढ़ि गेल। कए गोटा अपन व्यक्तिगत समस्या हेतु हमरा सिफारिश करथि। मुदा आयोगक सचिव सहज नहि भए पाबथि।

आराम करक हेतु आओर समय काटक हेतु एम.आर.टी.पी. कमीशनक ऑफिस उत्तम छल मुदा हम बैसल-बैसल तंग होमए लगलहुँ। किछु दिनक बाद लेडी हार्डींग मेडिकल कौलेजमे उपनिदेशक (प्रशासन) क पदपर प्रतिनियुक्तिक हेतु साक्षात्कार हेतु संघ लोक सेवा आयोगसँ पत्र भेटल। शाहजहाँ रोडपर हमर ऑफिसक बगलेमे संघ लोक सेवा आयोग छल। हम ओहि साक्षात्कारमे पहुँचलहुँ। आठ-दस गोटा साक्षात्कार हेतु उपस्थित रहथि, ताहिमे लेडी हार्डींगमे तदर्थ आधारपर कार्यरत उपनिदेशक (प्रशासन) सेहो उमीदवार रहथि। हमर साक्षात्कार सभसँ अन्तमे भेल। पूर्वमे हम दू साल लेडी हार्डींगमे ओही पदपर काज

कए चुकल रही। ताहू बातक हमरा लाभ भेल। हमर साक्षात्कार नीक भेल आ किछुए दिनमे नियुक्ति पत्र सेहो भेटल। किछु दिनमे लेडी हार्डींगमे प्रतिनियुक्तिक आधारपर उप निदेशक (प्रशासन)क पदपर नियुक्ति हेतु पत्र गृहमंत्रालयक माध्यमसँ एम.आर.टी.पी.सी. पहुँच गेल। सोच-विचारक कोनो प्रयोजन नहि छल। हम ओतए जेबाक हेतु निर्णय कए लेने रही। अस्तु अध्यक्षजीसँ भेँट कए कार्यमुक्त करबाक आग्रह कएल। ओ दुपहरियामे भोजनोपरान्त हमर आग्रहकेँ मानि लेलाह आ हमरा कार्यमुक्त करबाक आदेश जारी कऽ देलथि। ३ दिसम्बर २००३ मंगल दिन हम दोबारा लेडी हार्डींग पहुँच गेल रही। पदनाम बदलि गेल रहए मुदा पद वएह रहए। प्रचार्य बदलि गेल रहथि। ओ हमरा देखि बहुत प्रसन्न भेलाह आ आशा व्यक्त केलाह जे अस्पताल आओर कौलेजक प्रशासन आब सुचारू रूपसँ चलि सकत।

लेडी हार्डींगक इतिहासमे हम पहिल व्यक्ति छलहुँ जे मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/ उप निदेशकक पदपर दोबारा गेल रही। दुनू बेर हमर चयन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भेल रहए। असलमे पहिल बेर तीन सालक समयावधि पूर्ण हेबासँ पहिने हम अपन काडर, गृह मंत्रालय, आपस चलि गेल रही। सभ कहए, बेकारे चलि अयलहुँ। ओहन दमदार पदकेँ नहि छोड़बाक छल आदि-आदि। अपनो ओहि बातमे ओजन बुझाइत छल। यद्यपि ओहिठाम झंझट छल, मुदा इज्जतो बहुत भेटैत छलैक। लोकक, खास कऽ दुखित लोककेँ मदति करबाक उत्कृष्ट अवसर भेटैत छल। नित्य २-३ मरीजकेँ हमरा तरफसँ मदति भए जाइत रहए। एहि काज हेतु एकटा कर्मचारी अलगसँ रखने रही जे आगन्तुक मरीजक हमर सिफारिशपर बढ़ियाँ डाक्टर सभसँ इलाज करबा दइक।

लगभग चारि सालक बाद हम दोबारा लेडी हार्डींग पहुँचल रही। बीचमे व्यक्तिगत काजसँ एकाध बेर गेल होएब मुदा पुनश्च ओतहि

पदासीन होएब से हमरो उमीद नहि छल। दोसर बेर गेलापर कएक परिवर्तन देखबामे आयल। प्राचार्यक पदपर प्रो. (डा.) जी.के.शर्माजी छलाह। प्रो. (डा.) ए.के. दत्ता उप प्राचार्यक पदपर रहथि। सभसँ आश्चर्यजनक परिवर्तन हमर आप्त सचिवमे देखबामे आयल। सुनबामे आयल जे ओ आब खूब नमहर पीयाक भए गेलाह अछि। किछु अधीनस्थ अधिकारीक संग साँझे-साँझ पीबाक कार्यक्रम चलैत छल। कए गोटासँ जखन एहि तरहक सिकाइति सुनबामे आयल तऽ एक साँझ प्राचार्य महोदय औचक निरीक्षण केलाह। ओही क्रममे चारि-पाँच गोटे पीबैत पकड़ल गेलाह। आब तऽ जे दृश्य भेल तकर की वर्णन करू...। पीबाक सभ भूलंठित छलाह। अबिते-अबिते कुहर्रम मचि गेल। ओहिमे यूनियनक एकटा नेता सेहो छल। प्रात: काल किछु गोटेक विरुद्ध कार्रवाई भेल। यूनियनक नेताकेँ प्रशासनिक खण्डसँ हटा देल गेल। ओहिमे सँ किछु गोटे माफीनामा लगौला आ आगा नीक ब्यवहारक प्रतिज्ञा केलाह। आब तऽ ओहिठामक फिजा बदलि गेल छल। प्रात: काल 'ओम जय जगदीश हरे...' क भजन सुनाइत छल। साँझ होइते सभ अपन घर चलि जाइत छल। एकटा सम्बन्धित अधिकारीक पत्नी धन्यवाद सहित समाद पठाओलक जे हमरा अयलाक बाद हुनक पीयाक घरबला सुधरि गेलाह आ घरक वातावरण एकदम बदलि गेल। आश्चर्यक बात थिक जे राष्ट्रीय स्तरक एहन महत्वपूर्ण संस्थानमे एहि तरहक गतिविधि चलि रहल छल।

उपरोक्त काण्डमे फँसल यूनियनक नेताक प्रशासनिक खण्डसँ स्थानान्तरण भए गेला बाद ओ चुप नहि बैसल। स्थानान्तरणक आदेशके निरस्त करबाक आग्रह करैत रहल। जखन ओ निराश भए गेल तऽ एक दिन चिकरैत-भोकरैत आयल आ हमर टेबुलपर जोड़सँ मुक्का मारलक। टेबुलपर सीसा लागल रहए। मुक्काक प्रहारसँ सीसा चूर-चूर भए गेलइ।

सीसाक नोक ओकरा गड़बो केलइ। कएक ठामसँ खून बलबला कऽ निकलय लगलइ। ओ चिकरैत-भोकरैत ऊपर दिस भागल।

"छूरा मार दिया...! सीऔ ने छूरा मार दिया..!"

छर्र-छर्र खून बहैत फेर ओ बाहर निकलल आ कैम्पसमे खसि पड़ल। प्राय: गहींर घाव भए गेल रहए।

एतबामे यूनियनक प्रधान किछु गोटाक संग ओकरा अस्पताल लऽ गेल, कएकटा टाँका लगलै। हम तुरन्त ओकरा ससपेंड कऽ देल। तकर बाद प्राचार्यकेँ सभ बातक सूचना देल गेल।

एहिसँ पूर्व कएक बेर गड़बड़ ब्यवहार कऽ चुकल छल। एहि सभक पाछाँ यूनियन द्वारा हमरा डेरा देब छल। ओहि कर्मचारीक बारंवार ड्यूटीसँ अनुपस्थितिक सिकाइति अबैत रहैत छल। ताहि लेल ओकरा सुधरबाक हेतु चेतावनी पत्र जारी हम केने रही। हे भगवान! प्रात: काल जखन कार्यालय अएलहुँ तऽ पहिल समाचार यएह भेटल जे ओ आत्महत्या कऽ लेलक। घरमे फाँसी लगा कऽ मरि गेल। सुनबामे आयल जे ओ एकटा चिट्ठी लिखि गेल अछि। मुदा ओहि चिट्ठीक विषय-वस्तु व्यक्तिगत ओ पारिवारिक छल। ओ ककरोसँ कर्जा लेने छल, कर्जा आपस करबाक हेतु ओ दबाब बनबैत छलैक। घरमे से पीबि कऽ हंगामा करैत रहैत छलैक। घरक लोक ओकरासँ तंग छल। कएक बेर पहिनौं ओ आत्महत्याक धमकी घरक लोककेँ दैत रहैत छलैक, मुदा ने ओ सुधरल आ ने घरक लोक ओकर बातकेँ गंभीरतासँ लेलक। एहि बेर ओ सचमुचमे झूलि गेल रहए, मुदा कियो ओकरापर ध्यान नहि देलकै। बगलक घरमे परिवारक अन्य लोक सभ रहए। प्रात भेने ओ मरल, झूलि रहल छल।

लेडी हार्डींगक एकटा विशिष्टता छल जे कोनो प्रकारक समस्या भेल कि एकटा कमिटी बना देल जाइत छल। कमिटीक सदस्य सामान्यत: ओहन-ओहन लोक रहैत छलाह जिनका प्राचार्य संगे ३६ क

आँकड़ा छल। तात्पर्य ई छल जे विवादास्पद विषय सभमे हुनका सभकेँ सामिल राखल जाए जाहिसँ जरूरत पड़लापर कहल जा सकैत छल जे प्रशासन कमिटीक रायक अनुसार काज केलक। असलमे ई एक प्रकारसँ जिम्मेदारी सरकायब भेल। कमिटीक दुष्परिणाम निर्णयमे विलम्ब होइत छल। एक संस्थानमे एतेक रास कमिटी कमेठाम भेटत। फेर कमिटीक निर्णय वाध्यकारी नहि होइत छल। लोक अपन बात अपना हिसाबे कहि देबाक हेतु स्वतंत्रो नहि रहैत छल। अधिकांश मामलामे प्रचार्यसँ राय मशविरा कैये कऽ कमिटी अपन प्रतिवेदन तैयार करैत छल।

◌

# लोदी कालोनी

१८ अप्रैल २००६क रामकृष्णपुरम सेक्टर- ३ क सरकारी मकानसँ हम सभ ब्लॉक २१ लोदी कालोनी आबि गेलहुँ। साढ़े सात सालक प्रतीक्षाक बाद हमरा ई घर भेटल छल, ओहो एहि लेल जे ताधरि उच्चतम न्यायालय सरकारी आवास सबहक आबंटनक प्रक्रियाकेँ बहुत अधिक सुधारि देने छल, अन्यथा ओहिठाम मात्र सिफारशी सभकेँ घर आबंटित होइत छल।

मकान बेहद पैघ छल। ऊपरमे बरसाती ओ नौकरक हेतु कोठरी आओर बड़ीटा छत छल। दुनू कात बड़ी-बड़ीटा बरामदा छल। मकानक देवाल सभ बेहद मोट-मोट छल। छत पुरना जमानाक मकान जकाँ बहुत ऊँच-ऊँच छल। मकानक बनाबट एहन छल जे ओकर तापक्रम बाहरसँ ५-७°C कम रहैत छल। असलमे ई फ्लैट सभ अंग्रेज फौजी अफसर सबहक हेतु द्वितीय विश्व युद्धक दौरान बनाओल गेल छल। अंग्रेजक गेलाक बाद आब एहि सभमे केन्द्र सरकारक अधिकारी रहैत छथि। श्री विनोद दुआ, प्रत्रकार अपन टीभी सो जायका इण्डिया'मे जोरवाग

मार्केटसँ एहि घरक गुणक वर्णन करैत कहने रहथि जे ई सरकारी बाबू सबहक घर एतेक महग जगहपर बनल अछि जे मूल्यांकनक हिसाबसँ कैयो पुश्तमे सरकारी बाबू एतेक कमा सकता कि नहि...।

हमर फ्लैटक ठीक सामने जोरवाग मोहल्ला प्रारम्भ होइत छल। सुनियै जे ओहि मोहल्लामे एक समयमे ढोल बजा-बजा कऽ १०-१० हजारमे जमीन देल गेल रहए। आइ कोनो मकानक दाम सए कड़ोरसँ साइते कम हेतइ। कएटा प्रसिद्ध आदमी सबहक घर ओहि मोहल्लामे अछि। एहन पैघ-पैघ लोकक पड़ोसमे हम सालक साल रहलहुँ। एकरा की कहबै? कम-सँ-कम धनसँ तऽ ई सम्भव नहि छल। हम गाम छोड़लहुँ आ दिल्लीक नीकसँ नीक जगह सरोजिनी नगर, रामकृष्णपुरम, लोदी कालोनीमे जिनगी भरि समय वितओलहुँ। एहि मोहल्ला सभमे लगबे नहि करइ जे दिल्लीमे छी। कतहुँ भीड़ भार नहि। कोनो प्रकारक हल्ला-गुल्ला नहि। आस-पासमे सुख-सुविधाक भरमार। कार्यालय लग, लोदी गार्डेन लग,अस्पताल लग।

लोदी कालोनीक जे मकान (२१/१०४ लोदी कालोनी) हमरा भेटल छल, से पहिने भारतक भू.पू. उपराष्ट्रपतिक ओ.एस.डी. क आवास छल। हम सोचने रही जे ओहि घरमे सभटा काज करओने हेताह मुदा ओ.एस. डी. साहेब किछु काज नहि करओने रहथि। हमर फ्लैटक छतपर ततेक जगह रहैक जे पचासो आदमी बैस कऽ भोजन कऽ सकैत छल, लगमे चिन्मयानन्द मिसनक अतिरिक्त इण्डिया इस्लामिक सेन्टर, इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर आ इण्डिया हैबिटाट सेन्टर छल। एहि सभ संस्थानमे निरन्तर उच्च कोटिक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, कार्यक्रम सभ होइत रहैत छल। कहिओ काल लोदी गार्डेनमे घुमैत इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टरमे होमए-बला गान-बजान सभ ओहिना सुनबाक मौका भेट जाइत छल। इण्डिया हैबिटाट सेन्टरमे सायंकाल तरह-तरह क गीतनाद, नाटक,

सीनेमा आदि-आदि तरहक सांस्कृतिक कार्याक्रम होइत रहैत छल। एहि सुविधा सबहक कारण लोदी कालोनीक २१ ब्लॉकक घर भेटब असान नहि छल।

लोदी कालोनी सरकारक द्वारा हमरा आबंटित अन्तिम घर छल। एहिसँ पूर्व पुष्प विहार सेक्टर सात, सरोजिनी नगर, रामकृष्णपुरममे रहि चुकल रही। सच पुछी तऽ हमरा दिल्लीमे सरकारी आवास ततेक असानीसँ आ तेहन तेहन नीक ठाम भेटल जे लगबे ने कएल जे दिल्लीमे रहि रहल छी, जतए किरायेदारकेँ किराया दैत-दैत दम छुटि जाइत अछि आ तैयो मकान मालिक ओकरा द्वेम दर्जाक बुझैत रहैत अछि। सरकारी मकानमे लोक साधिकार रहैत अछि, कियो टोकैबला नहि, उनटे जँ किछु टुट-फुट भेल तऽ सीपीडब्लुडी पूछताछमे सिकाइति करू, ठीके नहि हएत, बेहतर भए जाएत। ऐल-फइल ओ शान्त वातावरणमे सभ दिन आदत पड़ि गेलाक बाद दिल्लीमे आनठाम केना रहब ई चिन्ता सतति घेरने रहैत छल।

लोदी कालोनीमे अयलाक बाद सभसँ महत्वपूर्ण उपलब्धि रहल लोदी गार्डेन। लोदी गार्डेनक लाभ हम भरपूर उठेलहुँ। लगभग आठ बर्ख धरि एहि डेरामे हम रहलहुँ। घरसँ मुश्किलसँ पाँच मिनटमे लोदी गार्डेन आबि जाइत छल। लोदी गार्डेनमे पैसते लगैत छल जेना आनन्दक वर्षा भए रहल अछि। हरियर कंचन गाछ-बिरीछ, नाना प्रकारक लोक-बेद सभसँ अनायासे भेँट-घाँट भए जाइत छल। प्रातःकालक सुरम्य वातावरणमे एक सवा घन्टाक समय देखिते-देखिते बीति जाइत छल। लोदी गार्डेनक एक चक्करमे २.२ किलोमीटर चलए पड़ैत छल जाहिमे हमरा २५ मिनट समय लगैत छल। हमर पत्नी हमरासँ तेज चलैत छली। लोदी गार्डेनमे हमर मित्र लोकनि एहिसँ आनन्दित होइत व्यंगो कए दैत छलाह। सामान्यतः हम दू चक्कर लगबैत रही ।

सालक साल ई कार्यक्रम अवाध रूपसँ चलैत रहल। ओहि क्रममे कएटा पैघ-पैघ लोक सभसँ परिचय सेहो भेल। कतेको गोटे लोदी गार्डेन एहन भक्त छलाह जे कोनो हालतमे, वर्षा हो वा अन्हड़ ओ लोदी गार्डेन अबस्स अएताहह। लोदी गार्डेनक एक चक्कर हम सायं काल सेहो लगबैत छलहुँ। परिणामस्वरूप कार्यालयक थकान, तनाव फुर्र भए जाइत छल। सायं काल हम मन्द-मन्द गतिये चलैत रही। लोदी गार्डेनक दोस्ती सामान्यत: चलनिहार व्यक्तिक गतिपर होइत छल कारण तेजसँ चलएबला हल्लुक चलएबलाक संग कतेक काल दितथि? भारतीय प्रशासनिक सेवाक सचिव स्तरसँ सेवा निवृत्त डा. भुरेलालक संग कतेको गोटे भोरे-भोर लोदी गोर्डेनमे भ्रमण ओ व्यायाम करैत छलाह। हुनकर ठाकुर द्वारा ट्रस्ट कहिओ काल विशेष कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत छल। प्रत्येक वृहस्पति दिन भोरे नि:शुल्क चाहक प्रबन्ध रहैत छल। चाह पीबू,गप्प-सप्प करू, व्यायाम करू, घर जाउ। कतेक नीक ई महौल छल, एकर वर्णन आसान नहि। एकर बिसरि जाएब सम्भव नहि। यद्यपि लोदी कालोनी छोड़ला तीन वर्ष भए गेल, तथापि अखनो कहिओ काल हम ओतए भोरे जाइत छी आ अपन स्मरणकेँ फेरसँ नूतन कए लैत छी। कतेको गोटे लोदी गार्डेनसँ एहि हद धरि जुड़ल छथि जे गुड़गाँव किंवा मयूर विहार, नोएडासँ घुमक हेतु एहिठाम नियमित आबि जाइत छथि। हमर एकटा मित्र तऽ २५-३० सालसँ लोदी गार्डेनसँ जुड़ल छलाह। ओ कहथि जे जखन ओ मरथि तऽ हुनका एक बेर लोदी गार्डेनक चक्कर लगौलाक बादे अन्तिम संस्कार कएल जाए।

रामकृष्णपुरम सँ लोधी कालोनि अयलाक बादो हम लेडी हार्डींगेमे काज करैत रही। लेडी हार्डींगक हमर दोसर कार्यकाल लगभग पाँच सालक छल। एहि दौरान प्रो. (डा.) जी.के. शर्मा निदेशक छलाह। ओ बहुत शान्त व्यक्ति छथि। कोनो परिस्थितिमे तनाव नहि उत्पन्न करैत

छथि। हमरा प्रति ओ बहुत सहृदय आओर सहयोगपूर्ण रूखि रखैत छलाह।

मेडिकल कौलेजक किछु आचार्यगण मनुक्खक रूपमे ईश्वरक प्रारूप कहल जाथि तऽ अनुचित नहि हएत। ओहिमे प्रो. डा. ए.के. दत्ता, प्रो. (डा.) डिसूजा विभागाध्यक्ष नेत्र विभाग, प्रो. (डा.) एस.के. प्रधान विभागाध्यक्ष पी.एस.एम. विभाग, स्वत: स्मरणीय छथि। प्रो. डा. ए.के. दत्ता उच्च कोटिक बाल रोग विशेषज्ञ तऽ छथिहे संगे उत्कृष्ट मानवीय गुणसँ ओतप्रोत छथि। हमरासँ हुनक अन्तरंग सम्बन्ध छल आ अछिए। जखन कखनो कोनो प्रकारक मदतिक काज भेल ओ ठाढ़े भेटलाह। बहुत साधारण परिवेशसँ बढ़ि कऽ ओ एहि मोकाम धरि पहुँचला। कहैत रहथि जे शुरूमे कोनो कुटुम्ब हालो-चालो नहि पुछैत छल। क्रमश: ज्यों-ज्यों हुनकर पद, रूतबा बढ़ल त्यों -त्यों ताकि-ताकि कऽ कुटुम्ब सभ आबए लगलनि। हुनकर पत्नी ओही संस्थानक माएक्रोवायोलॉजी विभागमे विभागाध्यक्ष भए सेवा निवृत्त भेली। दुनूमे बहुत तालमेल अछि। अहंकार तऽ जेना दूर-दूर धरि हुनका सभकेँ छुनौं ने अछि।

लेडी हार्डींग सन पैघ संस्थानक प्रशासन चलाबक हेतु शीर्षस्थ अधिकारी सभमे आपसी समन्वय बहुत जरूरी छल। संयोगवश ओहि समयमे एहन परिस्थिति स्वत: बनि गेल छल। यूनियनक वर्चस्व नष्टप्राय छल। प्रशासन सशक्त भए गेल छल। तकर सुखद परिणाम अस्पताल, कौलेज सहित सम्पूर्ण संकायपर पड़ल। अन्ततोगत्वा परिश्रम ओ आपसी तालमेल तेहन प्रभाव छोड़लक जे सालक साल कोनो हड़ताल नहि भेल। कर्मचारीक वाजिब काज जँ स्वत: भए जाइक तऽ कियो किएक एमहर-ओमहर जाइत।

गृहमंत्रालयमे हमर एकटा भूतपूर्व अधिकारीक पत्नी लेडी हार्डींगमे वरिष्ठ प्रोफेसर छलखिन। ओ इमानदार ओ कर्मठ मुदा झगड़ाउ छली।

परिणाम स्वरूप कतेको डाक्टर सभ हुनकर विरोधी छल। मुदा हमरा प्रति ओ सकारात्मक रूखि रखै छली। बेर-कुबेर हमर पक्षमे बात सेहो रखै छली। हुनका नामे संस्थानक एकटा बंगला छल जाहिमे ओ सपरिवार रहैत छली। बंगला ततेकटा छल जे मंत्रीक बंगला सभकेँ टक्कर दऽ सकैत छल। सेवा निवृत्तिक बादो ओ ओहि बंगलाकेँ खाली नहि करैत छली, परिणामस्वरुप बंगला खाली करेबाक कानूनी प्रक्रिया कएल गेल। संस्थानक एस्टेट ऑफिसर हेबाक कारण ओहि प्रक्रियाक निपटान हमरा ओहिठाम हेबाक रहए। हमर भूतपूर्व अधिकारीक वकीलकेँ मोनमे रहैक जे हम तऽ ओकरे पक्षमे निर्णय देब। ई वएह अधिकारी छलाह जे गृह मंत्रालयमे हमरा साढ़्क बेमारीक दौरान छुट्टी नहि देने रहथि, एलएलबी परीक्षाक रातियोमे ९ बजे बैसोने रहि गेल रहथि, तथापि हुनका सभकेँ आशा रहनि। हम हुनकर वकीलकेँ बारंबार कहिऐक जे अहाँ चाही तऽ अपन मामलाकेँ कोनो आन एस्टेट ऑफिसर लग स्थानान्तरित कऽ लिअ। मुदा ओ कहथि जे हमरा सभकेँ अहाँपर पूर्ण अछि।

एहि मामलाक हिसाब-किताब साफ रहए। ओ सरकारी मकानमे नियमक उल्लंघन कऽ सेवा निवृत्तिक बादो बेसी दिन रहि गेल रहथि तँए हुनका जुर्माना तऽ देबाक रहनि। अपना भरि ओ सरकारमे उच्चस्थ स्तर धरि प्रतिवेदन देने रहथि मुदा सुनबाइ नहि भेलनि। हमरा एहि मामलामे धर्म संकट तऽ रहबे करए। तथापि काफी सोच-विचार कऽ हम साढ़े सात लाख जुर्माना/हर्जानाक निर्णय देल। निर्णय सुनि हुनकर वकीलक चेहरा देखैबला रहए। ओ गरमाए लगलाह।

“हम तो हाई कोर्ट तक लड़ेंगे...।”

इत्यादि, यएह-वएह...।

हम किछु नहि कहलिऐक। चुप-चाप फैसला सुना कऽ खसकि गेलहुँ। हमर पूर्व अधिकारीजी बहुत नाराज भेल रहथि। सम्पर्क तोड़ि

लेलाह। कएक वर्षक बाद ओ हमरा एक दिन ई कहक हेतु फोन केलथि जे “हमर फैसला सही छल। हम एकर अलाबा आओर किछु फैसला नहि दऽ सकैत छलहुँ।” देर आये दुरुस्त आये... । ओ कएटा वरिष्ठ अधिकारी सभसँ राय लेलाह आ सभ हमरे पक्षमे राय देने रहनि।

लेडी हार्डींगमे काज करबाक सभसँ लाभ स्वास्थ्यक प्रति हमर चेष्टा बढ़ि गेनाइ छल। कतेको नीक-नीक डाक्टर सभ मित्र भए गेला आ अखनो ओ सभ पूरा तत्परतासँ हमर ओ हमर परिवारक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यापर बरीयतासँ ध्याने नहि दैत छथि अपितु विशेष समय निकालि कऽ ओकर निदानक उपायो कऽ दैत छथि। एहि क्रममे प्रो. (डा.) एस.के.जैन, विभागाध्यक्ष, मेडिसिन विभाग, प्रो. (डा.) आर.के. धमीजा, डायरेक्टर प्रोफेसर आओर विभागाध्यक्ष, न्यूरोलॉजी विभाग, प्रो. (डा.) रामचन्द्र डाइरेक्टर प्रोफेसर आओर विभागाध्यक्ष चर्मरोग विभाग आओर आओर कतेको डाक्टर सबहक नाम अविस्मरणीय अछि। प्रो. (डा.) ए.के. दत्ता, शिशुरोग विशेषज्ञक हमरा प्रति सिनेहक तऽ वर्णन कठिन अछि। असलमे हिनका सभमे देवत्व कूटि-कूटि कऽ भरल अछि।

लेडी हार्डींगक लगभग सात वर्षक सेवाक क्रममे हमरा बहुत किछु सीखबाक मौका भेटल। बहुत रास लोकक संग मील-जुलि रहब, दोसरक दुख-बुझब तकर निदान करब आ सभसँ बेसी सहनशील होएब, ई गुण सभ हमरामे ओतए विकसित भेल। एतेक भारी संस्थानमे जतए तीन हजार विभिन्न स्तरक लोक काज करैत छल आ हजारो रोगी नित्य प्रति अबैत छल, सभकेँ खुश रखनाइ सम्भव नहि छल। कतेको लोककेँ सख्त अनुशासनक चेष्टामे कष्टो भेल हेतनि। मुदा कुल मिला कऽ ई एकटा सुखद अनुभव छल। जीवनक एहन क्षेत्र जाहिसँ हम एकदम अनजान रही, बहुत किछु सीखक, सीखाबक अवसर प्रदान केलक। सारांशमे ई

एकटा अभिनव प्रयास छल। संघर्ष ओ सहनशीलताक समन्वयक उत्तम प्रयोगशाला छल लेडी हार्डींग।

२२ अगस्त २००८ ई.कँ हमर विदाइ समारोहक अवसर पर निदेशक, उप प्राचार्य सहित अनेकानेक विभागक अध्यक्ष आओर प्रशासनक विभिन्न अधिकारी मौजूद रहथि। पी.एम.एस. विभागक प्राध्यापक स्व. ए.के. शर्माजी अपन भावुक भाषणमे प्रशासनक अनेकानेक प्रसंगक वर्णन केलाह। जेबा काल तऽ प्रशंसा कऽ देब अपना देशक संस्कृति छैक। मुदा एतबा तऽ सही जे एहि संस्थासँ एकर हित-अहितसँ, एहिठामक लोक सभसँ एकटा जुड़ाव तऽ भइए गेल छल। असलमे एहन-एहन संस्थानमे सेवा करबाक बहुत नीक अवसर रहैत अछि। मुदा अवरोधो बहुत। तकर अनेको कारण। सरकारक अपन एकटा ब्यवस्था छैक। लीकसँ हटि कऽ नहि चलि सकैत छी।

कुल मिला कऽ लेडी हार्डींगक एकटा मधुर स्मृति चीर कालतक हमर मोनमे बनल अछि, तऽ एकर कारण ओहिठामक बहुआयामी हेबाक संगहि मोनमे सेवाक बहुत नीक स्थान होएब थिक आ से उचिते। लगातार दिल्लीक विभिन्न कार्यालयमे पदास्थापनाक बाबजूद सरकारी घर वएह रहैत छल। तकर कारण जे सरकारी आवास ताधरि नहि बदलैत अछि,जाधरि अहाँ ओहि घरक हेतु पात्रतासँ बाहर कार्यालयमे नहि चलि जाइ। अस्तु लेड़ी हार्डींग मेडिकल कौलेजसँ आपस केमिकल एवम् पेट्रोकेमिकल मंत्रालयक नव निर्मित औषधि विभाग (Department of Pharmaceuticals) मे १९ अगस्त २००८ ई.कँ कार्य भार ग्रहण केलाक बादो हम लोदी कालोनीक ब्लॉक २१ क १०४ संरव्याक घरमे रहैत छलहुँ। अप्रैल २००६ ई.सँ लगातार हम एहि घरमे रहलहुँ। ओहि दौरान हम लेड़ी हार्डींग, औषधि विभाग आ अन्तमे योजना आयोगमे पदस्थापित भेलहुँ।

डीडीएक योजना सभमे आवेदन दैत छेलिऐ मुदा परिणाम किछु नहि। लोकमे गलत, सही धारणा छल जे बिना हेरा-फेरीक डीडीएक फ्लैटमे आबंटन नहि अबैत अछि। २००८ ई.मे फेरसँ डीडीएक योजना आयल रहए। दर्खास्त देबाक मोन नहि होइत छल, कारण परिणामक प्रति निराशा भाव। मुदा हमर ग्रामीण ज्योतिष डा. राघवेन्द्रजी कहला जे अखन अहाँकेँ जमीन, मकानक योग अछि। सफलता भेट सकैए। तैयो मोन छह-पाँच करैत रहए। एक दिन हमर मित्र (जे पेट्रोलियम मंत्रालयमे निदेशक छलाह) पूछला-

"डीडीएक योजनामे दर्खास्त देलहुँ की नहि?"

हम कहलनि-

"दर्खास्त दइए कऽ की हएत? भेटत तऽ नहियेँ..!"

ओ कहला-

"जँ नहि दर्खास्त देबै तखन केतए-सँ भेटत? दर्खास्त नहि देबक माने तऽ अपनेसँ अपनाकेँ प्रतियोगितासँ हटा देब हएत।"

हुनकर ई बात हमरा जँचि गेल। अन्तिम तिथि लगीच रहए। कनाट प्लेसक आइसीआइ बैंक जा कऽ तुरन्त दर्खास्त भरलहुँ। प्राथमिक शुल्क (डेढ़ लाख रूपैआ) सेहो वएह बैंक आनन-फाननमे कर्ज दऽ देलक। आ हमर दर्खास्त लागि गेल। चारि मासक बाद मंगल दिन, डीडीएक ओहि योजनाक परिणाम आबक रहए। चूँकि ओ मंगल दिन रहए, हम बहुत आशावान रही। रातिक दस बजैत रहए। कम्पूटरपर परिणाम तकैत रही। बहुत मुश्किलसँ डीडीएक वेवपेज खुजल। परिणाममे एकाएक अपन नाम देखि जे आश्चर्य ओ प्रसन्नता भेल तकर वर्णन शब्दातीत अछि। धिया-पुता सभकेँ उठेलहुँ। श्रीमतीजी सेहो उठि कऽ अएली। घरमे हल्ला भए गेल। हमरा सभकेँ दिल्लीमे घर भए गेल। मैट्रिकक परीक्षाक परिणामक बाद दोसर बेर हमरा एतेक प्रसन्नता भेल

रहए। हमर पू. माए निरन्तर हमरा आशीर्वाद दैत रहैत छली। निश्चय ई हुनके आशीर्वादक परिणाम छल। धैर्य पूर्वक सही रस्तापर चलैत रहू तऽ देर-सबेर भगवान जरूर मदति करैत छथिन। दू बेडरूमक ओ फ्लैट मेट्रो स्टेशनसँ सटले रहबाक कारण आओर आकर्षक छल। बिना कोनो लन्द-फन्दक ओ इमानदार प्रयास मात्रसँ हमरा ओ फ्लैट आवंटित भेल। क्रमश: ओकर लिखा-पढ़ी पूरा भेल। लगभग साल भरिक बाद हमरा ओकर कब्जा भेटल आ रजिस्ट्री भेल। एवम् प्रकारेण दिल्लीमे रहबाक जोगार भगवान कऽ देलाह। लेडी हार्डींगसँ लौटलाक बाद हम केमिकल आओर पेट्रोकेमिकलसँ फुटि कऽ नव निर्मित औषधि विभागमे कार्यभार ग्रहण कएल। ओहि विभागक मंत्रीसँ लऽ कऽ नीचाँ धरि अधिकांश लोक बिहारक रहथि। सचिव बिहारक रहथि। संयुक्त सचिव पंजाब काडरक बेहद नीक व्यक्ति छलाह। मुदा ओहि विभागमे बैसबाक जगहक घोर अभाव छलैक। पुरान लोक सभ तऽ कहुना-कहुना कऽ अपन जोगार कऽ लेलाह मुदा हम ओतए नव रही। हिन्दी विभागक संयुक्त निदेशकक संग बैसबाक हमर बन्दोबस्त कएल गेल। हुनका ई गप्प एकदम नीक नहि लगलनि। ओहि रूमक कुंजी ओ देबे नहि करथि। हमरा दिक्कत होइत छल। कएक बेर ओ बिलंबसँ आबथि तऽ हम हुनकर बाट तकैत रही। एक दिन संयोगसँ ओ नहि आयल रहथि आ रूमक कुंजी हमरा हाथ लागि गेल। संयुक्त सचिव महोदय कहला जे यएह मौका अछि। हुनकर परामर्शक अनुसार आनन-फाननमे दोसर कुंजी बनाओल गेल। तकर बाद ओ आबथि ताहिसँ पहिनहि हम कोठरीमे अपन कुर्सी धऽ ली। ओ आश्चर्य चकित भए पुछला जे आखिर हम कोठरी केना खोललहुँ। हम हुनका सभ बात कहलियनि। आब ओ कइए की सकैत छलाह? किछु दिनक बाद एकटा दोसर कोठरी खाली भेलैक, ततए बैसबाक व्यवस्था भेल। संयुक्त सचिव महोदयक स्थानान्तरण भए गेल छल। हुनका

स्थानपर जे संयुक्त सचिव अयलाह से स्वभावसँ कर्कष रहथि। दिन-राति सबहक पाछाँ पड़ल रहथि। अण्ड-वण्ड बजनाइ, धमकी देनाइ तऽ तकिया कलाम छलनि। हुनका संगे समय बितनाइ बड़ा कष्टकर भए गेल छल।

औषधि विभागक जन औषधिक नामसँ दबाइक दोकान खोलबाक योजनाक अन्तर्गत सस्त दबाइ बिक्रीक हेतु प्रथम दोकान अमृतसरमे खुजबाक छल। ताहिलेल हम सभ अमृतसर गेल रही। औषधि विभागक तत्कालिन सचिव श्री अशोक कुमारजी बिहार काडरक आइ.ए.एस. अधिकारी छलाह। हुनका संगे विभागक आन अधिकारी सभ सेहो रहथि। अमृतसरमे उपरोक्त उद्घाटन कार्यक्रममे पंजाब सरकारक स्वास्थ मंत्री सहित आओर अधिकारी सभ सेहो रहथि। कार्यक्रमक बाद हमरा लोकनि अमृतसरक स्वर्ण मन्दिरक दर्शन कएल। दर्शनक वी.आइ.पी. ब्यवस्था छल। सभ गोटाकेँ मन्दिरक तरफसँ सरोपा देल गेल जे बहुत सम्मानक गप्प मानल जाइत अछि। स्वर्ण मन्दिरक बाद दुर्गिआना मन्दिर आ जालिआनाबाला बाग घुमलहुँ। जालिआना बला बागमे देबाल सभपर गोली सबहक निशान अंग्रेज शासकक क्रूड़ताक स्मरण करबैत अछि। हजारो निर्दोष लोककेँ एकटा चारू तरफसँ बन्द स्थानमे घेरि कऽ गोलीसँ भुजि देल गेल। सैकड़ो आदमी प्राण बचबए लेल इनारमे कुदि कऽ मरि गेल। ओ स्थान आब एकटा राष्ट्रीय स्मारक भए गेल अछि। प्रात भेने हम सभ बाघा वोर्डरपर गेलहुँ। ओहिठाम सेहो हमरा सभकेँ भी.आइ.पी. सभ हेतु आरक्षित स्थानपर बैसबाक ब्यवस्था छल।

हम सभ भारतीय ओ पाकीस्तानी अधिकारी/सिपाहीक करतब देखि दंग रही। नित्य सायंकाल ई काय्रक्रम ओयोजित होइत अछि। जाहिसँ दुनू देशक हजारो नागरिक दर्शक दीर्घामे बैसल रहैत छथि।

एहिपार भारत जिन्दाबाद ओ ओहिपार ओहि देशक समर्थनमे नारा लगैत रहैत अछि। कदम-ताल करैत भारतीय सीमा बल ओ पाकिस्तानी समकक्ष आगू-पाछू होइत रहैत छथि। झण्डाकेँ नहुए-नहुएनिच्चाँ उतारैत छनि आ प्रवेश द्वारकेँ बन्द कऽ कऽ अपन-अपन देशक सिमानमे चलि जाइत छथि। एहि कार्यक्रमकेँ देखैत कएक बेर रोमांच भए जाइत अछि। राष्ट्र प्रेमसँ ओत्-प्रोत वातावरणमे अपन बहादुर सैनिक सबहक काज देखि आत्म सम्मानसँ मोन गद-गद छल।

## सेवा निवृत्ति

१२ अप्रैल २०१० क हमर प्रोन्नति भारत सरकारक उप सचिवमे भेलाक बाद योजना आयोगमे पद भार ग्रहण कयल। योजना अयोगक महौल अलग छल। एहिठाम पर्याप्त सुविधा छल। कोठरीक भरमार छल। पूरा योजना भवन योजना अयोगक छल, तँए औषधि विभागसँ बिल्कुल भिन्न स्थिति एहिठामक छल। दू-चारि दिनमे हमरा काज भेटि गेल, स्वतंत्र कोठरीमे सभ सुविधा छल। एहि व्यापक परिवर्तनसँ मोनमे बहुत प्रसन्नता भेल।

योजना आयोगमे पदस्थापित होइते क्रमश: काज हमरा दिस सरकए लागल। हाल ई भए गेल जे साल भरिक अन्दर प्रशासनक तीन चौथाइ काज हमरा अधीन भए गेल। ताहूसँ नहि भेल तऽ विभागाध्यक्ष बना देल गेलहुँ। विभागाध्यक्षकें बहुत रास वित्तिय अधिकार होइत छैक,तहिना जिम्मेदारियो बढ़ि जाइत छैक।

विभागाध्यक्षक रूपमे योजना अयोगक कार्य संचालन हेतु चीज वस्तुक क्रय करबाक स्वीकृति देबाक होइत छल। नियमानुकूल ओ सही

काजक हेतु चेष्टाशील हमरा लोकनि कतेको उपराग  सुनैत छलहुँ जे ई नहि अछि तऽ ओ नहि अछि, तथापि काज शुद्ध आ सही होइत तेकरा वरीयता देल गेल। कर्मचारी/अधिकारीक दैनिक स्थितिक आधारक माध्यमसँ वयोमेट्रिक्स द्वारा केन्द्र सरकारक कार्यालयमे शुरूआत हमहीं सभ योजना अयोगमे केलहुँ जे बादमे केन्द्र सरकारक सभ कर्यालयमे लागू भेल।

सरकारी काजमे कागजक किफायती उपयोगक सक्षम प्रयास हम सभ केलहुँ जे बादमे सरकारक प्रमुख नीति भए गेल। डिजीटल इण्डिया दिस ई सक्षम ओ जोरदार प्रयास छल, जकरा अधिकांश लोक नहि बुझि सकलाह। विभागाध्यक्षक काजसँ हम हटए चाहैत छलहुँ जाहि लेल लिखित ओ मौखिक आग्रह बारंबार कएल, मुदा हमर नहि चलल। घोर अनिच्छा पूर्वक हम सामानक ब्यवस्था सम्बन्धी काज सभसँ पछड़ा लैत रहलहुँ। योजना आयोगमे हमर सेवाकालक अन्तिम समय बीतल। हम एहि कार्यालयमे स्वेच्छासँ आयल रही, एहि सोचि कऽ जे सेवाक अन्तिम किछु साल चैनसँ बीति जाएत, मुदा भेल उल्टा। तरह-तरह क कोनो-ने-कोनो फसादकेँ सरियाबएमे लागल रहलहुँ।

योजना भवनमे पश्चिम बंगालक मुख्यमंत्रीक उपाध्यक्ष, योजना अयोग संग बैसक छल। ओहि क्रममे पुलिसक भारी बन्दोबस्त छल, कारण पं. बंगालक कोनो घटना लऽ कऽ किछु गोटे प्रदर्शन कए रहल छल। चारूकात जबरदस्त घेराबन्दी छल। योजना भवनमे अति विशिष्ट व्यक्तिक आगमनक लेल अलगसँ द्वार छल। सामनेसँ दूटा द्वार छल जाहिमे एक बाटे लोक अन्दर होइत छल आ दोसर बाटे बाहर होइत छल। प्रदर्शनक चलते मुख्यमंत्रीकें अतिविशिष्ट लोकनिक हेतु आरक्षित द्वारसँ अन्दर एबाक छल मुदा ओ सामान्य लोक हेतु बनल द्वारसँ एबाक प्रयासमे प्रदर्शनकारीसँ घेरा गेलीह। भगवान जानए एना किएक भेल। योजना

अयोगक प्रोटोकॉलक विभाग सेहो हमरा अधीन छल, परन्तु एहि मामलाक कोनो जानकारी हमरा नहि छल। प्रोटोकॉल सहायकसँ सभ सोझे गप्प करैत रहल। जखन गड़बड़ी भेल तऽ तरह-तरह क बात भेल मुदा हमरा कोनो प्रकारसँ तंग नहि कएल गेल, कारण हमर गलती किछु नहि छल।

योजना आयोगक प्रमुख स्मरणीय घटनामे गुजरातक मुख्यमंत्रीक ( वर्तमानमे भारतक प्रधान मंत्री) रूपमे आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदीजीक योजना आयोग आएब छल। ओहि समय धरि मोदीजीकें भाजपा द्वारा प्रधानमंत्री उम्मीदवार मनोनित नहि कएल गेल छल, मुदा भाजपाक चुनाव प्रचार समितिक अध्यक्ष ओ बनि गेल रहथि। आ. मोदीजी योजना आयोगमे पत्रकारसँ चर्चा करए चाहैत छलाह, जकर अनुमति नहि देल गेल। जखन ओ लिफ्टसँ भूतलपर अयलाह तऽ पत्रकार सबहक भीड़ लागि गेल रहए। ओही ठाम पत्रकारसँ गप्प करए लगलाह। जेना-तेना कुर्सी आनल गेल। आ. मोदीजीक प्रेससँ वार्ता काल पत्रकारक जबरदस्त भीङ लागि गेल। आ. मोदीजीक लोक प्रियताक अन्दाज ओहीठामसँ लगाओल जा सकैत छल।

सालमे एकबेर योजना आयोग प्रधानमंत्रीक अध्यक्षतामे राष्ट्रीय विकास परिषद (National Devolopment Concil) क बैसार आयोजित करैत छल। एहिमे देशक सभ राज्यक मुख्यमंत्री सहित केन्द्र सरकारक प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री आ तमाम मंत्री, सचिव उपस्थित रहैत छलाह। प्रधानमंत्री भरि दिन ओहि बैसारमे उपस्थित रहैत छलाह।

कार्यक्रमक सफल आयोजन एकटा जबरदस्त चुनौती रहैत छल। सुरक्षासँ लऽ कऽ भोजन, जलपानक ब्यवस्था एकदम वारीकीसँ कएल जाइत छल। एहिमे भारी भरकम खर्चा होइत छल। एहिमे कएटा खर्चाकम कएल जा सकैत छल। हम एहि तरहक प्रयास केलहुँ।

तत्कालीन सचिव, महोदया एहि प्रस्तावकेँ सहर्ष मानि गेलीह जाहिसँ लाखोंक बचत भेल। प्रधानमंत्री ओ हुनका संगे भोजन करएबला किछु चुनिन्दा लोककेँ छोड़ि सबहक भोजनक एके रंगक व्यवस्था भेल जाहिसँ लाखोक बचत भेल।

बैसक हेतु लगभग एक हजार महग बैग लेल जाइत छल। एकरा स्थानमे हमरा लोकनि हाथसँ बनल जूटक बैग कीनलहुँ जाहिमे लाखोंक बचत भेल। एहि बैगमे कागज-पत्तर सभ भरि-भरि बैसकमे भाग लेनिहार लोक सभकेँ देल गेल। ओहि बेर जूटक बैगमे कागज सभ बैसकमे भाग लेनिहार लोक सभकेँ देल जाइत छल। ओहि बैगमे कागज सभ ओहिना पड़ल रहि गेल। पछिला साल तऽ बैगक लूट भए जाइत छल। कारण ओ महग होइत छल। सरकारी पैसाक दुरुपयोग रोकबाक छोटसँ -छोट प्रयास राष्ट्रक हेतु बहुत लाभकारी भए सकैत अछि। एक-एक बुन्दसँ पोखरि भरैत अछि, मुदा एहन सोचए बलाकेँ प्रशंसा तऽ छोड़ू, कए बेर दिक्कतिये भय जाइत छैक। ताम-झामक बिना काज नीकसँ सम्पन्न भेल।

योजना आयोगमे लगभग साढ़े तीन साल काज केलहुँ। ओहि अवधिमे भोजनावकाशक समयक आनन्दे अलग छल। हम सभ पाँच गोट अधिकारी एकट्ठा भए घन्टा भरि आस-पास घुमैत छलहुँ,गप्प करैत छलहुँ आ अन्तमे चाह पीबि कऽ सभा विसर्जित होइत छल। गर्मी बढ़ि गेला पर टहलनाइ स्थगित रहैत छल। मुदा गप्प-सप्प चलैत छल। चाह-कॉफी चलैत छल। एहि बेसारमे ततेक ऊर्जा भेटैत छल जे आगॉक आधा दिनक काज करब असान भए जाइत छल।

ओहिमे दूटा (डा. शरद पंत, डा. विजय वहादुर सिंह) भारतीय आर्थिक सेवाक निदेशक स्तरक अधिकारी छलाह। श्री के.एन. पाठकजी योजना आयोगमे निदेशक स्तरक अधिकारी छलाह। पहिने जे.एन.यू. आ बादमे लंदन स्कूल ऑफ इकानामिक्ससँ पढ़ल बहुत योग्य विद्वान छथि।

हुनका वाकक़लामे महारत अछि। श्री शंकर मुखर्जी केन्द्रीय सचिवालय सेवाक निदेशक स्तरक अधिकारी छलाह, आब सेवा निवृत्त भए गेल छथि। सभ अपन-अपन क्षेत्रमे माहिर छलाह। तँए लंचक समय गप्प-सप्प तऽ हेबे करइ, तरह-तरह क जानकारी सेहो भेट जाइक। ओ एकटा बहुत आनन्दक समय छल। क्रमश: सेवा निवृत्तिसँ एहि बैसारमे भाँगठ होइत गेल। तथापि कहिओ काल हम सभ भेँट-घाँट करैत रहलहुँ। आब तऽ मात्र एक गोटे नौकरीमे बनल छथि। शेष सभ सेवा निवृत्त भए एमहर-ओमहर भए गेलाह।

बिहार आ बादमे झाड़खण्ड काडरक आइ.ए.एस. अधिकारी श्रीमती निधि खरे हमर अन्तिम अधिकारी छली। ओ कर्मठ, इमानदार ओ दृढ़ निश्चयी छली। हुनकर सद्भावना हमरापर रहलनि। एक समयमे ओ मधुबनीक कलक्टर छली। हुनकर पति श्री अमित खरे, आइ.ए.एस. दड़िभंगाक कलक्टर छलाह। दुनू व्यक्ति हमर कनिष्ठ पुत्र क्षितिजक बिआहक वाद दिल्लीमे आयोजित स्वागत समारोह मे आयल रहथि। सेवा निवृत्तिक समय आयोजित विदाइ समारोहक अध्यक्षा वएह रहथि। हमर बहुत रास इष्ट-मित्र ओहि अवसरपर उपस्थित रहथि।

लगभग ३९ वर्ष ७ महिनाक सेवाक पश्चात हम सेवा निवृत्ति भए घर पहुँचलहुं तऽ हमर श्रीमतीजी हँसैत हमर स्वागत केने रहथि। घरक वातावरण आनन्दमय छल। एकटा महान जीवन यज्ञक मीठ-तीतक अनुभवक संग पूर्णाहतिपर आबि गेल छल आ चालीसो सालसँ किछु मास अधिके काज केलाक बाद घर बैस कऽ केना समय बीतत से चिन्ता हमरासँ बेसी हमर मित्र ओ अधिकारी सभकेँ रहनि। दिन भरि हम कार्यालयमे व्यस्त रहैत छलहुं, अन्त-अन्त धरि दौड़ैत रहलहुँ, काजकेँ आनन्दपूर्वक करैत रहलहुं। यदि अत्यावश्यक नहि भेल तऽ अवकाश नहि लेलहुं, मुदा आब की हएत?

समस्या तऽ ई वाजिव छल मुदा अप्रत्याशित नहि छल। सरकारी नौकरीसँ सेवा निवृत्ति तऽ भेने छलहुँ। ईश्वरक कृपासँ अन्त-अन्त धरि हम परिश्रम करबाक स्थितिमे रहलहुँ आ अखनो छी। देखिते-देखिते चारि दसक समय बीति गेल। दड़िभंगा, जमशेदपुर, दिल्ली, इलाहाबाद आ फेर दिल्लीक सफरनामा अपन मंजिलपर पहुँच गेल छल। बच्चा सभ व्यवस्थित भए गेल रहथि। बिआह-दान भए गेल रहनि। तखन चिन्ता कथीक..? एतेक दीर्घ यात्रा ठीक-ठाक निकलि गेल से सोचि ईश्वरकेँ कोटिशः धन्यवाद दैत आगाँक जीवनक व्यवस्थामे लागि गेलहुँ।

२१ सालक बएसमे लगातार हम रोजी-रोटीक हेतु संघर्षशील रहलहुँ। किछु स्वभाववस, किछु भाग्यवस हल्लुको चीज हमरा बिना संघर्षकेँ नहि भेटल।३९ सालसँ अधिक समय बीति गेल। कतेक लोक आयल, गेल। मुदा किछु गोटे अमिट छाप छोड़ि गेलाह। किछु गोटे अविस्मरणीय भए गेलाह। नौकरीक दौरान भेँट भेल डा. विनय कुमार चौधरी (संप्रति प्रोफेसर, आर.एन. कौलेज सहर्षा), श्री संजीव सिन्हा (निदेशक पदसँ सेवा निवृत्त), हमर नामधारी मिसरजी (गृहमंत्रालयक संगी, राजपत्रित पदसँ सेवा निवृत्त), श्री मदन मोहन सिन्हाजी (गृहमंत्रालयमे अवर सचिव पदसँ सेवा निवृत्त) जीवन भरि निस्वार्थ उपकार करैत रहलाह। एकरा पूर्व जन्मक देन नहि कहबै तऽ की कहबै?

२१ वर्षक आयुसँ गामसँ नौकरी करए निकललहुँ से निकलले रहि गेलहुँ। यद्यपि हम गाम, मधुबनी अबैत-जाइत रहलहुँ, मुदा नाममात्र। छुट्टीमे जखन जाइ तऽ अधिकांश समय मधुबनीक मकानक काज करबैत रही। कहिओ सीमटी लागि रहल अछि तऽ कहिओ पेटींग भए रहल अछि। किछु कऽ लिअ मुदा मधुबनी, मधुबनी थिक। बेसी जेबी ढील करएबला किरायेदार कम भेटता।

फेर हम तऽ ओतए रही नहि। किरायासँ बेसी एहि बातक चेष्टा रहैत छल जे आदमी फरिछाएल हो। से हम भाग्यवान रही। माप-तौल विभाग छोड़ि शेष तीनू किरायेदार वचनक पक्का ओ साफ इरादाक आदमी निकललाह। ओहिमे श्री नन्दलाल मिश्रजी (ड्मरी गामक) १३ वर्ष रहला। बिना कोनो लाइ-लपट-कैँ रहलाह आ अन्तमे सेवा निवृत्तक बाद गाममे नव मकान बना कऽ चलि गेलाह। ओ एकटा समांग जकाँ हमर मकानक रक्षा केलाह।

गामपर स्व. माए रहैत छली। हुनकर व्यवस्थाक क्रममे समय-समयपर हमरा गाम जाएब अनिवार्य छल। आब तऽ ओहो नहि छथि। नौकरीसँ सेवा निवृत्त भए गेलहुँ। तथापि परिवारोमे आ अपनो इच्छा भेल जे दिल्ली वा आसे-पड़ोसमे रही। एतेक दीर्घ समय नौकरीमे बीति गेल। तरह-तरह क लोक आयल-गेल। विवाद आयल, समाप्त भए गेल। समयक प्रभावसँ सभ किछुक ठिकाना लागि जाइत अछि। आब सोचैत छी तऽ बहुत रास बीतल बात सभ व्यर्थ लगैत अछि। मुदा सभ किछु अपने हाथमे नहि छैक। समय सभ किछु सीखा दैत छैक। कहबी छैक जे जखन धोती पहिरै-जोगर होइत अछि तऽ फाटए लगैत अछि। ई तऽ जीवनक सत्य छैक। जीवन-यात्रामे जे कियो जाहि रूपे संग भेलाह, सभकेँ कोटिष: धन्यवाद।



# सेवा निवृत्तिक बाद

सेवा निवृतिक समय लगिचाइते हमर कतेको इष्ट-मित्र लोकनि पुछए लगलाह जे अहाँ एतेक काजुल छी, एतेक सक्रिय रहैत छी; सेवा निवृत्तिक बाद केना समय कटत? मुदा हमरा अपना कोनो कहिओ चिन्ता नहि रहए जे आगू की हएत, केना समय काटब। सदिखन मोन रहैत छल आ रहितो अछि जे जे भगवान करथिन से नीके करथिन आ नीके हएत। कहबी छैक जे अपना मोनक हो तऽ नीक, जे अपना मोनक नहि होइत अछि तऽ ओकरा भगवानक इच्छा बुझि कऽ आओर नीक बुझि स्वीकार करक चाही। फेर सेवा निवृत्ति कोनो दुर्घटना नहि थिक। सरकारक एकटा सुनियोजित योजनाक तहत सेवा निवृत्ति भए जाइत अछि।

सेवा निवृत्तिसँ किछु बर्ख पूर्वे जखन हम सासुर जाइ तऽ किछु गोटे पुछथि-

"मिसर! रिटायर भए गेलिऐ की?"

ताहिपर हम कहियनि- "अखन सवा साल बाँकी अछि।"

ई सुनिते कएक गोटा निराश भए जाइत छलाह जे ई आदमी कतेक नौकरी करताह। बात किछु सहियो छलैक, कारण २१मे सालक पश्चातसँ हम नौकरी शुरू केलहुँ आ लगभग ४० साल धरि नौकरी केलहुँ। ओहि दौरान एक-सँ-एक नीक लोक भेटलाह आ कतेको दुष्टजन सभसँ सेहो पाला पड़ल।

समयक स्वभाव होइत छैक जे ओ बीति जाइते अछि। केहनो कष्टकारी समयक अन्त भए जाइत अछि। जरूरी खाली धैर्यक। सेवा निवृत्तिक चारि साल लगिचा रहल अछि। ठाठसँ समय निकलि गेल।

ईश्वरक असीम कृपासँ पूर्ण स्वस्थ छी आ निरन्तर कार्यशील छी। पछिला दू सालसँ स्पेशल मेट्रोपोलीटन मजिष्ट्रेट–दिल्ली–क पदपर छी। एक प्रकारक नवीन कार्य क्षेत्र अछि जकरा हम आनन्द पूर्वक सम्पन्न कऽ रहल छी।

हम दिल्ली विश्वविद्यालयक सायंकालीन कक्षासँ विधि स्नातक केने रही। वएह डिग्री आब काज आबि रहल अछि। सेवा निवृत होइते वार कौंसिल ऑफ देल्ही (BCD) मे ओकीलक निबन्धन करेलहुँ। तकर पश्चात लगभग डेढ़ बर्ख धरि नियमित रूपे केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण दिल्लीमे जाइत रहलहुँ। कारी कोट, उज्जर फीतानुमा टाइ, कारी पैन्ट पहीरि जखन घरसँ निकली तऽ कएक बेर अपनो आश्चर्य लगैत रहए।

वकालतक काज हम शुरू तऽ कऽ लेलहुँ मुदा ओहिठामक महौलमे हम कहिओ रमि नहि सकलहुँ, कारण देखिऐ जे अधिकांश ओकील अपन मुअक्कलसँ पैसा टानक चक्करमे रहैत छल। केस जीतब, हारबसँ कोनो मतलब नहि। सभ पार्टीकेँ ओ लोकनि कहथि-

“आपका केस तो बहुत मजबूत है। हम आपको रिलीफ दिला कर रहेंगे।” मुदा जहाँ ने कि पाइ जेबीमे आयल कि तकर बाद पार्टी अपन ओकील साहेबक पाछू-पाछू घुमैत रहथु...।

जे किछु पुरना ओकील सभ छलाह, ओ तेहन कऽ बकुटने छलाह जे आन ओकील सभ लग साइते कियो फटकइ। केन्द्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण दिल्लीमे चारि-पाँचटा ओकील लग लगभग ८० प्रतिशत काज रहए। शेष २० प्रतिशतमे सैकड़ो ओकील। प्रशासनिक नियम ओ कानूनक विषयसँ हम सालो जुड़ल रहलहुँ मुदा तकर उपयोग ओकालतमे तखन होइत जखन कोनो मामला भेटैत। कहिओ काल जँ कियो टकराइयो गेल तऽ ओकर मामलामे कोनो जान नहि रहैत छलैक, तथापि मुअक्कल केस लड़ए हेतु तनतनाइत रहैत छल। ओकरा हम बुझबैक चेष्टा

करिऐ जे मामला कमजोर अछि, अहाँ हारि जाएब। विभागीय स्तरसँ सोझराबक प्रयास करू। मुदा ई बात कियो सुनए नहि चाहैत। हमर एहि रूखिसँ आओर ओकील सभ चकित रहथि। कएक बेर कहबो करथि-

"ओकीलक काज मामलाकेँ कोटमे लड़ब छिऐ, ने कि मुअक्कलकेँ एहन सलाह दऽ कऽ भड़का देब। एनामे तऽ हमरो सबहक पेट काटल जाएत।"

झूठ-फूस कोनो बातकेँ बतंगर कऽ कऽ मोकदमा लऽ कऽ ठाढ़ भए जाइत। कतेक ओकीलकेँ तऽ फर्जी कागज बनबैत सेहे देखिअनि। हम एहि प्रपंची कारोबारसँ किछुए दिनमे उबि गेलहुँ। हमरा निश्चय भए गेल जे ओकालत छोड़ि किछु आओर काज करी। कए ठाम अपन परिचय पठौलिऐक। तीन ठामसँ बेरा-बेरी हमरा सलाहकारक लेल नियुक्ति भेटल। मुदा हम काज पकड़लौं नीलीटमे। नीलीटक कार्यालय इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग, सीजीओ कम्पलेक्समे अछि। काज तऽ पकड़ि लेलहुँ मुदा ओहि ठाम ने बैसबाक ठेकान रहैक आ ने काजक। अढ़ाइ मास धरि नित्य आबी आ जाइ मुदा काज किछु नहि। ओना, दरमाहा पूरा भेट जाइत छल। अधिकारीजीके कहियनि जे किछु करू तऽ ओ जवाब देथि-

"हो जाएगा। अच्छा होगा। देर से होगा पर अच्छा होगा।"

इत्यादि। खाली बेफजूलक बात सभ करथि। बिनु काजक अठ-अठ घन्टा समय बितेनाइ हमरा लेल पहाड़ टपब छल। इलेक्ट्रॉनिक्स विभागक भवनक अन्दरे-अन्दर कतेको बेर चक्कर लगाबी, अखबार पढ़ी, लंचक समयमे बाहरो घुमी मुदा तैयो बहुत रास समय रहि जाइत छल। हाजिरी हेतु वायोमेट्रीक मशीन लागल छलैक। तँए भोरे ९ बजे पहुँचब आ साढ़े पाँच बजे साँझ धरि रहब जरूरीए छलैक। बैसक हेतु सोफाक एकटा भाग छल जे लगातार बैसबाक कारण एक बीत धँसि गेल। यएह

सभ चलि रहल छल कि हमर चयन दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा स्पेशल मेट्रोपोलीटन मजिष्ट्रेक पदक हेतु भए जेबाक अधिसूचना जारी भेल। हम एहि पद हेतु लगभग सवा साल पूर्व दरर्वास्त देने रही। एकर जानकारी भेटिते हम नीलीटक सलाहकारक काजसँ इस्तीफा दऽ देलहुँ।

ओहि समय हमर माए हमरा संगे इन्दरापुरममे डेरापर रहथि। भेल जे जाबत नया काज भेटत, पूरा समय माएक सेवा करब। संयोग एहन भेल जे स्पेशल मेट्रोपोलीटन मजिष्ट्रेटक पद ग्रहण करबामे अढ़ाइ मास आओर लागि गेल, कारण दिल्ली-सरकार द्वारा अधिसूचनामे बिलंब। हालाँकि एतेक समय लागि जेतै से अनुमान नहि छल। खैर् ! जेना-तेना ओहो समय कटल आ हम माएक सेवा करैत स्पेशल मेट्रोपोलीटन मजिष्ट्रेटक पदभार २ सितम्बर २०१५ क ग्रहण कएल। जिला न्यायाधीश द्वारा शपथ ग्रहणक बाद तीन सप्ताहक प्रशिक्षण देल गेल। तकर बाद हम उत्तरी दिल्ली नगर निगमक यमुना बिहारमे काज प्रारम्भ केलहुँ। तहियासँ माने २०१५ ईस्वीसँ लगातार हम एहि काजमे लागल छी।

सरकारी सेवासँ निवृत्तिक पश्चात सामान्यत: एहन पद भेटब ओहो बिना सिफारिशक, कम-सँ-कम हमरा लेल चमत्कारे कहक चाही। एहि काजमे कोनो दवाब नहि रहैत अछि। काजमे कियो हस्तक्षेप नहि कए सकैत अछि। तय न्यायिक प्रक्रियाक तहत हम स्वयं निर्णय लऽ सकैत छी। संगे प्रथम श्रेणीक दण्डाधिकारीक दर्जा सेहो रहैत अछि।

हमर कतेको परिचितकेँ हमर एहि काजक बारेमे सुनि कऽ छगुन्ता लगलनि। कतेक गोटा अपन अभिमत दैत रहैत छथि जे-

“भने रिटायर भए गेल छलहुँ, फेरसँ ई सभ करबाक अहाँके कोन जरुरति?”

लोककेँ जे बुझाइत हौउ मुदा हमरा सदैव काज करएमे नीक लगैत अछि, आ ई काज तऽ आओर नीक लागि रहल अछि। एकटा दिनचर्या

बनल रहैत अछि। अखन किछु समय आओर ई काज चलत। तकर आगाँ भगवान मालिक...।

सेवा निवृत्तिक बाद किछु दिन लोदी कालोनी स्थित सरकारीए आवासमे रही। लोदी गार्डेन लगमे छल। भोरक टहलब नियमित छल। सेवा निवृत्ति आइएएस श्री भूरे लालजीक संगे हुनकर ५०-६० गोटाक समूह नियमित व्यायाम करैत छल। तरह-तरह क व्यायाम ओ बहुत मनोयोग पूर्वक करैत छलाह। हमरो ओहिमे सामिल हेबाक लेल प्रेरित करैत रहैत छलाह मुदा हम जानि-बुझि कऽ हटले रहलहुँ जे जतेक लोकसँ जतेक आत्मीयता बढ़त, लोदी गार्डेन छुटलापर ओतेक कष्ट हएत। आखिर लोदी कालोनीक घर छुटल, लोदी गार्डेन छुटल। ओहिठामक लोक सभ सेहो छुटला।

लोदी कालोनीसँ हम सभ इन्दिरापुरम एक्सप्रेस गार्डेनमे अयलहुँ। एहिठाम दू साल रहलहुँ। एतए नीक सामाजिक परिवेश बनि गेल छल। स्वर्ण जयन्ती पार्कमे घुमैत-फिरैत छलहुँ। किछु मित्र लोकनि सेहो घुमैत-फिरैत भेटि जाथि। परन्तु घटनाक्रम एहन भेल जे इन्दिरापुरमसँ नोएडा डेरा लेलहुँ। साल भरि नोएडामे रहलहुँ। नोएडाक मकान बहुत नीक जगहपर छल। आस-पासमे बहुत सुविधा छल। अन्तोगत्वा ग्रेटर नोएडा स्थित अपन घरमे किछु दिन पूर्व आबि गेलहुँ। एहिठामसँ दिल्ली जाएब-आएब आ नौकरी करब थोड़ेक दुरुह जरूर भए गेल अछि मुदा जाबत पार लगैत अछि ताबत गाड़ी ससरा रहल छी।

समय ने ककरो लेल रूकलैए आ ने रूकतै। तँए समयकेँ व्यर्थ काटब अकालमृत्युक समान थिक। अपनाकेँ सकारात्मक काजमे लगओने रहलासँ दिन-रातिक पता नहि चलैत अछि। अन्यथा जीवन जंजाल भए जाइत। चलैत रहब जीवनक लक्षण थिक। आगूक रस्ता

अपने खुजिये जाइत छैक, अही बिस्वासक संग अनवरत चलि रहल छी। अस्तु...।

◌

## सारांश

लगभग चालीस साल धरि केन्द्र सरकारक विभिन्न पदपर कार्य केलाक बाद सेवा निवृत्तसँ एकटा शून्यता स्वभाविक छल। नौकरीक दौरान छुट्टी दिन छोरिकऽ लगभग १२ घन्टाक नियमित व्यस्तता रहैत छल। कतेको गोटे एहि परिवर्तनकेँ बर्दास्त नहि कऽ पबै छथि वा कहू तऽ नवीन परिस्थितिसँ सामंजस्य नहि बैसा पबैत छथि। परिणाम कए बेर बहुत घातक होइत अछि। एकटा सचिव स्तरक अधिकारी सेवा निवृत्त होइते हृदयाघातसँ मरि गेलाह। कुर्सी जेबाक संगे संग बहुत रास सुविधा सेहो चलि जाइत अछि। ततबे नहि, अधीनस्थ कर्मचारीक 'जी-हुजुरी' सेहो समाप्त भए जाइत अछि। मुदा ई सभ तऽ भेनाइ अछिए। माने एक-ने-एक दिन सभ सेवा निवृत्त होइते अछि।

नौकरीक दौरानक अस्तव्यस्तता आब खतम अछि। बीतल समयक जखन सिंहावलोकन करैत छी तऽ लगैत अछि जे नौकरीक दौरान कएल गेल अधिकांश चिन्ता व्यर्थ छल। छोट-मोट बातपर अनुरंजित भए जाएब, अधिकारीक अप्रसन्नतासँ तनावमे आबि जाएब, व्यर्थ छल। सभसँ चिन्ता तऽ वार्षिक मूल्यांकन (ACR वा APAR) लऽ कऽ होइत छल। पता नहि अधिकारी की लिखि देताह..! भविष्य खराप भए जाएत..! अधिकारीक हाथमे सरकार एकटा एहन अस्त्र दऽ देने अछि, जाहिसँ अधिनस्थ अधिकारी वा कर्मचारी बकड़ी भेल मेमियाइत रहैत छथि। जँ अहाँ हँ-मे-हँ मिलबैत रहलहुँ तखन तऽ बड़ बढ़ियाँ रिपोर्ट पक्का अछि, नहि तऽ भगवाने मालिक..! कतबो काज करब आ जँ

अधिकारीक अहं क परवाह नहि करब तऽ गेल घर छी। बहुत कम्मे अधिकारी होइत छथि जे काजक प्रधानता दैत अधीनस्थक सेवाक मूल्यांकन करइ छथि। एहि सबहक हेतु नौकरीमे लोक फिरसान रहैत अछि। हमहूँ कए बेर बहुत चिन्तित भए जाइत रही। सरकारी सेवासँ निवृत्तिक पश्चात पूरा-के-पूरा ACR क बण्डल हमर आग्रहपर हमरा सरकार आपस कऽ देलक। एक दिन कने-मने उनटाक पढ़लहुँ। कएटा आश्चर्यजनक अनुभव भेल। तकर बाद ओ ओहिना धएल अछि। कूड़ाक भाव बिका जाएत। एहि लेल एतेक फिरसान रहैत रही !

सरकारी ब्यवस्थामे अधीनस्थक सेवाक मूल्यांकनक वर्तमान ब्यवस्था यद्यपि पहिनेसँ बेहतर एहि मानेमे भेल अछि जे आब मूल्यांकनक प्रतिलिपि सम्बन्धित व्यक्तिकेँ दऽ देल जाइत छैइ। ओ चाहथि तऽ ओहिमे सुधारक हेतु उच्च अधिकारीकेँ प्रतिवेदन दऽ सकैत छथि। मुदा अखनो ई प्रकृया पूर्णतः पारदर्शी नहि अछि। जे अधिकारी प्रतिकूल टिप्पणि केलक, फेर तकरेसँ राय लेब कोनो बहुत सार्थक नहि होइत अछि। ओ तऽ सामान्यत: अपन कहल बातपर अड़ि जाइत छथि।

सरकारी सेवकक सेवा मूल्यांकनक समस्त ब्यवस्था मोटा-मोटी जी-हुजुरीपर आश्रित अछि आ एहिमे आमुल-चुल सुधार जरूरीए नहि अनिवार्य थिक जाहिसँ इमानदार, कर्मठ व्यक्ति निर्भिक भए अपन बात राखि सकथि आओर राष्ट्रहितकेँ सर्वोपरि राखि काज करथि। एहनो प्रसंग देखबामे आयल जे सेवा मूल्यांकन केनिहार अधिकारीपर गंभीर आरोप अछि, तथापि अधीनस्थ इमान्दार अधिकारीक चरित्र पंजिकाकेँ ओ बोरि देलथि आ ओ(अधीनस्थ इमान्दार अधिकारी) तड़पति रहि गेलाह। हेबाक की चाही, सुधार केना कएल जाए, ताहिपर अनेको बेर चर्चा होइत अछि मुदा ठोस निर्णय अद्यावधि नहि भए सकल तकर मूल कारण वरिष्ठ अधिकारी अपन अधिकारमे कटौती नहि होमए देबए चाहै छथि।

सरकारी सेवामे अधिकारीक निर्णय लेबाक प्रक्रिया बहुत जटिल अछि। अधिकारक बँटवारा आदम जमानासँ चलैत नियमक आधारपर होइत अछि। परिणामत: अधिकारीगण निर्णय लेबएमे एहि बातक बेसी साकंक्ष रहैत छथि जे हुनकापर जिम्मेदारी नहि खसए, काज हौउ, नहि हौउ। कारण सहियो काज कऽ कऽ फँसि गेलहुँ तऽ जान बँचाएब पराभव भए जाइत अछि। तरह-तरह क नियम ओ ब्यवस्थासँ बान्हल एहि ब्यवस्थामे सुधार हेतु कतेको बेर प्रयास होइत रहल अछि, मुदा अखनो बहुत किछु सम्भव अछि। छोटसँ पैघ सभ अधिकारीकेँ एक सीमामे अधिकार देल जाए जाहिसँ त्वरित निर्णय लेल जा सकए। मंत्रालय सबहक तऽ ई हाल रहैत अछि जे छोट-सँ छोट मामलाकेँ सचिव स्तर धरि पठा देल जाइत अछि। सामान्यत: संयुक्त सचिव धरि तऽ संचिका जेबे करैत अछि।

वर्तमानमे सरकारी नौकरीक जे स्थिति अछि, ओहिमे कियो व्यक्ति इमानदारीसँ जीबिटा सकैत अछि चाहे ओ कतबो बड़का अधिकारी हो। बहुत हेतइ आ भाग साथ देतइ तऽ धिया-पुताकेँ पढ़ा लेत। एकटा घरो बना लेत, मुदा ई कहब जे ओ स्थितिमे आमूल चूल परिवर्तन आनि लेत से सम्भव नहि अछि। सरकारी नौकरीमे सेवाक एकटा अवसर अछि, व्यापार नहि अछि, से बुझि संतोषसँ जीवन-यापन कएल जा सकैत अछि।

हमर एकटा मित्र योजना आयोगमे सेवा निवृत्तिक बाद सलाहकारक काज करैत छलाह। जरूरी काज निपटा कऽ ओ अबस्स हमरा लग आबि जइतथि। गप्प-सप्प करितथि। कतेको तरहक सलाह हुनकासँ भेटैत। प्रशासनिक काजमे ओ माहिर छलाह। क्लिष्टसँ क्लिष्ट समस्याक सटीक समाधान तुरन्त उपस्थित कए दितथि। बीचमे हुनका सुगर बढ़ि गेलनि। योग ओ प्राणायाम द्वारा एक माससँ अपन सुगरक स्तर

सामान्य कए लेलाह। डाक्टरक परामर्शपर जाँच करबए गेल रहथि। जाँचक रिपोर्ट साँझमे आनए गेलाह। घरक आसे-पास जाँचक लेब्रोट्री छलैक। रिर्पोट लऽ कऽ आपस अबैत रहथि कि तेजसँ अबैत कोनो कार ततेक जोरसँ टक्कर मारलक जे सात फूट ऊपर उठि गेलाह। खसलाह तऽ कारक पहियासँ पीचा गेलाह। सड़कपर आधा घन्टा पड़ल रहथि, खून बहैत रहल, कियो हाथ नहि लगाबए। के झंझैटमे पड़त, हलांकि मा. उच्चतम न्यायालयक आदेशानुसार मदति केनिहारकेँ कोनो दाव-पेंचमे नहि देल जाएत, मुदा तैयो लोक पचड़ामे नहि पड़ए चाहैत अछि।

संयोगसँ कौलेजक दूटा बालिका हुनका सड़कपर पड़ल, खूनसँ लथपथ देखलक। ओ सभ हुनक सड़कपर खसल मोबाइलकेँ उठओलक। ओहिमे उपलब्ध कएक फोन संख्यापर फोन केलक। संयोगसँ ओकर घर फोन लागि गेलइ। ओ फोनसँ पुलिसकेँ सेहो बजओलक आ पुलिसक सहयोगसँ ओकरा स्थानीय अस्पताल लऽ गेल। अस्पताल जाइत-जाइत बहुत देरी भए गेल छल। तथापि ओ सभ प्रयास करैत रहल। दू घन्टाक बाद हुनकर अस्पतालेमे देहान्त भए गेल। सुखी सम्पन्न लोक छलाह। मुदा किछु काज नहि आयल। हमरा तऽ तखन पता लागल जखन सप्ताह भरि ओ नहि अयलाह तऽ मोन औनाएल। हुनकर अधिकारीजी सँ सभटा बात पता लागल।

ई थिक समय ! करवन की हएत, के जनैत अछि। ओ एकदम स्वस्थ छलाह। कहथि जे हम कहिओ दबाइ नहि खेलहुँ। मुदा अप्रत्याशित रूपेँ दुर्घटनाग्रस्त भए परलोक चलि गेलाह। कएक दिन हमरा रूममे योगाशन करैत कहथि जे एहिसँ सूगरपर एकदम नियंत्रण भए जाइत अछि। हुनकर जीवन यात्रा अहिना समाप्त हेबाक छल। कतेको दिन धरि एहि घटनाक दृश्य माथमे घुमैत रहल। आवेश आ लोभमे लोक छोट-छोट बातकेँ बतंगर कऽ लैत छथि। जान लेबए, देबएपर बनि जाइत

अछि, मुदा हाथ की अबैत अछि? अशान्ति, घृणा ओ प्रतिशोध कहिओ समाधान नहि अनलक आ ने आनत।

हमरा ओ कएक बेर कहला जे थ्री इडिएट्स सीनेमा जँ नहि देखने होइ तऽ अबस्स देखि ली। कम सँ कम एको भाग अबस्स देखि ली। हम सीनेमा बहुत कम देखैत छी। ओ सीनेमा सेहो नहि देखने रही। अही उहापोहमे रही जे ओ एहि सीनेमाकेँ देखबाक हेतु किए कहि रहल छथि। ताबते हुनकर अकस्मात मृत्यु भए गेल। हम ओ सीनेमा देखबाक निश्चय कएल। घरेमे सीडी आनल गेल। सीनेमा निश्चय शिक्षाप्रद छल। एकर सारांश जे ककरो ऊपर अपनाकेँ थोपक नहि चाही। सबहक स्वभाव, रूचि ओ प्रतिभा अलग-अलग होइत अछि। तदनुसार ओकरा स्वतंत्र विकासक अवसर हेबाक चाही। मुदा से कहाँ भए पबैत अछि। डिब्बा बन्द जिनगीक विडम्बना थिक वर्तमान विकृति।

हमर एलीगंज सी.जी.एच.एस.क डीसपेंसरीक प्रधान डाक्टर मेरठक किसान परिवारक छलाह। ओ कहथि जे हुनका डाक्टर बनबाक कनिको इच्छा नहि रहनि। मुदा अभिभावक अड़ि गेलाह जे जँ पढ़बाक होइक तऽ डाक्टर बनथि नहि तऽ पुस्तैनी पेशा खेती-बारीमे लागि जाथि। कहलाह जे हारि कऽ हम डाक्टरी पढ़लहुँ। व्यक्ति ओ नीक छलाह, मुदा गपोड़ी रहथि। मरीज सभ पाँतिमे ठाढ़ अछि आ ओ अन्दरमे जे मरीज अछि तेकरा संगे निश्चिन्तसँ गप्प मारि रहल छथि। ओना, मरीजकेँ देखथि बहुत ध्यानसँ, मुदा समय बहुत बर्बाद कऽ देथि। तकर प्राय: मूल कारण हुनका ओहि पेशासँ अरूचि छल। जीवन-यापन हेतु जएह-सएह काज लोक कऽ कऽ पेट भरैत अछि। अपन देशमे नौकरीक ततेक सुविधा नहि अछि जे लोक इच्छानुसार अपन रूचिक ध्यान रखैत जीविकाक चुनाव करथि। जकरा जे काज भेटल से करैत जीविकोपार्जन करैत छथि।

माता-पिता ओ समस्त श्रेष्ठजनक असीम अनुकंपा ओ कृपासँ जीवन यज्ञ आब अन्तिम चरणमे पहुँच गेल अछि। असलमे एहि जीवन रूपी नावक पतवार परमात्माक हाथमे छनि। वएह छथि खेबनिहार। हुनके कृपासँ लांगरो पहाड़ नांघि सकैत  छथि, पंगुम्  लंघयते गिरिम्। सही मानेमे किछु पता नहि छल जे ई यात्रा कतएसँ शुरू हएत आ केना अन्त हएत? जीवनमे तरह-तरह क जे घटना देखल-सूनल ओहिसँ आँखि खुजि जाएब, भारी बात नहि। एक सँ एक पैघ योग्य आओर पदाशीन व्यक्ति अकाल मृत्युक शिकार भए गेलाह। समस्त ब्यवस्था ठामहि धएले रहि गेल। गरीब-गुरबा सभ बिना कोनो सुविधोक, बिना दबाइए-दारूक वयोवृद्ध भए जाइत छथि। कहबी छैक जे आन्हर गाएकेँ राम रखबार। जँ सामर्थ्यवान भेनहि लोक जीवति, तऽ कियो गरीब एहि दुनियाँमे रहबे ने करैत। मुदा प्रकृतिक ब्यवस्था विचित्र आओर क्रूड़ अछि। कोनो स्पष्ट नियम सभपर लागू नहि कएल जा सकैत अछि। जीवन भाग्य ओ पुरषार्थक बीच झुलैत रहैत अछि।

बच्चामे गाममे रही, ओहीठाम पढ़लहुँ-लिखलहुँ आ जबान होइते रोजी-रोटीक फिराकमे गाम-घरसँ अतिदूर दिल्ली चलि अयलहुँ। एतेक दूर आबि गेलासँ अपनो दुख होइत छल। रहि रहि कऽ गाम, गामक लोक, माए, बाबूजी सभ मोन पड़ैत रहैत छलाह। जखन गाम जाइ तऽ आपसी यात्रामे माए-बाबूजीक वियोगसँ उपजल असीम कष्ट अविस्मरणीय भए जाइत छल। समय बीतैत गेल। आब ने ओ रामा ने ओ कठोला। माए, बाबूजी स्वर्गीय भए गेलाह। कएटा ग्रामीण मित्र सेहो चलि गेलाह। ओ रिक्तता के भरत?

रोडक कातमे गरीब तिहारी कऽ कऽ राति बितबैत अछि। निद्रालीन रहैत अछि कि कियो अन्धाधुन्ध गाड़ी चलौनिहार ओकरा पीच दैत छैक। ओकर प्राण चलि जाइत छैक, एहिमे ओकर की दोख? हे ओ

तऽ सड़कपर अनाथ, सुरक्षाहीन सुतल रहैत अछि, मुदा जे महलमे समस्त सुख-सुविधासँ लैस छथि, ओहो भाग्यक उठा-पटकसँ मुक्त नहि छथि। जीवनमे अहाँकेँ की भेटल, अहाँ की कऽ सकलहुँ आ अहाँक मित्र, गौंआँ आ कि परीचित की कऽ सकल एकर तुलनात्मक विचार व्यर्थ अछि। दुखक कारण अछि। सभ अपन-अपन कर्म ओ प्रारब्धक चक्रसँ बान्हल अछि। सारांश जे प्रारब्ध प्रवल होइछ।

सुनहुँ भरत भावी प्रवल, विहुषि कहे मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ।।

तकर माने ई नहि जे हाथपर हाथ धऽ बैस जाइ आ सभटा भागेपर छोड़ि दी। हमरा-अहाँक हाथमे कर्तव्य कर्म करक अधिकार अछि, फल अपना हाथमे नहि अछि। जीवनसँ की प्राप्त केलहुँ, की दऽ सकलिऐक, ई प्रश्न मोनमे आएब स्वभाविक थिक। हमरा तऽ लगैत अछि जेना जीवन अपन स्वत: निर्धारित गंतव्य दिस स्वयं चलैत रहैत अछि। लोक तऽ मात्र निमित्त क्रियाशील अछि। निमित्त मात्रं भव सब्यसाचिन।

निश्चित रूपसँ महत्वाकांक्षाक पथगामीकेँ कष्टे- कष्ट अछि। लोक की कहत? एहि बातक घमर्थनसँ अपन मौलिकतापर संकट ठाढ़ कऽ लेब कतेक उचित? सबहक अपन जीवन छैक, अपना आपमे सभ महत्वपूर्ण अछि, जे प्राप्त अछि वएह कोनो तरहेँ कम किए अछि? किएक हम अनकापर भारी पड़बाक प्रयत्न कऽ अपना आपकेँ तनावग्रस्त केने रही? सबाल अछि जे जीवनसँ हम की चाहै छी..?

असलमे एहि प्रश्न सबहक उत्तर कियो आन नहि दऽ सकैत अछि। शान्तिक हेतु संतोष बहुत आवश्यक अछि। प्राप्तक आदर जरूरी अछि। सामान्यत: लोक धिया-पुताकेँ उच्च शिक्षाक हेतु चिन्तित रहिते छथि। मुदा उच्च डिग्री प्राप्त केनाइए जीवनमे सफलताक मूलमंत्र होइत तऽ सचीन तेन्दुलकर, विस्मिल्ला खान, पण्डित जसराज, ज्ञानी जैल सिंह

सन-सन व्यक्ति उपलब्धिक ओ मान-सम्मानक पराकाष्ठापर नहि पहुँचितथि। तँए जीवनकेँ अपन स्वभाव ओ रूचिकेँ अनुसारे सन्तुष्टि वोध सम्भव अछि।

प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रह: किं करिष्यति ।

जीवन स्वयंमे अद्भुत अछि। तुलनात्मकता कतहुँसँ उचित नहि। हमरा अहाँक हाथमे अछिए की? अपन कर्तव्य यथासाध्य करक चाही, शेष ईश्वरपर छोड़ि दी, एहिसँ बढ़ियाँ जीवन-मंत्र किछु नहि।

..माफलेषु कदाचन्। ग्रामीण वातावरणमे रहि कऽ बहुत उच्च महत्वाकांक्षा लऽ कऽ हमर पूज्य माता-पिता हमर पालन-पोषण केने रहथि। कहि नहि से कतेक धरि सम्भव भेल, मुदा जे भेल, जेना भेल सएह सोचि कऽ ईश्वरकेँ हृदयसँ धन्यवाद।

◌

---

## परिशिष्ट

## एहि पुस्तकक संदर्भमे श्रीमती निवेदिता झा,प्रख्यात हिन्दी एवम् मैथिली कविक उद्गार:

आय हमरा हाथ में श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रजी के संस्मराणत्मक पोथी " भोर सँ सांझ धरि "अछि । पोथी पढला क उपरांत एक टा अनुभूति जन्य भावना जे भेल तकरा अनुसार हम उत्साहित छी कि श्री रबीन्द्रजी में गद्य लेखक व कवित्व के प्रखर प्रतिभा उपस्थित छैन । संस्मरणात्मक पोथी लिखब कथा व कविता लिखब जेकां सोझ कार्य नय होय थिक । अहि लेखन में भावना उमड़ि के राह के बाधित करैत हेतैन जेना हमरा लागल।

रबीन्द्र जी संवेदनशील व्यक्तित्व छैथ तहि दुआरे अपन लेखनी के माय के ममता के दिस पहिने लऽ के विदा भेलखिन । " कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति " संसार अहि पर टिकल छै आरू इ पोथी ,जहि में हुनकर माय से जुड़ल बहुत रास संस्मरण छै ,उत्कृष्ट लेखन वा लेखनी समक्ष अछि,जे हुनकर प्रतिष्ठित पद पर रहला के सेहो प्रतिबिंब देखबैत छै .

मनुष्य एकटा यात्रा में आवैत छै जिनगी के रूप में ,जहि में बहुत पड़ाव के रूप में चलैत बढ़ैत ओ अपन गंतव्य के दिस बढ़ैत जाऐ छै , मुदा माय के प्रभाव ओकर व्यक्तित्व पर सर्वदा संस्कार के रूप में देखाय पडैत रहै छै । माँ जहि से दुनिया जहि से मनुष्य के जीवन उत्थान होय छै ,ओहि माँ के संस्मरण में पोथी लिख के बड़ पुनीत कार्य केलैथ मिश्रजी । पोथी में बचपन सँ पैघ भेला के वादो लेखक अपन माय के डोर सँ जुड़ल छथिन ,जखन कि आइ-कालि सबसे कम समय लोग अपना बूढ़ माय बाप के दैत छै । इ वाक्य कनि हताश भऽ लिख रहल छी कि ' मिथिला में आइ सबसे बेसी अगर कियो असगरे के कष्ट से गुजैर रहल अछि तऽ ओ वृद्धक हाँज छैथ । किया तऽ बाहैर एला के बाद लोग अपन परिवार कऽ तऽ ल आनैय य शहर मुदा छडि आवय य गाम में बाट ताकैत गाम में ओसार पर बाबु , अँगना में माय।

लेखक के स्नेह परिवार के प्रति हुनकर जिनगी के सबसे नीक बिंदु छयन । नवका पोखरि के संदर्भ में जेना मिश्रजी लिखैत छथिन कि " स्त्रीगण कहथिन कि " हर हर महादेव
जानह हे महादेव !" कतेक विश्वास ईश्वर के प्रति अनादि काल से स्त्रीलोक में होयत छै ,माँ धर्मपारयण रहथिन हुनकर ....

एकटा श्लोक मोन से जोड़ि देलक अहि संस्मरण के पढ़ि-

“वालोहं जगदानन्द, नमे वाला सरस्वती ।
अपूर्णे पंचमे वर्षे, वर्णयामि जगत्रयम ।।"

अयाची मिश्र के पुत्र शंकर ,जखन राजा के हरा देलखिन तखन कहैत छथिन की हम छोट छी हमर सरस्वती नय छोट छथिन । हमरो बाबू हमरा सबके बचपन में अहि मंत्र से शुरूआत करेलखिन ।
पोथी पढ़ि के पाठक अपन मोन से जोड़ि के समझे अहि से नीक आरू कि ? कखनो नोर तअ कखनो मुस्का जायैत छलौं एहि पोथी के पढैत काल ।
एहि संस्मरण के हर पंक्ति मैथिली साहित्य भंडार में महत्वपूर्ण माणिक्य सिद्ध होयत ,साहित्य अनुरागी प्रबुद्ध समाज के एकर कथ्य शिल्प ओ वर्णनशैली आकृष्टक करत से विश्वास सहजहि मोन में होइत अछि । शुभकामना संग में सेहो दय छियैन ।

निवेदिता झा
(संप्रति सदस्य, भोजपुरी-मैथिली अकादमी, दिल्ली)
रोहिणी दिल्ली
9811783898
24.9.2017

Comments of Shri Om Prakash Sapra (Assistant Labour Commissioner, Government of NCT of Delhi(retired)/ Special Metropolitan Magistrate, Delhi(retired) . He is noted Hindi and English writer and a famous Social worker)

## **Saga of struggle and success**

It is really a nice and a unique experience to know personal details and story of life long struggle of a simple person coming from a small village to a big city like New Delhi through his book "भोरसँ साँझ धरि "(From morning to evening of life).

When my dear friend Shri Rabindra Narayan Mishra informed me all of a sudden that he has written a book, I was a little surprised but felt very delighted. A person who struggles and is able to achieve a goal in life, becomes an example for spreading hope, positive energy in this world of negativity. Although the book is in Maithili language, I attempted to go through some of its pages and relished the way of natural way of presentation of sequence of events and its interpretation by the writer himself. In fact, it is not a simple narration of facts or events of life rather it resembles a colourful picture of life, punctuated with not only colour, but humour, happiness and sufferings, failures as well success in one's life. The motto of his life of struggle is "Peace begins with us".

Shri Rabindra Narayan Mishra is presently working as Special Metropolitan Magistrate under Hon'ble High Court of Delhi. After working in various ministries, he rose to be Deputy Secretary in the

Government of India. During his tenure, he was holding various significant portfolios. I have seen his temperament and behavior at personal level during our regular interactions in the Central Administrative Tribunal, Copernicus Marg, New Delhi, where we used to meet on almost daily basis, after we got registered as Advocate in the Bar Council of India, Sri Fort Road, New Delhi and decided to practice mainly in CAT and try to learn some techniques of advocacy and also try to help the needy government servants with our legal knowledge and life-long experience. Once, I read somewhere that "People are so unpredictable – even if you live your life as an open book... …People will suspect that something is hidden still and wonder which pages have secret stories!" It is worthwhile to mention that prior to it, I read some of his small write-ups and articles on social & national issues received by email. I have no hesitation to say that he has wonderful command not only over English but Hindi too. He knows proper use of words and appropriate place, where and when to use them and in which style, so that his message is properly conveyed to the reader. He is a pure vegetarian and is also a frugal eater. He is a man of few words and has only limited requirements that lends him status of 'A Saint in while clothes".

I feel that "Love and kindness are small words in our dictionary but they have a vital power to change the world in and around us." In this context, I would like to recall the unconditional devotion, love and affection with which he has nursed his respected ailing mother during her last days. At the end, I must say that this book is a wonderful collection of efforts, failures and successes of

a person who ultimately achieved a lot in life and has set a living character before the readers.

I salute his efforts, deeds, humanity, spiritual thoughts and his simple way of life with no pomp and show.

I wish him every happiness in life ahead and eagerly await his second book of poetry, or essays on social issues.

- **Om Sapra,**
- 981818 0932, 2765 8197
N-22, Dr. Mukherjee Nagar,
Behind Batra Cinema, Delhi-110009
Email: omsapra@gmail.com
22.9.2017

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै*(मैथिली उपन्यास)*

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज *(मैथिली उपन्यास)*

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

amazon.com पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।